5.0
5.1
29/3/22

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

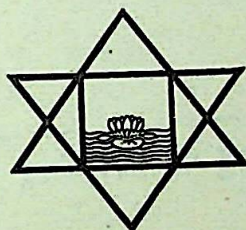
श्री अरविंद-साहित्य
खण्ड-१४

नाटक और कहानियाँ

STORIES AND PLAYS

P+I

श्रीअरविंद



श्रीअरविंद सोसायटी
पांडिचेरी - 2

1972

अनुवादक :

अनुबेन

प्रथम संस्करण, वर्ष 1972

Price Rs. 20.00 मूल्य रु० 20.00

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-2

मुद्रक : ऑल इन्डिया प्रेस,
श्री अरविंद आश्रम,
पांडिचेरी-2.

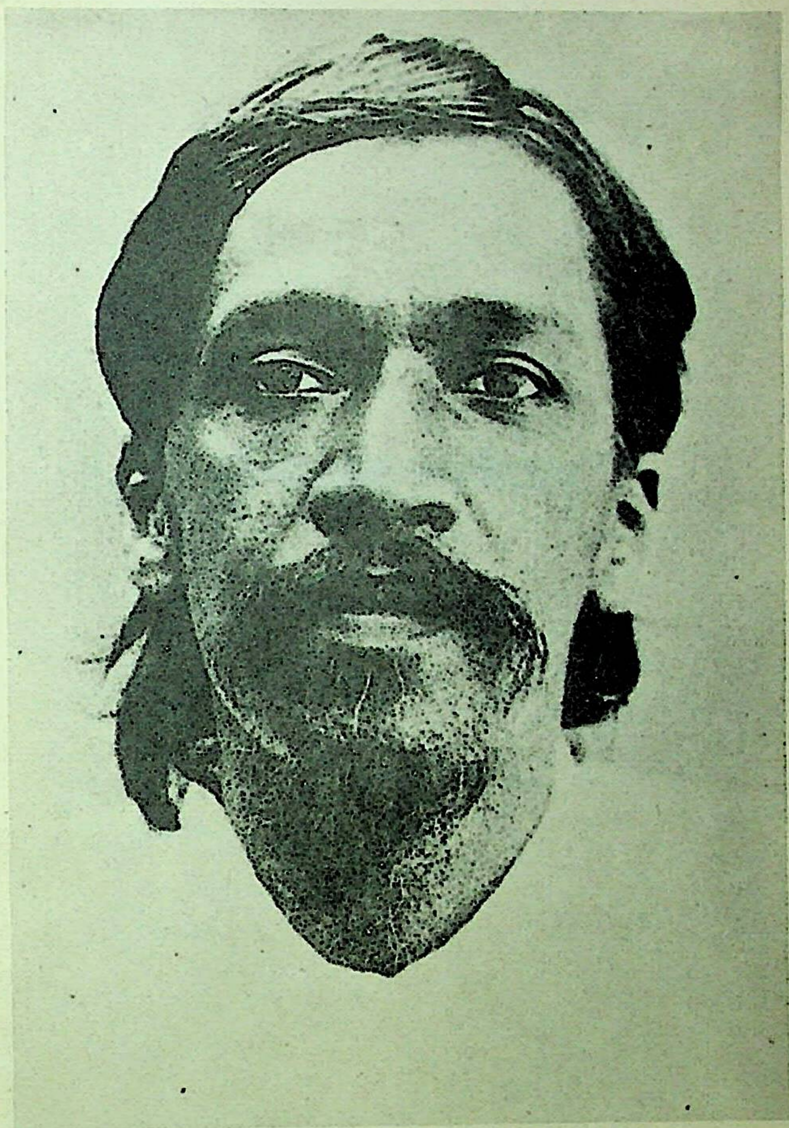
विषय सूची

नाटक और कहानियाँ

प्रथम खण्ड

1.	मुक्तिदाता परसियस	1
2.	वासवदत्ता	129
3.	रोडोगुन	203
4.	एरिक	289





श्रीअरविंद

मुक्तिदाता परसियस

परसियसकी गाथा

आरगीवका राजा एक्रियस था। एक भविष्यवेत्ताने उसे चेतावनी दी थी कि उसका धेवता उसकी मौतका कारण बनेगा। राजाने मौतसे बचनेके लिये लड़की-को पीतलके मीनारमें बंद कर दिया। किंतु देवोंका राजा जीयस, उस कारागारमें सुनहली वर्षाका रूप लेकर उतरा और डेनीने एक बालकको जन्म दिया, जिसका नाम था परसियस। डेनी और उसके बालकको बिना पतवार, बिना चप्पूकी एक नावमें बैठाकर असीम समुद्रमें धकेल दिया गया। यहां भी भाग्यने और देवोंने साथ दिया और नौका सेरिफसके द्वीपतक आरामसे पहुंच गयी। वहांके राजाने डेनीका बड़े मानके साथ स्वागत किया। परसियस बड़ा हो गया तो राजाने उसे मौतके घाट उतारनेकी सोची क्योंकि वह खुद डेनीसे विवाह करना चाहता था। इसलिये राजाने परसियसको हुकुम दिया कि वह उत्तरमें अगोचर, अपरिचित और बरफीले प्रदेशमें जाकर गोरगन मेडुसाका सिर काट लाये। माना यह जाता था कि उसके सिरको देखते ही मनुष्य पाषाण बन जाते थे। ज्ञानकी देवी एथिनीने हार्पी नामक दिव्य तलवार, हवामें उड़नेके लिये पंखदार जूते, अपनी ढाल तथा अंतर्धान होनेको टोपी देकर उसकी मदद की। अनेक संकटोंमेंसे गुजरकर, अनेक पराक्रम करके मेडु-साका सिर उतार कर लौटते हुए वह सीरियामें आया।

उसने सीरियाके राजा सीफियस और रानी केसियोपियाकी बेटी एण्ड्रोमीडा-को समुद्री पहाड़ियोंसे जकड़ा हुआ पाया। वहांकी प्रजाने समुद्रके देव पोसायडनके प्रति रानीकी अश्रद्धाके प्रायश्चितस्वरूप उसकी लड़कीको समुद्री दानवका भोग बननेके लिये छोड़ दिया था। परसियसने समुद्री दानवको मारकर एण्ड्रोमीडासे विवाह कर लिया।

इस रचनामें लेखकने प्राचीन लोककथाके वीरगाथा स्वरूपको छोड़कर शेक्स-पियरकी शैलीमें (रोमांस) स्वच्छंद रूपसे एक कहानी कही है जिसके इर्दगिर्द मानव-स्वभाव और जीवनके स्पंदन खुलकर खेल सकते हैं। जिस देशमें नाटककी घटना घटी है वह कल्पनाजगत्‌का सीरिया है, इतिहासका नहीं। यूनानी लोककथाको सेमेटिक जीवनके वातावरणमें या अरमीनियन संस्कृतिमें नहीं बैठाया जा सकता। सीफियसकी राजधानीको एक यूनानी आबादी ही समझना चाहिये जहां यूनानी संस्कृति-

में रंगे लोगोंपर एक और ऐचियन शासन करता है। वहांकी प्रजा भूमध्य सागरके आसपासकी प्रथाके अनुसार पुरातन देवको यूनानी नाम देकर, उसकी पूजा करती है। इस तरहकी काल्पनिक स्वच्छंद रचनामें इतिहासका उल्लंघन क्षम्य है। आइं-स्टाइनने समयको सापेक्ष बताया है, यहां हम उससे भी एक कदम आगे बढ़ जाते हैं। सर्जनात्मक कल्पना ही उसकी एकमात्र व्यवस्थापक नियति है। यहां अद्भुतरूप सृष्टिका ही साम्राज्य है। पुरातन देशों और प्रजाओंके नाम सिर्फ पृष्ठभूमि सजाने के लिये झालरके रूपमें आते हैं। कालकी भूलें तो मानों जहां-तहां घूमती फिरती हैं। विभिन्न देशों और युगोंके विचार और रीति-रिवाज घुलमिल जातें हैं। कपोल-कल्पना, रोमांस और वास्तविकतासे मिलकर पूर्ण इकाई बनती है। यहां हर काल ही रंगमंच है। मानवका शाश्वत मन ही विषय है। बाहरसे काफी विकसित, सु-संस्कृत दीखनेवाली मानवजातिके मनका अर्ध-जंगली अवस्थासे अधिक बौद्धिक और मानवीय अवस्थाकी ओर बढ़ना ही उसका विषय है। बाहरसे शिष्ट और सुसंकृत दीखनेवाले इस मानवस्वभावके नीचे भी अंधकारमय, हिंसात्मक जीवन-शक्तियां पराभूत होकर भी सोयी हुई या दबी पड़ी रहती हैं और उनका फिरसे बाहर उछल पड़ना असंभव नहीं है। यह रचना मानव मनमें गंभीर उच्चतर आत्माके और आध्यात्म शक्तिके उत्थानका प्रथम सोपान है। क्योंकि मनुष्यका भविष्य इसी दिशामें है।

पात्र-परिचय

पालस एथिनी —– शूरवीरोंकी रक्षा करनेवाली यूनानी देवी।
पोसायडन —– समुद्रका देवता।
परसियस —– जीयस और डेनीका बेटा।
सीफियस —– सीरियाका राजा।
आयोलस —– सीफियस और केसियोपियाका पुत्र।
पोलीडियोन —– पोसायडनका पुजारी।
फीनियस —– टायर नरेश।
टिरेनस, स्मरडस — बाबुलके व्यापारी, नौका नष्ट हो जानेके कारण सीरियाके तटपर आ लगे हैं।
थेरेप्स —– एक लोकप्रिय नेता।
पेरिसस —– एक कसाई।
डेरेसिटस —– सीरियाका कप्तान।
नेबेस्सार —– केल्डियन टुकड़ीका कप्तान।
चाव्रियास, देमेताज, मेगास, गारदास, मोरास, सीराक्स — नगर तथा ग्रामके रहनेवाले।
सीरियस —– पोसायडनके मंदिरका सेवक।
मीडास —– राजमहलमें स्वागत करनेवाला।
केसियोपिया —– केल्डियाकी राजकुमारी, सीरियाकी रानी।
एण्ड्रोमीडा —– सीफियस और केसियोपियाकी लड़की।
सिडोनी —– आयोलसकी प्रेयसी।
प्रेक्सीला —– रनिवासकी देखरेख करनेवाली मुख्य सेविका।
डायोमिडी —– एक बांदी, एण्ड्रोमीडाकी सखी और दासी।
बालटिस, पासियेया — सीरियाकी स्त्रियां।

दृश्य : सीफियसकी राजधानी, समुद्रतट, ऊँची उठी हुई जमीनपर पोसायडनका मंदिर और चारों ओर फैली हुई जमीन।



प्राक्कथन

(विक्षुब्ध समुद्रमें कोलाहल, आकाशमें झंझावात। पालस एथिनी नभमें प्रकट होती है। उसके सिरके ऊपर और पैरोतले बिजलियाँ कौंधती हैं।)

एथिनी — हे विशाल सागर ! तेरे भूले भटके जलप्रवाह धरतीको आप्लावित करते हैं,तेरी लोलुप लहरें शिकारकी खोजमें अपने नीले खूंखार नथुनोंको फड़काती हुई आगे बढ़ रही हैं। उन्हें अपने पैरोंकी ओर वापिस खींच ले। मेरे दैवी आदेशको सुन और अपनी चंचल तरंगोंको शांत कर। मेरे संकल्पको पूरा कर।

समुद्रकी आवाजें — अदम्य प्रवाहोंपर अपना प्रशांत अधिकार जतानेवाली तुम कौन हो ?

एथिनी — मैं पालस हूं। सर्वशक्तिमान्की पुत्री।

आवाजें — तुम्हें क्या चाहिये ? तुम्हारा विरोध करना असंभव है। तुम्हारे संगमरमरसे श्वेत चरणोंके आगे हमारे उद्विग्न हृदय सहमेसे खड़े हैं।

एथिनी — अपने विकट पोसायडनको जगाओ और उठाकर मेरे सामने प्रस्तुत करो।

आवाजें — समुद्र अभी नीरव है, तुम्हारी ललकार ही उसे जगानेके लिये काफी है।

एथिनी — उठ, ओ असीम सागरके स्वामी पोसायडन, उठ, अपनी लहराती नीली केशराशिको तरंगोंके फेनसे विभूषित करके दिनके प्रकाशमें प्रकट हो।

(पोसायडन पानीके ऊपर दिखायी देता है)

पोसायडन — किसकी प्रशांत गंभीर आवाज अतल गहराईको छेदती हुई, मुझे पाषाणशैयासे उठनेके लिये बाधित कर रही है ?

आवाजें — आकाशमें शुभ्र सामर्थ्यकी मूर्ति खड़ी है।

पोसायडन — आह, तुम कितनी सुन्दर, गौर और प्रशांत हो। फिर भी तूफानोंको लपेटे हुए। देवी, तुम्हारे ऊपर बिजलियोंसे घायल आकाश कांप रहा है। तुम्हारे शुभ्र, शांत, चरणोंसे समुद्र दूर भागा जा रहा है। तुम्हारी शांति मुझे बेचैन कर रही है। ज्योतिमें बसनेवाली तुम कौन हो ?

एथिनी — मैं हूँ एथिनी।

पोसायडन — पुरानी दुनियाको अस्तव्यस्त करनेवाली सौंदर्यकी अद्वितीय कुमारी ! तुम हमेशा शाश्वत जगत्को क्षणभंगुर मनुष्यके अधीन करना चाहती हो।

पर्वतोंको हिलाती, समुद्रोंमें भी खलबली मचाती हमारी प्रचंड शक्तिको तुम अपने दिमागसे उड़ते स्वप्नोंके अधीन रखना चाहती हो और हमारा दमन करके हमपर शासन करना चाहती हो।

एथिनी — मुझे सर्वशक्तिमान्‌ने अपनी सत्तामेंसे रचा है। मनुष्यमें विराजमान अमर आत्माको समस्त बाह्य जगत्‌पर अद्‌भुत प्रभुत्व पाने और सुव्यवस्थित करनेतक राह दिखाना और नियंत्रणमें रखना मेरा काम है।

पोसायडन — तुम मुझसे क्या चाहती हो?

एथिनी — धरतीकी शक्तियोंने समर्पण भावसे मेरे चरण चूमे हैं। वे मुझे जैतून, अनाज और असंख्य फल, पहाडियोंके गर्भसे चांदी, संगमरमर और लोहेका नैवेद्य चढ़ाती हैं। अग्नि मेरा गुलाम है, परंतु, तुम पोसायडन, तुम अपने अनेक देवताओंके साथ, हवा-से उच्छृंखल पंखोंपर मेरा विरोध करते हो। चट्टानोंके विजेता, मैं तेरी बहती नीली केशराशिको अपने पैरोंतले रौंदने आयी हूं। चट्टा-नोंको डुलानेवाले पोसायडन, अपनी साम्राज्ञीकी आराधना कर।

पोंसायडन — ओ उग्र आतंककारी एथिनी, इन बृहद् सागरोंकी अराजकताका राज्य मेरा है। मेरे सिरके एक झटकेसे ही लहरें तरंगित हो उठती हैं। मनुष्यके निर्बल पांव उनपर कोई निशान नहीं छोड़ते और न मेरी चपल लहरोंपर उसके भाग्यका अधिकार है।

एथिनी — तेरा असीम दुर्धर्ष जल देश देशको, मानव मानवको अलग करता है। मैं उन्हें मिलाकर एक करना चाहती हूं। हे गरजनेवाले उच्छृंखल सागर, मैं उसे तेरे जलपर चलाऊंगी। मैं प्रेरणा देकर उसे पोले भुरभुरे वृक्षोंमें बिठाकर तेरे शिखरोंकी उपेक्षा करते हुए आगे बढ़ाऊंगी। वह मेरे ऊपर विश्वास करके असीम सागरमें कूद पड़नेकी हिम्मत करेगा। उसके द्वारा भारत और पश्चिम-का मिलन होगा, आगे बढ़ते-बढ़ते मेरी उज्जवल छत्रछायामें बर्फीले थके-मांदे उत्तरी द्वीपोंतक वह पहुंच पायेगा। तेरे प्रचंड तूफानी वेगोंके बीच व्हेल जैसा विशाल प्राणी भी पिस जाता है किंतु बौना मानव उछलती आगके यंत्र लिये तेरे क्रुद्ध जलपर चढ़ाई करेगा।

इसलिये हे बलशाली नील पोसायडन, मैं तुझे अपने तूफानी वेगोंको थामने-का हुकुम नहीं देती। तू उसके बढ़ते कदमोंका जरूर विरोध कर। क्योंकि मौत और मुसीबतोंके धक्के खा-खाकर ही मानव देवत्वको पा सकेगा।

पोसायडन — तो फिर तुम क्या चाहती हो एथिनी?

एथिनी — परले निर्मम किनारेसे साहसी व्यापारी और टायरासे आतलांतिक समुद्र-

तक व्यापारकी धुनमें भटकते मानवको तेरा त्रिशूल निर्दयतासे नुकीली पहाड़ियों-पर पटक देता है। जो वहांसे बच निकलते हैं उन्हें सीरियाकी खुशमिजाज और जंगली प्रजा तुझे प्रसन्न करनेके लिये तेरी बलिवेदीपर चढ़ा देती है। सीरिया-के किनारेके मोलोक-पोसायडन, गाजाके डागोन! अनेक नामोंके स्वामी, अनेक प्रकृतियोंके ईश्वर! एक ही शक्तिके अनेक रूप लेकर तू फिलिस्टीयासे उत्तरतक एक अभिशाप और हौवा बनकर राज्य करता है। हे लौह सम्राट! इस खूनखराबेसे बाज आ, शुभ अर्घ्यको अपना और मानवको जीने दे।

पोसायडन — एथिनी, मेरे सागर-साम्राज्यको देख। लहरोंके फेनिल-श्वेत शिखर क्षितिजकी सीमाओंको भी तोड़ते हुए वेगसे बढ़ते जाते हैं। उसके ओजको सराह। उनकी गर्जना और विद्युत-गतिको सराह। हरे खुर और श्वेत केसर वाले मेरे ये अश्व सब कुछ कुचलते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। मेरी अनेक प्रबल ध्वनियोंसे धरा गूंज उठती है। क्या मैं इन भव्य विप्लवी सागरोंको एक रास्ता बन जाने दूं? निरंकुश सागरको व्यापारका राजमार्ग हो जाने दूं?

क्या तेरे क्षणभंगुर मानवकी नाजुक नावें मेरे विशाल उदधिकी पीठपर विजय पाकर गुलामीकी लकीरें खींचेंगी? असीम सागरको तुच्छ मानव जीतकर पालतू बनायेंगे? मैं पीछेसे आनेवाले नरमदिल देवताओंमेंसे नहीं हूं। मैं पुरातन सृष्टिका देव हूं, लमुरिया और पुराना एटलांटिस मेरी पूजाके लिये रक्तरंजित वेदियोंकी स्थापना करते थे। मेरे विशाल नथुनोंमें अभीतक उस खूनकी सुगंध भरी हुई है। आज भी मेरे नथुने खूनकेलिये फड़कते रहते हैं। जाओ, पालस एथिनी, अपने स्वर्गमें वापिस चली जाओ, मैं भी समुद्र-गुफाके गहरे अंधकारकी ओर चलूं।

एथिनी — तो आ जा, युद्धमें अपनी समर्थ लहरोंको मेरी ढालके साथ टकरानेके लिये तैयार हो जा। तू सागरोंकी गहराईमें जाकर मुझसे छिपनेकी न सोच। क्योंकि मैं तेरे सागरोंको धरती-पटलसे उड़ा दूंगी और तुझे प्रकाशके आगे नंगा छोड़ दूंगी।

पोसायडन — भैरव-कुमारी! तेरे युद्ध-कौशलसे मैं टक्कर नहीं लूंगा।

एथिनी — तो अपने एक प्रतिनिधिको मेरे प्रतिनिधिसे लड़नेके लिये भेज। पोसायडन, चलो, उनकी हार-जीत ही हमारे भाग्यका निर्णय करे।

पोसायडन — तेरा प्रतिनिधि कौन है?

एथिनी — दिव्य ओलिम्पसके स्वामीका पुत्र परसियस। एक्रियसकी बेटी, डेनी-ने पीतलके मजबूत मीनारमें, सोते हुए दिव्य कुंदनवर्ण देवका वरण करके उसे

जन्म दिया था। यह बालक उस ओजस्वी सुवर्णवर्षाकी देन है।

पोसायडन —— ओहो! वही न जो भविष्यमें नानाका हत्यारा बनेगा? किंतु मेरे सागर-दैत्योंके तीखे दांत और आग उगलते निःश्वास उस हत्याको रोक देंगे। अच्छा एथिनी, अब विदा!

एथिनी —— जबतक मैं तेरी भीमकाय नील केसरपर अपने पांव न जमाऊं, जबतक अपने बढ़ते साम्राज्यमें न मिला लूं तबतकके लिये अलविदा।

(पोसायडन समुद्रमें अदृश्य हो जाता है)

लो, उसने सागरकी गहराईमें डुबकी लगा ली। डुबकीके कारण अलग हुआ पानी कड़कती गर्जनाके साथ धीरे-धीरे उसके डरावने सिरपर स्थिर होता जा रहा है। धीरे-धीरे परसियस उत्तरके बरफीले प्रदेशसे सूर्यमें नहाते इस सुन्दर प्रदेशमें उड़ा आ रहा है। रातके अंधेरेमें तुझे यह भी नहीं मालूम कि तू किस मार्गपर है। किंतु अब उषा आ पहुंची और पृथ्वीके सुदूर क्षितिजपर सूर्यका उदय हो रहा है। इसी तरह तू भी सीरिया और गुलाब-सी सुकोमल ज्योतिपुंज एण्ड्रोमीडाके लिये उदित होगा। हे सुविख्यात वीर! आनन्द-मग्न रहो! पवित्र एथिनी के प्रशांत सामर्थ्यको धारण करनेवाले! प्रेममें आनंद लो, जीवनका आनंद लो।

(ज्योतिमें अदृश्य हो जाती है)

अंक १

दृश्य १

(समुद्रकी उग्र तरंगोंकी मार खाता हुआ जमीनका किनारा त्यौरी चढ़ाये हुए टीलोंसें घिरा हुआ दीखता है।)

सीरियस —— डायोमिडी, अरे तुम ! इतने सवेरे इस अवारा और तूफानी मौसममें यहां !

डायोमिडी —— मुझे तो मौसममें कोई नुक्स नहीं दिखता सीरियस ! सूर्य चमक रहा है और हवामें उल्लास है।

सीरियस —— बादलोंने रो-रोकर जी हल्का किया है, पवन फिर भी पागलोंकी भांति चिल्ला रहा है और समुद्र गुस्सेमें गरजता जा रहा है। क्या सवेरे-सवेरे मालकिन एण्ड्रोमीडाने पोसायडनको नैवेद्य चढ़ानेके लिये भेजा है ? या तुम खुद समुद्र-की ठंडी-ठंडी हवासे अपने गुलाबी गालोंको और भी गुलाबी बनानेके घूम रही हो ?

डायोमिडी —— मेरी मालकिन तुम्हारे पोसायडनकी उतनी ही परवाह करती है जितनी मैं तेरे जले-भुने, त्यौरियां चढ़ाये हुए पुजारी पोलिडियोनकी। लेकिन सीरियस, तुम अपनी लाल नाकको समुद्रकी हवामें और ज्यादा रंगने आये हो या अपने परम पावन मालिकके सोटोंकी पपड़ियोंको हवा देने आये हो ?

सीरियस —— अरे, मुझे मंदिरमें बैठे उसी नीले बालोंवाले खूंसटको धोनेके लिये समुद्र-के पानीकी बालटियोंपर बालटियां ले जानी हैं। अरे, ऐसा हड़बड़िया, तूफानी कंजूस भाड़में जाय। मैंने उसे इन अठारह वर्षोंतक धोया, पोंछा, रगड़ा और कपडोंसे लादा फिर भी उसने एक बार भी तो अपने समुद्रमेंसे कोई ऐसी टूटी-फूटी नौका नहीं भेजी जिससे मुझे चार पैसे मिल जाते। किसी डूबती राजकुमारीके सुनहरे रत्नजटित कंगन या रोडियाके व्यापारियोंके मखमली अस्तरमें रखे हुए बहुमूल्य कलश मुझे दे देनेसे वह दिवालिया नहीं हो जायगा। इधर मैं, इतना जरा-सा पाकर ही अपनी आजादी खरीद सकूंगा।

डायोमिडी —— शायद उसे इसी बातका डर है। मेरे प्रिय सीरियस, तेरे जैसे अच्छे मालिश करनेवालेको कौन छोड़ना चाहेगा ?

सीरियस —— हे भगवान् ! मुझे पता होता तो मैं उसके शरीरको पन्द्रह दिनतक

अनधुला रहने देता, वह पड़ा पीठ खुजाता रहता। किंतु इन देवताओंका कुछ भरोसा नहीं, इनके साथ मजाक करना टेढ़ी खीर है। उनके अस्तबलमें काफी दानव यूं ही डोलते रहते हैं जो जरा-जरा-सी बातपर अपराधीको हड़पकर, मुंह पोंछ लेनेके लिये तैयार रहते हैं।

डायोमिडी — और सीरियस, बलिदान अच्छी तरह चल रहे हैं न? मैं आशा करती हूं तुम इस गरमीकी ऋतुमें अपने देवको मजेदार स्वादिष्ट खाना खिलाकर शांत रखते हो।

सीरियस — आह बेचारा बूढ़ा पोसायडन! आजकल उसे सिर्फ बकरियां और समुद्री केकडे मिलते हैं और जिसकी जीभको फीनिक्सवालोंके मांसका मजा लग गया हो उसके लिये तो यह सब बेमजा है। लेकिन गलती उसीकी है, उसे तूफान ला-लाकर ज्यादा नौकाएं डुबानी चाहियें। इधर दिनपर दिन काले-कलूटे पोलिडियोनका मुंह रोषसे और भी काला होता जा रहा है। सिबिलका बेटा ज्यूपिटर जैसे पागल सांड बनकर घूमता था वैसे ही मेरा मालिक बौखला उठेगा। मुझे डर है कि कहीं किसी दिन भग्न नौकाके फीनिसियावासियोंकी जगह मुझे ही बलिवेदीपर न ढकेल दे। मैं हमेशा डरसे कांपता रहता हूं कि न जाने कब उस कलमुंहेकी छुरी मेरे हृदयकी खोजमें मेरी छाती टटोलने लगे।

डायोमिडी — तो तुम उसे पहलेसे ही बता रखो कि तुम्हारा हृदय बीस सेर चरबीके नीचे तोंदमें छिपा है। तब उसे कम काट-छांट करनी पड़ेगी और तुम्हें भी छुटकारा मिल जायगा।

सीरियस — चल, भाग यहांसे! तू एक पानीके देवताकी व्यालूके लिये मुझे चिरवाना चाहती है? बस, यही है तेरा स्नेह?

डायोमिडी — भगवान् न करे ऐसा हो, प्रिय सीरियस, अगर तुम अकालमें ही नरककी ओर चल पड़े तो सीरियाकी आधी धूर्तता और दुर्जनता तुम्हारे साथ चली जायगी।

सीरियस — चल, दूर हट यहांसे लंबी मुंहफट कहींकी। बेहूदा फबतियोंकी दुम! लेकिन ठहर, पहले मुझे बताती जा कि राजमहलकी क्या खबर है? लोग कहते हैं कि राजा फीनियस राजकुमारी एण्ड्रोमीडासे शादी करेगा?

डायोमिडी — हां, लेकिन तभी जब राजकुमारी एण्ड्रोमीडा राजा फीनियससे शादी करेगी! अरे यह क्या हो-हल्ला है?

सीरियस — मुसीबतमें फंसे बहुतसे आदमियोंकी चीख लगती है।

(एक पहाड़ीपर चढ़ जाता है।)

डायोमिडी —— हाय भगवान्, कैसी भयानक आवाज थी ! जरूर सायडोन या नील नदीकी कोई शाही नाव हमारी पथरीली जमीनसे टकरायी है।

सीरियस —— फीनिसियाकी एक बड़ी नाव भंवरमें पड़ गयी है और गोल-गोल घूम रही है। लोग जी-जानसे चप्पू चला रहे हैं, लेकिन बेकार ! वह देखो, कड़-कड़ करती हुई नाव धमाकेके साथ चट्टानके फौलादी पंजोंसे टकराती है। उसके नाजुक शरीरको पथरीले पंजे फाड़ रहे हैं। सफेद नौका लहरोंकी थपेड़ोंसे चट्टानोंपर गिरकर सतायी हुई औरतकी भांति चिल्लाती है। चारों ओर-से आदमी लंबी सेमसे गिरते दानोंकी भांति लुढ़कते जा रहे हैं। कुछ हांफते, कांपते, डूबते, उतराते जल-प्रवाहमें बहने लगते हैं और चट्टानोंसे टकरा-टकराकर चकनाचूर हो रहे हैं।

डायोमिडी —— ओह, देखने लायक दृश्य होगा। सीरियस मुझे ऊपर उठा न।

सीरियस —— ना, ना, मुझे दौड़कर बूढ़े बदमिजाजको खबर देनी चाहिये कि भयानक पोसायडनके लिये ताजा मांस आ गया है।

(वह दौड़ता हुआ उतरता है और भागा चला जाता है)

डायोमिडी —— अरे बेमुरव्वत कुत्ते ! इन अठारह महीनोंमें यह पहला पोत-ध्वंस है और मैं इसे न देख पाऊँगी ! मैं कोशिश करके पहाड़ीपर जरूर चढ़ूंगी, हाथ-पांव तुड़वाकर हर्जाना देना पड़े तो भी कोई बात नहीं।

(वह दूसरी दिशामें चली जाती है)

दृश्य २

(वही जगह पहले दृश्यकी। पंखदार जूते पहने परसियस बादलोंसे उतरता है।)

परसियस —— हे समुद्रसे घिरी हुई नुकीली पहाड़ियों, सोते हुए अंतरीप, जिसकी बृहद् पीठ नील आकाशमें उभर रही है, और ओ अनेक आवाजोंमें गरजते हुए बृहद् सागर, तुम्हारी जय हो ! ये डरावने तट न मालूम कौनसे देशकी रक्षा करते हैं। सीरिया हो, मिस्र हो या आयोन हो, अगर मनुष्यके सुखी झोंपड़े हों, तुम्हारी जमीनपर सुखद हास्यभरी गृहस्थी हो, अगर तुम्हारे यहां ऐसे झरने हों जहां गप्पें लगाती हुई बालाएं मटकियोंमें पानी भरने आती हैं और अपने गोरे-गोरे पैर ठंडे पानीमें डालकर खेलती हैं, यदि तुम्हारी हरी-भरी धरतीपर हजारों पेड़ कोयलकी कूकसे गूंज उठते हैं, या साधारण चिड़ियोंकी चहक चारों ओर सुनायी देती है, तो मैं तुम्हारा अभिवादन करता हूं। हे अजाने

देश, डेनीका बेटा परसियस जो अभी उन सीले द्वीपोंमें लंबे अरसेतक रहकर आ रहा है जहां केवल ओले, पाले और बरफका ही साथ था, जहां हड्डियोंतक-को कंपा देनेवाली ठंडी उत्तरी हवाएं बहती हैं, तुम्हारा अभिवादन करता है। बरफसे घिरे रहते-रहते मेरे कान कठोर नीरवताने रूंध दिये हैं इसलिये मुझे इन क्रुद्ध लहरोंकी आवाजें भी भली लगती हैं। मैं इस असह्य चुप्पीसे तो दुख-भरे रोने-धोनेको पसंद करूंगा। वह कम-से-कम आदमीकी आवाज तो होगी। हे मां, वसुंधरे, मैं तेरी और तेरे प्रहरी सागरकी, तथा ऊष्माभरे जीवनदायी सूर्यकी स्तुति करता हूं। मैं धरतीपर उतरकर मधुमक्खियोंके गुंजन भरे खेतों-में जाऊंगा, लहलहाती खेतीमें नर-नारियोंसे मिलकर उनके साथ सुपरिचित भोजन करूंगा।

लेकिन उससे पहले उड़कर उन नुकीली पहाड़ियोंपर टकराती टूटी नौका-की सहायता कर आऊं।

ओ मानव-जातिके हंसते-रोते चेहरो, तुम मुझे बहुत प्रिय हो, तुम जीवित जागृत हो, तुम उस दैत्याकार हिम-प्रदेशके चट्टानी मुखौटे और गोरगनकी झांकियों जैसे नहीं हो। मैं तुम्हें इस अमानुषिक निर्जीव जल-प्रवाहमें न खो जाने दूंगा।

(नीचे उतरते-उतरते अदृश्य हो जाता है। आयोलस सीरियस, डेरेसिटस और सैनिकोंके साथ प्रवेश करता है।)

आयोलस — इन चट्टानोंके नीचे छिपे रहो किंतु जैसे ही मैं इशारा करूं अपनी-अपनी मांदमेंसे निकल पड़ना और भालोंकी नोक साधकर उनको चारों ओरसे घेर लेना।

सीरियस — हे निगल जानेवाले पोसायडन, नरभक्षक, धरतीको कंपानेवाले पोसाय-डन! मैंने तुझे इन अठारह वर्षोंतक नहलाया-धुलाया है। इस झाड़-पोंछ-का हिसाब चुका दे। देख, मेरे साथ बेईमानी या कंजूसी न करना। तीन सौ पैंसठको अठारह गुना करके उसको दोसे गुणा करना। यह है मेरा ठीक हिसाब और हां महान् पोसायडन! बीच-बीचमें आते अधिवर्षको भी न भूलना।

आयोलस — जल्दीसे छिप जाओ। वे आ रहे हैं।

(सब छिप जाते हैं, परसियस टिरेनस और स्मरडसके साथ आता है।)

परसियस — केल्डियन व्यापारियो, काश, तुम्हें बचाते समय मेरी तेजी शिकारपर झपटते बाज जैसी होती! इस बहते जल-प्रवाहमें कितने सुदर्शन पुरुषोंके बलिष्ठ शरीर खो गये, आनंदके लिये उत्सुक आशाएं लुप्त हो गयीं। वे अब भी दिनको आनंदमय बना पातीं। फिर भी जगत्की गति और चहल-पहल-

के लिये इन दो जिंदगियोंको बचानेके लिये मैं देवताओंकी स्तुति करता हूं।

टिरेनस — ओजस्वी युवक! तेरा मुख एक प्रसन्न देवके जैसा सुन्दर है। इस शरीरके जीवनका जो भी मूल्य हो, उसे बचानेके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। स्मरडस, आंखोंसे टपकती निराशाको भगा दे। अगर संपत्ति गयी तो क्या हुंआ, उसे बटोरनेका साधन, यह शरीर तो बच गया। और साथ ही मेहनत-को दिशा देनेवाला विवेकी मन भी।

स्मरडस — हाय, अमूल्य संपत्तिके तीन हजार टुकड़े और हीरे-मोतीसे खचाखच चालीस संदूक! सब गये। एक क्षणमें गायब हो गये। हम भिखारी बन गये।

टिरेनस — स्मरडस, फिर भी शरीर या दिमागसे वंचित नहीं हुए।

स्मरडस — इतना तो मेहनतसे घिसे-पिटे किसानके पास भी होता है।

परसियस — सेठ, मुझे तेरे नुक्सानके लिये अफसोस है। सब सुन्दर चीजें सूर्यके सुनहरे प्रकाशमें चमकनेके लिये बनी है और यह जानकर दुःख होता है कि ये निर्बोध लहरें उनके साथ क्रूर खिलवाड़ कर रही हैं। फिर भी सबसे सुन्दर चीज यह जिंदगी अभीतक बची है। क्या सूर्यका प्रकाश अद्भुत नहीं है? सिर्फ सांस लेना ही सुखमय नहीं लगता? देवताओंके साथ धीरज रखो, उन्हें विद्रोह पसंद नहीं है, वे और भी कड़ी सजा देकर बदला लेते हैं।

स्मरडस — काश, समुद्र मुझे ले लेता किन्तु मेरे खजानेको वापिस कर देता! सीरियाके युवक! क्या इस प्रदेशमें गोतेखोर नहीं हैं? शायद वे समुद्रगर्भ-मेंसे मेरा खजाना ढूंढ़ निकालें।

परसियस — केल्डियाके महाजन, मैं इस देशका वासी नहीं हूं। तुम्हारी तरह मैं भी आज पहली ही बार उसके तटपर इन गरजती लहरोंका नाद सुन रहा हूं।

स्मरडस — भाड़में जाय वह घड़ी जब हम तटके पास आये। हाय, कठोर सागर-सम्राट, अगर तू मेरी जान — मेरी संपत्ति — को ही हथियाना चाहता था तो इस खोखले शरीरको छोड़ देना निष्ठुर दया है। मेरे जीवनकी माधुरी तुमने छीन ली, अब इसे भी ले लो, सब कुछ ले लो।

आयोलस — (आगे बढ़ते हुए) हे बाबुलवासी, तेरी प्रार्थना सुन ली गयी।

(सैनिकोंका प्रवेश। वे परसियस और व्यापारियोंको घेर लेते हैं।)

सीरियस — अभागा सीरियस, हाय सारी माल-मता डूब गयी! गंदा लालची पोसायडन!

स्मरडस — रक्षा करो, रक्षा करो! ये डरावने भाले कहाँसे आये?

टिरेनस — ये भाग्यके भाले हैं। यह वह निष्ठुर प्रदेश है जहां तूफानसे बचे मुसा-

फिर आतिथ्यके बदले अपने ही रक्तमें स्नान पाते हैं। (तलवार खींचता है) मौतका पांसा अभी नहीं पड़ा।

आयोलस — व्यर्थमें तलवार न खींचो। देवोंके विरुद्ध लड़ना बेकार है। यह वही प्रदेश है जहां गुफामेंसे तराशे हुए अपने अंधेरे मंदिरमें हाथीदांतसे शुभ्र पोसायडन देव विराजमान हैं। नाविकोंके रक्तपातसे प्रसन्न होकर वह अपनी नीलमणि-सी सुन्दर जुल्फोंको लहराते हैं! ओ भाग्यवान् यात्रियो! देवता की वेदी बहुत दिनोंसे सूखी पड़ी है। तुम तीनों उसके लिये अच्छी बलि बनकर आये हो। स्वर्गका रास्ता तुम्हारे लिये खुला है।

परसियस — सीरियाके छोकरे, तुम लोग बड़े ही दुष्ट और क्रूर धर्मका पालन करते हो। फिर भी अगर यही तुम्हारा धर्म है तो अपनी इच्छा पूरी करो। देखें, तुम्हारे अंदर इच्छाके साथ-साथ सामर्थ्य भी है या नहीं। मुझे लगता है कि मृत्युके नीरव प्रदेशमें जानेसे पहले मुझे इस धरतीकी बहुत खाक छाननी है।

टिरेनस — (तलवार फेंकते हुए) मुझे पकड़ लो। मैं भाग्यके भारके नीचे छटपटाकर देवोंकी क्रूरताको संतोषका आनन्द नहीं देना चाहता।

(वे टिरेनसको पकड़ लेते हैं।)

स्मरडस — हाय दुष्ट मूढ़! तुम उस तलवारसे मुझे बचा सकते थे। ओ युवक! ओजस्वी अजाने! मेरी मदद कर! तू महाबली है।

परसियस — तुम अब जीना चाहते हो?

स्मरडस — मैं इन चमकते भालोंको देखकर डरसे अधमरा हो गया हूं। हाय, वे मेरे डरके मारे धड़कते जीवंत हृदयको काटकर उस डरावनी वेदीपर फेंक देंगे। वीर मुझे बचा लो।

परसियस — तेरे लिये मैं देवोंसे लड़ना नहीं चाहता। आग उगलते दावानलसे या गहरे समुद्री भंवरसे मनुष्य-रूपधारी तुच्छ चीजको बचाना एक आनंदकी बात है परंतु दूसरेकी सुविधाके लिये दैवके निष्ठुर कोपको अपने पीछे बुलाना पागलपन है। फिर भी इस धरतीपर प्रत्येक मनुष्यको अपनी प्यारी जान बचानेके लिये देवोंसे भी लड़नेका अधिकार है। तुम अपने साथीकी तलवार उठा लो। तबतक मैं आक्रमणसे तुम्हारे सिरको बचाये रखूंगा।

स्मरडस — ओह, तुम मेरा मजाक उड़ाते हो! मैं सिपाही नहीं हूं, मुझे हथियार चलाना भी नहीं आता। बचाओ! (सीरियाके लोग स्मरडसको पकड़ लेते हैं।) बचाओ, मैं बच गया तो तुझे बाबुलका खजाना दूंगा।

परसियस — मेरी तलवार स्वर्गकी देन है। वह खरीदी नहीं जा सकती।

(स्मरडस और टिरेनसको ले जाते हैं)

आयोलस — इस तेजस्वीको भी ले जाओ।

परसियस — ठहर जा एशियाई छोकरे! मेरा हाथ कमजोर नहीं है और न मेरा दिल बोदा है। तू बहुत छोटा, बहुत चुलबुला और बहुत सुन्दर है। तेरी इन सुनहरी जुल्फोंको आलिंगनसे ज्यादा कठोर स्पर्श नहीं देना चाहता।

आयोलस — ओ अजाने पुरुष, तुम जो भी हो, काश, मैं भी तुम्हारे इस प्रफुल्लित शरीरको काली छुरीसे दूर रख पाता। लेकिन समुद्रके स्वामीकी खीज और भयंकर क्रोध विवश करते हैं। मर्त्य मानव छोटी-छोटी डोंगियां लेकर स्वच्छंद शक्तिशाली समुद्रका अपमान करते हैं। इसलिये समुद्रके स्वामीने यहांपर अपने रक्तरंजित मंदिरकी स्थापना की है। आंधी-तूफानके साथ असमान युद्धमें हारे हुए लोग अगर इन चट्टानोंसे बच भी जायें तो उन्हें अपने गरम-गरम खूनके फव्वारेसे वेदीको धोकर उस अपमानकी कीमत चुकानी पड़ती है।

परसियस — पर मैं समुद्री रास्तेसे नहीं आया।

आयोलस — मनुष्यके लिये और कोई रास्ता ही नहीं है। अपरिचित मनुष्यके लिये यह प्रदेश वर्जित है। (मुस्कुराते हुए) हां, यदि तेरे जूतोंपर चमकते ये पंख सचमुच तुझे आकाशमेंसे उड़ा लाये हों तो और बात है।

परसियस — क्या ऐसे लोग नहीं होते जिन्हें चलनेके लिये ठोस जमीन, और तैरनेके लिये समुद्रके नमकीन प्रवाहकी जरूरत नहीं होती? शायद मैं उन्हींमेंसे एक हूँ।

आयोलस — तुम उनमेंसे तो हर्गिज नहीं हो। देवगण अंधकारपूर्ण और देखनेमें भयंकर होते हैं। अगर वे तेजस्वी भी हों तो उदासीन, महान् और उग्र होते हैं। किंतु तुम हमारे सीरियाके नीलाभ्र जैसे मुक्त और सुन्दर हो। तुम्हारा पौरुषभरा यह सुन्दर शरीर आंखोंको खींचता है। अपने-आपको हमारे हवाले कर दो हो सकता है कि देवता तुम्हें अभय दे दें।

परसियस — अपने शिकारी कुत्तोंको मुझपर छोड़ दो। अगर वे मुझे जिन्दा पकड़ सकें तो मैं बलिका बकरा बनकर अपना खून बहानेको तैयार हूँ।

आयोलस — तू क्या कोई यक्ष या अर्धदेव है जो एक ही तलवारसे इन सौ भालोंसे भिड़ सकेगा?

परसियस — मेरी तलवार मेरे हाथमें है और इसका जवाब वही देगी। मैं बातोंसे ऊब चुका हूँ।

आयोलस — डेरेसिटस, ठहर जा। इसका चेहरा स्वर्गसा सुन्दर है। ओह काले

देव पोसायडन, तू धूसर गहरे नमकीन पातालमें बनी अपनी गीली अंधेरी गुफामें इसको लेकर क्या करेगा? उसे सूर्यके प्रकाशके लिये और मेरे लिये छोड़ दे। (पोलीडियोन और फीनियस पीछेसे आते हैं)

डेरेसिटस — राजकुमार, आज्ञा दो।

आयोलस — इस सूर्यदेव-से युवकको जीने दो।

डेरेटिस — यह मना है।

आयोलस — किन्तु मैं आज्ञा देता हूँ।

पोलीडियोन — (आगे बढ़ते हुए) और सीरियाके कुमार, देवने उदार होकर तुम्हें देवपद कबसे दे दिया जो तू पोसायडनकी आज्ञाका विरोध करनेकी हिम्मत करता है? क्या समुद्रके देवाधिदेवके हुक्मको तू रद्द करेगा?

आयोलस — पोलीडियोन.........

पोलीडियोन — क्या धरतीपर राजवंशका नाता तेरे छोटेसे दिमागको इतना ज्यादा फुला रहा है कि तू स्वर्गके देवोंकी बराबरी करना चाहता है? खबरदार, इससे पहले भी धूसर वेदीपर खड्गने राजाओंका रक्त कई बार बहाया है।

आयोलस — हमारा रक्त! बदतमीज! पुजारी! तू मुझे डराता है? जा, खूनसे लथपथ अपने घरोंदेमें घुस जा। मैं इस अजाने युवकको मुक्ति देता हूं।

पोलीडियोन — कप्तान, दोनोंको पकड़ लो। तुम घबराते हो क्या? वह तो राजकुमार पदसे खिलवाड़ कर रहा है, तुम उससे डरते हो? उसकी जगह काले पोसायडनके कोपसे डरो।

फीनियस — युवा आयोलस, समझदारीसे काम लो। पोलीडियोन, तुम अपने उत्साहमें राजवंशका मान रखना भूल रहे हो।

आयोलस — टायराके फीनियस, मुझे तेरे संरक्षणकी आवश्यकता नहीं। यह मेरा देश है। (तलवार निकालता है)

फीनियस — (पोलीडियोनको एक तरफ ले जाकर) इस समय इसे मार डालनेका अच्छा अवसर है क्योंकि उसने प्रजाके देवताके विरुद्ध तलवार खींची है। देवताका बदला लेनेवालेको कौन दोष देगा?

पोलीडियोन — सीरियाके सैनिको! इस धर्मोल्लंघनका भार अपने ऊपर लोगे? पोसायडनके लिये इनपर हमला बोल दो।

डेरेसिटस — पकड़ लेना पर हत्या न करना। कोई सीरियाके राजवंशका रक्त बहानेकी हिम्मत न करे।

सैनिक — पोसायडन, महान् पोसायडन!

परसियस –– आयोलस! अपनी तलवार म्यानमें कर लो। मैं अकेला ही इनके लिये काफी हूं।

(अपनी ढालपरसे कपड़ा हटाकर उसे सैनिकोंके सामने हिलाता है। वे आंखें ढककर पीछे लड़खड़ाते हैं।)

आयोलस –– हे भगवान्! कैसा अद्‌भुत सौंदर्य सीरियाको दीप्तिमान कर रहा है।

पोलीडियोन –– आश्चर्य! क्या यह कोई देवता है जो हमारा सामना कररहा है? हटो. हटो, पीछे हटो।

सीरियम –– मालिक! मालिक, सिरपर पांव रखकर भागो, टायराके राजा साहब दौड़िये, भागिये। भाग चालिये, वरना छलनी बना दिये जायेंगे। फासफरस-की ढाल लेकर परवाले जूते पहने जीयस धरतीपर उतर आयें हैं।

(वह भाग जाता है। सैनिक और डेरेसिटस जरा धीरे उसके पीछे जाते हैं।)

फीनियस –– तुम जो भी हो पर मुझे न हटा पाओगे। (तलवार खींचकर आगे बढ़ता है।) तेरे पास स्वर्गकी बिजलियाँ भी हैं क्या?

पोलीडियोन –– (उसे पीछे खींचते हुए) फीनियस, पीछे हटो! ये बिजलियां एथिनीकी आग बरसाती ढालसे निकल रही हैं। उसके विरुद्ध मामूली तलवार चलाना पागलपन है।

(फीनियसके साथ बाहर जाता है।)

आयोलस –– हे तेजस्वी प्रबल अमर! आयोलस तुझे प्रणाम करता है।

परसियस –– नहीं आयोलस! कभी-कभी महादेवी एथिनी अपना स्वर्गीय सामर्थ्य मेरे शरीर में भर देती हैं परंतु मैं सिर्फ क्षणजीवी मर्त्य ही हूं।

आयोलस –– क्या तुम मनुष्य ही हो? तब तो आयोलसके मित्र और प्रेमी बने रहो। मुझे लगता है कि तुम खास मेरे ही लिये किसी और देशसे आये हो।

परसियस –– ओ सीरियाके सुनहरे सूर्यकी संतान, आओ भुजाएं बढ़ाओ। मेरे बाहुपाशमें समा जाओ। तुम सूर्यके प्रकाश और फुसफुसाते झरनोंसे पोषित फूल जैसे हो।

आयोलस –– मुझे अपना नाम बताओ। किस भाग्यवान् प्रदेशमें तुमने पहली बार इस नीले नभको देखा था।

परसियस –– मैं आरगोलिसका हूँ। मुझे डेनीका पुत्र परसियस कहते हैं।

आयोलस –– परसियस, मेरे मित्र, मेरे साथ चलो। हमने तुम्हारे साथ पताका-की न्याई फहराते इस प्रफुल्ल उल्लासके अयोग्य, उग्र आतिथ्य किया है परंतु

कुछ देरमें तुम ममतापूर्ण सीरियाको देखोगे। मेरे पिता, राजा सीफियस तुम्हारा स्वागत करेंगे, मेरी मां एक माताकी ममतासे भरा अभिवादन करेगी और हमारी एण्ड्रोमीडाकी मुस्कानमें तुम्हें कल्पनातीत सुन्दर जगत्की झांकी मिलेगी।

परसियस — आयोलस, मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे पिताके महलमें चलकर जरूर खुश होता किंतु अभी मैं सीरियामें प्रकट होना नहीं चाहता। क्या यहां आसपास कोई छोटी-सी बस्ती नहीं है जिसके चारों ओर उपवनकी दीवार बनी हो, जहा धानके लहलहाते खेतोंमेंसे स्वच्छ कलकल करती जलधार बहती हो? मैं जैसे अपने प्यारे गांव सीरिपोसमें रहता था वैसे ही गांवके सीधे-सादे लोगों-में रहूंगा और मुर्गेकी बांगके साथ-साथ उठा करूंगा।

आयोलस — हमारी पहाड़ियोंके पास ऐसा ही एक गाँव है। वहाँ मेरी प्रिय सिडोनीके पास तुम आरामसे रह सकोगे। जबतक सीरियामें प्रकट न होना चाहो तबतक वहीं रहना, वहाँ मैं भी आसानीसे मिल सकूंगा।

परसियस — तो मुझे वहीं ले चलो। मुझे शांत अज्ञातवास, और झोंपड़े तथा सीधे-सादे लोगोंकी निर्दोष हंसी-मजाक और बातें सुननेकी लालसा है। उनके साथ रहकर मुझे आराम मिलेगा, शहरी तड़क-भड़क, छट-पटाती आवाजों-में या द्वेषके पचरंगी मुखौटेमें नहीं। मैं स्वच्छ मानवताके झरनोंसे अपनी प्यास बुझाऊंगा और वर्षासे भीगी पृथ्वीकी निर्दोष सौंधी गंधसे मनको तृप्त करुंगा। तब निष्कलंक अभिजात हृदयसे इस वीरप्रसविनी धरित्रीसे उठकर महान् साहसिक कार्योंके लिये तैयार रहूंगा।

(दोनों बाहर जाते हैं।)

दृश्य २

सीफियसका राजमहल। अंत:पुरका एक कमरा।

(प्रेक्सीलाकी ओर डायोमिडी आती है।)

डायोमिडी — प्रेक्सीला, ओ प्रेक्सीला!

प्रेक्सीला — अच्छा, तो तू वापस आ गयी, लंबी निकम्मी छोकरी! इतनी देर-तक कहाँ मटर-गश्ती कर रही थी। मैं तुझे कोड़े लगाते-लगाते थक गयी। तुझे एक लकड़ीकी टालपर सवेरेसे शामतक लकड़ी ढोनेका काम दिलवा दूंगी। तब तू समझेगी कि मजदूरी क्या होती है।

डायोमिडी — प्रेक्सीला, ओ प्रेक्सीला! खबरोंसे मेरा पेट फटा जा रहा है। जल्दी-से चीरा लगा दे।

प्रेक्सीला — बड़ी खुशीसे। (चाकू उठा, उसकी ओर बढ़ती है।)

डायोमिडी — (भागती हुई) अरी महामारी! सुन्दर उपमा सुनकर मजा लेना भी नहीं आता? मैंने तुम्हारे जैसा नीरस जीव कभी नहीं देखा। मैं सोचती हूं कि तुम्हारी आत्माका जन्म पतीली और झाडूकी शादीसे हुआ होगा।

प्रेक्सीला — चल, खबर सुना। अगर अच्छी होगी तो मैं तेरी मार रद्द कर दूंगी।

डायोमिडी — मैं आज समुद्र-किनारे गयी थी। सोच रही थी कि टकराती लहरों-के बीच समुद्र-काकोंको उड़ते-चिल्लाते देखूंगी और काली चट्टानों....

प्रेक्सीला — और पोसायडनने तुझे भी काक क्यों नहीं बना दिया? वे तेरे जन्म-जात साथी मालूम होते हैं। तु अच्छे-भले मनुष्य-शरीरकी जगह उन जैसा शरीर पाने योग्य है।

डायोमिडी — अच्छा, मालकिन, तब तो तुम समाचार जब यहाँतक उड़ता-उड़ता आये तभी सुनना। तबतक सारा शहर उसे चबा-चबाकर जुठार चुकेगा। (जाने लगती है)

प्रेक्सीला — ठहर, ठहर, अरी लंबी बदतमीज, खबर सुना।

डायोमिडी — अब तो मैं मर भी जाऊं तो भी न सुनाऊं।

प्रेक्सीला — अगर नहीं सुनायेगी तो कोड़े पड़ेंगे।

डायोमिडी — खैर, तुम्हारी चाबुक-देवी बड़ी परचेवाली है। मंदिरके नीचे अंत-रीपपर पूर्वकी एक नौका डूब गयी और दो केल्डियन बलि-वेदीके लिये जिन्दा पकड़े गये हैं।

प्रेक्सीला — यह तो सचमुच शानदार खबर है।

डायोमिडी — उनकी बलिके दिन खास उत्सव होगा।

प्रेक्सीला — उस दिन नोससकी एक बहुत बड़ी नौका हमारे किनारेपर चढ़ आयी थी तबसे ऐसा बड़ा दिन नहीं आया। उस दिन मंदिर रक्तमें स्नान कर रहा था और जैसे राजाका सिंहासन माणिकसे जगमगाता है वैसे ही वेदी भी मरे हुए मनुष्योंके हृदयोंसे लाल-लाल हो रही थी। उस साल पोसायडन प्रसन्न थे इसलिये फसल इतनी अच्छी हुई कि काटनेके लिये हमें पहाड़ियोंके उस पार-से आदमी बुलाने पड़े।

डायोमिडी — एक तीसरी बलि भी मिलती लेकिन राजकुमार आयोलसने उसको बचानेके लिये पोलीडियोनके सामने तलवार खींच ली।

प्रेक्सीला — आशा करती हूँ कि यह सब सच नहीं है।

डायोमिडी — मैंने खुद अपनी आंखोंसे देखा।

प्रेक्सीला — क्या वह पगला लड़का सत्यनाश चाहता है? अगर वह कुटिल पुजारी उसका सुकुमार सुन्दर सिर मांग ले तो स्वयं महाराजतक उसकी मदद न कर सकेंगे। अब देव ही उसको बचा सकेगा, वैसे भी वह पोलीडियोनके क्षुब्ध द्वेषके कारण खतरेमें था।

डायोमिडी — और फीनियस............

प्रेक्सीला — चुप, घोंघा वसंत चुप रह या धीरेसे बोल।

डायोमिडी — मेरी छोटीसी प्यारी रानी आ रही है। देखो, वसत ऋतुमें पंखी बड़ी सुकुमारतासे धीरे-धीरे चलता है और सारे वनके हृदयको जीत लेता है, मेरी रानी भी वैसे ही आ रही है। (एण्ड्रोमीडाका प्रवेश)

प्रेक्सीला — एण्ड्रोमीडा! आज देरतक सोयी।

एण्ड्रोमीडा — सचमुच? मेरे स्वप्नोंमें सूर्य उगा था। प्रेक्सीला, मैं जागनेसे डर रही थी कि कहीं उठते ही सब कुछ फिरसे अंधेरा ही अंधेरा न दीखे।

डायोमिडी — छोटीसी राजकुमारी, तुम्हारी आंखोंमें तो जरूर सूरज उगा है क्योंकि वे प्रकाशसे चमक रही हैं।

एण्ड्रोमीडा — डायोमिडी! मैंने स्वप्न देखा है, स्वप्न।

डायोमिडी — क्या देखा तुमने?

एण्ड्रोमीडा — मैंने देखा कि मेरे सूर्यका उदय हो रहा है। उसका चेहरा स्वर्गके स्वामी जीयस जैसा सुन्दर था और उसके पैरोंपर पंख लगे थे। वह मुझे देख-कर मुस्कुराया, डायोमिडी।

प्रेक्सीला — हां, सपने भी अजीब होते हैं। मैंने सपनोंमें तरह-तरहके दानव देखे हैं। अरे मैंने भी खुरवाले भालू और उड़ते शेर और न जाने कितने ढंगके दानव देखे हैं।

एण्ड्रोमीडा — मेरा सूर्य एक तेजस्वी देव था और दानवोंकी हत्या करनेके लिये आग-सी चमकती तलवार हाथमें लिये था।

डायोमिडी — छोटी सखी! शायद आज मैंने भी तुम्हारे सूर्यको देखा है।

एण्ड्रोमीडा — ना, तूने नहीं देखा। मैं किसी औरकी आंख उसपर न पड़ने दूंगी, सिर्फ मैं ही देखूंगी। वह मेरा है, केवल मेरा।

डायोमिडी — फिर भी आज सवेरे मैंने उसे तूफानी समुद्रके किनारे देखा था।

प्रेक्सीला — डायोमिडी, क्या मतलब है तुम्हारा?

डायोमिडी — (एण्ड्रोमीडासे) तुमनें अभीतक सुना नहीं? आज सबेरे एक नौका चट्टानोंसे टकराकर टूट गयी। सब आदमी डूब गये।

एण्ड्रोमीडा — हाय!

डायोमिडी — मेरी प्यारी सखी, वह अद्‌भुत दृश्य था। उस दृश्यको देखकर आतंक और विस्मयके मारे मेरा खून बहुत तेजीसे दौडने लगा। बड़ी-बड़ी चट्टानें उस भारी नौकाको चूर-चूर कर रही थीं और नौका मानो कराहती जाती थी। अट्टहास करती लहरोंसे आदमी चीखते-पुकारते गिरते जाते थे। पहाड़-सदृश लहरें उनका दम घोट रही थीं और क्रूर चट्टानें उनके चिथड़े कर-करके फिरसे निर्दय समुद्रके हवाले कर देती थी।

एण्ड्रोमीडा — और मत सुना। मैं जिसके बारेमें सुनतक नहीं सकती उसे देखनेका साहस तू कहांसे ले आयी? तू सुंना रही थी तो मुझे लगा मानों पहाड़ मेरे ही अंगोंके टुकड़े कर रहा हो और नमकीन पानीसे मेरा ही दम घुटा जा रहा हो।

डायोमिडी — हां, बड़ी दयनीय दशा थी, शायद उन्हें बहुत दर्द भी हुआ होगा, फिर सारा दृश्य था भी देखने लायक। तीव्र विजयोल्लासमें और गंभीर नादके साथ लहरें मरसिया पढ़ रही थीं। सारा ही दृश्य विशालकाय शांत देवोंकी-सी चट्टानोंके आगे धूमिल धूसर लहरोंका एक अनियंत्रित महान् अर्ध्य-सा लगता था।

एण्ड्रोमीडा — हाय बेचारे आदमी! बेचारे गरीब डूबनेवाले, कहींपर उनके छोटे-छोटे प्यारे बच्चे होंगे, तू उनको मरते कैसे देख सकी? मैं अगर देवता होती तो ऐसी क्रूर घटना होने ही न देती।

डायोमिडी — तुम उनके लिये क्यों रोती हो? वे सीरियन थोड़े ही थे।

प्रेक्सीला — अरे ना, ना, कहीं सिन्धु या अरबसे आये हुए गिटपिट करनेवाले जंगली ही तो थे। छिः बिटिया, तू इनके लिये बैठी-बैठी रो रही है?

एण्ड्रोमीडा — जब आयोलस पहाड़पर गिरकर घायल हुआ था तब तो तुमने मुझे रोनेसे न रोका था?

प्रेक्सीला — वह तुम्हारा भाई है। इसलिये वह रोना प्रेममय, कोमल और ठीक था।

एण्ड्रोमीडा — तो ये लोग भाई नहीं हैं क्या? उनकी भी तो बहनें होंगी। अगर मेरा भाई इतनी बुरी दशामें मरता तो मुझे जितना दुःख होता उतना ही उनको भी तो होगा।

प्रेक्सीला — उनके लिये उनकी बहनोंको रोने दे। अपने ही दुःख हमारे लिये काफी हैं। तुम छोटी और सुकुमार हो, तुम्हें अपना तो कुछ दुःख नहीं, बहुत हुआ

तो बस बचपनके जल्दी-जल्दी सूखनेवाले आंसू। इसीलिये तुम दूसरोंकी विपत्तिको अपने सिर ले लेती हो, जैसे हम दयनीय दु:खान्त नाटक देखकर उस झूठे दु:खपर सच्चे आंसू बहाते हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी और रोनेके लिये सच्चे कारण मिलेंगे तभी तुम इसे समझ सकोगी।

एण्ड्रोमीडा — मैं बड़ी नहीं होऊंगी। मुझे कुछ नहीं समझना। मैं सिर्फ यही जानती हूं कि मनुष्य हृदयहीन होते है और तुम्हारे देवता अत्यत क्रूर। मुझे उनसे घृणा है।

प्रेक्सीला — अरे चुप, चुप! तुम्हें पता नहीं तुम क्या बोल रही हो। ऐसी बातें नहीं करते। आ, डायोमिडी, उसे आगेका हाल सुना।

एण्ड्रोमीडा — (हाथोंसे कान बन्द करके) मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूंगी।

डायोमिडी — (उसके सामने घुटने टेककर हाथ उठाती हुई) लेकिन मैं तुम्हारे ओजस्वी सूर्यदेवकी बात कहूँगी।

एण्ड्रोमीडा — वह मेरा सूर्यदेव नहीं है, वरना उनको जरूर बचाता।

डायोमिडी — उसने बचा लिया।

एण्ड्रोमीडा — (उछलकर) तब मुझे उसकी बात जरूर बता।

डायोमिडी — अचानक, एक मनुष्य, एक आभास, एक ज्योतिका उदय हुआ। न जाने वह दिवा-स्वप्न कहांसे उतरा पर मुझे ऐसा लगा मानों नील गगनने उसी समय उसे सूर्य-प्रकाशमेंसे गढ़ा हो। उसका उज्जवल शरीर और चेहरा स्वर्गके देव जीयससे होड़ करनेकी कोशिश करता था और उसके पैरोंमें पंख लगे थे।

एण्ड्रोमीडा — हाँ, तब तो यही मेरा सूर्यदेव था।

डायोमिडी — उसने डूबते हुए दो अभागोंको उनके कपड़े पकड़कर उठा लिया और जमीनपर सही-सलामत ला रखा।

एण्ड्रोमीडा — हां, डायोमिडी, वही तो मेरे सूर्यदेव थे। मैंने उन्हें स्वप्नोंमें देखा है।

प्रेक्सीला — शायद वह पोसायडन ही था जो अपना हिस्सा लेने आया होगा। उसे डर होगा कि उसकी धूमिल लहरें सब कुछ हड़प न कर जायँ और वह यूं ही टापता रह जाय।

डायोमिडी — भाड़में जाय़ तुम्हारा निर्दय पोसाय्डन! इसका चेहरा तो उदारता और माधुर्यसे भरा था और पुरुषोचित दयासे दमक रहा था।

एण्ड्रोमीडा — हां, हां, मैं जानती हूं। उन दोनोंको बचाकर वह कहां ले गया?

डायोमिडी — उसी समय कुमार आयोलस और उनका दल उनपर टूट पड़ा और वे पकड़े गये।

एण्ड्रोमीडा — (गुस्सेमें) क्यों पकड़ा उन्होंने? किस अधिकारसे?

डायोमिडी — हमारे सीरियाके विधानके अनुसार काले पोसायडनकी वेदीपर मरनेके लिये।

एण्ड्रोमीडा — नहीं, वे नहीं मरेंगे। यह एक निष्ठुर हृदयहीन अन्याय है, और लज्जा-जनक है। आश्चर्य है कि मेरे भाईका भी इसमें हाथ है। मेरे सूर्यदेवने जिन्हें बचाया वे उनके हैं, तुम्हारे घृणास्पद देवोंके नहीं। वे उनके और मेरे हैं। मैं उनकी हत्या न होने दूंगी।

प्रेक्सीला — अरे, उनको मरना ही होगा और तुम्हें भी यह दृश्य देखना पड़ेगा, मेरी छोटी राज़-कन्या। अरे, कहां चली?

एण्ड्रोमीडा — मुझे जाने दो। जब तुम ऐसी बातें करती हो तो मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता।

प्रेक्सीला — किंतु, तुम सीरियाकी राजकन्या हो। तुम्हें ऐसे समारोहोंमें भाग लेना चाहिये।

एण्ड्रोमीडा — रानी बनकर ऐसी क्रूरता करनेकी जगह मैं तुम्हारी मेजसे गिरे टुकड़ोंपर पलनेवाली भिखारिन बनना पसंद करूंगी।

प्रेक्सीला — छोटीसी झगड़ालू मुंहफट, तुम जानती नहीं तुम क्या कह रही हो। एक भिखमंगेकी लड़की और तुम! तुम जो बिस्तरपर गुलाबकी पंखड़ी भी आ जाय तो इधर-उधर करवटें लेती हो! एक जरासे कठोर शब्दसे तुम्हारा दिल टूट जाता है और ऐसे रोती हो मानों दुनियामें आनंद जैसी चीज ही नहीं रही! तुम हमेशा नाटक ही करती रहती हो। अपने ही मनका रंगमंच बना-कर कोई न कोई संवाद बोलती हो। जैसे अभी बोल रही थी। तुम और एक भिखारिनकी बेटी! लो, सुनो, तुम्हारे ओजस्वी सूर्यदेवका क्या हुआ।

डायोमिडी — लोग उसे भी पकड़ लेते पर उसने तलवारसे उनका सामना किया और उसकी शांत हंसती आंखोंने उन्हें डरा दिया। तब पोलीडियोन आया, फीनियस भी आया और तेजस्वी देवको पकड़नेका हुक्म दिया। उसकी आभांसे प्रभा-वित होकर हमारे कुमारने नंगी तलवारसे उनके हमलेको रोका।

एण्ड्रोमीडा — मेरा आयोलस!

डायोमिडी — अचानक उस अनजाने आदमीकी उठी हुई ढाल बिजलियोंका तूफान बन गयी। उषातक उसके प्रकाशमें चौंधिया गयी। दूर-दूरके अंतरीप उसकी

ज्वालासे जगमगा उठे, लहरें प्रकाशमय हो गयीं और क्षितिजने भी प्रकाशमान होकर उत्तर दिया।

एण्ड्रोमीडा — (ताली बजाते हुए) ओह चमत्कार, ओह मेरा स्वप्न !

प्रेक्सीला — डायोमिडी, तुम तो किसी महान् देवके पराक्रम सुना रही हो।

डायोमिडी — हाँ, प्रेक्सीला, हमें तो वह एक दुव ही लग रहा था। सैनिक भयभीत होकर तितर-बितर हो गये। पोलीडियोन बिंधी हुई व्हेल मछलीकी तरह फुनफुनाता हुआ चला गया और फीनियसतक भाग गया।

एण्ड्रोमीडा — उसे किसीने मार नहीं डाला? काश, किसीने उसे खतम कर दिया होता।

प्रेक्सीला — यही है तुम्हारी दया !

एण्ड्रोमीडा — (गुस्सेमें) मैं शेरों, भेड़ियों और बिच्छुओंपर दया नहीं करती। मुझे सिर्फ दुर्बल मनुष्यों और पीड़ित जानवरोंपर दया आती है।

प्रेक्सीला — मेरा ख्याल था कि तुम सभी मनुष्यों और जीवित प्राणियोंसे प्यार करती हो।

एण्ड्रोमीडा — शायद मैं उससे उस तरह प्यार कर सकती जिस तरह अपने शिकारी कुत्ते या बागमें घूमते शेरके साथ करती हूं जो मुझे अपने केशरपर हाथ फेरने देता है। किंतु वह तो मेरी इच्छाके विरुद्ध मुझे अपनाना चाहता है और अपने पाशविक स्पर्शसे गंदा करना चाहता है इसलिये मेरा शरीर उससे घृणा करता है।

प्रेक्सीला — छिः, छिः, तुम बहुत ज्यादा सख्त बातें कहती हो। आखिर कबतक ऐसी बच्ची रहोगी?

डायोमिडी — हमारे आयोलस और तेजस्वी अनजाने व्यक्तियोंने एक दूसरेको बाहुपाशमें लिया और दोनों साथ-साथ समुद्र तट छोड़ गये।

एण्ड्रोमीडा — कहां है आयोलस, कहां है? आनेमें देर क्यों कर रहा है? मुझे उससे मिलना चाहिये। मुझे हजारों प्रश्न पूछने हैं।

(वह बाहर भाग जाती है)

डायोमिडी — मेरी छोटी सहेली एक विचित्र और विलक्षण लड़की है।

प्रेक्सीला — वह अपने माधुर्यसे सबको अभिभूत कर लेती है। कोई भी उसे प्यार किये बिना नहीं रह सकता। किंतु उसका मन विकृत और टेढ़ा-मेढ़ा है। वह स्वाभाविक नहीं है, उसकी कल्पना भी स्वस्थ नहीं है। उसका उद्दाम, अनियंत्रित कल्पना-जगत् हवा और लहरों जैसी बेलगाम भावनाओंसे और अस्वस्थ सहानुभूतियोंसे भरा है। कभी-कभी वह ऐसी अजीब बचकानी धर्मनिंदा करती

है कि मैं कांप उठती हूं। जो शाशवत नियम हमारा नियंत्रण करते हैं उनसे भी बढ़कर वह अपनी कल्पना दुनियापर लादना चाहती है। काश, उसकी मांने उसे ज्यादा सख्तीसे पाला होता। ऐसे तो वह बहुत मुश्किलमें पड़ जायगी।

डायोमिडी — ना, ना, ऐसा न कहो। सारे सीरियामें मैंने उसके जैसा बच्चा नहीं देखा, कोई उसके उज्जवल सौंदर्यकी बराबरी नहीं कर सकता। वह मुझे सूर्यकी ऊष्माभरे दिनों जैसी प्रिय लगती है, उन दिनों जैसी जब वसंत हवाको स्नेहसे दुलारता है। आह, यह रहा आयोलस।.

प्रेक्सीला — क्या वही है?

डायोमिडी — कप्तान बननेके बाद उसकी चाल-ढालमें एक नया रौब आ गया है। यैं उसीसे पहचानती हूँ।

(एण्ड्रोमीडा भागी-भागी आती है)

एण्ड्रोमीडा — मेरा भाई आ रहा है। मैंने उसको छतसे देखा है।

(आयोलसका प्रवेश। एण्ड्रोमीडा दौड़कर उससे लिपट जाती है।)

ओ आयोलस, तुम उसको मेरे पास लाये हो? मेरे सूर्यदेव कहाँ हैं?

आयोलस — स्वर्गमें, छोटी बहना!

एण्ड्रोमीडा — ना, मेरा मजाक मत उड़ाओ। मुझे अपने सूर्यदेव चाहिये। जिनका चेहरा महान् जीयस जैसा है और जिनके पैरोंपर पंख लगे हैं। हमारे कठोर समुद्र-तटसे ले जाकर तुम उनको कहाँ छोड़ आये?

आयोलस — तुम्हारा मतलब क्या है, एण्ड्रोमीडा?

डायोमिडी — किसी दैवी शक्तिने उसे समुद्र-तटपर तुम्हारे पास चमके हुए उज्जवल शक्तिमान् व्यक्तिका स्वप्न दिया है। राजकुमारी उसे ही अपना सूर्यदेव कहती है।

आयोलस — सच? मेरे हवामें झूमते गुलाब, एण्ड्रोमीडा! अगर सचमुच विधिनें ऐसा ही विधान रचा तो मुझे बहुत खुशी होगी।

एण्ड्रोमीडा — कहां हैं?

आयोलस — छोटी गुलाब-सी बहना! तुझे मालूम नहीं कि बड़े-बड़े देव एक अद्भुत क्षणके लिये धरतीपर उतरते हैं और फिर अदृश्य हो जाते हैं? चल, रो मत, वह सीरियाके लिये खो नहीं गया है।

एण्ड्रोमीडा — आयोलस, तुमने उन दो परदेसियोंको पकड़कर पुजारीके हवाले क्यों कर दिया? मेरे सूर्यदेवने उनको बचाया था। भैया, उन्हें मार डालने-

का तुम्हें क्या अधिकार है ?

आयोलस — छोटी, मैंने सिर्फ सिपाहीके धर्मका पालन किया। न चाहते हुए भी मुझे वह करना पड़ा, और इसका मुझे खेद है।

एण्ड्रोमीडा — अब तुम उनको बचाओगे ?

आयोलस — अब तो वे भयंकर पोसायडनकी संपत्ति हैं।

एण्ड्रोमीडा — उनका क्या होगा ?

आयोलस — वे भगवान्‌की वेदीके साथ बांध दिये जायंगे और उनके धड़कते हृदय उस भगवान्‌की भूख शांत करनेके लिये उनकी रक्तसे लथपथ छातीमेंसे नोचे जायेंगे। (एण्ड्रोमीडा अपनी पोशाकसे मुंह छिपाती है) उनके लिये मत रो। वे अपने भाग्यका लिखा पा रहे हैं। ये सब घटनाएं जगत्-नियन्ताकी व्यवस्थाका अंग हैं। वैसे ही जैसे, हैजा, हत्याएं, दुर्भिक्ष, आग और भूकंप आदि विपदाएं, जो हजारोंकी हत्या करती हुई हमारे सामनेसे गुजरती हैं। इनके लिये रोना न चाहिये, बल्कि हमें कृतज्ञ होना चाहिये कि हमारे प्रियजनोंको छोड़कर दूसरोंके सिर चुने गये हैं।

एण्ड्रोमीडा — तो तुम उन्हें नहीं बचाओगे ?

प्रेक्सीला — अरी अभागिन, ऐसा सोचना भी पाप है। छिः, अपनी सनकके लिये भाईकी हत्या करवायेगी ?

एण्ड्रोमीडा — तो तुम नहीं बचाओगे भैया ?

आयोलस — नहीं बच्ची, मैं बचा ही नहीं सकता।

एण्ड्रोमीडा — अच्छा, तब मैं बचाऊंगी। (वह बाहर चली जाती है)

आयोलस — यह क्या करेगी सचमुच ?

प्रेक्सीला — ऐसी अनोखी सनक उसके दिमागमें सारे समय चक्कर काटती रहती है।

आयोलस — मैं पोसायडनका कोप अपने सिर नहीं ले सकता।

प्रेक्सीला — भूल जाओ, वह भी सब भूल जायगी। ऐसी विचित्र कल्पनाएं उसके स्वर्ण-अलकोंमें कुछ देर घूम-फिरकर लापरवाहीसे विस्मृतिकी ओर उड़ जाती हैं।

(मीडासका प्रवेश)

आयोलस — मीडास, क्या है ?

मीडास — कुमार आयोलस ! महाराज आपको राजसभामें बुला रहे हैं।

आयोलस — अच्छा ? मीडास, पोसायडनका पुजारी भी है वहाँ ?

मीडास — हां, है और गुस्सेसे भरा हुआ है। (मीडास चला जाता है)

प्रेक्सीला –– हाय !

आयोलस –– डरो मत ! मेरे अंदर एक ऐसी शक्ति है जिसकी ये कठोर षड्यंत्री कल्पनातक नहीं कर सकते। लेकिन डायोमिडी, मेरी बहनको इसका पता न चले।

(वह चला जाता है)

प्रेक्सीला –– कौन जाने क्या हो, क्या न हो ? पुजारी खतरनाक है और हो सकता है कि पोसायडन भी कोपायमान हो ! चलो, हम जाकर बच्चीको इस खतरनाक धक्केसे बचायें।

(वे जाती हैं)

अंक २

दृश्य १

(सीफियसके महलका दरबार। सीफियस और केसियोपिया बैठे हैं।)

केसियोपिया —— सीफियस, अब क्या करोगे ?

सीफियस —— यह घटना बड़ी अमंगल है।

केसियोपिया —— लेकिन तुम करोगे क्या ? मुझे आशा है तुम मेरे आयोलसका सुन्दर सिर पुजारीके हवाले न कर दोगे। मैं आशा करती हूं तुम्हारा मतलब यह तो नहीं है।

सीफियस —— महान् देव पोसायडनका पुजारी सारे देशपर हुकूमत करता है क्योंकि जब हम खुले दिलसे बलि देकर उस ऊंची वेदीको रक्तसे स्नान कराते हैं तब हमारी फसल अच्छी होती है और महान् शक्तिशाली पोसायडन प्रसन्न होकर ऐसीरियाके हमलेसे हमारी सीमाकी रक्षा करते हैं।

केसियोपिया —— अपना खजाना खाली कर दो, उसे इतना सोना दो कि वह अघा जाय। हम चाहे भिखारी बन जायं पर आयोलसका बाल भी बांका न हो।

सीफियस —— मैंने इस विषयमें पहले ही सोचा है। मीडास ! (मीडासका प्रवेश) क्या पोलीडियोन अब भी प्रतीक्षा कर रहा है ?

मीडास —— हां, महाराज।

सीफियस —— उसको और टायराके फीनियसको बुलाओ (मीडास फिरसे बांहर जाता है।)

केसियोपिया —— टायराके राजकुमारसे कहो कि एण्ड्रोमीडाके प्यारे भाईको इस बर्बादीसे बचाये वरना उसे हमारी लड़की न मिलेगी !

सीफियस —— मुझे इस बातका भी ख्याल है, रानी !

(पोलीडियोन और फीनियसका प्रवेश)

विराजिये टायरा नरेश, पुजारी पोलीडियोन, आप भी अपनी खास कुरसी-पर बैठिये।

पोलीडियोन —— अच्छा, सीरियाके राजा, क्या मुझे न्याय मिलेगा ? क्या तू एक आबाद देशका राजा रहेगा ? या फिर मुझे सर्पकेशी, एक दृष्टिसे ही सबको

पत्थर बना देनेवाली, खून टपकाते हुए नारकीय चाबुकको हाथमें लिये, कोप-देवी एसीनिसको तेरे पीछे लगाना होगा ?

सीफियस — शांत रहिये, सीफियस अपने महान् सिंहासनसे हमेशा न्याय ही करता है और उससे कभी नहीं डिगता। आपको न्याय अवश्य मिलेगा।

पोलीडियोन — मुझे किसी रद्दीसे कंगाल याचककी तरह — जिसकी सारी कामनाएँ तुच्छ मुहरोंतक सीमित होती हैं — राजाओंके दरबारमें एड़ियां घिसनेकी आदत नहीं है। मैं पोसायडनका पुजारी हूं।

सीफियस — राजकुमारको तुम्हारे आरोपोंका जवाब देनेके लिये बुलाया गया है।

पोलीडियोन — जवाब ! सीरियाके सामने खुले आम किये गये अपराधको अस्वीकार करनेकी हिम्मत कर सकेगा वह ? अच्छा ही हुआ कि टायरा नरेश झूठका भंडा फोड़नेके लिये उपस्थित हैं।

केसियोपिया — उद्धत पुजारी, मेरे बच्चोंके मुँह कभी झूठसे कलंकित नहीं हुए और अब भी न होंगे, उसके मुँहसे हम सत्य ही सुनेंगे।

सीफियस — और अगर अपराध सिद्ध हो गया तो तावान भी अपराधकी गुरुताके अनुसार ही दिया जायगा।

पोलीडियोन — तावानकी बात ही कैसी ? महाराज, क्या तुम्हारा ख्याल है कि भयंकर पोसायडनके अपमानको चांदीके टुकड़ोंसे धोया जा सकेगा ? क्या धन उनके वैरभावको शांत कर सकेगा; क्या एक सूदखोरकी तराजूमें उनकी महत्ताकी कीमत आंकी जायगी ? इस पापका प्रायश्चित सिर्फ रक्त है।

केसियोपिया — हे भगवान् !

सीफियस — (घबराहटमें) मेरा सारा खजाना ले लो, सोना, चांदी, हीरे, जवाहर और अनमोल मणियां ले जाओ।

पोलीडियोन — देवताओंको घूस नहीं दी जा सकती, महाराज सीफियस !

केसियोपिया — (अलग) उसे मान-सम्मान दो, पदवी दो, श्रेष्ठाधिकार दो, जो मांगे दे दो मेरे स्वामी, बस मेरे बालकका सिर मेरी छातीपर सुरक्षित बना रहे।

सीफियस — अच्छा सुनो, तुम्हें क्या-क्या चाहिये ? श्रेष्ठाधिकार, ऐश्वर्य, रियासत ? तुम जहां भी चलो तुम्हारे आगे-आगे सैंकड़ों भालाधारी सैनिकोंकी हरावल चले ? मंदिरमें तुम्हारी और तुम्हारे देवकी सेवाके लिये श्यामवर्ण गुलाम और सुन्दर स्त्रियां हों ? वे सब तुम्हारे हो चुके। बड़े-बड़े भोजोंमें, शाही जुलूसमें तथा महान् राजसभाओंमें पोसायडनके अनुयायी राजाके भी आगे चलेंगे।

पोलीडियोन — मुझे घूस दे रहे हो तुम ? मैं यह सब पोसायडनके लिये स्वीकार करता हूं परन्तु अपनी मुख्य मांगको नहीं छोड़ता।

सीफियस — तुम्हें किस चीजसे संतोष होगा ?

पलोलीडियोन — पवित्र वेदीसे एक बलि छीन ली गयी है। उस क्षतिको पूरा करने-के लिये और एक बलि चाहिये।

सीफियस — मैं मिस्र और एसीरियापर चढ़ाई करके राजाओंको तुम्हारे सामने बलिके रूपमें डाल दूंगा।

पोलीडियोन — तेरी डींग खोखली है, जब पोसायडन ही तुमसे नाराज हैं तो मिस्र और शक्तिशाली एसीरियापर विजय कौन दिलवायेगा ?

सीफियस — सारे राज्यमें राजकुमारके बाद उत्तमसे उत्तम व्यक्तिको चुन लो। चाहे एकके बदलेमें अनेक सिर ले लो।

पोलीडियोन — तो क्या अपराधीके बदले निर्दोष मारे जायेंगे ? यही है तुम्हारा न्याय ? इस तरह तुम्हारा राज्य कैसे निभेगा ?

सीफियस — सुनती हो केसियोपिया, वह नहीं मानेगा। वह पत्थरका बना है।

पोलीडियोन — क्या मुझे और भी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ?

सीफियस — हे मीडास ! (मीडासका प्रवेश) अभीतक आयोलस नहीं आया ?

(मीडास जाता है)

केसियोपिया — (आवेशमें खड़ी होती हुई) पुजारी, लगता है कि तुम मेरे बच्चेका खून लेकर ही रहोगे। क्या अपने राजकुमारके बलिदानको छोड़कर और कोई चीज तुम्हें संतुष्ट न कर सकेगी ?

पोलीडियोन — पोसायडन राजकुमारको जानता है न भिखारीको। जो भी उसका सम्मान करता है उसे वह धन-वैभवसे भर देता है और जो उसके भयंकर कोप-को जगाता है उसे वह रसातलमें पहुँचा देता है।

केसियोपिया — सावधान ! तू मेरे बेटेको छू तक न सकेगा। राजाओंको तंग करनेसे पहले संभल जा, तू पुरोहिताई गर्वमें सीरियाके राज-परिवारको निर्वंश करना चाहता है, देवोंसे चली आयी इस संततिको खतम करना चाहता है ? क्या तू सोचता है कि हम इसे चुपचाप सह लेंगे ? अगर हमने उसे खोया तो फिर गंवानेके लिये बाकी ही क्या रहा ? मैं तुझे फिरसे चेतावनी देती हूं, एक रानी-को घोर निराशामें मत डाल, मैं कोई गरीब ढीले दिलकी किसान स्त्री नहीं हूं। मैं महान् केल्डियाकी संतान, एक राजकन्या हूं।

पोलीडियोन — (कुछ देर बाद) अगर मैं अपराधको क्षमा कर दूं तो तुम अपने

वचनके अनुसार सारा खजाना और सम्मान देनेको तैयार हो ?

सीफियस — वह सब तुम्हारा होगा। (केसियोपियाके कानमें कुछ कहनेके लिये मुड़ता है)

फीनियस — (अलग पोलीडियोनसे) तो क्या तुम मुझे अपने दुश्मनके रूपमें देखना पसंद करोगे ?

पोलीडियोन — रानीकी आंखोंमें कोपके अंगारे तो देखो। हमें कोई नया उपाय ढूँढ़ना पड़ेगा। यह तरीका सलामत नहीं है।

फीनियस — अपनी चिल्लपोंके बावजूद तू डरपोक है। एक औरतके सामने सहमनेसे पहले मुझसे डर।

पोलीडियोन — अच्छा, जैसी तुम्हारी मरजी। (आयोलसका प्रवेश)

आयोलस — पिताजी, आपने याद किया था ?

सीफियस — आयोलस, तुम्हारे ऊपर एक अभियोग लगाया जा रहा है, मुझे विश्वास तो नहीं हो रहा, परन्तु परिणामकी परवाह किये बिना सीफियसके पुत्रके अनुरूप सच-सच बता दो।

आयोलस — मेरे पिता, मैंने अच्छा या बुरा जो भी किया है उसे सारी दुनियाके सामने डंकेकी चोटपर स्वीकार करनेको तैयार हूं। यह आरोप क्या है ?

सीफियस — क्या आज सबेरे तूने पोसायडनकी वेदीसे बलिके एक आदमीको बचाया था ?

आयोलस — मैंने नहीं बचाया।

पोलीडियोन — कमबख्त लड़के, तू इन्कार करनेकी हिम्मत करता है ? महाराज, उसके कायर होठोंने असत्य भाषण किया है। टायराके राजा, अब आप बोलिये।

आयोलस — पहले मेरी बात सुन लो। छद्मवेशमें, पुजारीका मुखौटा पहने हुए कपटी, प्रपंची....

पोलीडियोन — महाराज, सुन लीजिये महाराज !

सीफियस — शांतिसे बोल, मैं उग्रताका निषेध करता हूं। क्या तू आरोपसे इन्कार करता है ?

आयोलस — वह जिन शब्दोंमें रखा गया है मैं उसका विरोध करता हूं।

फीनियस — सीरियाके नरेश, मैं अभीतक नहीं बोला और अब भी न बोलता परन्तु पवित्र सत्य, मेरी इच्छा न होते हुए भी, मुझे मुँह खोलनेके लिये बाधित करता है। मैं वहीं था और मैंने अपनी आंखोंसे इसे एक ध्वस्त जहाजके नाविकको अपनी तलवारके जोरसे बचाते हुए देखा था। काश, मैंने वह दृश्य न देखा होता !

आयोलस — टायराके राजा फीनियस, आप झूठ बोल रहे हैं।

केसियोपिया — हाय ! मेरे बेटे, अगर तुझे अपनी माँके लिये जरा भी दया है तो ऐसे आवेशसे मौतके मुँहमें न जा। शांतिसे आरोपका जवाब दे। अपने भाईको इस तरह नाराज न कर।

फीनियस — मैं नाराज नहीं हूं।

आयोलस — जिसे ये लोग पकड़ना चाहते थे वह कोई रोता-बिलखता उद्दाम समुद्रसे दण्डित नाविक न था। वह एक शांत देव या कोई यशस्वी वीर था। वह सीरिया-की सरहदपर किसी और ही रास्तेसे आया था, जल्दवाजीमें खींची गयी तलवारने या युद्धने उसे नहीं बचाया। उसने अपनी ढालको बड़े भयावने ढंगसे एक ही बार चमकाया था कि आक्रमण करनेवाले सौ-सौ भाले पीछे हट गये। और साथ ही टायरासे अभी-अभी आये यह वीरपुंगव भी ....और अपने राजाके सामने बहादुरीसे घुड़कियां दिखाता यह घमंडी पुजारी उस समय एक हांफता-कांपता विवर्ण कायर.....उसे अपने पोसायडनपर इतना ही विश्वास है, इतनी ही श्रद्धा है ?

पोलीडयोन — हो गयी तेरी बात ?

आयोलस — अभी नहीं। यह सच है कि मैंने तलवार खींची थी और यह भी सच है कि जरूरत होती तो मैं उसे देव या दानवसे भी बचाता।

पोलीडियोन — बस ! काफी है। उसने अपराध कबूल कर लिया। महाराज, फैसला कीजिये और इसे सज़ा सुनाइये। देखूँ आपका न्याय।

सीफियस — लेकिन यह तो इतना भयंकर अपराध न था।

पोलीडियोन — आहा महाराज, आपकी मंशा बदल रही है ? आप पृथ्वी और समुद्रपर हुकूमत करनेवाले देवकी जगह कपने पुत्रको चुनते हैं ? अपने सिंहासन-को मंदिरसे भी ऊँचा उठाना और देवोंको अपने पैरों तले रौंदना चाहते हैं ? मूढ़, मन्दमति, तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि एक ही भयंकर क्षणमें विकराल पोसायडन तुम्हारे वंशका नाश कर सकता है ? उसे एक पापीका सिर समर्पित कर दो जो वैसे भी न जी सकेगा, वह तुम्हें इससे अच्छे और बच्चे देगा। राजन्, दंड दो या पागल बनकर बरबाद हो जाओ।

आयोलस — पिताजी, अपने पुत्रके लिये नहीं किन्तु स्वमान-रक्षाके लिये इसका प्रतिरोध कीजिये। एक ऐसे पुजारीकी अनुमतिसे सारी पृथ्वीपर राज्य करने-की जगह मुकुट और जीवन खो देना अधिक अच्छा है।

पोलीडियोन — दंड दीजिये, महाराज ! मैं ज्यादा प्रतीक्षा नहीं कर सकता, अपना

फैसला सुनाइये।

सीफियस —— (लाचारीसे केसियोपियासे) क्या करूं अब ?

केसियोपिया —— टायराके महाराज, तो आप चुप्पी साधना पसन्द करते हैं, एक दर्शककी भांति देखकर खुश हो रहे हैं ? शायद आपने अपने विवाहका कहीं और इन्तजाम कर लिया है ?

फीनियस —— देवि ! आपने मेरे मौनको गलत समझा, वह तो सचमुच आपके सेवककी भांति इस विकट परिस्थितियोंमेंसे निकलनेका रास्ता ढूँढ़ रहा था। वह न्यायकी क्षति किये विना आपके बालकको कोपसे बचाना चाहता है।

केसियोपिया —— रास्ता वादीकी इच्छापर निर्भर है। काश, वह ईर्ष्या, द्वेष छोड़कर सिर्फ पोसायडनकी महिमा बढ़ानेकी कोशिश करता।

फीनियस —— कृत्यको तो सबने स्वीकार किया है। मतभेद है केवल कानून और व्यवहारके विषयमें। (पोलीडियोनसे) आप कहते हैं कि महान् पोसायडनकी वेदीपर एक स्थान खाली हो गया और उस क्षतिको पूरा करना चाहिये। इसीलिए आप अपराधी आयोलसका सिर मांगते हैं। वात न्यायसंगत है। उसने अपराध किया है और उसके सिरको इसका मूल्य चुकाना ही पड़ेगा। जिसने स्थानको रिक्त किया है उसीको रिक्तता भरनी चाहिये। पापीको खुली छूट देनेके लिये भगवान् निर्दोष बलिको नहीं स्वीकारेंगे।

केसियोपिया —— फीनियस ——

फीनियस —— किन्तु अगर खोया हुआ बलि वापस आ जाय तब आप आयोलसपर कोई अधिकार नहीं जमा सकते। क्योंकि तब भरनेके लिये कोई खाली स्थान न रहेगा।

पोलीडियोन —— महाराज ——

फीनियस —— उसकी साधारणसी गलतीको हरजाना लेकर आसानीसे माफ करके सोनेसे ढका जा सकेगा। आयोलस बस फरार बलिको हमारे सामने पेश कर दे।

आयोलस —— टायरा निवासी ——

फीनियस —— मैं भूला नहीं हूं। धीरज धरो। तुम कहना चाहते हो कि तुम्हारा रहस्यमय अतिथि न नाविक है, और न समुद्री रास्तेसे आया था इसलिये इस सर्वनाशी न्यायकी परिधिमें नहीं आता। अगर ऐसा है तो न तो तलवार और न फुर्तीली टाल-मटोलकी जरूरत है। न्याय ही इस प्रश्नपर विचार करेगा। उस महान् सिंहासन, जहाँ अकलुषित वेशमें तेरे पिता खुद न्यायकी मूर्ति बनकर बैठते हैं और प्रजाका न्याय करते हैं, क्या उस सिंहासनपर बैठे पिताके फैसलेका

डर लगता है ? उनके फैसलेकी शांतिसे प्रतीक्षा कर क्योंकि वे कभी गलती नहीं करते।

केसियोपिया — तुम बड़े योग्य सलाहकार हो और देशोंपर राज्य करने लायक हो।

सीफियस — तू हंस रहा है बेटा ? मैं सहमत हूं।

आयोलस — मैं बुद्धिमान लोगोंको अपनी ही सूक्ष्म-बुद्धिके जालमें अपने पांव फंसाते देखकर हंस रहा हूं। महाराज फीनियस, क्या आप ओलिम्पियाके महान् देव जीयसको पकड़कर उनकी बेड़ियां बनानेके लिये अपने देशके लुहारोंको बुलायेंगे ? पुजारी, पोलीडियोन, तुम क्या अपना अधिकार जमाकर ओजस्वी धनर्द्धर भगवान्, अपोलोपर मानवीय दुर्भाग्य लाद सकोगे ? अच्छी बात है। खतरा तुम्हारे सिर। मुझे तीन दिनका समय दो और मैं उन्हें यहां प्रस्तुत कर दूंगा।

सीफियस — क्यों पुजारी, संतोष हुआ ?

पोलीडियोन — लेकिन खबरदार, निश्चित समयसे एक दिन भी अधिक न करना वरना परिणाम अच्छा न होगा।

सीफियस — उठ, मेरी केसियोपिया, सब कुछ अच्छी तरह निपट गया। अब हमारे हृदय निरापद होकर जरा चैन ले सकते हैं।

(सीफियस और केसियोपिया दरबारसे चले जाते हैं)

आयोलस — पोसायडनके जल्लाद, अपनी छुरीकी धार तेज कर रखना। महाराज फीनियस, आभारी हूं और आपको झटपट बिना ब्याहे टायराकी ओर कूच करनेकी सलाह देता हूं। (वह चला जाता है)

पोलीडियोन — महाराज फीनियस, आपने क्या किया ? सब कुछ मिट्टीमें मिल गया।

फीनियस — क्यों पुजारीजी, क्या उस छोकरेकी धमकियोंसे डर गये ?

पोलीडियोन — आपने एक ओजस्वी भयंकर देवको बलिके लिये मांगा है। हम आसानीसे युवा आयोलसको मार सकते थे। जिसने सौ-सौ वीरोंके हृदयको अपनी ढालकी झालरसे ही दहला दिया था उसकी हत्या कर सकेंगे ?

फीनियस — पुजारी, तुम एक अंधविश्वासी मूर्ख हो। यह न मान बैठो कि देवता तलवार और पंखोंके साथ धरतीपर आते हैं या करघेसे बने क्षणभंगुर वस्त्र पहनकर हमारी मर्त्य आंखसे दीख सकनेवाले शरीर धारण करते हैं। यदि देवता हैं तो वे इसके विपरीत अदृश्य मार्गसे आते और अदृश्य आघात करते हैं। मुझे उनके विषयमें शंका है। मेरे मनमें अदृश्य शक्तियोंके लिये कोई

स्थान नहीं है। यह जगत् उनके हस्तक्षेपके विना ही प्रकृतिके नियमके अनुसार चलता रहता है।

पोलीडियोन — महाराज फीनियस, अमर देवोंपर संदेह न करो। उन्हें शंकाशील लोग पसन्द नहीं आते। तुमने मेरी तरह मंदिरके अंधेरेमें पूजा की होती, रातके प्रगाढ़ अंधकारमें चलते-फिरते भयावह आकार देखे होते, और आधी रातको जब समुद्र अंधकारके साथ अकेला होता है तब अपने-आप ही उठती भयप्रेरक ध्वनियाँ सुनी होतीं तो तुम शंका न करते। राजाओंसे क्रुद्ध होकर महान् देवोंने सैकड़ों वार जो असह्य उत्पात भेजे थे उन्हें याद करो।

फीनियस — अच्छा, इस धरतीसे दूर अपने अति उज्जवल ओलिम्पसमें वे भले ही खुशी-खुशी राज्य करते रहें पर मैं जो करना चाहता हूं उसमें दखल देनेके लिये नीचे न आयें। तुम्हारा ढालधारी, दो पांववाला, पंखदार शेर तो कोई देवता नहीं हैं। तुम खाहमखाह मुझे वहाँसे खींच लाये वरना मैं उसकी नाड़ियोंमें बहनेवाले खूनकी जांच करनेके लिये हाथभर फौलादसे उसकी आंतोंको टटोलता।

पोलीडियोन — तो राजन्, उसकी आग उगलती, बिजलियां चमकाती ढाल तथा पंखदार जूतोंका क्या अर्थ हैं?

फीनियस — उसकी ढाल? शायद तिरछी रोशनीका कोई यंत्र होगा और पंख...... शायद किसी यूनानीका कोई नया हवाई आविष्कार होगा। यूनानी बेजोड़ वैज्ञानिक, साहसी प्रयोगकर्ता और आविष्कारोंमें ही आनन्द लेनेवाले होते हैं। उनके लिये किसी चीजका आविष्कार करना असंभव नहीं है और यह व्यक्ति यूनानी है।

पोलीडियोन — अच्छा, यही सही, मान लिया कि वह साधारण मनुष्य ही है। लेकिन उसका खून बहानेसे लाभ क्या?

फीनियस — वाह भाई वाह! तुम हत्यासे हिचकिचाते हो! और उसके लिये कारण ढूँढते हो। क्या रक्त हमेशा रक्त नहीं है? मैं छोटी एण्ड्रोमीडाको ब्याहनेका अधिकार नहीं गंवाना चाहता। उसीके द्वारा सीरियापर अधिकार जमा सकता हूं। पुजारीजी, कुछ भाग्यपर छोड़ो, किन्तु उसके आगमनके लिये तैयार भी रहो और उसे भागनेसे पहले ही पकड़ लो। पुराना तरीका सबसे अच्छा है, जनता को भड़काइये और उसके स्पष्ट वक्ता, गरजनेवाले नेताकी खुशामद कीजिये। एक बार आयोलस खतम हो जाय तो सुन्दरी एण्ड्रोमीडाके अधिकारसे राजमुकुटको बचा लूँगा और उसे धारण करूंगा। पुजारीजी, अगर सब कुछ ठीक-ठीक चला तो आप ही सीरिया और मेरी टायराकी प्रजाके

एकमात्र महाधीश होंगे।

पोलीडियोन — महाराज फीनियस, सब ठीक ही होगा।

(वे जाते हैं)

दृश्य २

(महलके अन्तःपुरका एक कमरा)

एण्ड्रोमीडा, डायोमिडी और प्रेक्सीला

एण्ड्रोमीडा — तो मेरा भाई जिन्दा है?

प्रेक्सीला — हाँ, शायद टायरा-नरेशकी कृपासे।

डायोमिडी — हाँ उस भेडियेकी कृपासे जो बादमें उसे हड़पनेकी सोच रहा है।

प्रेक्सीला — छोकरी, किसी दिन जीभ कटवायेगी। जरा जवान संभालकर बोला कर।

डायोमिडी — ये राजा, ये राजनीतिज्ञ, ये बड़े-बड़े सरदार! ये ज्ञानी सब अंधे लगते हैं। कम-से-कम हम गुलामोंकी आंखें तो इन पारदर्शी चित्रोंके पीछे देख सकती हैं।

प्रेक्सीला — क्योंकि हम उस गरमा-गरम खेलसे अछूते, उसके स्वार्थ और भय तथा आवेगोंसे परे खड़े हैं।

एण्ड्रोमीडा — हाँ, वह भेड़िया है क्योंकि मैंने उसके दांत देखे हैं।

प्रेक्सीला — लेकिन मेरी प्यारी छोटी राजकन्या, तुम्हें उसीसे शादी करनी पड़ेगी।

एण्ड्रोमीडा — क्या? उन दांतोंसे क्षत-विक्षत होनेके लिये?

डायोमिडी — मेरा ख्याल है कि देवता इस शादीको न होने देंगे।

एण्ड्रोमीडा — मुझे पता नहीं कि देवता क्या करेंगे किन्तु विश्वास रखो मैं उसे न होने दूंगी।

प्रेक्सीला — छिः एण्ड्रोमीडा! तुम्हें माँ-बापकी आज्ञा माननी चाहिये। यह दुराग्रह ठीक नहीं है। आखिर, तुम बच्ची ही हो। तुम समझती हो कि तुम बड़े-बड़े राजाओंकी इच्छाका विरोध कर सकती हो। अच्छी बच्ची बनो और अपने पिताकी बात मान लो।

एण्ड्रोमीडा — अच्छा, प्रेक्सीला? अगर मेरे पिता मुझे चाकू लेकर अपने चेहरे-

पर घाव करनेको कहें, अंग-प्रत्यंग काटनेको कहें, आंखें फोड़नेको कहें तो यह सब भी मुझे करना होगा ?

प्रेक्सीला — अपने पागलपनमें कहाँ जा पहुँची ? तुम्हारे पिता ऐसा कभी न कहेंगे।

एण्ड्रोमीडा — क्योंकि इससे मुझे दर्द होगा ?

प्रेक्सीला — हाँ।

एण्ड्रोमीडा — लेकिन इस फीनियससे शादी करके मुझे और भी ज्यादा दर्द होगा।

प्रेक्सीला — अरे बाबा ! तू तो बालकी खाल निकालती है, अरी पंडित ! सुनहरी जुल्फोंवाली छोटी कूटनीतिज्ञ, जा अपने पिताके साथ तर्क-वितर्क कर। मैं तो तुझसे बाज आयी। (सीफियसका प्रवेश)

एण्ड्रोमीडा — पिताजी, मैं कबसे आपकी राह देख रही हूं।

सीफियस — क्या ? तुम ? मैं नहीं मानता। तू ? (प्यार करते हुए) मेरी गुलाबी सीरिया-निवासी, मेरी पांच बित्तेकी देवीजी ! टायराकी छोटी रानी ! हाँ, तू शायद गेंदसे खेल-खेलकर थक गयी है। भला तू और मेरी प्रतीक्षामें !

एण्ड्रोमीडा — हाँ, सचमुच मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। अच्छा, लो ये दो चुंबन।

सीफियस — अच्छा, अब मैं समझा,। अरी नाचती हुई पाजी। तू अपने चुंबनोंको यों ही नहीं बरसाती। नन्हीं सूम, मुझे इसकी क्या कीमत चुकानी पड़ेगी ? बोल, क्या चाहिये ? बोलती हुई टायराकी गुड़िया या एक मजबूत रेशमी परदार घोड़ा जो चांदकी सुनहरी थालीतक उड़ सके ?

एण्ड्रोमीडा — ऐसी बातें करोगे तो मैं चुम्बन नहीं दूंगी। अब मैं सयानी हो चुकी हूं और मैंने कभी ऐसी बेकार चीजें मांगी भी हैं ?

सीफियस — ओ हो, अब तू बड़ी सयानी हो गयी है ? तब शायद कोससे कोई बढ़िया वस्त्र चाहिये या रोयेंदार चप्पल, या चांदीका कमरबन्द ? नन्हीं राजनीतिज्ञ, मैं तुझे पहचानता हूं। सुनहरी वर्षाकी लहरोंको तू अपने सिरपर बालोंके रूपमें चीजें खरीदनेके लिये ही तो रखे है। इसीलिये अपने नन्हें गुलाबी होठोंमें मधु घोल रखा है। कह दे, कंजूस, सूदखोर, तुझे क्या दाम चाहिये ?

एण्ड्रोमीडा — मुझे — लेकिन पिताजी, आप मुझे सचमुच जो मागूं वह देंगे न ?

सीफियस — मैं तुझे सुखी करनेके लिये यह चमकता सूर्यतक खिलौना बनाकर दे सकता हूं, बेटी एण्ड्रोमीडा !

एण्ड्रोमीडा — पिताजी, आज जहाजकी दुर्घटनासे ध्वस्त दो बाबुल निवासी मुझे गुलामके रूपमें चाहियें।

सीफियस — ऐसी कुटिल डायन कभी देखी थी ? वही चीज मांगती है जो मैं नहीं

दे सकता।

एण्ड्रोमीडा — पिताजी, वे मुझे नहीं मिल सकते?

सीफियस — वे अब पोसायडनके हैं।

एण्ड्रोमीडा — ओह, तब आप मुझसे ज्यादा पोसायडनको प्यार करते हैं। वे उनको क्यों मिले?

सीफियस — छिः बच्ची! महाबली देव इस धरती, समुद्र और आकाशके स्वामी हैं और जो कुछ है, उन्हींका है। हम सिर्फ उनके सेवक हैं। किन्तु जो चीज एक बार उनके हाथोंमें चली जाती है वह पवित्र बन जाती है और जो उस शिव-निर्माल्यकी ओर लालचभरी आंख भी उठाता है वह देवोंकी दृष्टिमें पापी है और उनके भीषण कोपको जगाता है। एण्ड्रोमीडा, उन लोगोंको देवताकी वेदीपर रक्त बहाकर जान देनी होगी। फिरसे उनके विषयमें मत बोलना, वे देव-सर्मपित हैं।

एण्ड्रोमीडा — तो क्या आदमीको खानेवाला देवता होता है?

प्रेक्सीला — चुप भी रह पापी।

एण्ड्रोमीडा — पिताजी, हुक्म दीजिये कि प्रेक्सीलाको मेरे नाश्तेके लिये उबाल दिया जाय। मैं भी देवी बनूंगी।

सीफियस — प्रेक्सीला!

प्रेक्सीला — यह हमेशा ऐसी ही बातें करती रहती है। कभी-कभी इसकी बातोंसे बुखार-सा चढ़ आता है और शरीरमें कंपकंपी होती है।

सीफियस — भीषण देव, क्या आप मेरे परिवारका सर्वनाश करनेपर तुले हैं और इसलिये मेरे बच्चोंमें ऐसे अपराधोंकी जड़ लगा रहे हैं जिनसे आपके कोपको एक बहाना मिल जाय? एण्ड्रोमीडा, मेरी नन्हीं बच्ची, फिरसे इस तरह मत बोलना। मैं तुझे आज्ञा देता हूं, ऐसी बातें मनमें भी न लाना, महान् देवता मनुष्योंपर नियंत्रण रखनेवाले कानूनोंसे ऊपर हैं और उन्हें मर्त्य न्यायकी तराजू-में नहीं तौला जा सकता। पोसायडनकी इच्छा है कि ये आदमी उनकी वेदी-पर मरें। इस विषयमें कोई मीनमेख नहीं हो सकती।

एण्ड्रोमीडा — नहीं कैसे हो सकती, जरूर होगी, भले तुम्हारे देव ही भूखे रहें।

सीफियस — आश्चर्य है। बेटी, तैने सुना नहीं? आजसे तीसरे दिन ये आदमी मारे जायेंगे और उसी शुभ संध्याको फीनियससे तुम्हारा गठबंधन होगा और वह तुम्हें अपने घर टायरा ले जायगा (स्वगत) अगर गाज गिरनी ही है तो टायरापर गिरे।

एण्ड्रोमीडा — पिताजी, आप एक बात अच्छी तरह समझ लीजिये — मैं बाबुलके व्यापारियोंको मरने न दूंगी और मैं फीनियससे ब्याह न करूंगी।

सीफियस — ओह, तुम ब्याह नहीं करोगी? यह देखो, टायरा और सारी दुनियाँकी रानी, कैसी बागी है! यह नन्हीं-मुन्नी कैसी शानसे हुकुम चलाती है! यह पांच बित्तेकी छोकरी अपने सोने, जूही और गुलाबके मिश्रणका क्या लाभ उठाती है।

क्रांतिकारी, भला फीनियससे शादी क्यों नहीं करोगी? गद्दार?

एण्ड्रोमीडा — वह मुझे पसन्द नहीं है।

सीफियस — विद्रोही! अपनी पसन्दपर अंकुश रखो। यह जरूरी है कि सीरिया और टायरामें गठबंधन हो। और मेरी लाड़ली, तुम सीरियाकी बेटी हो।

एण्ड्रोमीडा — लेकिन पिताजी, अगर आप मुझे खिलौना देते हैं तो पूछ लेते हैं कि मुझे कौन-सा खिलौना पसन्द है, अगर कपड़े या फूलदान देते हैं तो मेरी राय मांगते हैं। क्या मुझे किसी भी तिकड़मी, क्रूर आंखोंवाले वरसे शादी करनी पड़ेगी जो मुझे पसन्द भी न हो?

सीफियस — तुझे नहीं पसन्द! तुझे पसन्द नहीं है! नादान बच्ची, क्या राजाओं-की नीति तेरी पसन्द-नापसन्दसे नियंत्रित होगी? यह विवाह नीतिके कारण, राजाओंकी नीतिके कारण जरूरी है और तेरी बिगड़ी हुई बचकानी पसन्दके लिये उसे बदला या बिगाड़ा नहीं जा सकता।

क्या बात है, तू नाराज लगती है? क्यों कलिके, तू त्यौतियां चढ़ा रही है, देख, अच्छी तरह सुन ले, विद्रोह करेगी तो मैं तुझे कोड़ोंसे पिटवाऊंगा।

एण्ड्रोमीडा — आपकी हिम्मत न चलेगी।

सीफियस — क्या मैं इतनी हिम्मत न करूंगा?

एण्ड्रोमीडा — हां, सचमुच, आप हिम्मत न करेंगे। और मैं भला आपसे डरती हूं!

सीफियस — तू बहुत बिगड़ गयी है!.....एकदम बिगड़ी हुई। तेरी माँने ही तुझे इतना बिगाड़ा है। जिद्दी सूर्यकिरण, बोल, तंग करनेवाली नटखट बच्ची! तुझे फीनियससे शादी करनी होगी।

एण्ड्रोमीडा — नहीं, पिताजी, मैं शादी नहीं करूंगी और अगर करनी ही पड़ी तो अपने ओजस्वी सूर्यदेवसे करूंगी। सारी दुनियामें और किसीसे नहीं।

सीफियस — तेरा सूर्यदेव! बस, इतना ही? मैं एक दूतको ओलिम्पस भेजकर वज्रपाणी जीयसको तेरे साथ शादी करनेके लिये न बुला लूँ? तेरे अन्दर महत्त्वाकांक्षा नहीं हैं?

प्रेक्सीला — नहीं, उसका यह मतलब नहीं है। वह उस ओजस्वी युवककी बात कर रही है जिसे आयोलसने बचाया है। जबसे उनकी बात सुनी है तबसे इसे और किसीकी बात नहीं सुहाती।

सीफियस — यह भड़कीला मसखरा है कौन? मेरे सीरियाको चकरघन्नीपर चढ़ाने के लिये कहांसे आ टपका है? उसीके कारण मेरे बेटेकी जिन्दगी खतरेमें है और उसीके कारण मेरी बेटी टायराके महाराजसे शादी नहीं करेगी। ओह, पोलीडियोनकी बात ठीक है। वह ज्यादा नुकसान कर सके उससे पहले ही उसे मार डालना चाहिये। एण्ड्रोमीडा, सुन ले, परसों, तू टायराके राजा फीनियससे शादी करेगी।

(जल्दीसे चले जाते हैं)

डायोमिडी — वाह! क्या बहादुरीभरा वाक्य था, मानो सावधानीसे पीछे हटते हुए बाण फेंका हो! विद्रोही बेटियोंसे काम बड़े तो पार्थीयनोंकी यह युद्धकला बड़े काम आती है।

प्रेक्सीला — एण्ड्रोमीडा, तू अपने पिताकी आज्ञा मानेगी न?

एण्ड्रोमीडा — तुम लोग मेरे सलाहकार नहीं हो। तुम बहुत ज्यादा वफादार सदाचारी और समझदार हो और नेकीके उफानमें मेरे साथ विश्वासघात करोगे। मेरे अन्दर कोई पूर्ण विकसित वस्तु है जिसे तुम लोग परिणामसे ही जान सकोगे। डायोमिडी, चल आ, मुझे मददकी जरूरत है, सलाहकी नहीं।

(वह जाती है)

प्रेक्सीला — अब इसका क्या मतलब है! हवामें उड़ते पत्तोंकी तरह उसकी सनकें भी अनन्त होती हैं। पर डायोमिडी, तू पता लगाकर मुझे बता देना।

डायोमिडी — मैं पता तो जरूर लगाऊँगी किन्तु तुम्हें बतानेके बारेमें वही करूंगी जो मेरी मरजी होगी और जैसा मेरी मालकिनको अच्छा लगेगा।

प्रेक्सीला — तुझपर कोड़े बरसेंगे।

डायोमिडी — धत्......(वह बाहर भाग जाती है)

प्रेक्सीला — बच्ची अपने-आप तो बिगड़ हीं चुकी है, अपने नौकरोंको भी बिगाड़ती है। उन्हें संभालना असंभव है। (वह बाहर जाती)

दृश्य ३

(सीरिया नदीके किनारे फलोंका बगीचा। एक झोंपड़ीका कोना पृष्ठ-

भूमिमें दिखायी देता है।)

सिडोनी — (गा रही है)

दिन है, दिन, दुख भूलो रे!
किरण-हिंडोरे पर चढ़कर
मस्तीके झूले झूलोरे!
दिन है, दिन, दुख भूलो रे!

बेंत और नरकट-निकुंजपर
सूरज चमक रहा है।
कैसी दिप-दिप विभा!
तेज पत्तोंपर दमक रहा है।
इस मीठे आतपकी मस्ती,
अरे कौन खोयेगा?
सारी रात पड़ी रोनेको,
अभी कौन रोयेगा?
दिन है, दिन-दुख भूलोरे!
किरण-हिंडोरेपर चढ़कर
मस्तीके झूले झूलो रे।

परसियस — हां, लता-मंडप और वेणुवन! और यह चमकीला सूर्य लहरोंसे चुपचाप बातें कर रहा है। और देख तो सिडोनी, वहां मछली सूर्यकिराणको पकड़नेके लिये कैसी उछल रही है! सिडोनी, फिर एक बार गा।

सिडोनी — (गाती है)

मूरख, अश्रु-बिन्दु बरसाकर
कहां तुझे जाना है?
डरकर अथवा आस लगाकर
तुझको क्या पाना है?
आशा, अश्रु और भय किसको,
कौन मोद देते हैं?
केवल आयी हुई खुशीकी

किरणें हर लेते हैं।
देख, देख पौ फटी, देख,
वह ऊषा चमक रही है।
कैसी भली किरण! दुनियां
खुशियोंमें दमक रही है।

परसियस — ओ सिडोनी, इस मधुर सूर्य-प्रकाशमें तुम! किन्तु तुम ज्यादा सुन्दर हो।

सिडोनी — तुम बिलकुल आयोलसकी तरह बोलते हो। देखो, यह लो, यह रहा तुम्हारा मुकुट। मैं उसे अपने ठीक स्थानपर रखे देती हूं।

परसियस — प्रिय, मुकुट भारी होते हैं। सूर्यका प्रकाश ही ज्यादा अच्छा था।

सिडोनी — भैया परसियस, तुम्हें यह प्रेमका हल्का-फुलका मुकुट पहनाती हूं।

परसियस — प्रेम! किन्तु प्रेम तो भारी होता है।

सिडोनी — ना, प्रेम हलका-फुलका है। मैं तुम्हें हलका प्रेम देती हूं क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करती हूं और तुम आयोलससे प्यार करते हो। तुम आयोलससे प्रेम रखते हो। इसलिये मैं तुम्हें प्यार करती हूं। आयोलस ही मेरी दुनिया है और तुम्हारी भी।

परसियस — एकमात्र आयोलसके लिये? सिडोनी, तुम सुखी हो कि इस तरह यहां लेटकर नदीके साथ सारे दिन प्रेम और प्रकाश तथा आयोलसके बारेमें कलकल करती रहती हो। काश, यह ऐसे ही चल पाता! किन्तु इस दुनियामें आंसू भी हैं और इन्हें कभी-न-कभी बहाना पड़ता है।

सिडोनी — ऐसा क्यों परसियस?

परसियस — सिडोनी, जब आयोलस सीरियामें राजा बन जायगा और तेरे पास नहीं आयगा तब तू क्या करेगी?

सिडोनी — उसमें क्या है? मैं खुद उसके पास चली जाऊँगी।

परसियस — और अगर वह तुझे पहचाने भी नहीं तो?

सिडोनी — तब रातका अंधकार होगा किन्तु अभी तो दिन है।

परसियस — आकाशसे चमकता तत्वज्ञान, किन्तु उसके पीछे आंसू छिपे हैं। यूनानी बाला, तू उस पारकी असीम, अगाध रातसे आंखे फेरकर अपनी छोटी उज्जवल संपूर्ण सृष्टिमें ही रहती है किन्तु मैंने चंद्रके शीतल प्रकाशके नीचे फैले दानवी हिम-प्रदेश और गोरगोनकी अंधियारी गुफाएं भी देखी हैं। और साहसकी जबरदस्त हवा मेरे चमकते परदार जूतोंको पहाड़ों और समुद्रोंपर उड़ाती

चली जाती है तथा मेरी तीक्ष्ण तलवार हरपी मेरे पास है।

सिडोनी — भैया परसियस, तुम्हारी तलवार? लेकिन मैंने उसे लाल गुलाबोंमें लोरी गाकर सुला दिया है और परदार जूते उसकी रखवाली कर रहे हैं। क्या सचमुच वे तुम्हें आकाशमें ऊपर उठाकर ले जा सकते हैं?

परसियस — हां, उठा सकते हैं सिडोनी।

सिडोनी — उस झोलेमें इतनी सावधानीसे क्या छिपा रखा है? मैं खोलकर देख लेती पर खोल न पायी।

परसियस — अच्छा ही हुआ। वरना, तेरे ये फड़कते अंग क्षणभरमें पत्थर बन जाते और ये कोमल जुल्फें कठोर और पथरीली बन जातीं। आह सिडोनी, तब तेरा उछलता हृदय आयोलसके चुंबनोंसे कभी न धड़कता।

सिडोनी — यह कैसा राक्षस है?

परसियस — वह रातके अंधेरेमें रहनेवाली गोरगोनका सिर है। उसका भीषण सौंदर्य व्यालरूपी अलकोंसे घिरा हुआ है। उसे देखते ही आदमी संगमरमर बन जाता है।

सिडोनी — उफ! ऐसी खतरनाक चीजें अपने पास क्यों रखते हो?

परसियस — क्या ऐसे लोग नहीं हैं जो जिन्दा रहनेकी अपेक्षा पत्थर बन जायं तो ज्यादा अच्छा हो?

सिडोनी — हां, हां, मेरे प्रियसे द्वेष रखनेवाला वह काले मंदिरका पुजारी। उसकी डरावनी त्यौरियोंको निर्दोष पत्थरमें जमा दो। (सुनती है) आयोलस आ रहा है। हरी घासमें उसके दबे पांवकी आहट पहचानती हूं। (आयोलसका प्रवेश)

आयोलस — परसियस, मेरे मित्र —

परसियस — तू तो मेरा मानव सूर्य है। आ, मुझपर अपनी ज्योति बिखेर। तेरा सुन्दर मुख मेरे लिये आनन्द-स्वरूप हो। गौर युवक, मेरी बांहें तुझे अपनेमें ले लें।

आयोलस — दोस्त, मैं तेरे नाम वारंट लाया हूं।

परसियस — अभियोग क्या है?

आयोलस — छुरीके नीचेसे भाग निकलनेका — यह ऋण चुकाना ही होगा। वे रक्तके अधिकारसे वंचित नहीं रहना चाहते। हृदयके कठोर हिसाबसे, मेरा या तुम्हारा खून लेकर, वे अपनी वेदीको विभूषित करके रहेंगे।

परसियस — तू अपने कोमल हृदयको वेदीमें बदल दे और मैं बिना हिचकिचायेअपना हृदय चढ़ा दूंगा, प्यारे आयोलस! यह हिसाब करनेवाला है कौन?

आयोलस — पोसायडनका कलमुँहा पुजारी, वह जिस काली, अंधेरी मांदमें रहता है वैसा ही क्षुब्ध और असन्तुष्ट है। वह आशा करता है कि धर्मके बहाने सारे सीरियाको हथिया सकेगा।

सिडोनी — परसियस, उसे काले पत्थरमें बदल दो न?

परसियस — आह, उसीके स्वभाव-सा कठोर और काला! मेरे आयोलस, जो तुझे नुकसान पहुँचाना चाहे उसका पत्थर-सा दिल भोले मानव शरीरकी अपेक्षा शिलामय अंगोंमें ज्यादा अच्छा लगेगा।

आयोलस — वह चोट करेगा और उसमें एक अजीब मजा लेगा। अगर वहाँ मेरी सूर्यकिरण-सी प्यारी बहन, मेरी एण्ड्रोमीडा हो तो वह उसकी कोमल शुभ्र छातीको भी इतने ही मजेसे चीरेगा मानों किसी गुलाम या खूनीकी छाती हो।

परसियस — एण्ड्रोमीडा! यह नाम हृदयमें मरमर ध्वनि पैदा करता है।

आयोलस — और सामर्थ्य तथा माधुर्यकी बातें सुनाता है। तुम्हें स्वयंको देव प्रमाणित करनेके लिये तीन दिन दिये गये हैं। अगर तुम न आये तो मेरी छातीको उसका कर्ज चुकाना होगा। उनका यही फरमान है।

सिडोनी — पत्थर, सबको पत्थर बना दो! सब, सबको हृदयहीन शिलामें बदल दो।

परसियस — तेरे पिता भी यही कहते हैं?

आयोलस — उनमें उस खतरनाक पुजारीका विरोध करनेकी हिम्मत नहीं है।

परसियस — आहा! हिम्मत नहीं! हां, ऐसे भी बाप होते हैं जिन्हें अपनी जिन्दगी सन्तानसे भी ज्यादा प्यारी होती है। धरतीने ऐसे लोग भी देखे हैं। एक बार आरगीवमें ऐसा बाप था।

आयोलस — महाराजको ज्यादा दोष मत दो।

सिडोनी — उसे पत्थरमें बदल दो न।

आयोलस — चुप सिडोनी! चुप रह।

सिडोनी — पत्थर, कठोर पत्थरमें!

आयोलस — ठहर, फाड़खानी, मैं तुझे गुलाबकी कंटीली झाड़ियोंसे पीटूँगा।

सिडोनी — अच्छा, वचन देते हो कि रक्तकी बूंदोंको चूम लोगे? तब तो मैं जान-बूझकर रोज चिढ़ाऊंगी।

आयोलस — प्यारी सिडोनी, प्रेमकी कंटीली झाड़ी घाव नहीं करती।

सिडोनी — हां, करती है परन्तु वे घाव दीखते नहीं।

आयोलस — परसियसका मुख कठोर होता जा रहा है।

परसियस — उठ, मुझे ले चल, यह मंदिर और पुजारी कहां हैं ?
आयोलस — इस समय मंदिर ?
परसियस — शुभस्य शीघ्रम्, उदात्त कार्यके लिये जितनी जल्दी की जाय थोड़ी है।
आयोलस — कौन-सा कार्य ?
परसियस — मैं बाबुलके व्यापारियोंको खूनियोंकी महफिलसे बचाऊंगा। उन्हें कर लेने दो चिल्ल-पों अपनी बलिके लिये।
आयोलस — इससे वे और भी बौखला उठेंगे।
परसियस — मैं उनके खूनी, मक्कारी भरे आवेगोंसे उबल पड़ा हूं। उन्हें अगर अपने भयंकर देवको अर्घ्य ही देना है तो कमसे कम उन भयानक धार्मिक विधियों-को गंभीरता और भलमनसाहतके साथ करें। लेकिन जब वे उसमें राजनीतिक आक्रोशको ले आते हैं और अपनी जंगली धार्मिक विधियोंको खूनका व्यापार बना लेते हैं तब न तो उनके मंदिरका न उनकी धार्मिक विधिका मान रखा जा सकता है। उन्हें बलि चाहिये ? वे अकेले परसियसको ही ले लें। मर्त्य मानवमें भी इतना सामर्थ्य और हिम्मत है, यह जानकर मुझे खुशी होगी।
आयोलस — परसियस, तुझे मनुष्योंसे डरनेकी जरूरत नहीं है, किन्तु पोसायडनका कोप जाग उठेगा। उसकी उंगलीका इशारा भी घातक होता है।
परसियस — मेरा क्रोध भी निरापद नहीं है।
आयोलस — लेकिन देवोंके आगे मनुष्यका क्रोध क्या कर सकेगा ?
परसियस — हम उन भयातुर व्यापारियोंसे बात करेंगे। तुम ठहरना, मैं अपनी तलवार हर्पी लिये आता हूं।
सिडोनी — और थैली परसियस ! प्यारी थैलीको न भूल जाना।

(परसियस झोंपड़ीकी ओर बाहर जाता है।)

आयोलस — मेरी रानी, मुझे तेरी आज्ञा है ?
सिडोनी — मुझे एक चुंबन देते जाओ ताकि तुम्हारी वापिसीतक उसीकी यादमें घंटे बिता सकूं।
आयोलस — (चूमते हुए) सिडोनी, क्या एकसे ही घंटे भर जायेंगे ?
सिडोनी — मैं ज्यादा मांगते डरती हूं। तुम बड़े कंजूस हो।
आयोलस — ऐ गुलाबी होंठोवाली लड़की ! तू मुझे बदनाम करती है। मेरे पास समय होता तो मनमाना दे-देकर तेरी नाकों दम कर देता, तब तेरी बात गलत हो जाती।
सिडोनी — जल्दी आना।

आयोलस — तेरे घने रात-से काले बालोंमें ही आज सूर्यास्त देखूंगा।

(परसियस वापस आता है)

परसियस — चलो।

आयोलस — मैं तैयार हूं।

सिडोनी — भइया, परसियस भइया, पत्थर, उन्हें हमेशाके लिये पत्थर बना देना।

(परसियस और आयौलस जाते हैं)

सिडोनी — गाती है :

"तुम्हें चाहिये हृदय हर्षका,
देह संगमरमरकी ?
या कि हर्षकी देह और
छाती कठोर पत्थरकी ?
दो विकल्प हैं, तुम्हें चाहिये दोनोंमेंसे कौन ?
अपने मनकी कहो बात, मत रहो द्विधामें मौन।"

"मैं जो हूं चाहता, तुम्हें वह
समझ नहीं आयगा।
देह कौन, है शिला कहां,
यह चुंबन बतलायेगा !
पत्थर था जो हृदय, प्रिये !
वह थर-थर कांप रहा है।
मधुरे ! प्रेम निरग्नि देहपर
चुंबन आंक रहा है।
किस गुलाबकी गरमायी
पत्ती-सी डोल रही हो ?
अब लज्जा है कहां ?
प्राणका पट क्यों खोल रही हो ?
छलनेका मैं दंड लाजको
अभी दिये देता हूं।
हृदय और तन, दोनोंको
लो, जब्त किये लेता हूं।"

"मगर संगमरमर यह गर्मी
कैसे सह पायेगा ?

बार-बार वह चुंबित होकर
नरम न हो जायगा ?"

अंक ३

दृश्य १

(अंतःपुरका एक कमरा। एण्ड्रोमीडा, डायोमिडी)

एण्ड्रोमीडा — सब कुछ तैयार है। चलो, चलें।

डायोमिडी — एण्ड्रोमीडा, मेरी नन्हीं, छोटी मालकिन, तुम्हें मैं प्यार करती हूं। उसी प्रेमकी सौगन्ध देकर विनती करती हूं कि यह करनेकी कोशिश मत करो। आह, यह कोई छोटी-मोटी प्यारी-सी हठ नहीं है जिसपर लोग मुस्कराकर, प्यारकी डांट पिलाते हैं। यह वड़ा भयंकर अपराध है, पाप है और खतरेसे भरा हुआ कुकृत्य है, वड़े-वड़े साहसी, फौलादी दिलवाले भी इसकी कल्पना-मात्रसे चकरा जायेंगे। तुम समझती हो कि तुम छोटी बच्ची हो, इसलिये तुम्हें माफ कर दिया जायगा। तुम राजकन्या हो इसलिये तुम्हारी ओर कोई उंगली न उठा सकेगा। तुम मानव हृदयको नहीं पहचानतीं, वे तुमपर दया करनेके लिये नहीं रुकेंगे, वे तुम्हें कभी न छोड़ेंगे। लोग गुस्सेसे पागल हो जायेंगे और हमारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। वे भूखे शेरकी तरह दहाड़ते हुए मार-पीट करेंगे और हमारा अंग-अंग नोच डालेंगे। जरासे दर्दसे ही तुम कराह उठती हो, तुम इस भयंकर मारकाटका सामना कर सकोगी?

एण्ड्रोमीडा — कामके ऐन मौकेपर इस तरह देरी न कर। तू पहले भी यह सब कह चुकी है।

डायोमिडी — तुम यह न कर सकोगी। मैं तुम्हारे साथ न जाऊँगी।

एण्ड्रोमीडा — अच्छा तो तू अपनी शपथ तोड़कर मुझे खतरेके सामने अकेला छोड़ देगी? मुझे यह काम अकेले ही करना होगा?

डायोमिडी — नन्हीं, मैं तुम्हारी मांसे कह दूंगी और तुम भी न जा सकोगी।

एण्ड्रोमीडा — तब आजसे तीसरे दिन मैं मर जाऊँगी।

डायोमिडी — क्या! तुम आत्महत्या करोगी? वह भी उन दो अजाने लोगोंके लिये जिन्हें तुमने देखातक नहीं? राजकुमारी, तब तो तुम कोई मानव-कन्या नहीं हो, हमारे मर्त्यलोकसे परेकी हो।

एण्ड्रोमीडा — तुम मुझे क्रुद्ध लोगोंकी मारकाट और चीरफाड़से डराती हो किन्तु

जब मेरे बन्धुओंकी दुःखभरी चीत्कारोंके बीच उनके धड़कते दिल छातीमेंसे फाड़कर निकाले जायेंगे तब क्या मैं भी नहीं चीरी जाऊँगी? मैं त्रास और दुःखसे तुम्हारे पैरोंके पास गिरकर प्राण त्याग दूँगी। तब तुम अपनी इस क्रूरता-के लिये पछताओगी। (वह रोती है)

डायोमिडी — हाय मुन्नी, चुप हो जा, मैं तेरे साथ चलूंगी। अगर मरना ही है तो मरूंगी।

एण्ड्रोमीडा — डायोमिडी, क्या मैंने तुझसे प्यार नहीं किया? क्या मैंने तेरी प्यारी गलतियोंको अपने सिरपर लेकर तेरे लिये कोड़े नहीं खाये? अपने बिस्तरसे रातको चोरी-चोरी उठकर तेरी छातीपर सिर रखकर नहीं सोयी? और प्यारसे तेरी छाती तथा हाथोंको नहीं चूमा? मैंने सोचा था कि तू भी मुझसे प्यार करती है किन्तु तुझे तो मेरे मरने-जीनेकी भी परवाह नहीं है।

डायोमिडी — बस, अब चुप भी रह, मैं तुझे प्यार करती हूं। तेरे साथ जरूर जाऊंगी। अगर तूने मरनेकी ठानी है तो अकेली न मरेगी। मैं यह आयी, जरा चप्पल पहन लूं। जाओ, नन्ही राजकुमारी, जाओ। मैं तुम्हारे साथ हूं, चलो।

(वह जाती है)

एण्ड्रोमीडा — ओह, डरसे थर-थर कांपते मेरे गरीब मानव बन्धुओ! तुम्हें इस क्षण भी अपने बंधे हुए असहाय शरीरमें भयंकर छुरी हृदयको टटोलती हुई प्रतीत होती होगी। उस भीषण भावीकी प्रतीक्षामें तुम्हें जूझना पड़ रहा है। एक-एक क्षणके विलम्बको क्षमा करना। इस बहरे आकाशमें अगर मनुष्यपर दया करनेवाला या उसकी सहायता करनेवाला कोई देव है तो हे देव, मेरी रक्षा करना! किन्तु अगर तुम सब पाषाणवत् निष्ठुर हो और दया करने-वालेको दंड देते हो तो मैं, एण्ड्रोमीडा, इस धरतीकी एक मामूली स्त्री होते हुए अपने बंधुओंकी मदद करूंगी। तब, अगर सजा देनी हो तो दे देना। तुम्हें मुझे हृदय देना ही न था, दिया है तो अब उसे रोकना असंभव है।

(वह जाने लगती है, एथिनी प्रकट होती है।)

एण्ड्रोमीडा — यह प्रकाश क्या है, यह तेज कैसा है? विद्युत्में बसी हुई शुभ्र सुन्दर संगमरमरी मुखवाली, तुम कौन हो, मेरा हृदय आनन्दके मारे मूर्छित हुआ जाता है, मेरा शरीर कांपता है। असह्य उल्लास मेरी नाड़ियोंमें धधक रहा है। तेरे सौंदर्यसे मैं पूरी तरह अभिभूत हूं और उसके नीचे दबी जा रही हूं।

एथिनी — मैं एथिनी हूं।

एण्ड्रोमीडा — आप एक देवी हैं न? हम सुदूर सीरियामें भी आपका नाम सुनते

हैं।

एथिनी — मैं वही हूं जो मानवजातिकी मदद करती है और संघर्षमें जूझते लोगों-पर करुणा करती है।

एण्ड्रोमीडा — (दंडवत् प्रणाम करती हुई) मुझे धोखा न दो! मैं तुम्हारे चरण चूम लूंगी। आह कैसा आनन्द है! तुम हो! सचमुच तुम हो!

एथिनी — मेरी सेविका, अपना सिर उठाओ।

एण्ड्रोमीडा — तू भी तो है! सिर्फ शून्य आकाश और निष्ठुर विधि-विधान ही नहीं है।

एथिनी — केसियोपियाकी पुत्री, खड़ी हो जा। क्या तू बाबुलवासियोंकी मदद करेगी? वे मेरे मर्त्य बालक हैं जिन्हें मैं प्यार करती हूं।

एण्ड्रोमीडा — मैं उनकी मदद करके स्वयं अपनी ही मदद करती हूं।

एथिनी — एकमात्र तुझे ही मैंने यह ज्ञान दिया है, ओ कुमारी! ओ एण्ड्रोमीडा, छोटी बालिकाके अंदर धड़कते हुए स्त्रीके विशाल और उदार हृदयके द्वारा तूने उसे पाया है। किन्तु क्या तू जानती है कि इसका पुरस्कार विश्वासघात और भीषण घृणाके रूपमें मिलेगा? देव और मानव कोपमें इकट्ठे होकर गाली-गलौज देते हुए तुझे यातना देंगे और मौतके घाट उतारेंगे?

एण्ड्रोमीडा — हृदयमें दयाके कारण जो संताप हो रहा है उसे शीतल करना और शांति पाना ही मेरा पुरस्कार होगा और अगर मर भी गयी तो ओह, फिर भी शांतिसे रहूंगी।

एथिनी — तो तुझे डर नहीं लगता? बेटी, वे तुझे उन समुद्री दानवोंके लिये फेंक देंगे जो तेरे अंग-अंगको चीरने-फाड़नेके लिये समुद्रमेंसे निकलेंगे।

एण्ड्रोमीडा — उस पार भी मेरा तिरस्कार होगा क्या? परलोकमें भी मुझे घृणा मिलेगी?

एथिनी — शायद।

एण्ड्रोमीडा — तुम तो मुझसे प्रेम करोगी?

एथिनी — तू मेरी ही संतान है।

एण्ड्रोमीडा — मां, ओ एथिनी, मुझे इजाजत दो। वे यातनाओंकी कल्पनामें तड़प रहे हैं।

एथिनी — जा, बेटी, मैं अदृश्य होकर तेरे पास रहूंगी।

(देवी अदृश्य हो जाती है। एण्ड्रोमीडा हाथ जोड़े आंखें फाड़कर, मानों अनंतमें ताकती रहती है।)

(डायोमिडीका प्रवे)

डायोमिडी — तुम अभीतक गयी नहीं? यह क्या है राजकुमारी? तुम्हारे चारों ओर यह कैसी रोशनी है? एण्ड्रोमीडा, तुम कितनी बदल गयी हो?

एण्ड्रोमीडा — डायोमिडी, चलो, चलें।

(वे बाहर जाती हैं)

दृश्य २

(पोसायडनके मंदिरमें सीरियस)

सिरीयस — मैं तुझसे बाज आया नरभक्षक पोसायडन, मनुष्यकी जान लेनेवाले, नौकाओंको ध्वस्त करनेवाले, धरतीको कंपानेवाले समुद्रोंके स्वामी! ऐसी निष्ठावान् सेवाका ऐसा भद्दा पुरस्कार कभी न मिला होगा। इतने वर्षोंमें एक दरहम या आब्यूल (यूनानके दो सिक्के) तो क्या, सांत्वनाके लिये एक खोटा सिक्कातक नहीं। और तूने मुझे आशा दिलाकर मेरा मजाक उड़ाया है। राजकुमारने वचन दिया है कि मैं जो भी खोज लूं वह मेरा हो जायगा, और तू मुझे दो फटेहाल, मुंहताज बाबुलनिवासी देकर टरका रहा है। क्या तू लोभी पेटू बनकर उन खजानोंको जो सचमुच मेरे होने चाहियें जोर-शोरसे गटक जाता है और अपने-आपको नको-नक भरकर अपनी सौ-सौ आवाजोंसे मेरा मजाक उड़ाते हुए हंसता और मेरा तिरस्कार करता है? क्या मैं कोई स्पंज हूं जो इतने सारे अपमानोंको चुपचाप सोखता चला जाऊँ? ना, मैं साधारण झंझार हूं, सब कुछ नहीं पी सकता। पोसायडन, मैं तेरे खजानेमें सेंध लगाकर भाग जाऊँगा। अपने समुद्री दानवोंको मेरे पीछे लगानेका विचार मत करना क्योंकि मैं लेबनानकी पहाड़ीपर रहूंगा। जब तेरे दानव मेरा पीछा करेंगे तब फुफकारेंगे, दांत पीसेंगे और हांफेंगे और चकराये हुए खांसते-खांसते बीमार होकर तेरे पास लौटेंगे।

(वह बोल रहा है, उसी समय आयोलस और परसियसका प्रवेश)

आयोलस — क्यों, सिरीयस, भाग जायगा क्या? मेरी आज्ञा माने तो मैं तुझे यहां-से उड़ जानेके लिये सोना दे दूंगा।

सिरीयस — हाय, मेरा रहस्य खुल गया। मेरा सर्वनाश हो गया। मैं मारा जाऊँगा। मेरी आंतें खींची जायेंगी।

आयोलस — सिरीयस, शांत हो, अरे मूर्ख, मैं तेरी मदद करने आया हूं।

सिरीयस — सचमुच ! तुम्हें देवता बना दिया गया है, तभी तुम आदमीके मनको पढ़ लेते हो। किन्तु बूढ़े बाबा ज़ीयस तुम्हारे नये-नये देवत्वके लिये चोरोंकी मदद करने और भगोड़ोंको उड़ानेके सिवा और कोई अच्छा काम न ढूँढ़ सके ? भगवान् आयोलस, क्या तुम सचमुच मेरी सहायता करोगे ? मैं तुम्हारे रक्षणमें चोरी कर सकता हूं ? तो पोसायडनकी संपत्ति हथियाकर भाग जाऊँ ?

आयोलस — चोरी मत कर, तेरे पास अपनी आजादी, खेत और गुलाम तथा गाय-बैल खरीदनेके लिये काफी सोना हो जायगा।

सिरीयस — राजकुमार, क्या आपने दान देनेका व्रत लिया है ? या मौत सिरपर आ गयी है ? इसलिये योग्य बेईमानोंको अपनी मालमत्ता और पशुधन बांट दोगे ? मेरा मजाक न करो, अब अगर तुमने फिरसे मेरी आशाएँ जगाकर उन्हें तोड़ दिया तो मेरे पास अपने-आपको सूलीपर लटका देनेके सिवा कोई चारा न रहेगा।

आयोलस — मैं तुझे बना नहीं रहा। तेरे पास ठसाठस धन हो जायगा।

सिरीयस — बोलो, क्या करना होगा ? मैं खेतों और आजादीके लिये कान काटकर देनेको तैयार हूं।

परसियस — इस गुलामको तुम इतनी रिश्वत क्यों दे रहे हो ? मेरी तलवारके झटकेसे वह बंधन कट जायगा।

आयोलस — मैं घोर देवताके मंदिरमें जबरदस्ती करते हुए सकुचाता हूं।

सिरीयस — आह, जीयस ! अपने पंख और फास्फोरसको लिये तुम भी मौजूद हो ? मेरे अच्छे प्यारे जीयस, मैं हाथ जोड़ता हूं, मेरी कमाईके आड़े न आओ। इतने ईर्ष्यालु नीतिवान् न बनो, इतने घिनौने ढंगसे बचतकी न सोचो। अच्छे जीयस, तुझे इन पैरोंपर लगे पंखोंकी कसम है।

आयोलस — सिरीयस, कसाई पोलीडियोनकी छुरीकी प्रतीक्षामें रोते-कलपते उन अभागे कैदियोंको यहां ला सकेगा ? हम उनसे बात करना चाहते हैं, बोल, लायेगा तू ?

सिरीयस — मैं लाऊंगा ? लाऊंगा ? अरे, मैं उस तंगदिल खूंखार, जहाजोंको निगलनेवाले बूढ़ेका कुछ भी नुकसान करनेके लिये तैयार हूं। मैं तो मुफ्तमें तैयार हूं, फिर भला इतना सोना मिलनेपर न करूंगा ?

आयोलस — और अपनी आंखे बंद रखनी होंगी।

सिरीयस — आंखें ही क्यों, मुंह, नाक और कानतक बन्द रखूंगा और इसके लिये

एक पैसा भी ज्यादा न माँगूंगा

आयोलस — तुझे डर नहीं लगता ?

सिरीयस — ओहो, उस नीले बालवाले बूढ़े हौए से ? इस मंदिरमें अठारह वर्षसे हूं किंतु मैंने उसके हाथीदांत और नीलमणि छोड़कर कुछ नहीं देखा। अब तो मुझे लगता है कि शायद वह पानीके बाहर सांस नहीं ले सकता। निश्चय ही वह एक तरहकी मछली है और शायद पूँछके बल चलता होगा।

परसियस — अच्छा, अच्छा, बस कर, जा, बाबुलके कैदियोंको ले आ।

सिरीयस — मैं चला, जीयस, मैं अभी दौड़ा जाता लेकिन तुम पोलीडियोनकी अनचाही दबे पांव वापसीके लिये अपनी फास्फोरस जलती रखना।

(वह दौड़ा जाता है।)

परसियस — हे मनुष्यके सांचेमें ढली, वेदीकी ओर घूरती हुई विकराल शांत मूर्ति, हे घोर पोसायडन! सचमुच क्या तू वही देवता है जो अपनी एक उंगलीसे सागरको शांत कर सकता है ? और जब तेरी इच्छा हो तो अपनी एक फूँकसे सारे समुद्रोंको क्षुब्ध कर देता है ? महाराज, तुम इस प्रजाकी हिंसापूर्ण और रक्तरंजित कल्पना नहीं हो क्या ? क्या तुम रक्तके स्वप्न देखनेवाली किसी आत्माकी छाया नहीं हो जिसने इस अंधकारपूर्ण रूपको धारण किया है ? अगर तुम पोसायडन हो, क्रोनोसके पुत्र हो तो मैं परसियस भी क्रोनोसका पौत्र हूं और मेरी आत्मामें देवी एथिनी अपनी बिजलियोंके साथ घूम रही है।

आयोलस — मुझे घिसटती हुई जंजीरोंकी आवाज सुनायी देती है।

(सीरियस टिरेनस और स्मरडसके साथ वापस आता है।)

परसियस — स्मरडस और टिरेनस, हम फिरसे एक बार मिल रहे हैं।

स्मरडस — बचाओ, मुझे अब भी बचा लो।

परसियस — अगर तू बचाने लायक है तो शायद बचा भी लूँ।

स्मरडस — तुझे सोना मिलेगा। मैं बचाने लायक हूं। तेरी झोलीमें बाबुलका सारा धन भर दूंगा।

परसियस — आतंकने तुझे पागल बना दिया है क्या ? बकवास मत कर ! टिरेनस तेरी आंखें शांत हैं।

टिरेनस — मैंने इस दुर्भाग्यके साथ समझौता कर लिया है लेकिन दुःख भी क्यों मानूं ? विधाताने मेरे साथ उदारता बरती है। मैं तीन बार जहाजकी दुर्घटनामें फंसा, दो बार रेगिस्तानमें खो गया, जान-माल बचानेके लिये जंगली जातियोंके साथ लड़ते हुए छः बार घायल हुआ। मैंने राजाओंसे भी बढ़कर धन लुटाया है।

बहुत बार धन-ऐश्वर्य गंवाया और फिरसे प्राप्त किया है। राजा मेरे कर्जदार रहे हैं। मेरे अपार धनमेंसे एक छोटी-सी राशि न पाकर कइयोंको राज्यसे हाथ धोने पड़े हैं, और मेरे वैभवका एक भाग पाकर नये राज्य जीते गये हैं। अब भाग्य मुझे यह करुण किंतु गौरववान् मौत दे रहा है। मैं एक देवताका भोजन बनूँगा। यह ठीक है, मुझे संताप नहीं है।

परसियस — किन्तु, टिरेनस, क्या ये विचार प्रेतलोककी चिरकालीन ठण्ड सहनेमें सहायता देंगे? इस वैभवभरे जीवनके उच्छ्वासोंकी स्मृति उस असीम मौनमें सांत्वना दे सकेगी?

टिरेनस — लेकिन इससे परे और जिन्दगियां भी तो हैं। और जबतक हरी-भरी धरती हमें फिरसे न बुलाये तबतक हम हौले-हौले आकाशमें विचरते रहेंगे।

परसियस — (तलवारके स्पर्शसे उसकी जजीरें काटते हुए) और थोड़ी देर इस हरी-भरी धरतीपर अपनी निश्छल इच्छाओंको पूरा कर, हे व्यापारी! सूर्यका प्रकाश तुझे खोना नहीं चाहेगा।

स्मरडस — हे ओजस्वी त्राता कुमार! ओ तेजस्वी विभूति! मैं फिरसे जी उठा!

परसियस — स्मरडस, तू जीवित तो है, लेकिन जंजीरोंमें जकड़ा हुआ।

स्मरडस — किन्तु तेरी अच्छी तलवार मेरे बंधनोंको शीघ्र ही काट देगी।

परसियस — अच्छा, तो तू मुझे बाबुलके सारे खजानोंका धन पुरस्कारमें देगा न?

स्मरडस — ज्यादा, उससे बहुत ज्यादा!

परसियस — लेकिन उस धनको लेनेके लिये तुझे बाबुल जाना पड़ेगा तब मेरे पैसेकी जमानत? तेरा क्या भरोसा?

स्मरडस — इस अच्छे टिरेनसको यहां रखना, वह मेरा भाई जैसा ही है। मैं वापस आऊंगा और तुम्हें सोना दूंगा, बहुत सारा सोना।

परसियस — तुम उसे यहां छोड़ जाओगे? इतने खतरेमें? वह क्रूर पोसायडनका कोपभोजन होगा और छुरियां उसे ढूँढ़ती रहेंगी।

स्मरडस — हे युवक, ओजस्वी, बलिष्ठ युवक, जब वह तेरे साथ होगा तब भला क्या खतरा हो सकता है?

परसियस — तब तो तुम ही मेरे साथ रहो और वह केल्डिया जाकर तुम्हारे लिये मुक्ति-धन ले आयगा।

स्मरडस — यहां? यहां? हे भगवान्! वे मुझे फिरसे पकड़ लेंगे और मेरे हृदयको चीर निकालेंगे। प्यारे युवक, मुझे जाने दे, मुझे जाने दे, मैं तुझे दुगना सोना दूंगा।

परसियस — घिनौने, भयोंके घिनौने पिटारे! तेरी जैसी कंगाल आत्माको बचानेके लिये मैं जोखिम न उठाऊंगा, और न इस घाटेके सौदेमें अपनी बाजी लगाऊंगा।

स्मरडस — हाय, मजाक मत करो। मौत और आतंकके साथ मजाक करना अच्छा नहीं होता।

परसियस — मैं मजाक नहीं कर रहा।

स्मरडस —हे भगवान्, नहीं, नहीं, तुम मजाक ही कर रहे हो।

डायोमिडी — (बाहरसे) सिरीयस!

सिरीयस — (कूदता हुआ) कौन? कौन? कौन?

आयोलस — किसी स्त्रीकी आवाज लगती है न? चलो, अंधेरेमें छिप जायें! आकस्मिक हमलेके लिये हम तलवारें तैयार रखें। इस ओर टिरेनस।

डायोमिडी — सिरीयस! कहां हो सिरीयस? मैं हूं।

सिरीयस — राजमहलकी छोटी बांदी मुंहजली डायोमिडी है, उसे महामारी उठा ले। मुझे कितना डरा दिया। दिल अभीतक धड़क रहा है!

आयोलस — महाजन, खबरदार! हमारी बात न करना, नहीं तो अपनी मौत समझ ले।

(आयोलस, परसियस, टिरेनस मंदिरके अंधेरे भागमें चले जाते हैं। एण्ड्रोमीडा और डायोमिडीका प्रवेश)

सिरीयस — राजकुमारी एण्ड्रोमीडा!

परसियस — (स्वगत) एण्ड्रोमीडा! आयोलसकी गोलाब-सी नाजुक बहन! ओ स्वर्गसे अभी-अभी उतरी हुई देवबाला! हे विस्मयजनक अद्भुत बाला, स्वर्गकी ज्योति अभीतक तेरे मुखपर दीख रही हैं।

आयोलस — मेरी नन्हीं-सी बहिन और इस डरावने आंगनमें! वह तो इसकी परछाईंसे भी डरती थी!

एण्ड्रोमीडा — सिरीयस, मेरी नौकरानी डायोमिडी तुमसे किसी सौदेकी बात करना चाहती है। तुम जरा उधर जा सकोगे?

(सिरीयस और डायोमिडी बात करते-करते दूर जाते हैं।)

एण्ड्रोमीडा — क्या तुम वही शोकातुर कैदी हो जिसे हमारी जंगली लहरोंने तो छोड़ दिया किन्तु मनुष्य मार डालना चाहते हैं? तुम्हारी जंजीरोंसे ऐसा ही लगता है। लेकिन तुम्हारे साथ एक और नहीं था क्या? क्या वे लोग अकेले तुझे ही कारागारसे इस मंदिरमें लाये हैं?

स्मरडस — वह......वह....

एण्ड्रोमीडा — क्या डरने तेरी जीभपर ऐसा अधिकार जमाया है कि वह अपना काम नहीं कर पाती ? आह, धीरज धर, तुझे खूनी चंगुलने जकड़ रखा है फिर भी मैं कहती हूं कि अब भी आशा है।

स्मरडस — कैसी आशा ? हा दैव ! क्या आशा है यह ! मुझे अभीसे ऐसा लगता है कि छुरी मेरी छाती टटोल रही है। अगर तुम मेरे लिये आशा लेकर आयी हो तो मैं समझूँगा कि तुम एक देवी हो और तुम्हारी पूजा करूंगा।

एण्ड्रोमीडा — आश्वस्त हो। मैं तुम्हारे लिये आशासे भी अधिक लायी हूं, सिरीयस !

सिरीयस — तुम मुझे सोनेकी लड़ियां दोगी ? जेवर भी दोगी न ?

एण्ड्रोमीडा — अपने जितने गहने तुम्हारे लिये चुरा सकूँ, वे सब !

सिरीयस — चोरकी मधु-सी मधुमय प्रतिमा ! बेधड़क होकर चुराना और डरना मत ! आखिर मैं आज सवेरे किसी शुभ घड़ीमें उठा था: आह, पोसायडन, अगर मैं जानता कि तेरा अपकार करनेसे जेबें जल्दी भरती हैं तो क्या मैं अठारह वर्ष यूँ ही बेकार गंवाता ?

एण्ड्रोमीडा — इस दुःखी कैदीके बंधन खोल दे।

स्मरडस — हैं, मुझे जाने दिया जायगा ? यह सच है ?

एण्ड्रोमीडा — ठहरो, मैं ही उन्हें खोलूँगी सिरीयस ! मुझे अनुभव होगा कि मैंने उसे आजाद किया है। क्या इतना ज्यादा खोलना होगा ? अपने भाइयोंकी हत्या करनेमें और उन्हें बांधने और कष्ट देनेमें मनुष्य कितना पटु है !

स्मरडस — यह स्वप्न नहीं है ? भय और त्रास स्वप्न हो गये हैं ? वह मेरी ओर देखकर मुस्कराती है, आनन्द और कारुण्यसे भरा यह अद्‌भुत स्मित यहां भी दिनका-सा उजाला कर रहा है। ओह, जल्दी करो, और जल्दी ही मैं इस नर्क-से भागना चाहता हूं जहां मैंने आतंक ही खाया और आतंक ही पिया है और जहां मौतके साथ सोया हूं।

एण्ड्रोमीडा — क्या उस मित्रके बारेमें इतने लापरवाह हो जिसने दुःख-दर्द और खतरेमें तुम्हारा साथ दिया था ? सिरीयस ! वह कहां है ?

टिरेनस — (आगे बढ़कर) ओह स्मितमयी देव-किशोरी, देखिये ! केल्डिया-निवासी टिरेनस आपके सामने प्रस्तुत है।

एण्ड्रोमीडा — (स्मरडसकी जंजीरें गिराती हुई) ओहो, तुम छुट भी गये ? मुझ-से पहले किसने बाजी जीत ली ?

टिरेनस — कुमारी, मुझे आजाद देखकर नाराज हो क्या ?

एण्ड्रोमीडा — मैं सिर्फ तुम्हें बचानेवालेसे ईर्ष्या करती हूं। तुम्हारी जंजीर खोलने-

का यह सुखद कार्य नियतिने मेरे जिम्मे किया था। इन बेदर्द कठोर जंजीरोंको अपनी उंगलियोंके बीच गिराते हुए अनुभव करके कैसा सुख होता! तुम्हें किसने छुड़ाया?

टिरेनस — हे करुणामयी मधुरिमा, आप जैसे ही एक देवपुरुषने।

एण्ड्रोमीडा — ओलिम्पियावासीसे लगते थे न? वे देवदूत या भगवान् भास्करसे ओजस्वी थे न?

टिरेनस — हां, सचमुच वैसे ही थे। ओ, आप उन्हें जानती हैं?

एण्ड्रोमीडा — हां, मैं उनसे सपनोंमें मिली हूं। क्या वे अभी-अभी यहां थे?

टिरेनस — कुमारी कन्या, वह परछाईंमें वापस चले गये हैं!

स्मरडस — तुम लोग मुझे बंधा हुआ छोड़कर बस बक-बक किये जा रहे हो मानो अब मौतका पंजा मेरे ऊपर न हो।

एण्ड्रोमीडा — (अपना काम करती हुई) माफ करना! टिरेनस, जिस ओजस्वी सहायकने तुम्हारी बेड़ियां काटीं वह इस गरीब तेजहीन, डरसे कांपते आदमी-को भूल गये?

टिरेनस — क्योंकि इसने सिर्फ अपने ऊपर ही तरस खाते हुए बहुत अधिक घिनौने डरका प्रदर्शन किया इसलिये उन्होंने इसे अपने भाग्यपर छोड़ दिया।

एण्ड्रोमीडा — आहा, बेचारा गरीब मानव! हम सबको अपने अनेक पापोंका जवाब देना पड़ेगा। अगर हमारे साथ भी ठंडा कठोर न्याय हो तो उसे सहना बड़ा कठिन हो जायगा। हमें अपनी त्रुटियां याद रखकर दूसरोंकी गलतियोंके प्रति समभाव रखना चाहिये। क्या एक मानव चेहरेके आंसू देखकर उसके दुःखके घाव भरना काफी नहीं है? क्या यह देखना जरूरी है कि वह चेहरा सुन्दर है या कुरूप? मेरा ख्याल है कि कष्टमें पड़े हुए सांपतकको देखकर उसे बचानेके लिये ललचा उठूंगी और यह जानते हुए कि वह मुझे डस लेगा, मैं उसे अवश्य बचाऊंगी। शायद जिसने यह किया वह देवपुरुष था और हमारी मानव दुर्बलताओंका मैल उसे घृणास्पद लगा होगा।

स्मरडस — हाश, मैं बच गया। हे देवी, मैं तुम्हारे पांव छूता हूं, तुम्हारी अबाको चूमता हूं, हे मुक्तिदायिनी!

एण्ड्रोमीडा — तुम्हें यहांसे जल्दी निकल जाना चाहिये। जिन निर्मम पहाड़ियोंपर तुम्हारी नौका टूटी थी उनके पास एक गुफा है। जब मैं और डायोमिडी छोटे बच्चे थे तो हमने हाथ-पांव टूटनेकी परवाह किये बिना, धूप, हवा और दौड़ भागका मजा लेते हुए, पहाड़ीपर चढ़कर खेल ही खेलमें उसका पता लगाया

था। हम दोनोंके सिवा किसीको उसका स्वप्नतक न आयगा। वहां मैंने काफी खाना-पानी रख दिया है। उस पत्थरकी दीवारके पीछे छिपे रहना, बाहर न निकलना। दिनके उजालेके लिये मन चाहे कितना छटपटाये, हर्गिज न निकलना, वरना मौत तुम्हें फिरसे अपने पंजेमें कस लेगी। जब खोजकी गरमी और भाग-दौड़ शांत हो जायगी तो तुम्हें अपने प्रिय केल्डिया जानेके लिये सुनहरे पंख दूंगी।

स्मरडस — क्या तुम गोताखोरोंको ढूँढ़कर समुद्रतले जकड़े हुए हमारे खजानेको नहीं निकलवा सकतीं ?

टिरेनस — तुम अभी क्रूर मौतके पंजेसे बचकर निकले हो फिर भी तुम्हें अपने निकम्मे रत्न छोड़कर और कुछ सूझता ही नहीं ! इस तरह कहीं फ़िरसे हमारे ऊपर देवप्रकोप वापस न बुला लेना।

स्मरडस — आखिर, केल्डियाकी दूरीतक हम भीख मांगते तो नहीं जा सकते।

एण्ड्रोमीडा — इस जगह गोता लगाना खतरनाक है। मैं धनके लिये मनुष्यकी जान जोखिम में नहीं डाल सकती। मैं अपना सब कुछ सिरीयसको देनेका वचन दे चुकी हूं फिर भी तुम लोग खाली हाथ घर न लौटोगे। अपने भाई आयोलस-से कुछ रकम मांग लाऊंगी और उसके सहारे तुम लोग केल्डिया जा सकोगे।

स्मरडस — हाय, मेरे प्यारे खजाने ! क्या तुझे उपेक्षित होकर सीरियाके किनारे-की लहरोंके नीचे दबा रहना पड़ेगा ?

एण्ड्रोमीडा — (डायोमिडीसे) इन्हें गुफाओंमें ले जा। सिरीयसको गुफाका छिपा हुआ मुँह दिखा दे। जहां मीठे जलका स्रोत पत्थरके फव्वारेसे उछलता है। उस फव्वारेके पास पहाड़ीके उस ओर मैं तेरी प्रतीक्षामें टहलती रहूंगी। महाजन, जाओ। देवि एथिनी तुम्हारी रक्षा करे।

टिरेनस — लेकिन पहले मैं तुम्हें प्रणाम तो कर लूँ और विनीत भक्तिभरे हाथोंसे तुम्हारे चरण छू लूँ। हे मानव करुणासे परिपूर्ण देवि ! अपनी ही करुणासे द्रवित होकर तुम बिन बुलाये अपने सुरक्षित प्रासादको छोड़कर दो अनजाने, अनचाहे, अप्रिय परदेसियोंको बचाने मौतके इस घरमें आयी जहां वह कठोर मुँह लिये हठ-पूर्वक कुयोजनाएं गढ़ता रहता है। तुम स्त्री होकर भी अनिवार्य मृत्युसे नहीं डरीं, बालिका होकर भी देवताके कोपसे भयभीत न हुईं। न उस दूसरी दुनियाकी भयानकतासे कांपीं जो हमारी दुनियापर हमेशा छायी रहती है। हे पुनीताक्षी एण्ड्रोमीडा ! जिस प्रदेशमें तुमने जन्म लिया है उसमें दुनिया-के लिये शांत मधुमय दयाके उत्सवका दिव्य गीत अवश्य सुनायी देगा और

विकराल निष्ठुर देवता अपने प्रेतलोकमें विलीन हो जायेंगे।

स्मरडस — तुम लोग बकवासमें लगे हो और किसी भी क्षण वह अघोरी पुजारी आकर मेरे कंधेपर पंजा मारेगा और मुझे अपनी मुट्ठीमें कर लेगा। चलो, चलो, ऐ लड़की, अरी बांदी, चल, अभागिन, रास्ता दिखा! मटरगश्ती करती है?

एण्ड्रोमीडा — हे बाबुलवासी, मेरी नौकरानीको सख्त सुस्त न कहो। जा डायोमिडी, अंधकार एक ढक्कनकी तरह ऊबड़-खाबड़ समुद्रतटपर उतर आयगा और तब चलते हुए इन्हें ठोकरें लगेंगी। सिरीयस, जा।

(डायोमिडी और सीरियस जाते हैं, उनके पीछे-पीछे दोनों महाजन) कठोर, निर्मम पोसायडन! मैं तेरे अंधकारमें यहां अकेली तेरे सामने खड़ी हूं। तेरी यह वेदी अनेक पीड़ित क्रंदनों और मानवबलिकी चीखोंकी बीभत्स स्मृतिको लिये हुए है। मैं विना किसी मजबूरीके अपनी मरजीसे अपनी आत्माको तेरे रक्त-पिपासु सान्निध्यसे अपवित्र कर रही हूं। मैं यह कहने आयी हूं कि मैं तुझसे घृणा करती हूं, तुझे तुच्छ समझती हूं और चुनौती देती हूं। मैं एक सामान्य स्त्रीमात्र हूं फिर भी तुझसे अधिक दिव्य, क्योंकि मेरे अन्दर दया है। तेरे रक्त-पिपासु जबड़ोंसे मैंने तेरा निश्चित शिकार छीन लिया है। कहते हैं कि तू अपमानका भयंकर बदला लिया करता है। पोसायडन आ, प्रतिशोध लेले।

(वह बाहर जाती है। परसियस और आयोलस आगे आते हैं।)

परसियस — तू ही है मेरी सहचरी एण्ड्रोमीडा! अब हां, अब समझमें आया कि मेरे आतुर चप्पल क्यों जबर्दस्ती मुझे तेरी और सीरियाकी ओर उड़ा लाये।

आयोलस — यह एण्ड्रोमीडा ही थी और नहीं भी थी। इस क्षणसे पहले मैंने कभी स्त्री-रूपमें नहीं देखा।

परसियस — आयोलस, जिस बालिकासे तुम्हें इतना प्रेम है उसे तुम इतना कम पहचानते हो?

आयोलस — कभी-कभी हम अपने अति प्रिय व्यक्तिको जिसके साथ दिन-रात रहते हैं, उसे बहुत कम पहचानते हैं।

परसियस — वह कैसे हौले-हौले हिल-डुल रही थी मानो उसकी जुल्फोंपर किसी प्रिय व्यक्तिका हाथ फिर रहा हो और उसे डर हो कि कहीं मधुर अतिथि चौंक न जाय।

आयोलस — आह परसियस, परसियस! उसने एक क्रूर निर्मम देवको चुनौती दी है और वह बड़े ही निर्मम ढंगसे अपमानका बदला लेगा।

परसियस — आयोलस, मित्र, समुद्रके इस मुस्कराते तटपर, जहां मेरे लिये दो सुन्दर मुखकमल खिले हैं, जहां सूर्यने बड़े जतनसे आयोलस और एण्ड्रोमीडाके घुंघराले बालोंके छल्ले बनाये हैं, वहां एथिनीने मुझे धूर्त्त पुजारियों और खूनसे सने देवों-द्वारा इन दोनोंके सौंदर्यका अंत देखनेके लिये नहीं भेजा है। इस प्रकारकी किसी घटनाका भय न करो। मैं एथिनीका तीक्ष्ण खडग् धारण किये हुए हूं।

दृश्य ३

(चारों ओर अंधकार है। पोसायडनका मंदिर। पोलीडियोनका प्रवेश)

पोलीडियोन — सिरीयस, हे सिरीयस, सिरीयस, अरे बदमाश, मैं बुला रहा हूं...... सुनता नहीं, पाजी पिये हुए है या सो रहा है ? सिरीयस, अरे ओ सिरीयस...... खाली मंदिरमें मेरी आवाज प्रतिध्वनित हो-होकर वहांके सूनेपनकी बात बताती है। लेकिन वह शराबी गया कहां ? इस भूतहा मंदिरमें अकेला खड़ा, रहना बड़ा भयावह है। चालीस वर्ष यहां काम करनेके बाद भी मैं इसकी मूक धमकियोंका अभ्यस्त नहीं हो पाया। मुझे लगता है मानों बलि दिये गये व्यक्ति भयानक मुँह लिये इस पत्थरके इर्द-गिर्द अदृश्य रूपमें घूम रहे हैं। उनकी उपस्थिति स्पष्ट रूपसे अनुभव होती है। और यह सागर भी मंदिरके पत्थरोंपर चीत्कार करता हुआ किसी घायल देवताकी तरह क्रंदन करता है। रातमें उसकी भयावह आवाज रहस्यमय ढंगसे अविरत चलती रहती है। चलूँ, जाकर केल्डियाके कैदियोंसे बातचीत करूं। उनका मजेदार कराहना और गालियां बकना भी इस चुप्पीसे भला। (वह थोड़ी देरके लिये बाहर जाता है, जल्दी हक्का-बक्का-सा लौट आता है) जाग, जाग, सोते सीरिया जाग, तू अपभ्रष्ट हो गया । तेरा दिल तोड़ दिया गया है। तुझे अपमानित किया गया है, हां अपमानित। तेरी फसलें नष्ट-भ्रष्ट हो चुकीं, तेरी सुरक्षा गयी और तेरी संतानोंकी हत्या हो चुकी। ओह कैसा नृशंस पातक ! यह अपराध करनेकी हिम्मत किसने की ? क्या गुलाम सिरीयस इतना साहस कर सकता है ? ना, ना, यह सीफियसके भगवान्‌विरोधी, अभिमानी पुत्र आयोलसका ही काम होगा। और उसके साथ वह अजनबी रहा होगा जो नास्तिक हवाके सहारे हमारे किनारेपर उड़ आया है और हमारे पुराने धर्मकी नींव खोद डालनेपर तुला हुआ है। उन्होंने ही केल्डियावासियोंको छुड़ाया होगा। सिरीयस उनके

अपराधको रोकता पर शायद उसका खून कर दिया गया है और बेचारा उन चट्टानोंतले पड़ा होगा जहां पैशाचिक आवाजें गूँजती रहती हैं। मैं अब उस घंटेको बजाऊंगा जो सीरियापर भयंकर विपदा आनेपर ही बजाया जाता है। उठो, जागो, शापित लोगो, जागो।

(वह झपटके बाहर जाता है। एक घण्टा कुछ क्षणतक बजता है। फिर कुछ देर सन्नाटा रहता है। पुजारी और भी अस्तव्यस्त अवस्थामें लौटता है।)

जागो ! जागो ! क्या तुम चट्टानों तले पोसायडनको शेरकी तरह दहाड़ते हुए नहीं सुन रहे ? पहाड़ियोंपर उसका पदचाप नहीं सुनते ? वह तुम्हें कत्ल करनेके लिए तुम्हारी चट्टानी दीवारोंपर गरजता हुआ चढ़ा चला आ रहा है और उसकी सूचना वज्रध्वनिसे मिल रही है। आह, शहर जाग गया है। मुझे जल्दी-जल्दी भागते, चीखते, चिल्लाते लोगोंकी घबरायी हुई आवाजें तूफानी लहरोंकी तरह बढ़ती सुनायी दे रही हैं। हाय, मेरी ओर बढ़ता यह अंधकार क्या है ? हा, दैव, मूर्ति कहां गयी ? यह डरावना देव कौन है ?

(पोसायडनकी छाया दिखायी देती है। शुरूमें धुंधली और डरावनी, बादमें स्पष्ट और भयानक)

पोसायडन — मेरी बलि, पोलीडियोन्न, मेरी बलि मुझे दे।

पोलीडियोन — (दंडवत् प्रणाम करता है) ना, ना, मैं नहीं था, मैंने यह नहीं किया; यह औरोंका काम है।

पोसायडन — मेरी बलि दे, पोलीडियोन, मेरी बलि मुझे दे।

पोलीडियोन — ओ प्रचण्ड, कुपित देव, मेरे ऊपर प्रहार न करना। मैं निर्दोष हूं।

पोसायडन — तू निर्दोष कैसे हो सकता है जब केल्डियावासी भाग गये ? पोलीडियोन, ला, मेरे शिकार मुझे दे।

पोलीडियोन — मैं नहीं जानता वे कैसे भागे और किसने उन्हें छुड़ाया। आह देव, मेरे आगें खूनसे सने दांत न पीसिये। इन आग उगलती आंखोंसे मुझे भस्म न कीजिये। आपकी गरज मेरी आत्मामें दहशत पैदा करती है।

पोसायडन — निकम्मे पुजारी, सुन, जब तू अपनी क्षुद्र मानव वासनाओंके लिये बाहर घूमता-फिरता है तब मेरे ही मंदिरमें मेरा अपमान होता है, गुलाम मेरा मजाक उड़ाते हैं, छोटे बच्चे मेरे साथ व्यंगपूर्ण तिरस्कारयुक्त दुर्व्यवहार करते हैं मेरे शिकारको मेरी ही छतके नीचेसे कोई ऐरे-गैरे हाथ छीन ले जाते हैं। मेरी परित्यक्त विकराल मूर्ति बेबसीसे टुकुर-टुकुर देखती रह जाती है और मेरा बदला लेनेवाला कोई नहीं होता।

पोलीडियोन — प्रभु, आप आज्ञा दीजिये, उसका पालन जरूर होगा।

पोसायडन — इसलिये अब मैं जागूँगा, उठ खड़ा होऊंगा। तब कही तुम लोग मेरे देवत्वको पहचानोगे। आज ही प्रकुपित बाढ़की तरह उफनती हुई एसीरिया की सेना अपने घोडोंकी क्रुद्ध टाप सुनाती हुई सारे देशपर छा जायगी। सीरिया-की मनोहर धरती निर्जन कर दी जायगी। दमिश्कके शहरमें भी भेड़िये भूकेंगे और गाजा तथा यफेटिसके बीच एक रेगिस्तान खड़ा हो जायगा। काली टोपी पहने, लहरोंपर झाग सजाये मेरे चीखते-चिल्लाते और गरजते हुए सागर, पहाड़ियोंको लांघकर तुम्हारे ऊंचे आरामदेह महलोंतक पहुंचकर, उनका गला घोंटकर नीचे तराइयोंमें खींच लायेंगे। मेरी सागर रानीके चराये खूँखार जानवर तुम्हारे रास्तोंपर घूमेंगे। वे छोटे बच्चों और कुमारी कन्याओंको निगल जायेंगे, तुम्हारे हथियारबन्द, बलिष्ठ युवकोंको चीर-फाड़कर टुकड़े करेंगे और वे कमजोर कलाईवाली औरतोंकी तरह असहाय बनकर चीखे-चिल्लायेंगे। अंतमें सब मारे जायेंगे। और तू लापरवाह, असावधान पुजारी, जीवित ही रसातलमें पहुंच जायगा। वहां जलती छुरियां तेरे बार-बार जन्म लेनेवाले हृदयको चीरती रहेंगी। दुनियाके अंततक तेरी यातना ऐसी ही बनी रहेगी।

पोलीडियोन — हाय, विकराल स्वामी!

पोसायडन — अगर तू दुर्भाग्यसे बचना चाहता है, मेरे सीरियाको सुरक्षित रखना चाहता है तो बाबुलके कैदियोंको छुड़ानेवालेको ढूँढ़ ला और समुद्रकी गहराइयों-में रहनेवाले दानवोंकी दावतके लिये उसे फेंक दे। आयोलसके गरम धड़कते हुए दिलका अर्घ्य उसके सुन्दर शरीरमें सिसकते रक्तके रहते हुए मुझे अर्पित कर और जिस वीरके प्रेममें उसने मेरे कोपका सामना करनेकी हिम्मत की, उस वीरको आयोलसकी धड़कती हुई छातीपर रखकर बलि चढ़ा। सीफियस-के पापी वंशको इस धरतीसे मिटा दे। अपने क्षुद्र लक्ष्योंको दिलसे निकाल दे। निर्भीक होना याद रख। अगर तू मेरे लायक रहा तो मैं खुद तेरे शरीरमें प्रवेश करूंगा।

(वह गरजता हुआ अंतर्धान हो जाता है)

पोलीडियोन — हां, प्रभु! क्या आपकी भैरव आज्ञाका पालन न होगा?

(फीनियसका प्रवेश, साथमें टायराके सैनिक मशालें लिये हुए आते हैं)

फीनियस — घण्टेकी इस अशुभ ध्वनिने इतनी रातको सीरियाको क्यों डरा दिया है? अरे, इस तरह दुबके हुए तुम हो क्या पोलीडियोन?

पोलीडियोन — (उठते हुए) महाराज फीनियस, स्वागत है !

फीनियस — तू कौन है ? तेरी आंखें अंगारे-सी दहक रही हैं और त्रासके मारे गोल-गोल चक्कर काटती हैं। उठते-उठते तू अपने उद्विग्न धुंधले बाल हिलाता है मानो वे कूदनेके लिये तत्पर शेरके केसर हों। पोलीडियोन, बोलो।

पोलीडियोन — हां, मैं बोलूँगा। धर्मविरोधी कर्मोंकी और रक्तपातकी बात करूंगा, उसकी भयानक सजा और भगवान्‌के कोपकी बात करूंगा।

(सीफियस, डेरेसेटसके साथ प्रवेश करता है। सीरियाके सैनिक थेरेप्स और सीरियावासियोंका दल तथा अनेक मशालें)

सीफियस — पोलीडियोन, कौन-सी मुसीबत विद्युत-वेगसे आ पड़ी है जिसके कारण तुमने दुर्भाग्यसूचक घण्टा बजा दिया जिसे सुनते ही सारा सीरिया कांपता है। मशालकी रोशनीमें तेरा चेहरा किसी भूतके दोष देते हुए कठोर मुंह-सा क्यों दीख रहा है ? तूने यह घण्टा क्यों बजाया था ?

पोलीडियोन — सीफियस, उसने तुम्हारे और तुम्हारे वंशके सर्वनाशकी घोषणा की है।

सीफियस — मेरा सर्वनाश !

फीनियस — (स्वगत) मुझे एक आकर्षक षड़यंत्रकी झलक दीखती है और उसका अभिनय भी अच्छा हो रहा है।

पोलीडियोन — कैदी मुक्त कर दिये गये हैं। विकराल पोसायडनके लिये पकड़े हुए बलि भाग गये। तू और तेरा वंश अपराधी है।

सीफियस — तू पागल है !

पोलीडियोन — मैं नहीं, तू और तेरा शापित वंश पगला गया है इसीलिये वे मजेसे पोसायडनको नाराज करते-फिरते हैं। किन्तु उनका नाश होगा। तू और तेरे वंशज बरबाद हो जायेंगे।

सीफियस — आह, तुम मुझे भयभीत कर रहे हो, इस विराट् अंधकारमें तुम्हारी आवाज मेरे सर्वनाशके घण्टेकी भांति क्यों गूँज रही है ?

पोलीडियोन — इस प्रकाशहीन रातमें स्वयं पोसायडन मेरे सामने आये और बार-बार उच्च स्वरमें ललकारते हुए, उन लहरोंकेसे क्रुद्ध स्वरमें उन्होंने तुझे अपराधी घोषित किया। तेरा और तेरे वंशजोंका नाश होगा।

फीनियस — सीफियस ! खोज करवाओ। शायद कैदी अभी दूर नहीं जा पाये होंगे। शायद अब भी सब कुछ बचाया जा सके।

सीफियस — खोजो कप्तान, सारे सीरियाको उन भगोड़ोंके लिये छान डालो।

डेरसेटस, तुम सेना लेकर समुद्र किनारे जाओ। वहां एक-एक पत्थरके पीछे ढूँढ़ो। मेरिओनस, बाहर, बाहर जाओ; केलिस, ओरिडामस और पेरिकार्पस, सारे देशमें सशस्त्र सैनिकोंका मजबूत घेरा डाल दो। एक-एक घरमें घुसकर अंत:पुरतककी तलाशी लेना। उन्हें किसी-न-किसी तरह जरूर खोज लाना।

(डेरसेटस और अन्य कप्तान सैनिकोंके साथ बाहर जाते हैं। भीड़ उन्हें जानेका रास्ता देती है)

पोलीडियोन — सीरियाकी प्रजा, सुनो, ध्यानसे सुनो ! इस पापके कारण पोसायडन जमीनके रास्ते सीरियाको भड़का रहे हैं और समुद्रके रास्ते उसकी लहरें और तीक्ष्ण दांतोंवाले समुद्री दानव उठ रहे हैं। तुम्हारे आदमियोंके टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे, उनके पेट चीरे जायेंगे, दुश्मन तुम्हारी औरतोंपर बलात्कार करेंगे, उनका वध करेंगे या समेद्री कुत्ते उन्हें भयंकर ढंगसे फाड़कर खा जायेंगे। जो बच रहेगा उसे बाढ़ निगल जायेगी। (चीत्कार और क्रंदन)

आवाजें — हमें छोड़ दो पोसायडन, हमें बचा लो विकराल देव !

पोलीडियोन — तुम बचना चाहते हो ? तो प्रजाजन पोसायडनका हुकुम मानो।

थेरेप्स — तुम ही हमारे राजा हो। हुकुम दो।

पोलीडियोन — उस औरत, केल्डियाकी केसियोपिया और उसकी लड़कीको यहां ले आओ। उनसे कहो कि सीरियाका राजा उन्हें यहां आनेका हुकुम देता है।

(थेरेप्स और दूसरे लोग आज्ञा पालनके लिये बाहर जाते हैं)

फीनियस — पुजारी, तुम्हारा मतलब क्या है ?

सीफियस — मेरी रानी और राजकुमारी किसलिये ?

पोलीडियोन — मैं भयानक पोसायडनकी इच्छा पूरी कर रहा हूं। तू और तेरे वंशज बरबाद होंगे।

फीनियस — तब तो तुम पागल हो, मैंने समझा था कि यह एक चातुरीपूर्ण खेलमात्र है। क्या तुम्हारा ख्याल है कि इस समय जब जनता उद्दाम कोपमें रक्तपातपर उतारू है तब मैं अपनी वाग्दत्ता एण्ड्रोमीडाको सताये जानेके लिये उनके सामने फेंक दूंगा ?

पोलीडियोन — फीनियस, मैं नहीं जानता कि तुम क्या करने दोगे, परन्तु मैं जानता हूं कि विकराल पोसायडन क्या चाहते हैं।

फीनियस — पोसायडन ! अरे मोटी अक्लके वहमी उल्लू, क्या तुमने रातके अंधेरे-में परछाइयोंको देखकर उन्हें क्रोधित देवगण मान लिया है ?

पोलीडियोन — अरे, ऐसी दुष्ट, अपवित्र, पापभरी भाषा न बोलो वरना दुर्भाग्य तुम्हें

भी अपने जालमें फंसा लेगा।

फीनियस — अपवित्र कामपर संयम रखो वरना टायराकी सौ-सौ तलवारें तुम्हारी खोयी हुई अक्लको ढूंढ़नेके लिये तुम्हारे दिमागकी तलाशी लेंगी।

पोलीडियोन — (पीछे हटते हुए सहमकर) धैर्य, महाराज फीनियस। हो सकता है कि तुम्हारी इच्छाएँ और तरहसे पूरी होंगी।

(डेरसेटस वापस आता है)

डेरसेटस — एक भगोड़ा पकड़ा गया है।

पोलीडियोन — कहां ? कहां ?

डेरसेटस — जहां नौका डूबी थी उसी पहाड़ीके आसपास समुद्रीकिनारे अपना खोयी हुई संपत्तिके बारेमें, लोभभरी बकवास करता हुआ रेंग रहा था।

पोलीडियोन — अब हमें उस अधर्मी हाथका पता चलेगा। कांपो, महाराज सीफियस कांपो।

सीफियस — (स्वगत) ओह ! मैं घिर गया, मेरा सत्यनाश हो गया। यह जरूर मेरे आयोलसका काम है जो हमारा सत्यनाश कर रहा है।

(स्मरडसको धकेलते हुए सैनिक प्रवेश करते हैं)

स्मरडस — (दु:खसे कराहता हुआ) हाय, मुझे वापस नरकमें धकेला जा रहा है। मैं बस हो चुका। अब मुझे कोई नहीं बचा सकेगा।

पोलीडियोन — केल्डियावासी, तुम अपने-आप चुन लो। बोलो, तुम अपनी जान बचाना चाहते हो ? स्वदेशके हरे-भरे खेत खलिहान देखोगे ? अपनी स्त्री और बच्चोंको फिरसे चूमना चाहते हो ?

स्मरडस — ओह, मेरा मजाक उड़ा रहे हो, मुझे चिढ़ा रहे हो ?

पोलीडियोन — नहीं बे, तुझे कीमत चुकानेपर स्वाधीनता मिल सकती है या फिर मुफ्तमें भयानक यातना मिलेगी।

स्मरडस — कीमत, कीमत ? हां, मैं कीमत चुकाऊँगा।

पोलीडियोन — उन लोगोंके नाम बता जिनके अपवित्र हाथोंने तुझे मुक्त किया था। अगर तू नहीं बतायेगा तो तू जरूर मरेगा। तू विकराल देवका अर्घ्य नहीं बनेगा क्योंकि उन्होंने दूसरी बलियोंकी मांग की है, उनकी जगह तू असह्य यातनासे चूर होकर मरेगा।

स्मरडस — ओ सौम्य विधाता, दया करो ! क्या मुझे उस नारीको धोखा देना पड़ेगा ? ओह उसकी सुमधुर मुस्कान और दयार्द्र नेत्रोंका मौतके हवाले कर दूं ? कैसा भयंकर चुनाव है ! नहीं, मैं यह नहीं कर सकता।

पोलीडियोन — आहा, तब यह एक स्त्रीका काम है !

स्मरडस — मैं आगे और नहीं बोलूँगा।

सीफियस — हाश, जानमें जान आयी। तो यह आयोलस न था।

पोलीडियोन — उसे पकड़ लो और अंग-अंग मरोड़ते हुए दारुण दुःखकी गांठ बांध दो। एक-एक हड्डीको कुचल डालो, मांसके लोथड़े टूट-टूटकर गिरें और शरीर-का अणु-अणु वेदनाकी अलग-अलग चीख पुकार उठे।

स्मरडस – ओह, दया करो, मुझे बचाओ, मैं सब कुछ बताऊंगा।

पोलीडियोन — सच सच बता दे। मैं तुझे सोनेकी बोरियां दूँगा और केल्डिया लौटने-का इंतजाम भी कर दूँगा।

स्मरडस — सोना ? सोना ? मुझे सोना मिलेगा।

पोलीडियोन — हां, जरूर मिलेगा।

स्मरडस — (जरा रुककर) समुद्र किनारे जिस युवकको तुम पकड़ना चाहते थे वही युवक आया और उसकी तलवारने मेरे लोहेके बंधन कुतर डाले।

पोलीडियोन — टालमटोल न कर। उसके साथ और कौन था ? तुझे सोना मिलेगा, सोना।

स्मरडस — कुमार आयोलस।

सीफियस — हाय !

फीनियस — यहांतक तो ठीक है।

पोलीडियोन — तेरी आंखोंसे धूर्तता टपकती है। तू एक औरतकी बात करता था। वह रानी थी क्या ? तूने हमें सब कुछ बता दिया ? आहा देखो, उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसे यातना दो।

स्मरडस — (रोते स्वरमें) मैं सब कुछ कह दूँगा। वचन दो कि मुझे सोना मिलेगा। मैं सुरक्षित रहूँगा।

पोलीडियोन — विकराल पोसायडनके सिरकी कसम।

स्मरडस — हाय कठोर विवशता ! छोटी-सी कोमल राजकन्या एण्ड्रोमीडा अपनी जवान बांदीके साथ यहां आयी थी। उसीने मुझे बचाया था।

(आश्चर्यचकित लोगोंमें चुप्पी छा जाती है)

फीनियस — मैं नहीं मानता। क्या इतनी नाजुक बच्ची इतने साहसपूर्ण कार्यकी योजना बनाकर उसे कार्यान्वित कर सकती है ? तू झूठ बोल रहा है। तू एक घिनौने षड्यन्त्रका अंग मालूम होता है।

पोलीडियोन — उसके स्वरसे लगता है कि न चाहते हुए भी सच बोल गया है।

फीनियस ! अब वह मृत्युकी बहू है तुम्हारी नहीं। क्या उस विषादमय विवाह-में दूल्हेके साथी या शहबाला बनना चाहते हो ? धैर्य धरो। देखो, पोसायडन क्या चाहते हैं।

फीनियस — (फुसफुसाते हुए) क्या सीरिया मुझे मिलेगा ?

पोलीडियोन — पहले मेरा तो हो, फिर तुम्हें दूँगा।

(थेरेप्स वापस आता है)

थेरेप्स — महारानी आ रही हैं।

पोलीडियोन — इस महाजनको यहांसे हटाओ।

(सैनिक स्मरडसको पीछेकी ओर ले जाते हैं रानी एण्ड्रोमीडा और डायोमिडी-के साथ नेबेसार और केल्डियाके अंगरक्षकोंके बीच आती है)

केसियोपिया — केल्डियावासियो, अपना हाथ तलवारकी मुठपर रखना। यह क्या बावेला है ? हमें इस अंधेरेमें इस पवित्र स्थानपर किसलिये बुलाया गया है ?

पोलीडियोन — केसियोपिया, क्या परदेशी कृपाणोंके साथ यहां सीरियाके देवोंका सामना करने आयी हो ? केल्डियाके लोगो, इसे त्याग दो। तुम्हारी तलवारें एक शापित सिरकी रक्षा कर रही हैं।

केसियोपिया — तुम्हारा हुकुम सीरियामें कबसे चलने लगा है ? और तुम रानियों-को दंड देने योग्य कबसे हो गये ? मेरे पति और तुम्हारे राजा तुम्हारे पास ही खड़े हैं। उन्हें बोलने दो।

पोलीडियोन — हां, बोलें। यहीं तो खड़े हैं।

केसियोपिया — सीरियाके महाराज, आंखें क्यों चुराते हैं। राजाके लिये अशोभन रूपसे, सामान्य पुरुषकी तरह सिर नीचा क्यों किये हैं ? राजन्, तुमपर कौन-सा शोक आ पड़ा है ?

पोलीडियोन — देखो न ! वह बोल भी नहीं सकते। अब सीरियामें मेरा राज्य है। मेरे प्रजाजन, क्या यह सच नहीं ?

थेरेप्स — हां, ठीक है।

पोलीडियोन — एण्ड्रोमीडा, आगे आओ।

केसियोपिया — मेरी बच्चीसे तुम्हें क्या लेना देना ? उसके बदले मैं खड़ी हूं।

पोलीडियोन — उसपर धर्मद्रोह करनेका आरोप है। उसे मरना होगा।

केसियोपिया — (कांप उठती है) मरना होगा ? आरोप किसने लगाया ?

पोलीडियोन — केल्डियावासीको ले आओ।

डायोमिडी — हाय, महाजन पकड़ा गया और अब सारी बात खुल गयी। मेरी

मीठी देवी, आरोपसे इन्कार कर दो। हम अब भी बच सकते हैं।

एण्ड्रोमीडा — अरे, बेचारा, गरीब महाजन! क्या मैंने तुम्हारे बंधन व्यर्थमें खोले थे?

डायोमिडी — बोलो मत।

एण्ड्रोमीडा — डायोमिडी, मैं क्यों छिपाऊँ? मेरे दिलमें जिस कार्यको करनेका साहस था उसे कबूल करनेका भी साहस होना चाहिये।

डायोमिडी — किन्तु वे हम दोनोंको मार डालेंगे।

एण्ड्रोमीडा — मैं राजकन्या हूं। मैं क्यों झूठ बोलूँ? डरकर? लेकिन मुझे डर नहीं लगता।

(अबतक सैनिक स्मरडसको आगे ला चुके हैं)

पोलीडियोन — व्यापारी! देखो! सबके सामने बता दो तुम्हें किसने बचाया था? यही थी न?

स्मरडस — यही है। आह, मेरी ओर उस दुःखभरी मुस्कानसे न देखो। मैं बाधित हूं।

पोलीडियोन — और वह बांदी यही है न?

स्मरडस — यही है।

केसियोपिया — यह अभागा तुम्हारे कहनेपर झूठ बोल रहा है। उससे जिरह करो।

पोलीडियोन — मैं इजाजत नहीं देता।

पेरिसस — क्यों भइया, यह तो न्यायकी बात है। हम नहीं मानते कि हमारी छोटी-सी राजकुमारीने यह अपराध किया है।

केसियोपिया — सीरियावासियो! देखो, इस कपटी पुजारीकी ओर देखो। तुम्हें दीखता नहीं कि यह एक षड़यंत्र है और बेतहाशा झूठ बोलनेवाला यह आदमी उसका खिलौना है? इसीलिये वह उससे जिरह नहीं करने देता। शायद पुजारीने खुद ही उसे छोड़ दिया होगा — वरना इस भयावह मंदिरमें जहां मनुष्य कदम रखते डरता है कौन आ सकता था? अपने जालको छिपानेके लिये महान् देव पोसायडनका नाम ले रहा है। सीफियसके वंशको खत्म करके सीरियापर खुद राज्य करना चाहता है।

पेरिसस — हां, हो तो सकता है।

आवाजें — पोसायडनके नामका दुरुप्योग करता है क्या? और अपने-आप बलियों-को मुक्त करता है? मार डालो इसे।

केसियोपिया — देखो लोगो, वह कैसा पीला पड़ गया है! क्या भगवान् पोसायडन-

के अभिशापका संदेशवाहक ऐसा लगेगा? वह तुम्हारे आगे झूठी कहानियों और जालसाजीकी पत्तलें परोसता रहता है।

चीखें — उसका गला घोंट दो!

फीनियस — यह सचमुच राजपरिवारकी नारी है।

पोलीडियोन — अच्छा, चलो व्यापारीसे जिरह की जाय।

पेरिसस — व्यापारी आओ, थोड़ी गुदगुदीका मजा ले लो। मैं कसाई हूं। मेरा बुगदा देखते हो? मैं तुम्हें बड़ी ममताके साथ यंत्रणा दूंगा।

स्मरडस — आह, मेरी मदद करो, बचाओ, देवी एण्ड्रोमीडा!

एण्ड्रोमीडा — आह, ना, ना, अपने क्रूर हाथ उसपर मत डालो। मैंने ही उसे मुक्त किया था।

केसियोपिया — हाय मेरी बच्ची, एण्ड्रोमीडा!

पेरिसस — तुमने? छोटी-सी राजकुमारी! लेकिन यह किसलिये किया ?

एण्ड्रोमीडा — क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि जिस खूनके प्यासे दानवको तुम देवता मानकर पूजते हो, उसके लिये इनके मानवीय हृदय क्रूरतासे उखाड़े जायें। मुझे दर्द होता है इसलिये मैं दूसरोंके दर्दका अनुभव कर सकती हूं। इस पापके बदले तुम लोग, जिनसे मुझे प्रेम है, मुझे मार डालना चाहते हो तो वैसा ही करो। मैं अकेली ही अपराधिनी हूं।

पोलीडियोन — केसियोपिया, अब! रानी, अब चुप क्यों हो? सीरियाके लोगो! देखो, देखो, मेरी जालसाजी और मेरी मनघड़न्त कहानियां और देख लो मेरे कमीनेपनसे भरे षड्यंत्र! बस, बहुत हुआ! पोसायडन चाहते हैं कि अपराधीको समुद्रीकिनारे सागरी दानवोंके लिये बांध दिया जाय जहां वे उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। सीरियाके पुराने राजवंशके रक्तसे सींचकर भगवान्के कोपका शमन किया जाय और पापको धोया जाय।

केसियोपिया — म्यानसे तलवारें निकालो। महाराजको घेर लो। उनपर कोई हाथ न उठे। केल्डियाके सैनिको, सब विरोधियोंके बीचसे रास्ता काट लो। और तू मेरे पास चली आ, मेरी बच्ची एण्ड्रोमीडा, मैं अपनी छातीपर रखकर अपनी बेटीकी सारी दुनियासे सुरक्षित रखूंगी।

पोलीडियोन — बाबुलवासी, तू क्या करता है?

केसियोपिया — मेरे विश्वसनीय देशवासियो, चलो महलकी ओर।

पोलीडियोन — सैनिको! सामना करो! वे भगवान्से अपराधियोंके सिर छीन रहे हैं। जिन्हें न्यायसंगत कोपके कारण दंड दिया जा चुका है उन्हें लिये जा

रहे हैं।

डेरसिटस — हम लोग थोड़ेसे हैं, और फिर राजपरिवारपर कैसे हाथ उठा सकते हैं ?

पोलीडियोन — नेबेस्सर, क्या देवोंका सामना करनेकी हिम्मत करता है ?

नेबेस्सर — पुजारी, मेरी तलवारके रास्तेसे हट जा। मैं अपना कर्त्तव्य पूरा करता हूं।

पोलीडियोन — टायरा महाराज, तलवार खींचिये।

फीनियस — पुजारी, यह मेरा झगड़ा नहीं है।

(नेबेस्सर और अन्य केल्डियावासी नंगी तलवार लेकर मंदिरके बाहर निकलते हैं। उनके साथ-साथ राजा, रानी, एण्ड्रोमीडा और डायोमिडी जाते हैं)

पोलीडियोन — सीरियाकी प्रजा ! तुमने उसको निकल जाने दिया ! तो अब तुम्हें पोसायडनके कोपका डर नहीं हैं ?

पेरिसस — क्या तुम हमें केल्डियाकी तलवारोंसे बिंधवाना चाहते थे ? अरे पगले पुजारी, क्या मांसकी तरह हमें शलाकामें पिरोया जाना चाहिये या रोटीकी तरह उछाला जाना चाहिये ? हमारे पास हथियार नहीं हैं। कल हम लोग राजमहलमें जायेंगे और जो उचित होगा करेंगे। लेकिन यह ठीक नहीं है कि एकके अपराधके कारण अनेक मारे जायें और सीरियाका राजवंश निर्मूल हो जाय। मुझमें श्रद्धा रखो और मेरी आज्ञा सुनो, बही-खातेवाले अभिजात वीरो और हे निहाई हथौड़ेपर बहादुरी दिखानेवाले जन-साधारण, पेरिससके पीछे चलो। आज रात मैं तुम्हें अपने कोमल शांत बिस्तरतक ले जाऊंगा और कल राजमहलकी ओर।

(थेरेप्स और पेरिससके नेतृत्वमें सीरियावासी जाते हैं)

फीनियस — पुजारी, तुमने बड़ी मूर्खतासे काम किया। अगर तुमने सिर्फ एक आयोलसका उपयुक्त सिर ही मांगा होता तो काम आसान होता, किन्तु अब एण्ड्रोमीडाका नाजुक सौंदर्य उनको संताप देता है और आश्चर्यचकित प्रजा तुम्हारे आदेशानुसार राजपरिवारका खून बहाते हिचकिचाती है। मुझे लगता है कि उत्साह और उन्मत्त वहम षड्यंत्रमें बुरे साथी होते हैं। अबसे मैं अपना काम अलग ही करूंगा और यह रात जिस सामाजिक आंधीकी तैयारी कर रही है उसमेंसे अपना भला चुन लूँगा। (लोगोंके साथ चला जाता है)

पोलीडियोन — ओ भयंकर पोसायडन ! अपना बदला अपने-आप ले। एसीरिया और सागरोंको इनके ऊपर जोरसे फेंक। तूने कहा था कि तेरी शक्ति मेरे

साथ रहेगी। कहाँ है वह शक्ति ? मैं असफल रहा। (कुछ देर विचारमग्न रहता है। फिर सिर उठाकर......) कल, सीरियावासियो, कल पोसायडन-कर है।

अंक ४

दृश्य १

(ग्रामीण प्रदेश, सीफियसके शहरके नजदीक एक ऊंची जमीन। सीरिया-के स्त्री-पुरुषोंका एक भयत्रस्त समूह भागा-भागा आता है। इनमें चाब्रियास, मेगास, बालटिस, पासिथेया, मोरस, गारदास और सीराक्स भी हैं।)

बालटिस — (रुककर घुटनोंपर गिरती हुई) आह, भागकर कहां जायं कि कुपित पोसायडनकी पहुंचसे बाहर हो सकें।

चाब्रियास — देशवासियो, रुक जाओ। चलो, सब एक साथ यहीं मरें।

अन्य सब — ठहरो, चलो, यहीं प्राण देदें।

मेगास — दौड़ो, भागो, पोसायडनके दानव हमारे पीछे गुर्रा रहे हैं।

पासिथेया — उफ, कितना भयावना! यह तो कयामतका दिन है।

सीराक्स — चलो, यहीं ठहर लें। यह जगह ऊँची है। शायद दानव यहांतक न पहुँच सकें। (दामेतेजका प्रवेश)

दामेतेज — अरे, मैंने उस आतंकको नजदीकसे देखा है और फिर भी जिन्दा हूं। आधे कोसतक आग उगलता है।

सीराक्स — और समुद्रमें घुसते अंतरीप जैसा लंबा है।

दामेतेज — उसके छः विराट् टांगें हैं।

सीराक्स — अरे, आठ हैं आठ, मैंने देखा था।

मेगास — चाब्रियास, उसने तेरे मजबूत बेटेको पांवसे पकड़कर उसका सिर एक पत्थरपर इतनी जोरसे पटका कि सारा दिमाग इधर-उधर छितर गया।

चाब्रियास — हाय, मेरे बेटे, मैं वापस जाकर दानवके जबड़ोंमें तेरा साथ दूंगा। (दूसरे उसे रोकते हैं)

दामेतेज — अरे पासिथेया, उसने तेरी बेटीको पकड़ा और उसके हाथ-पांव चीर डाले और उन्हें खा गया। बाकी धड़ उसके पैरों तले पड़ा चीखता चिल्लाता रहा।

पासिथेया — हाय भगवान्! (बेहोश हो जाती है)

सब — उसे उठाओ, उठाओ, हाय बेचारी!

मेगास — यह दुःख हमारे ऊपर भी आ सकते हैं।

बालटिस — हा ! दैव, मेरा बेटा, जब इन वीभत्स समाचारोंने मुझे नींदमें झकझोर दिया तब भी मैंने सोते बेटेको जगायातक नहीं।

गारदास — मेरी स्त्री और छोटी लड़की झोंपड़ीमें हैं। शायद दानव दरवाजेपर अपनी आग्नेय सांसें फेंक रहा है। मैं वापिस जाऊंगा।

मोरस — दामेतेज, चलो, हम सब लौट जायें।

दामेतेज — अरे बाबा, मैं बीस हजार पत्नियों और बच्चोंके लिये भी नहीं लौटूंगा। जीवन मधुर है।

अनेक आवाजें — हम नहीं लौटेंगे।

मेगास — यह कैसी आवाज है ?

बालटिस — भागो, भागो, कोई नयी मुसीबत आ रही है।

(सब दौड़ने लगते हैं। थेरप्सका प्रवेश)

थेरप्स — तुम भागकर जाओगे कहां ? पोसायडनका कोप तुम्हारे नजदीक है, तुम्हारे ऊपर है, तुम्हारे पीछे है, और तुम्हारे आगे भी है। गीली मिट्टीमेंसे निकलकर उसके दानव हमारे समुद्रतटपर गुंते हुए संहार कर रहे हैं और रोषभरा समुद्र अस्वाभाविक रूपसे उफनता हुआ हमारी पहाड़ियोंपर चढ़ता चला आ रहा है।

दामेतेज — चलो, हम सौ कोस दूर भागकर जान बचायें।

थेरप्स — अरे तुम्हारे सामने एक और मौत खड़ी हैं। कल रात एसीरियाकी सेना तीन ओरसे हमारी सरहदमें घुस आयी है। हमारी सरहदके रखवाले कट मरे। एसीरियावाले यंत्रणा देते हैं, जलाते हैं, बलात्कार करते हैं। युवतियों और प्रौढ़ महिलाओंको, पुरुषों और लड़कोंको कत्ल करते हुए आगे बढ़ते हैं। मुक्तिकी राह तुम्हारे सामने नहीं है और पलायन तुम्हें कुपित देवोंसे भी अधिक क्रूर मानवोंमें जा धकेलेगा। मुझे तुम्हारी चुप्पीसे आश्चर्य नहीं होता। डरके मारे तुम्हें इन असह्य अनिष्टोंका उपचार बताऊंगा।

आवाजें — हां, बताओ, बताओ, तुम हमारे राजा बनोगे।

मेगास — हम तेरी प्रतिमा बनाकर महान् पोसायडनके पास रखेंगे और उसकी पूजा करेंगे।

थेरप्स — तुम्हारे ऊपर उतरे इस त्रासदायक कोपका बेजोड़ कारण क्या है ? क्या सीफियसका धृष्ट दुःसाहसी वंश ही इसका कारण नहीं है ? सीरियावासियो ! तुम्हारे प्रेम और श्रद्धासे मदोन्मत्त होकर क्या तुम्हारे राजाओंने देवोंका अपमान नहीं किया ? पोसायडनके बलिको छुड़ाकर धार्मिक अत्याचार करके ओछे-

पनसे तुम्हारे जान-मालको खतरेमें नहीं डाला है ? सीरियाकी प्रजा, तुम्हारे सारे संतापका मूल स्रोत है तुम्हारा राजा। उसीकी बदौलत भयानक जानवर तुम्हें खाये जाते हैं...।

चीखें — उन्हें खतम कर दो। चलो, उन्हें समुद्रमें फेंक दें। भले पोसायडन उन्हें निगल जाय।

थेरप्स — किन्तु मैं सबसे ज्यादा दोष केल्डियाकी उस पतित नारीको देता हूं जो तुम्हारे ऊपर हुकुम चला रही है। सीफियस क्या है ? राजवंशमें सजा हुआ बस एक गुड्डा जो रानीकी सनकके अनुसार आगे-पीछे नाचता-फिरता है। जिस देशमें स्त्रियोंका राज्य हो वह बड़ा अभागा है, और उससे अभागा वह देश है जो निर्दय परदेशियोंका शिकार हो। ओ अभागे शनिग्रस्त सीरिया, तूने दो बुरेसे बुरे अनिष्टोंको एक ही दुष्कृत्यमें समा लिया है। केल्डियाकी लापरवाह नारी तुम्हारे देवोंकी, तुम्हारी जिन्दगीकी, तुम्हारे बेटे-बेटियोंकी क्या परवाह करती है ? तुम्हारी कड़ी मेहनतकी कमाईपर वह मौज करती है। वह अपने कृपापात्रोंके बलपर खड़ी है; हां, हां, अपने यारोंके सहारे — अरे भई, औरतोंको कृपापात्रों और मानीतोंसे वासना-तृप्तिके सिवा और काम ही क्या होगा ? और वह तुम्हारे देवोंका अपमान करती है। क्या तुम नहीं मानते कि केल्डियावासियोंको इसने इसी कारण बचाया कि वे उसके देशवासी थे और अपनी नन्हीं लड़की एण्ड्रोमीडाका उपयोग इसलिये किया कि उसका बावसुलभ सौन्दर्य कोप और संशयको निहत्था कर डाले ? फिर जब सारे अपराधकी पोल खुल गयी तब सबका सामना किया, और बेचारे अच्छे पुजारी पोलीडियोनकी छातीपर केल्डियाकी सेनाकी तलवारें तुलवा दीं —तुम लोगोंने यह बात नहीं सुनी ? बेचारा अच्छा पोलीडियोन, कितने उत्साहसे पोसायडनकी सेवा करता है। इस कारण भगवान् नाराज हैं। तुम्हारी औरतों, बहनों और बेटियोंको केल्डियाकी केसियोपियाके कारण दुःख झेलने पड़ेंगे।

चीखें — चलो, उसे पकड़कर मार डालें, मारो, मारो, उसे मार डालो।

दामेतेज — उसे जला दो।

मोरस — उसे भून दो।

मेगास — उसके लाख-लाख टुकड़े कर दो।

चाब्रियास — किन्तु वे हमारे राजा नहीं हैं क्या ? हमें उनकी आज्ञा माननी चाहिये

थेरप्स — हम उनकी आज्ञा क्यों मानें ? राजा भी तो मनुष्य है आखिर, और दोस्तो, उन्हें हमारे सरपर इसलिये बिठाया जाता है कि वे हमारी सेवा करें, न कि हमें

नुकसान पहुँचायें। सीरियाके लोगो! हमारे बेटे-बेटियां उनके लिये क्यों खून बहायें? क्या हमारा रक्त भी उनके रक्तके जितना ही प्यारा, अमूल्य और मानवीय नहीं है? ये राजा, ये आदमी मखमलके राजवेशमें क्यों घूमें जब कि तुम जरासे पैसोंके लिये कड़ी मेहनत करते हो और फिर भी नंगे-भूखे रहते हो?

चीखें — सच है, सच है, सच है।

गारदास — यह अद्भुत आदमी है, यह थेरेप्स कमालका है। मेरे देशवासियो, यह सचमुच दिमागवाला आदमी है।

दामेतेज — हु— दिमाग! मोरस, वह हम-तुमसे ज्यादा बुद्धिमान् नहीं है।

मोरस — दामेतेज, नहीं, मुझे नहीं लगता।

दामेतेज — हम लोग यह सब पहलेसे ही जानते थे। हम गलेकी रगें फुला-फुलाकर बोलनेवाले इस थेरेप्ससे यह सब सुननेकी जरूरत नहीं।

मोरस — दामेतेज, हमने कई बार इस विषयकी चर्चा की है।

मेगास — देशवासियो, हमें अब राजाओंकी जरूरत नहीं है।

चीखें — राजा नहीं चाहिये, राजा नहीं चाहिये।

गारदास — या फिर थेरेप्स ही हमारा राजा होगा।

चीखें — हाँ, राजा थेरेप्स! थेरेप्स ही राजा हो।

दामेतेज — आहा, हमारे अच्छे फुफ्फुस-महाराज! चलो, हम उन्हें राजा बनायें। मोरस, तब वह बाजारमें इतना अधिक गाल न बजा सकेगा!

थेरप्स — पोसायडन हमारे राजा हैं और हम उनकी प्रजा। हमें देवोंकी पूजा तो करनी ही होगी। लेकिन मनुष्योंकी पूजा क्यों करें? मर्त्य-दुर्बलताके सिरपर स्वर्गका मुकुट क्यों पहनायें? उन्होंने महान् पोसायडनको नाराज किया है। उन्होंने भयंकर अधार्मिक कृत्य किया है। उन्हें मरना चाहिये।

चीखें — उन्हें मार डालो। चलो, पोसायडनको मनाकर राजी करें।

चाब्रियास — स्वर्गके शक्तिशाली देवोंकी पूजा करो लेकिन राजाके सामने भी झुके रहो

थेरप्स — हमें राजाओंसे क्या मतलब? ये राजा लोग हैं क्या?

चाब्रियास — ये देवोंके बीज हैं।

थेरप्स — तो फिर वे अपने ओलिंपियसके नातेदारोंसे अपने झगड़े अपने-आप ही निबटा लिया करें न। हम क्यों उनके लिये मुसीबतमें पड़ें? एण्ड्रोमीडाको समुद्रतटपर खुला छोड़ दो और आयोलसकी बलि चढ़ा दो तब पोसायडनका

कोप अपने विशाल लहरोंके साम्राज्यमें वापस चला जायगा।

चाब्रियास — ऐसा करना ही है तो शांतिके साथ न्यायके अनुसार होने दो।

थेरप्स — न्याय! अरे जिन्होंने अपराध किया है वही न्यायाधीश हैं। तुम उनकी वकालत किसलिये करते हो? अच्छा, तो क्या तुम पोसायडनके दुश्मनोंके साथ सहानुभूति दिखा रहे हो?

चीखें — उसे भी मार डालो, चाब्रियासको मारो! पोसायडन, महान् पोसायडन —हम पोसायडनकी प्रजा हैं।

दामेतेज — चलो, उसे अपने बेटेके पास भेज दें और उसी रास्तेसे।

मोरस — उसका सिर तोड़ दो — देखें उसमें दिमाग है भी कि नहीं। हो...हो...हो।

थेरप्स — अरे छोड़ो उसे। वह बेवकूफ है। देखो, हमारा उत्साही, अच्छा, दयालु पुजारी आ रहा है। वह रहा हमारा पोलीडियोन।

(पोलीडियोनका प्रवेश)

पुकारें — पोलीडियोन! पोलीडियोन! अच्छे पोलीडियोन! हमें बचाओ, पोलीडियोन, बचाओ।

पोलीडियोन — आहा! अब मुझे जान बचानेके लिये बुला रहे हो? कल रात जब परदेसी तलवारें मेरी छातीपर थीं तब तो तुमने मुझे नहीं बचाया।

मेगास — माफ कर दो, हमारी रक्षा करो।

दामेतेज — तुम्हीं हमें महलतक ले चलो। हमारे सरदार बनो।

मोरस — हमें राजा नहीं चाहिये। तुम हो, तुम ही हमें रास्ता दिखाओ। चलो, चलें राजमहलकी ओर।

मेगास — पोसायडन राजा बनेंगे और तुम उनके प्रतिनिधि।

गारदास — और थेरप्स तुम्हारा दाहिना हाथ होगा।

चीखें — हां, थेरप्स! थेरप्स!

पोलीडियोन — अच्छा, अब तुम्हारी अक्ल ठिकाने आ गयी। इस मार-काटने तुम्हारी फसद खोल दी है। हां, तुम अगर घायल न होते तो ज्यादा अच्छा रहता। खैर, पोसायडन क्षमा करते हैं और मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।

चीखें — पोलीडियोनकी जय! अच्छा पोलीडियोन! पोसायडनका प्रतिनिधि!

पोलीडियोन — तब कसम खाओ कि पोसायडनकी इच्छाके अनुसार करोगे।

चीखें — हम कसम खाते हैं।

दामेतेज — हुकुम देकर देख लो।

पोलीडियोन — लेकिन लोगो, केसियोपियाकी जीभ फिरसे तुम्हारा मन बदल तो

न देगी ?

दामेतेज — हम जीभ काटकर उसके कुत्तोंको खिला देंगे।

पोलीडियोन — तो आयोलसका रक्त बहेगा न? एण्ड्रोमीडाको शहरके रास्तोंपर घसीटते हुए पहाड़ीतक ले जाया जायगा और वहां देवकी आज्ञानुसार उसे विवस्त्र ही उसके समुद्री दानवोंके लिये फेंक दिया जायगा? और सीफियस तथा केसियोपिया मरेंगे?

चीखें — हां, जरूर मरेंगे।

मेगास — उनमेंसे कोई भी न बचेगा।

पोललीडियोन — तो चलो, मेरे बच्चो!

दामेतेज — किन्तु दानव? क्या वह हमें रास्तेपर ही न चीर डालेगा?

पोलीडियोन — तुम, जो पोसायडनकी इच्छा पूरी कर रहे हो, तुम्हें वह छूएगा भी नहीं। मैं तुम्हारा रक्षाकवच हूं। चलो, मैं तुम्हारे आगे-आगे चलूँगा।

चीखें — राजमहलको चलो, चलो राजमहलको। केल्डियावालोंको मार डालेंगे। सीफियसका गला घोंट देंगे। रानीकी बोटी-बोटी अलग कर देंगे।

पोलीडियोन — मेरे प्यारे बच्चो, सलीकेसे, अच्छे ढंगसे चलो।

(भीड़ पोलीडियोन और थेरेप्सके पीछे-पीछे उमड़ पड़ती है। सिर्फ दामेतेज, चाब्रियास, बालटिस और पासिथेया पीछे रह गये हैं)

दामेतेज — चलो, चाब्रियास, हम मजा करेंगे।

चाब्रियास — मेरा मृत बेटा मुझे पुकार रहा है। (वह दूसरी दिशामें निकल जाता है।)

बालटिस — पासिथेया, उठ, चल। तू उसकी मौत देख जिसने तेरी बेटीकी हत्या की।

पासिथेया — मुझे यहीं पड़े-पड़े मरने दो।

दामेतेज — उसे उठा लो। मूर्ख, चल।

(वे पासिथेयाका हाथ पकड़कर बाहर जाते हैं)

दृश्य २

(सिडोनीका बगीचा, सिडोनी, आयोलस और परसियसका प्रवेश)

सिडोनी — परसियस, तुमने उसे पत्थरमें नहीं बदला?

आयोलस — अरी साक्षात् क्रूरता! क्या हमें सारी दुनियामें अपने साथियोंको

पत्थर बनाते जाना चाहिये ? यह तो भद्रता न होगी।

सिडोनी — वह मूर्तिके रूपमें कितना निर्दोष होता।

परसियस — सीरियापर पौ फट रही है और सूर्य नारायण अपने नील साम्राज्यमें राजोचित ठाठसे चढ़ रहे हैं। मैं अपने अंदर एक आंदोलन अनुभव कर रहा हूं मानो महत्त्वपूर्ण घटनाएं आगे आ रही हैं और स्पष्ट दृष्टिवाली देवि एथिनी मुझे महान् तथा हितकर कार्य करनेका प्रोत्साहन दे रही हैं। आकाशमें तुमुल कोलाहल मचा है। देवों और दानवोंके कठिन संघर्षकी आवाज है।

(डायोमिडीका प्रवेश)

डायोमिंडी — आह, कुमार! (रो पड़ती है)

आयोलस — डायोमिडी, क्या आफत आयी ?

डायोमिडी — भागो, सीरियासे भाग जाओ। अपनी जान बचाओ।

आयोलस — सीरियासे ? अकेला मैं ही खतरेमें हूं ? तब तो मैं बैठकर प्रतीक्षा करूंगा।

डायोमिडी — पोसायडनके दानव समुद्रतलसे निकल रहे हैं। वे हमारे पापोंके लिये हमें चीर-फाड़ डालेंगे। पोलीडियोनके नेतृत्वमें क्रोधांध प्रजा महलकी ओर चिल्लाती हुई बढ़ रही है "मार डालो राजाको, रानीको जबह कर दो और एण्ड्रोमीडा तथा आयोलसके प्राण ले लो।" हाय मेरी प्यारी सहेली, उसके लिये उन्होंने कसम खायी है कि उसे समुद्रतटकी पहाड़ीपर विवस्त्र ही बांध देंगे ताकि क्रूर दानवके जबड़े उसे चीरकर निगल जायें।

आयोलस — मेरी तलवार, सिडोनी, मेरी तलवार ला।

डायोमिडी — आह, रक्तके प्यासे खूँखार लोगोंके सामने मत जाओ। प्रेक्सीलाने अपनी भूरी शालमें मेरा मुँह छिपाकर चोरीसे मुझे बाहर निकाला है। तुम्हें चेतावनी देनेके लिये मैं हवाको भी मात करके आयी हूं। वह पागल भीड़ मुझे पहचान पाती तो मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालती। क्या तुम उन लोगोंके सामने जाओगे जो तुम्हारे नामके साथ मौत और गालियोंको जोड़ते हैं ? पोलीडियोन उनका नेतृत्व करता है।

सिडोनी — काश, वह केवल पत्थर होता।

आयोलस — मेरी तलवार !

(सिडोनी उसे तलवार देती है। परसियस झोंपड़ीमें जाता है)

डायोमिडी — तुम जाओगे ही ? तुम अकेले दस हजारके सामने क्या करोगे ?

आयोलस — मरना तो अपने हाथमें है ही। मैं इस जमघटसे नहीं डरता। वह

सिर्फ कायरोंका भीड़-भड़क्का है।

डायोमिडी — लेकिन आतंकने उन्हें रुद्र रूप दे दिया है। वे बड़े खतरनाक हैं।

आयोलस — प्रिये, अगर मैं मारा जाऊं तो डायोमिडीको अपनी सेवामें रख लेना। अपनी मांके साथ यहांसे गाजाकी ओर बच निकलना। उनके पास सोना है। तुम ऐसा ही जीवन फिरसे शुरू कर सकोगी। कभी-कभी मुझे याद कर लिया करना।

सिडोनी — डायोमिडी, तुम मेरी मांको सान्त्वना दोगी? उनसे कहना मैं सही-सलामत हूं और राततक लौट आऊंगी। और एक बात तुम्हारे कानमें, मैं न लौटूंगी, तुम मांको लेकर रातको अंधेरे परदेमें यहांसे बच निकलना। तुम उनकी बेटी बनकर रहना, इस सुनसान बुढ़ापेमें उनका सहारा बनना।

आयोलस — तुम्हारा मतलब क्या है सिडोनी।

सिडोनी — तुम तैयार हो? चलो, चलें।

आयोलस — क्या? चलें, प्यारी पगली!

सिडोनी — तुमने बहुत बार कहा है कि हम तुम एक हैं, अब देखती हूं तुम्हारी बात कहांतक ठीक थी।

आयोलस — जिस सुन्दर गातको मैंने इतनी बार चूमा है उसे तुम इस जंगली भीड़-को नोच-खसोटके लिये नहीं दे सकतीं। मेरा हुकुम न मानोगी?

सिडोनी — नहीं।

आयोलस — तुम यहाँसे हिल न सकोगी।

सिडोनी — मेरी समझमें नहीं आता तुम रोक कैसे लोगे मुझे।

आयोलस — अरे शैतान, तुझे रस्सियां रोककर रखेंगी। तेरी इन हठी कलाइयों-को पेड़के तनेसे बांध दिया जायगा और जबतक सारा मामला खतम न हो जाय तुम यहीं बंधी रहोगी। (परसियस सशस्त्र लौटता है)

सिडोनी — मैं पेड़को भी घसीटकर तुम्हारे पीछे-पीछे चली आऊंगी।

आयोलस — ओहो, सचमुच, हरक्यूलिस!

परसियस — मेरे आयोलस, उसे मना न करो। उसका बाल भी बांका न होगा। अब मैं उठ खड़ा हुआ हूं और तुम्हारा विक्षुब्ध सीरिया मुझे जीयसके पुत्रके रूपमें जान पायेगा।

आयोलस — परसियस, क्या तुम सचमुच देवता हो? तुम क्या कर लोगे? सारी प्रजाके सामने तुम अकेले हो। तुम कौनसा रास्ता निकालोगे?

परसियस — यह बातें करने या योजनाएं बनानेका समय नहीं, काम करनेका समय

है। मेरे हृदयमें एक सत्ता बैठी है जो हर क्षणकी आवश्यकताको देखती है और उसके अनुकूल रास्ता निकालती है। बिलकुल न डरो, मैं सहायता करने और बचानेके लिये ही आया हूं।

आयोलस — मैं भूल-सा गया था। तुमने जो शक्ति दिखायी थी वह काफी प्रमाण है।

सिडोनी — डायोमिडी, मैं लौटकर आऊंगी।

परसियस — हरपीपर मेरी पकड़ मजबूत है। एथिनीकी ढाल मेरी कलाईकी रक्षा करती है, सर्वशक्तिमान् और शांत देवी अपनी दुर्द्धर्ष इच्छाशक्तिके साथ मेरी गतिविधिका संचालन करती है। मेरे ऊपर विश्वास रखो। अपने चमकदार पंखोंवाले जूते पहने अदृश्य होकर मैं हवाके हलके झोंकोंके साथ तुम्हारे संग रहूँगा। (आयोलस और सिडोनीके साथ बाहर जाता है)

डायोमिडी — मैं उनके पीछे नहीं जा सकती, बहुत ही थक गयी हूं। उन दरिन्दों-की चीखों-जिल्लाहटोंके कारण मैं बिलकुल टूट गयी हूं। चलो, यहीं छिप रहूं और देखूँ देवताओंकी यह लड़ाई मेरे और मेरी मधुर हृदयमालकिनके लिए क्या परिणाम लाती है।

ओ मेरी एण्ड्रोमीडा, ओ मेरी हमजोली !

(झोंपड़ीकी ओर रोती हुई बाहर जाती है)

दृश्य ३

(महलके बाहरी चौकके सामनेका कमरा)

नेबेस्सार और प्रेक्सीला

प्रेक्सीला —मैंने छतपरसे देखा है। कमसे कम दस हजार आदमी रास्तोंपर कूच कर रहे हैं। तुम्हें उनकी आवाज सुनायी देती है ? ऐसा लगता है मानो अन-गिनत बर्रोंकी भयंकर भूँ-भूँ धीरे-धीरे हमारी ओर बढ़ी चली आ रही है।

नेबेस्सार — अगर इतने अधिक हैं तब तो राजकुमारीको बचाना मुश्किल होगा।

प्रेक्सीला — उसे बचाना ? अरे अब किसीको बचाना संभव नहीं।

नेबेस्सार — मुझे भी यही डर है।

प्रेक्सीला — लेकिन हमने जिसकी रोटी खायी है उसके नमक-हलाल नौकरोंकी तरह मरनेके लिये समयकी कमी नहीं है। कमसे कम राजमहलकी हम दासियां

तुम केल्डियनोंको यही रास्ता दिखायेंगी।

नेबेस्सार — प्रेक्सीला, हम सैनिक हैं। जिस रास्तेपर हम रोजाना मरनेकी संभावना लेकर ही चला करते हैं उस रास्तेपर हमें पथप्रदर्शककी जरूरत नहीं है। मैं अपने सिपाहियोंको लिये आता हूं।

(वह बाहर जाता है, केसियोपिया आ रही है, उसे सलाम करता है)

केसियोपिया — प्रेक्सीला, तेज कदम डायोमिडी अब तो पहुँच गयी होगी।

प्रेक्सीला — मैं आशा करती हूं महारानी!

(अन्दरके कमरेमें जाती है)

केसियोपिया — आयोलस तो सुरक्षित है। मेरे दुःखी दिलको इतना तो ढाढ़स मिला। एण्ड्रोमीडा, ओ मेरी बच्ची एण्ड्रोमीडा, तू मुझे अपने-आपको न बचाने देगी? अगर तू भी चली जाती तो भले उनकी भयंकर उंगलियां मुझे चीरती-फाड़तीं, मैं फिर भी मुस्करा सकती। (सीफियसका प्रवेश)

सीफियस — भीड़ नजदीक आ रही है। मेरे सीरियावासी रक्षक भाग गये हैं। अब हम सुरक्षाकी आशा नहीं कर सकते।

केसियोपिया — तब कड़ियोंको शीघ्र आग लगानेके सिवा और करना ही क्या है ताकि हमारे मित्रोंकी तलवारें जमघटके अत्याचारका मुकाबिला कर सकें।

सीफियस — केसियोपिया, ओ केसियोपिया, क्या इस दुर्भाग्यके लिये ही तू एक सम्राटका महल छोड़कर यहां मुस्कराती हुई आयी थी?

केसियोपिया — मेरे लिये दुखी न होओ।

सीफियस — देवी, केल्डियाकी राजकुमारी, अपने ऊपर बर्बादी लानेवाले इस जनको क्षमा कर। लेकिन मेरा आशय शुभ था और मेरा ख्याल था कि मैं बड़ी बुद्धिमानीसे काम कर रहा हूं। किन्तु देवगण हमारी सतर्क नीतियोंको हमसे छीन कर अपना ही काम बना लेते हैं। और तब हम जो करना चाहते थे उसे याद करके और जो हुआ है उसे देखकर आश्चर्य और भयके मारे खड़े-के-खड़े रह जाते हैं।

केसियोपिया — मैं अधूरे मनसे सिर्फ तुम्हारे राज्य और सुखमें भाग लेने न आयी थी। मैं पूरी तरह तुम्हारे दुःख और संतापमें भी हिस्सा बंटाने आयी थी।

सीफियस — हमारे ऊंचे उड़ते हुए आदर्शोंमें क्या कोई सत्य नहीं है? मेरा शासन वसंत ऋतु-सा सौम्य और मलयानिल-सा ममतापूर्ण था। उसने न्यायको सद्भावसे नरम बनाया, वह विद्रोही और पापीको भी क्षमा देता था। मैंने दया दिखायी जो देवों और राजाओंका विरल चिह्न है। इस अति कठोर

जगत्‌में, क्षणभँगुर जीवनमें, अपने सद्‌गुणोंसे देवोंकी सेवा करना मैंने सर्वोत्तम माना। प्रजाका सुख ही मेरी एकमात्र चिन्ता थी। अपनी प्रजाके प्रेमको ही मैंने सिंहासनकी आधार-शिला माना और दिवा-स्वप्न लेता रहा कि मेरा चुना हुआ तरीका सच्चा, महान् और देवोचित है। परन्तु स्वर्गके देवोंकी इच्छा मनुष्यसे भिन्न होती है। उनके अति उच्च, भयानक संकल्प मनुष्यकी दृष्टि-से परे होते हैं। मैंने जिस नियतिकी आशा की थी, उसके विपरीत वे यह बर्बादी दे रहे हैं।

केसियोपिया — एक छिपी हुई आवश्यकता देवोंको भी बाधित करती है। मानव-जीवनको लांघती हुई वह अदृश्य सीमाओंकी ओर बढ़ती है। हमारी करुण असफलताएँ भी उस चढ़ाईमें सोपान बनती हैं।

सीफियस — मेरे पिता शांत, न्यायप्रिय, दयाहीन और रुक्ष थे और एक वज्र-कठोर देवताकी नाईं, साष्टांग प्रणत पृथ्वीपर उनका दबदबा था। उनकी प्रशंसा होती थी, लोग उनसे डरते थे। वे मरते दमतक पराक्रमी राजा रहे। और मेरा अंत इस घृणित विध्वंसमें हो रहा है।

केसियोपिया — इस धरतीपर दयासे भिन्न नियमोंका राज्य है।

सीफियस — आह केसियोपिया, अगर मैंने तेरी बात सुनी होती तो शायद संयोग ज्यादा अच्छा, सुखी मोड़ लेता। तू हमेशा कहती थी : प्रजाका प्रेम फिसलते समुद्रपर बालु कच्छ या रेतके दलदलका झलमल मात्र है। आज वे तेरे साथ हैं कल किसी और तरफ मुड़ जायेंगे। विवेक या दूरदर्शिता, शक्ति और नीति-पर ही भरोसा किया जा सकता है। मैं सोचता था कि मैं अपनी प्रजाको तुमसे ज्यादा अच्छी तरह जानता हूं। क्या यह मेरी वही प्यारी प्रजा नहीं है जो मेरे दरवाजेपर हुल्लड़ मचाती हुई, बाघकेसे हृदयवाले जमघटका रूप लेकर जंगली दरिन्दोंकी तरह गुर्रा रही है, खून पीनेके लिये चीखती हुई, घृणाके साथ गरजती हुई यह प्रजा वही है क्या ? तूने हमेशा मंदिरवालोंकी शक्तिको राज्यके लिये बढ़ते हुए खतरेके रूपमें देखा, तूने इस पुजारीके काले मलिन चेहरेपर चीतेकी तरह दुबकी हुई महत्त्वाकांक्षा, सांप जैसे गर्व और क्रूर कुटिलताके बारेमें कहा। पर मैंने सिर्फ देवता और उनके पवित्र पुजारीको ही देखा। अब मैं पुजारी और देवताके सामने बलिके रूपमें फेंका जा रहा हूं। तूने मुझे बाजार-हाटके मृदुभाषी वक्ता थेरेप्ससे डरने और उसे कुचल देने या फिर उसे अपनाकर उस-के प्रभावको अपनी ओर कर लेनेकी सलाह दी थी। मुझे वह एक खोखली आवाजके सिवा कुछ न लगता था। मैं बहुत देरमें सीख पाया कि वाक्शक्तिमें

आदमीके दिल बदलनेकी क्षमता होती है और वह समयके प्रवाहतकको बदल देती है। तेरी आंखें फीनियसके षड़यन्त्रकारी मस्तिष्कको पढ़ सकती थीं। और मैं अपनी अनिच्छुक बेटीको मूल्यरूपमें देकर टायराका सामर्थ्य खरीदनेकी सोच रहा था। उसीने मेरे पतनकी योजना घड़ी है और अब मेरे संतापको संतोषसे देख रहा है। मैं हर कदमपर अंधा था, और असफल रहा। सारा दोष मेरा ही था। अब सब कुछ लुट चुका और मेरी ही गलतीके कारण।

केसियोपिया — अपने-आपको दोष मत दो। तुम्हें जैसा बनना चाहिये था, तुम वैसे ही बने और फिर बेकार पश्चात्तापसे आजतक किसीको मदद नहीं मिली। अब बहुत देर हो गयी है; बहुत अधिक देर हो गयी है। अब तो मरना ही बचा है। नियति और देवताओंको इससे अधिक स्वीकार नहीं है।

सीफियस — किन्तु बर्बादीका सामना करनेकी सामर्थ्य तो हमारे पास है ही। राजोचित परिवेशमें, मुकुट धारण करके हम अपनी प्रजाके सामने जायेंगे तथा मौत और तकदीरके साथ आंखें चार करेंगे। यह सशस्त्र लोगोंका पदचाप कैसा है?

(केल्डियाके अंगरक्षक नेबेस्सारके नेतृत्वमें प्रवेश करते हैं)

सेनापति — महाराज, हम केल्डियाके सैनिक आपके साथ मरने आये हैं क्योंकि सीरियावालोंने तो आपको छोड़ ही दिया है।

सीफियस — सैनिको, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं।

(बाहरसे चीखें, पोसायडन, महान् पोसायडन! हम पोसायडनकी प्रजा हैं। चलो, अन्दर, अन्दर! इस भड़ुए सीफियसको मार डालो और वेश्या केसियोपियाको चीर-फाड़ डालो।)

सीफियस — भद्दे आक्षेपोंकी उद्धत आवाजें हृदयहीन भीड़के आनेकी सूचना देती हैं। अपने महलकी सीढ़ियोंपर हम अपनी प्रजाका सत्कार करेंगे।

केसियोपिया — बहुत ठीक, महाराज, यह बात आपको शोभा देती है।

नेबेस्सार — सैनिको, इन प्रतापी राजा-रानीके आगे कंधे-से-कंधा सटाकर भालोंकी नोकें सजा रखो।

(भीड़ अन्दर उफनती है। थेरेप्स और पेरिसस उनके अगुआ है। पोलीडियोन कुछ पीछे है। दामेतेज, मोरस और अन्य सब आते हैं। प्रेक्सीला और राजपरिवारके अन्य नौकर दोड़ते हुए अन्दर आते हैं)

भीड़ — मारो, काटो, केल्डियाके सैनिकोंके टुकड़े-टुकड़े कर दो।

थेरप्स — ठहरो, भाइयो, ठहरो। बेकार खून-खराबा न हो।

केसियोपिया — आहा, कैसा कोमलहृदय जननायक है।

थेरप्स — सीफियस और केसियोपिया, अपने भाग्यके साथ खेलना बेकार और घृणित पाप है। इसके कारण तुम अपमानित प्रजाकी सत्ता और गौरवके आगे और अधिक अपराधी बनोगे।

सीफियस — सत्ता! गौरव!

केसियोपिया — घिनौनी सत्ता और भूखे भेड़ियेसा गौरव!

थेरप्स — बदतमीज औरत, मैं तेरे साथ बात नहीं कर रहा।

सीफियस — ज्यादा नम्र भाषामें बोल, मैं अभीतक तेरा राजा हूं।

थेरप्स — सीरियामें आखिरी राजा! बता, क्या तू अपने बच्चे वेदीके लिये दे देगा और इस केल्डियाकी औरतके साथ सीरियाकी समवेत इच्छाशक्तिके आगे अपने-आपको दया या न्यायके लिये समर्पित कर देगा?

केसियोपिया — एक चीरती हुई दया, एक गुर्राता हुआ फैसला।

पोलीडियोन — थेरप्स तुम, इनके साथ क्यों बोलते हो? केल्डियाके सैनिको! प्रेक्सीला तुम, और घरकी सब औरतें सुनो! जिस अत्यन्त अप्रिय चुड़ैल एण्ड्रोमीडाने सीरियापर यह गाज गिरायी है उसे बाहर निकाल लाओ। तुम लोग क्यों व्यर्थमें चीरे-फाड़े जाओ?

औरतोंकी आवाजें — एण्ड्रोमीडाको लाओ। निकालो उस पतुरियाकी बच्चीको, बाहर ले आओ।

आदमियोंकी आवाजें — एण्ड्रोमीडा! एण्ड्रोमीडा! एण्ड्रोमीडा! पाजी एण्ड्रोमीडाको मरनेके लिये निकालो।

(अंतःपुरसे एण्ड्रोमीडा निकलती है। उसके पीछे गुलाम लड़कियाँ उसे रोकती, मानती आती है)

प्रेक्सीला — हाय, क्या तू अंततक जिद्दी ही बनी रहेगी?

केसियोपिया — अरे रे मेरी बेटी!

एण्ड्रोमीडा — माँ, मेरे लिये मत रो! शायद मेरी मौत तुम्हारी रक्षा कर सके। यह ठीक ही है कि मैं मरूँ। बेचारी निर्दोष प्रजा नहीं, उनका अन्यायी देवता मेरे ऊपर कुपित है।

सीफियस — ओ, मेरी प्यारी सूर्य-किरण।

एण्ड्रोमीडा — (आगे बढ़कर प्रजाके सामने आती हुई) लोगो, तुमने मुझसे प्यार किया है, तुम मुझे बुलाते हो तो मैं हाजिर हूं।

(भीड़ भयंकर रूपसे चीख-पुकार करती है)

थेरप्स — देखो, दहशतके मारे कैसे पीछे हट रही है !

प्रेक्सीला — हाय भगवान् ! असंख्य दानवोंकी कैसी भयंकर चिंघाड़ है। उनकी आंखोंमेंसे मौत चमक रही है। ये मनुष्य नहीं हैं, सीरियावासी भी नहीं हैं। खूँखार पोसायडनने उनके मनोंपर कब्जा कर लिया है और अपनी रक्तपिपासा उनमें घोल दी है। उनकी विवेकशक्ति बहरी हो चुकी है तथा उनके दिलोंमें दया-मायाका नाश हो गया है। इन आंखोंसे पोसायडनका कोप हमारी ओर घूर रहा है। हमारे रास्तोंपर उसके सागरका गर्जन छा गया है।

(भीड़से आवाजें आती हैं)

बालटिस — पकड़ो, उसे बांध लो ! टुच्ची कहींकी !

औरतोंकी आवाजें — उसे हमारी ओर फेंक दो ! हमारी ओर फेंको उसे। हम उसकी एक-एक नसको नोंच डालेंगी। दामेतेज, उसे हमारी ओर फेंको। हम उसे तिल-तिल करके जलायेंगी।

मोरस — हां, उसे जिन्दा पकाओ, क्यों दामेतेज ? हां, हो, हो।

पुरुषोंकी आवाजें — उसने हमारे बेटे-बेटियोंकी हत्या की है। उसे मार डालो, मार डालो उसे।

औरतोंकी आवाज़ें — वह अपनी बदमाश मांकी संतान है। उसे मार डालो।

भीड़ — हमारी ओर फेंको उसे, हमारी ओर फेंको।

मेगास — शांति, शांति भाइयो ! वह तुम्हारी नहीं, पोसायडनकी है।

एण्ड्रोमीडा — हाय ! तुम मुझे गालियां क्यों देते हो ? मैं तुम्हारी खातिर मरनेके लिये तैयार हूं। आज सवेरे मुझे दानवके आनेका पता होता तो तुम्हारे सोते-सोते ही मैं उसके सामने चली जाती और तुम्हारे उन बेचारे प्यारे बच्चोंको बचा लेती। उनकी यातनाएं मेरी अपनी यातनाएं थीं। अगर मैं पहले मर जाती तो मुझे यह दुःख न सहने पड़ते। मेरे प्यारे प्रजाजन, तुम भी कभी मुझे प्यार करते थे। जब मैं तुम्हारे घरोंके पाससे गुजरती थी तो तुम लोग हमेशा असीसें दिया करते थे। कई बार तुम्हारी लड़कियां और माताएं मुझे पकड़कर छातीसे जकड़ लेती थीं और देहलीपर मुझे चूमकर बड़ी अनिच्छासे विदा देती थीं। आह, अब मुझे शाप मत दो ! मैं सब कुछ सह सकती हूं पर तुम्हारे शाप नहीं सह पाऊंगी।

पेरिसस — अरे राम, मेरी सलोनी ! किस खब्तमें आकर तू यह काम कर बैठी ?

पोलीडियोन — सीरियाके लोगो, तुम्हारे प्रेमके पुरस्कारस्वरूप वह तुम्हारे सिरपर मौत ले आयी है। और अब आंसू बहाकर तुम्हें पिघलाना चाहती है।

भीड़ — मारो, उसे काट डालो! केल्डियाकी सेनाकी बोटी-बोटी काट डालो। हम इस लड़कीको लेकर रहेंगे।

पासिथेया — आह! उसे मत मारो! वह बिलकुल मेरी बेटी जैसी है जिसे दानव फाड़कर खा गया।

मेगास — अस्वाभाविक मां! जिसके कारण तेरी बेटी खायी गयी उसीको बचायेगी क्या?

पासिथेया — अरे, उसकी हत्या करनेसे क्या मुझे अपनी बेटी वापिस मिल जायगी!

मेगास — नहीं, लेकिन उससे अन्य माताओंके बच्चे बच जायेंगे।

दामेतेज — अरे, इसका मुँह बंद करो। निपट मूर्ख कहींकी!

आवाजें — चीर डालो, काट डालो एण्ड्रोमीडाको! पकड़ लो, बांध लो, चीर-फाड़ कर फेंक दो।

औरतें — अरे हमें उसपर दांत और नाखून चला लेने दो।

पोलीडियोन — ठीक व्यवस्था रखो मेरे बच्चो, ठीक व्यवस्था! केल्डियावासी, हमें एण्ड्रोमीडा दे दो और अपने राजा-रानीके प्राण बचा लो।

नेबेस्सार — क्या तुम उन्हें छोड़ दोगे?

केसियोपिया — नेबेस्सार, मेरी बेटी उसके हवाले न करेगा न? ख़बरदार, ऐसा साहस न करना।

नेबेस्सार — देवि, अच्छा हो कि सबकी रक्षाके लिये एक ही को मरना पड़े।

पोलीडियोन — मैं कसम खाता हूं उनकी रक्षा करूंगा।

केसियोपिया — उसकी कसमोंका विश्वास न करना। उसके झूठभरे और हत्यारे वचन न मानो।

नेबेस्सार — वह पुजारी है। उसपर विश्वास करनेसे कोई हानि नहीं होगी, शायद कुछ लाभ हो सके।

मेगास — क्या करोगे तुम? लोगोंको यह पसंद नहीं, देखो बड़बड़ा रहे हैं।

पोलीडियोन — पहले मुझे उनकी लड़कीको अपने पंजेमें पकड़ लेने दो। भगवान्‌के प्यारे शिकारको पक्का कर लूँ। हे प्रजाजन, मैं पोसायडनका पुजारी हूं और तुम्हारा सच्चा मित्र। सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो।

आवाजें — हां, सब कुछ पोलीडियोनपर छोड़ दो। हमारा अच्छा पुजारी जानता है कि वह क्या कर रहा है।

पोलीडियोन — सैनिको, राजकुमारी हमारे हवाले कर दो।

नेबेस्सार — वह सिर्फ पोसायडनको ही दी जायगी न? बदतर अपमानसे तुम उसकी

रक्षा करोगे ?

पोलीडियोन — हां, करूंगा।

प्रेक्सीला — देखो! उस भयंकर मनुष्यकी आंखोंमें कैसा बीभत्स विजयोल्लास चमक रहा है! वह दरिन्देकी तरह राजकुमारीको लालसाभरी आंखोंसे घूर रहा है, उसके होठोंपर गन्दा क्रूर झाग फैल रहा है। नेबेस्सार, ना, ना, कुमारीको मत दो।

नेबेस्सार — काश, कोई उपाय होता! जाओ, राजकुमारी! हाय, एण्ड्रोमीडा!

केसियोपिया — मेरी बेटी, हाय मेरी बेटी!

एण्ड्रोमीडा — मां, मुझे एक प्यार दे। मुझे लगता है कि शायद हम फिर मिलेंगे। राजन्, मेरे पिता, एण्ड्रोमीडा आपसे विदा ले रही है, आप उसे प्यार करते थे और अपनी सूर्य-किरण कहते थे, किन्तु अब रातका घना अन्धकार उसका स्वागत करेगा।

सीफियस — हाय राम!

दामेतेज — ये विदाएँ कबतक चलती रहेंगी? उनकी कोई जरूरत नहीं। अगर यमदूत तुम्हारे शरीरके चिथड़ोंको इकट्ठा कर सकें तो तुम जल्द ही मिलोगे।

केसियोपिया — हे खूँखार सीरियावासियो, मेरे शाप, एक दारुण दुखमें पड़ी हुई मांके शाप तुम्हारी भूमिपर मंडराते रहें। एसीरियावासी तुम्हारे ऊपर चढ़ आयें और जीते जी तुम्हारी खाल उधेड़ें, तुम्हारे बेटोंको सूलीपर चढ़ाये, तुम्हारी संत्रस्त आंखोंके सामने तुम्हारी बेटियोंपर बलात्कार करके उन्हें फाड़ फेंके। तुम मेरी बेटीको मुझसे छीनकर उसे जबह करनेके लिये घसीटे लिये जा रहे हो। तुम्हें भी इस दहशत और क्लेशका मजा मिले। सीरियाकी प्रजा, मैं तुझे शाप देती हूं।

एण्ड्रोमीडा — मां, चुप रहो मां! उनकी मांग ठीक ही है।

नेबेस्सार — सेविकाओ, महाराज और रानीको महलके अन्दर पहुँचा दो। हम भी इस दुखमय समर्पणसे अपनी आंखें हटा लेंगे।

केसियोपिया — मैं नहीं जाऊंगी। वे मेरी बेटीको मेरी आंखोंके सामने ही चीर-फाड़ डालें। तब भगवान् मेरा बदला जरूर लेंगे।

सीफियस — चलो, केसियोपिया, हमारी मौत कुछ क्षणोंके लिये ही रुकी है। मैं बेटीकी हत्या नहीं देखना चाहता।

(सीफियस और प्रेक्सीला अन्दर जाते-जाते केसियोपियाको खींचकर ले जाते हैं। उनके पीछे बांदियां, फिर नेबेस्सार और केल्डियाके सैनिक जाते

हैं। सीढ़ीपर एण्ड्रोमीडा अकेली खड़ी है)

आगे बढ़ती हुई भीड़की चीखें — घसीटो, खींचो, मार डालो, अब वह हमारे हाथ-में हैं।

पोलीडियोन — थेरेप्स और तुम, पेरिसस, उसके सामने खड़े रहो और लोगोंको बढ़ने न दो, वरना वे उसे चीर डालेंगे। वे पोसायडनका माल हर लेंगे।

पेरिसस — चलो, राजकुमारी! खुश होओ। तुम्हें बड़ी सफाईसे काटा जायगा।

थेरप्स — सीरियाकी प्रजा, पोसायडनकी चीज उससे मत छीनो।

पेरिसस — सीरियाके लोगो, पोसायडनकी चीजपर डाका न डालो। उनके कोप-को शांत करनेका यह उपाय नहीं है।

आवाजें — ठीक है, सच है! उसे पोसायडनके लिये छोड़ दें। चलो, उस समुद्री दानवके पास ले चलें।

गारदास — थेरप्स हमेशा ठीक कहता है।

दामेतेज — पहले हम उसे लेंगे । हम पोसायडनकी दावतका थाल सजा दें। इसके लिये कोई मनां नहीं कर सकता।

मोरस — अच्छा, अच्छा, हम पोसायडनको उत्तम पकवान बनाकर देंगे। हो, हो हो....

मेगास — ना, ना, ना, चलो उसे चट्टानपर ले चलें। उसके कपड़े उतार लो, नाजुक-मिजाज रमणी कहींकी! उसे जंजीरोंसे बांधकर चंट्टानके ऊपरी भागसे लटका दो।

एक औरत — हां, उसे नंगा कर दो। उसकी कशीदेदार पोशाक और रेशमी चोली उतार दो। वह इतने अच्छे कपड़े क्यों पहने जब मेरी बेटीको मोटा-झोंटा ही नसीब है।

एक औरत — (घूसा दिखाते हुए) अरे तेरा सलौना, बचकाना मुँह जल जाय। तेरे ही कारण सीरिया नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है। जा मर, कुत्तेकी बच्ची!

दामेतेज — क्यों, जिसकी वजहसे इतने मरे वह एक ही बार मरेगी क्या? मैं कहता हूं उसे इनमेंसे किसी खंभेसे बांधकर इतने चाबुक बरसाओ कि वह गिर पड़े।

मोरस — हां, यह ठीक है। चाबुकसे उसकी चमड़ी उधेड़ डालो। दानवके लिये उसे छीलकर रखो हो...हो...हो...।

बालटिस — अरे छोड़ो भी, नरककी यातनाएँ सब हिसाब साफ कर देंगी।

पोलीडियोन — बञ्चो, सब कुछ व्यवस्थित ढंगसे करो। सारा काम अच्छी तरह होने दो।

थेरप्स — उनके अभिशापोंसे वह कुचले हुए फूलकी तरह मुरझा गयी है और हिम-सुमनपर चमकते तुषारकी तरह आंसू उसके फीके पड़े हुए गालोंपर लड़ी बना बना रहे हैं। अब मुझे अफसोस है कि इस मामलेमें मेरा भी हाथ था।

एण्ड्रोमीडा — तुम दोके चेहरे औरोंसे कम क्रूर दीखते हैं। मैं मरनेको तैयार हूं — ओह, इतनी घृणा सहनेके लिये कौन जीना चाहेगा? किन्तु उन्हें मेरी लाज न हरने देना और न ही मुझे कठोर यंत्रणा देने देना।

पेरिसस — भागो यहांसे, जाओ! मोटी बुद्धिवाले कुत्तो, बड़ी रेंकवाले गधो! यहां भोंकते रेंगते क्या कर रहे हो? पोसायडनके नरकुक्कुरको विकलांग भोजन दोगे? क्या तुम लोग मुझे पहचानते नहीं? कभी पेरिससका नाम नहीं सुना, कसाई पेरिससको नहीं देखा? मैं पोसायडनके मांसकी रखवाली करता हूं और जो इसके एक ग्रासको भी हाथ लगायेगा मैं अपने बुगदेसे उसका कीमा कर डालूँगा। मैं हूं पेरिसस,—कसाई।

आवाजें — यह पेरिसस है, अच्छा और धनवान् कसाई। उसकी बात ठीक है। चलो, इसे चट्टानोंपर ले चलें।

औरतोंकी आवाजें — पहले उसे बांधो। हम उसे बंधा हुआ देखेंगी।

पेरिसस — तुम्हारी जो बातें न्यायसंगत होंगी उन्हें मान लूँगा। रस्सी कहां है?

चीखें — रस्सी किसीके पास है?

दामेतेज — पेरिसस, यह रही। खुरदुरी, मजबूत और पक्की है।

पेरिसस — आओ, लो, अपने कंगन पहनो।

एण्ड्रोमीडा — आह, मुझे इतने जोरसे न बांधो। तुम मेरी कलाइयोंको काटे दे रहे हो। (वह रोती है)

पेरिसस — तुम बहुत ज्यादा सुकुमार और कोमल हो। लो, बस, आंखें पोंछ डालो। गुलबदन, देखो, मैंने तुम्हें बहुत हल्का बांधा है। अब मत कहना कि यह भी काटता है।

एण्ड्रोमीडा — धन्यवाद, तुम बड़े दयालु हो।

पेरिसस — दयालु! मैं दयालु क्यों न बनूँ? मैं कसाई हूं इसलिये मुझमें दया न होनी चाहिये क्या? हिम्मत रखो, नन्हीं राजकुमारी, समुद्री दानवोंको छोड़-कर, कोई तुम्हें छू न सकेगा। और मुझे विश्वास है कि वह तुम्हारी छोटी-छोटी हड्डियोंको बड़ी मृदुतासे चबायेगा। किसी नरभक्षीको कभी इतनी नाजुक हड्डियां चबानेको न मिली होंगी। अफसोस! किन्तु और उपाय ही क्या है?

पोलीडियोन — अब इसे सजा पानेके लिये समुद्र-तटपर ले जाओ और वहां जंजीर-

से बांध दो। पेरिसस, तुम इसे ले चलो हम तुम्हारे पीछे चलेंगे।

चीखें — मैं नहीं! मैं नहीं!

दामेतेज — तुम हमें मरवा डालना चाहते हो, पोलीडियोन! समुद्र-तटपर पोसायडनका कोप घूम रहा है।

पोलीडियोन — दोस्तो, भयंकर समुद्री दानव तुम्हारा कुछ भी न बिगाड़ेंगे क्योंकि तुम पोसायडनकी वेदी, इस उजाड़, ऊबड़-खावड़ गंभीर तटपर उनके लिये बलि लेकर जा रहे हो। मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।

चीखें — हम पोलीडियोनके साथ चलेंगे! अच्छे पोलीडियोनके साथ!

पोलीडियोन — पेरिसस, तुम आगे चलो। हम जल्दी ही आ जायेंगे।

पेरिसस — चलो, रास्ता दो वरना मैं अपने बुगदेसे रास्ता बना लूँगा। धीरज धरो, नन्हीं राजकुमारी! तुम्हें कोई न छूएगा। दिल कड़ा कर लो!

(पेरिसस और अन्य लोग एण्ड्रोमीडाके साथ बाहर निकल जाते हैं)

पोलीडियोन — घेर लो, प्रजा, राजमहलको चारों ओरसे घेर लो। हम सीफियस और घमंडी केसियोपियाको नोच-खसोट कर निकाल लेंगे।

चीखें — भडुए सीफियसको मार डालो! अत्याचारी कहींका, केसियोपियाको चीर डालो।

थेरप्स — क्या यही तुम्हारी पवित्र शपथ है पुजारी? क्या नेबेस्सारने तुम्हारे साथ समझौता नहीं किया था

पोलीडियोन — मैंने पोसायडनकी कसम नहीं खायी थी। या तू मेरा विरोध करेगा।

थेरप्स — तेरा शपथभंग मेरी अपनी इच्छाओंके अत्यधिक अनुकूल है फिर भी अपने अन्तःकरणपर इतना झूठ ढोकर मैं 'तू' न बनना चाहूँगा।

पोलीडियोन — अरे थेरप्स, तू अपना-आप ही बना रह और तब भी तू सीरियामें महान् बन सकेगा।

दामेतेज — आयोलस कहां है? क्या वह भी नहीं मरेगा?

पोलीडियोन — आह, बहुत देरतक भूला रहा। अरे, मैं अपनी आन्तरिक घृणाको, अपने प्रियतम द्वेषको कैसे भूल गया? अबतक वह छिप गया होगा या भाग निकला होगा। मेरी चिरवांछित वस्तु मुझसे छिन गयी।

थेरप्स — ओह, उनके साथ न्याय करो। सीरियाका तेजस्वी राज-परिवार कभी कायर न था। राजकुमार बचानेके लिये अविवेकमें आकर तलवार चलाता इधर आ रहा था कि रास्तेमें ही उसे धर दबोचा गया। आलिगातस हमारे

पीछे आया है और उसीने यह समाचार दिया है। लोग उसे मंदिरमें ले गये हैं।

पोलीडियोन — तुमने सुना ?

भीड़ — शाबाश ! वाह, वाह !

बालटिस — किन्तु हमारे अच्छे पुजारीको हो क्या गया है ? उसकी नसें उभर आयी हैं और मुँह खून-सा लाल हो उठा है।

दामेतेज — शायद बेहद खुशीके कारण।

पोलीडियोन — मैं एक देव हूँ। गरजती विजय और रुधिरका देवता हूँ। ओह, धारा-प्रवाह-सा बहता हुआ रक्त ! उसका हृदय छातीमेंसे नोचकर बाहर किया जायगा और उसकी मां देखनेके लिये मौजूद होगी ! और मैं उसपर हंसूँगा। हाँ, मैं हंसूँगा।

थेरप्स — दिमाग ठिकाने नहीं लगता।

पोलीडियोन — (कठिन प्रयाससे संयमित होकर) सीफियसका अधार्मिक परिवार धरतीसे मिटा दिया गया। इस सर्प-निकन्दनके बाद एक संपोला भी न बचने पाये। एण्ड्रोमीडा अपराध करनेमें सबसे आगे थी। वही नरकका रास्ता दिखाती हुई आगे चल रही है। फिर उसका भाई आता है जो चीखता-चिल्लाता है। अन्तमें सीफियस और उसकी रानी।......

चीखें — उसे चीर डालो ! केल्डियाकी रांडको मार दो।

पोलीडियोन — हां, उसके टुकड़े जरूर किये जायेंगे। लेकिन पहले वह रानी एक बार अपनी बेटी कहानेवाली चीजके बचे-खुचे टुकड़ोंको देख ले, और अपने प्यारे बेटेके हृदयको उसकी लाल-लाल छातीसे नोंचे जाते हुए अपनी फटी आंखोंसे न निहार ले तबतक उसे मरने न दिया जायगा। किन्तु उसके बाद शहर-की एक-एक गली उसके टेकड़ोंसे पाट देना।

चीखें — साधु, साधु, पोसायडनके प्रतिनिधिकी बात सुनो, अच्छा पोलीडियोन !

मेगास — चलो, अन्दर चलो ! उनके थोड़ेसे परदेसी सैनिकोंको काट डालो।

चीखें — अन्दर ! चलो अन्दर ! केल्डियाका एक भी आदमी बचने न पाये।

(भीड़ अन्दर घुस जाती है। सिर्फ थेरप्स और पोलीडियोन बाहर रहते हैं)

पोलीडियोन — थेरप्स, जा और केसियोपियाको सम्हाल वरना वह बड़ी जल्दी आरामसे मर जायगी।

थेरप्स — (स्वगत) यह सब खतम हो जानेपर हम इस क्रूर और कठोर जानवरको राजाके रूपमें कैसे सह सकेंगे ? वह मनुष्य नहीं है।

(वह राजमहलमें जाता है)

पोलीडियोन — मैंने पोसायडनके कोपको मानव-हृदयोंमें बिठा दिया है। उसका काला और भयानक प्रभाव मुझसे प्रवाहित हो रहा है। तुम अब भी सामर्थ्य-शाली हो भगवान् पोसायडन, और तुमने अपना बदला भयंकर रूपसे लिया है। सारा नाटक खतम होनेको है। अब बाकी रहा है उग्र उत्क्रोश और भव्य, दया-हीन रक्तरंजित संहारके बीच उन राजकीय पात्रोंकी मौतकी घण्टी बजाना। एक महान् समाप्ति होगी! और तब, तब मैं राजा बनूँगा (बोलते-बोलते वह बेकाबू होकर हाथपांव फेंकने लगता है। और पागलपन बढ़ता जाता है) आह, बेचारा अभागा सीफियस, भाग्यवान् साथीको तुमने क्यों छोड़ दिया? दुनिया बहुत दिनोंतक राजा पोलीडियोनको याद करेगी। मैं सीरियाको लाल रक्तमें, अद्भुत रंगमें रंग डालूँगा। मेरे शहरके रास्तों और राजमहलके फर्श-को लाल रखनेके लिये शत-शत लोग रोज मरेंगे क्योंकि मैं हमेशा लालीमें ही चलूँगा। मैं फलोंकी जगह अपने बगीचोंमें नरमुण्ड लगाऊंगा, शत-शत पुरुष रोते-कलपते अपना हृदय मेरी खुशीके लिये लाल नदियोंमें बहा देंगे। मै नौका-ध्वंसके लिये न रुकूँगा। एसीरियाके बन्दी और मेरी सीरियाकी प्रजा, रईस और गुलाम, पुरुष और स्त्रियां, लड़के और कुमारिकाएं सब मेरे गरजते सागर-के किनारे भव्य मंदिरमें मेरे लिये सबेरे-शाम मारे जायेंगे। मैं हर रात नयी औरतोंको हथियाऊंगा और आंखोंकी तप्तिके लिये ये दूसरे दिन रक्तस्नान करके मारी जायंगी। मेरा हृदय शब्दोंमें उमड़ा पड़ रहा है।......मेरे अन्दर यह क्या चल रहा है? मैं प्यासा हूं, अद्भुत रूपसे प्यासा हूं, एक लाल, देवोचित मदिराके लिये प्यासा हूं। मेरे अन्दर यह प्यास कहांसे आयी? यह पहले तो न थी। अरे, तुम हो हां, तुम ही हो, शानदार और विकट पोसायडन, तुमने अपना रक्त आसन मेरी आत्मामें बनाया है और तुम "मैं" बन रहे हो। मैं अब पोलीडियोन नहीं एक देवता हूं। धरतीको कंपानेवाला, सागरकी असंख्य लहरोंको हिलानेवाला भयंकर सामर्थ्यशाली देव हूं। मैं पोसायडन हूं और अपनी कोलाहलपूर्ण लहरोंसे तीन विशाल कदमोंमें पहाड़ोंपर चढ़ जाऊंगा और अपने कुत्तोंको अपनी दुश्मन, एण्ड्रोमीडाको खाते हुए देखूँगा। फिर मैं गरजती हुई लहरोंमें जोर-जोरसे अट्टहास करूंगा। राजमहलमें लड़ाईका शोर हो रहा है! उसे मैंने ही सरजा है। मैं पोसायडन हूं। मेरे भइया, तुम अपने बादलोंके रथपर बैठे हो न? नीचे निहारो, भाई जीयस, मेरे कार्योंको देखो! वे तेरी अमर दृष्टिके लायक हैं।

(वह राजमहलमें जाता है)

दृश्य ४

(समुद्रतटको जानेवाला रास्ता। फीनियस और उसके टायरावासी)

फीनियस — एक विराट् शक्ति हमारी नीतियोंको मिट्टीमें मिला रही है। क्या वह दैव है या वह भाग्य है ? मेरे लिये जो कुछ बच रहा है उसे ले लूँगा। अच्छा यही है कि युवती एण्ड्रोमीडाको जंगली भीड़से बचाकर अपने घर टायरा ले जाया जाय। जब यह चिल्ल-पों खतम होगी तब वही सीरियाके गिरे हुए सिंहासनपर मेरे अधिकारका बहाना बनेगी। अगर नीति न चले तो जबरदस्ती अपना अधिकार खड़ा करूंगा और टायरा सीरियाकी राजधानी बनेगा। पाजी भीड़के कदम सुनायी दे रहे हैं।

बाहरसे चीखें — उसे जल्दी घसीटो ! चट्टानोंपर चलो ! चट्टानोंपर ! महान् पोसायडनकी जय !

फीनियस — टायराके सैनिको, तैयार हो जाओ।

(बंधी एण्ड्रोमीडाको लाते हुए पेरिसस और सीरियावासी आते हैं)

सीरियाके लोग — उसे चट्टानपर ले चलो, चट्टानपर ! पहाड़पर बांध दो।

फीनियस — अरे नीच लोगो ! ठहरो ! अपने शिकारको टायरावासी फीनियसके हवाले कर दो। एण्ड्रोमीडा अपना सलोना मुखड़ा उठाओ, अब तुम बच बच गयी हो।

पेरिसस — अरे लम्बी नाक, तू है कौन ? अपने सैनिकोंके साथ घुरघुराहट करता क्यों आया है ?

फीनियस — क्या तू मुझे नहीं जानता ? मैं हूं महाराज फीनियस। इस राजकुमारी सुन्दरी एण्ड्रोमीडाको मेरे सुपुर्द कर दो।

पेरिसस — अच्छा, तुम ही राजा फीनियस हो और यह लंबी नाक तुम्हारा राजदण्ड है क्या ? मैं हूं, पेरिसस कसाई। चलो, एक ओर हो जाओ महाराज फीनियस, वरना मैं गौरवके साथ अपने छुरेसे तुम्हारा कीमा कर दूंगाँ।

एण्ड्रोमीडा — टायराके राजा, तुम्हें मुझसे क्या मतलब ?

फीनियस — मैं तुझे बचाने आया हूं। मैं तुझे, अपनी वधूको इस जंगली सीरियाके

कोलाहलसे दूर वफादार टायरामें राज्य करनेके लिये ले जाऊंगा। अब तू सुरक्षित है।

एण्ड्रोमीडा — (दुःखसे) सुरक्षित! मेरे माता-पिता सुरक्षित नहीं हैं, आयोलस सुरक्षित नहीं है, सीरिया भी सलामत नहीं है। क्या तुम मेरी प्रजाकी रक्षा करोगे जब भगान् मुझे, अपनी मनपसन्द बलिको न पाकर इन लोगोंपर अपना आक्रोश उंडेलेगा......?

फीनियस — तू इनकी परवाह करती है? इन्होंने तुझपर अपमान बरसाये हैं, तुझे बांधा है। तेरे सलोने अंगोंकी लाज हरनेकी धमकियां दी हैं। और अब तेरी हत्या करनेके लिये घसीटे लिये जा रहे हैं।

एण्ड्रोमीडा — लेकिन वे मेरे अपने लोग हैं। पेरिसस, आगे ले चलो। मैं इसके सांथ न जाऊंगी।

फीनियस — ओह विचित्र, सुन्दर और अद्भुत बाला, तू चाहे या न चाहे मैं तुझे जबरदस्ती ले जाऊंगा। सुवर्णमय जादू! तू इतनी विरल वस्तु है कि तुझे दूसरे हाथोंमें न पड़ने दूंगा। भाग जा बदमाश भीड़! उनपर टूट पड़ो टायरा-वासियो!

पेरिसस — घुसेड़ दो छुरे और कुल्हानइनके ढांचोंमें।

एण्ड्रोमीडा — महाराज फीनियस, ठहरो, मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मैं अपनी प्रजाको छोड़कर तुम्हारी रानी बननेसे मौतकी कठोर आलिंगन ज्यादा पसन्द करूंगी। तुम एक शवको ही बचा पाओगे।

फीनियस — क्या यह तेरा अटल निश्चय है?

एण्ड्रोमीडा — एकदम।

फीनियस — तो जा मर, मैं तुझे मौतके ही हवाले करता हूं।

(वह अपने टायरिनोंके साथ चला जाता है)

पेरिसस — अच्छा प्रभु फीनियस, तो आप भाग चले! लो हवा हो गये हिट्टुस जातिके बहादुर देवता! तुमने अपनी शाही नाक मेरे बुगदेसे बचा ली।

सीरियावासी — चलो, चट्टानोंकी ओर चलो, महान् पोसायडनकी जय!

(एण्ड्रोमीडाको ले जाते हैं)

दृश्य ५

समुद्र-तट

(अस्तव्यस्त बाल, आभूषणविहीन, नंगे हाथ, नंगे पांव, एकमात्र पतला वस्त्र पहने एण्ड्रोमीडा नुकीली चट्टानके नीचे एक पतले कगारपर खड़ी है। समुद्रका पानी उसके पांव धोता रहता है। वह चट्टानपर बंधी है। उसकी कलाइयों और टखनोंमें जंजीर पड़ी हैं। उसके दोनों हाथ दोनों ओरसे खींचे गये हैं। बड़ी चट्टानसे एक चबूतरा-सा पहाड़ीके बाहर निकलता है जिसके अंतिम छोरपर कगार है, उस चबूतरेपर पोलीडियोन, पेरिसस, दामेतेज और कुछ अन्य सीरियावासी खड़े हैं।)

पोलीडियोन — विकराल पोसायडनके अपमानोंका चिन्तन करती रहो। अन्य वलियोंको बचानेवाली, ले, अब खुदको बचा! प्यारी एण्ड्रोमीडा, मुझे अफसोस है कि तेरे विवाहोत्सवमें इतने कम लोग आये हैं। मैं चाहता था कि तेरे विरल समुद्री वरराजाके साथ तेरा यह विवाह सारा सीरिया देख पाता! खास तौरपर तेरी मांको अपनी सुन्दर राजकुमारीको हाथों और पैरोंमें विवाहके इन अच्छे-अच्छे गहनोंसे सुसज्जित इस सुन्दर वेश-भूषामें देखना चाहिये था। अफसोस! उसे बहुत आवश्यक काम है। तुम्हारे भाई आयोलसके हृदयसे मैला खून निकालकर उसे पवित्र करनेके लिये हम लोग कुछ शल्य-क्रिया कर रहे हैं। उस कुशलक्रियाको उन्हें देखना ही पड़ेगा। सुदर्शना रो मत। विश्वास रख, वे सब तुझे उस विशाल भवनमें जल्दी ही मिलेंगे जहां सब जा रहे हैं। तेरा प्रेमी आये तबतक इन्हीं विषयोंपर चिन्तन करती रह। अलविदा।

पेरिसस — पुजारी पोलीडियोन, क्या तुम पगला गये हो? अपने उल्लासमें तुम कैसे खीसें निपोरते हो, और काले-काले होंठ खींचकर सफेद दांत दिखाते हो! हृदयोंको तराशनेमें कुशल मेरे साथी, क्या तुम बिलकुल पागल हो गये हो? मेरे पुराने सहपाठी, मेरे यार, क्या तुम बिलकुल गये......।

सीरियावासी — चलो, मंदिरकी ओर! मंदिरकी ओर चलो ......

पोलीडियोन — चट्टानपर किसीको रहना चाहिये जो समुद्री दानवके आने-जानेपर नजर रखे। जबतक मुझे एण्ड्रोमीडाकी मौतकी खबर नहीं मिलती तबतक

बलि चढ़ानेकी क्रिया नहीं हो सकती। कौन ठहरेगा यहां ?

दामेंतेज — ना, मैं तो नहीं।

सब — मैं भी नहीं ! मैं भी नहीं ! मैं भी नहीं !

दामेतेज — लड़कीके साथ यहां रहना चीरे जानेके बराबर है।

पेरिसस — आहा, मेरे सिंहनाद करनेवाले बहादुरो, इस समय डरके मारे कांपना ठीक है ? तुम्हें अपनी बहादुर टांगोंमें दुम दबाकर भाग जाना चाहिये न ? पुजारीजी, मैं ठहरूंगा। मुझे न कुत्तेका डर है, न समुद्री दानवका। मैं हूं पेरिसस कसाई।

पोलीडियोन — अच्छे पेरिसस, मैं तुम्हारी सेवा न भूलूँगा।

पेरिसस — तो फिर तुम मुझे दमिश्कमें अपने प्रतिनिधिका मुख्य कसाई बना दोगे ? और मैं महाराज पोलीडियोनके संरक्षणमें मांस काटा करूंगा। सीरियाके वीर पुरुषो ! मंदिरमें जाओ। मैं पहाड़की चोटीपर पालथी मारकर बैठूँगा।

(वे जाते हैं। एण्ड्रोमीडा अकेली रह जाती है)

(परदा गिरता है)

अंक ५

दृश्य १

(समुद्रतटपर एण्ड्रोमीडा खड़ी चट्टानसे बंधी हुई है)

एण्ड्रोमीडा — ओ लौह कंठवाले विशाल निर्दय सागर, तेरे किनारे अपने ठंडे चुंबनों-से मेरे पांव छूते हैं मानो उन्हें मुझसे प्यार है फिर भी शीघ्र ही तेरी गहराईसे मेरी मौत किसी राक्षसी रूपमें निकलेगी जिसके आतंकसे मेरा दिल शरीरसे भी पहले फट जायगा। तेरी गरजती हुई लहरोंकी प्रतिध्वनिसे भरे हुए इस सुनसान समुद्रपर मैं अकेली हूं। मेरे साथियोंने मुझे त्याग दिया है। उन्होंने मुझे तेरी पहाड़ीपर मरनेके लिये बांध दिया है। इन खुरदुरे, नुकीले, ठण्डे पत्थरोंके साथ जकड़े हुए मेरे हाथोंको क्रूर जंजीरें थकाकर चूर-चूर कर रही हैं। उमड़ती हुई सुबकियां मेरी छातीमें नहीं समा पातीं। मेरा दिल दुःखसे टूट रहा है। मेरी ही करनीके कारण मेरे माता-पिताको मौतके घाट उतरना होगा। मेरा प्यारा उदार भाई, मेरा मधुर आयोलस, निर्दयतासे जिबह किया जायगा। मेरी करतूतसे एक राज्य बुरी तरह नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है। मैंने दो मानव-बंधुओंको बचानेकी सोची और उन्हें बचाकर मैंने सैंकड़ोंको मार डाला! मैंने जो कुछ किया उसीमें असफल रही और अब चारों ओरसे घृणा और शाप पा-पाकर अकेली मर रही हूं। मेरे ऊपर दया दिखानेवाला कोई हृदय नहीं है। तेरी दुश्मन मौजें मेरी सुबकियां सुनती हैं और क्रूर उल्लास अट्टहास्य करता है। नियति ठण्डे दिलसे यह देख रही है। फिर भी मैं पछता नहीं रही। ओ भयानक क्रूर देव। हां, तुम भयानक और सामर्थ्यशाली हो; शायद यह दुनिया हमेशा रक्तपात और क्रूर स्मितकी दुनिया बनी रहेगी और तुम उसके अनुरूप स्वामी बने रहोगे किन्तु मैंने वही किया जो मेरे हृदयने चाहा और मृत्युके बाद भी मुझे कोई अफसोस नहीं है। अगर अनन्त वेदना और दण्ड मेरी प्रतीक्षामें हैं, और यदि देवता और मानव घृणा और द्वेषके साथ मेरा पीछा करते रहें तो भी मैं नहीं पछताऊंगी। मैं अपने और अपने हृदयके साथ सच्ची रही हूं। मेरे हृदयमें मनुष्यके लिये जो प्रेम है उसके प्रति सच्ची रही हूं और मुझे कोई पछतावा नहीं है। (कुछ देर चुप रहती है)

हाय ! क्या मेरे लिये कहीं भी दया नहीं है ? इस सारे संसारमें मुझे बचानेके लिये क्या एक भी दयालु चमकीली तलवार नहीं है ? आकाश मेरे ऊपर ठण्डी दयाहीन नीली छत छाये हुए है। ये कठोर जंगली पहाड़ियां मुझे घेरे हुए हैं। मेरे पैरों तले बधिर, उग्र सागर गरज रहा है। सब कुछ पथराया हुआ, ऊष्माहीन और क्रूर है। फिर भी मैंने अन्य शक्तियोंके स्वप्न देखे थे तुम कहां हो, ओ बिजलियोंमें स्थित शांत, सुन्दर सुमुखी, देवी एथिनी ? क्या मां अपने बालकको छोड़ देती है ? और तुम ओ तेजस्वी अजाने व्यक्ति, क्या तुम एक स्वप्नमात्र थे ? क्या तुम सूर्यलोकसे तेज बिखेरते हुए नहीं उतरोगे ? क्या मेरी जंजीरोंको तोड़कर, मुझे अपनी बांहोंमें लेकर सुरक्षातक न पहुँचाओगे ? मैं नहीं मरूँगी ! मैं बहुत छोटी हूं और जीवन अभी-अभी कितना अधिक सुहावना था। यह बहुत कठिन है, इस कठोर नियतिको सहना असंभव है।

(वह चुपचाप रोती है, सिडोनीका प्रवेश। वह आकर एण्ड्रोमीडाके पैरोंके पास बैठ जाती है)

सिडोनी — वह कैसी सुन्दर है, आह, कितनी सलोनी ! उसके आंसू सारी छातीको नहला रहे हैं। उफ, क्रूर सीरियावासियो !

एण्ड्रोमीडा — मेरे पैरोंपर यह मृदु स्पर्श क्या है ? कौन है तू ?

सिडोनी — मैं सिडोनी हूँ। आयोलस मुझे प्यार करता है।

एण्ड्रोमीडा — मेरा भाई ! जिन्दा है वह ?

सिडोनी — प्यारी मधुरिमा ! वह जिन्दा है और उसीने मुझे तेरे पास भेजा है।

एण्ड्रोमीडा — तो वह क्रूरतापूर्ण असत्य था ! क्या वह मुक्त है ?

सिडोनी — नहीं, बंधा हुआ है और मंदिरमें कैद है। रो मत।

एण्ड्रोमीडा — हाय ! और तुमने उसे वहां अकेला छोड़ दिया ?

सिडोनी — बहन, देवता उसके पास हैं। कुछ घण्टोंमें हम सब इकट्ठे होंगे और तेजीसे आये हुए इन संतापोंसे मुक्त हों जायेंगे।

एण्ड्रोमीडा — एक साथ और मुक्त ! ओह हां, शायद मौतमें।

सिडोनी — मैं तुम्हें आशाका आदेश देती हूँ। ओ बच्ची, तू कितनी सुन्दर है, कितनी सलोनी ! आखिर आयोलसकी बहन है ! समुद्रकी हवाओंसे यह एक सफेद पतला वस्त्र तुम्हारे चारों ओर फहरा रहा है। ऐसा लगता है मानो किसी वायुदेवीको उसकी चुलबुली बहनोंने खेल-खेलमें इस भयानक समुद्र-तटपर बांध दिया हो। छोटी बहन, मुझे लगता है कि यह सब इसीलिये हुआ है कि देवोंको एक घड़ी भरके लिये तुम इस अति विशाल, सुनसान, पृष्ठभूमिमें तेजस्वी बाल-

सौन्दर्यके प्रतीतका दर्शन दे सको।

एण्ड्रोमीडा — तुम मुझे दुःखमें भी हंसाती हो। सिडोनी, तूने मुझे आशा रखनेको कहा था न?

सिडोनी — और मैं तुम्हें विश्वास रखनेको कहती हूँ क्योंकि तुम बच गयी हो।

एण्ड्रोमीडा — मैं बच गयी हूँ। मुझे अनुभव हो रहा है कि मैं बच गयी हूँ।

सिडोनी — तुम्हारा नाम एण्ड्रोमीडा है?

एण्ड्रोमीडा — आयोलस मुझे इसी नामसे पुकारता है।

सिडोनी — मेरा ख्याल है कि वह मुझे धोखा देता है। तुम लड़कीका रूप लिये हुए आयोलस ही हो। आओ, रूप बदल-बदलकर मुझे धोखा देनेके लिये तुम्हें चूम-चूमकर गूँगा कर दूँ। (चूमती है) मनमाना करनेके लिये मेरा आयोलस भी इसी तरह जंजीरोंमें जकड़ा हो तो मैं उसे ऐसा तंग करूंगी कि बस। वह मुझे गालियां देता है, कर्कशा, राक्षसी और लोमड़ी और ऐसे ही बहुतसे असह्य नाम देता रहता है क्योंकि वह मजबूत है और जानता है कि मैं उसे पीट नहीं सकती।

एण्ड्रोमीडा — मेरे आसपासकी दुनिया बदल गयी है।

सिडोनी — स्वर्ग ऊपर ही है। जरा आंख उठाओ और देख लो।

एण्ड्रोमीडा — एक सुनहरा बादल मेरी ओर बढ़ रहा है।

सिडोनी — प्रिये, वही तो परसियस है। मैं मंदिरमें आयोलसके पास जा रही हूँ— यानी तुम्हारी दूसरी सुन्दर किशोर कृतिके पास। ओ मीठी बालिका — आयोलस — मुझे चूम ले और किसीसे न डर।

(वह पंहाड़ियोंके ऊपरसे चली जाती है)

एण्ड्रोमीडा — मुझे बचा लिया जायगा! अरे लहरोंको मेरे घुटनोंतक उछालती हुई, लहराती छातीको उभारती हुई यह आकस्मिक मुसीबत क्या है? अरे बचाओ! तू कहां चली गयी सिडोनी? भयसे कांपते सागरोंपर यह किसका डरावना सिर उठ रहा है? ओ मेरे त्राता, तुम कहां हो? आओ! उसकी आंखें मेरी ओर सागरके नीले रंगमेंसे लालसाभरी वीभत्स दृष्टिसे देख रही हैं। एक अंधेरी अथाह खाईमें बड़ी-बड़ी नुकीली चट्टानोंकी तरह उसके बड़े-बड़े दांत दिखायी दे रहे हैं।

(डरके मारे आंखें मूँद लेती है। परसियसका प्रवेश)

परसियस — ओ सुनहरी जुल्फोंवाली एण्ड्रोमीडा! ऊपर देख। डेनीका बेटा, परसियस तेरे साथ है और अबसे तू उसीकी है। अब समुद्री दानव या लौह-

आत्मा पोसायडन या उनसे भी बदतर वज्र-कठोर जनता, जिसने तुझे यहां बांध रखा था — इन सबसे डरनेकी जरूरत नहीं है। अब पानीसे निकलता हुआ यह विकट शत्रु भी तुझे न डरा सकेगा। ओ श्वेत एण्ड्रोमीडा! अब तू उतनी ही सुरक्षित है जितनी शांत परिस्थितिमें पहरेदारोंसे घिरे हुए अपने सुन्दर महलके अन्दर अपनी माँकी भुजाओंमें होती। ओ सूर्यकी ज्योति! अपनी नजरोंसे नीलाकाशकी सहायता कर। मेरी ओर निगाह उठा और अपनी सुरक्षाको देख ले।

एण्ड्रोमीडा — आहा, तुम मेरे पास आ गये! मैंने एक उज्जवल मुखका स्वप्नमात्र न देखा था।

परसियस — मेरी एण्ड्रोमीडा, तुझे बचानेके लिये ठीक समयपर आया हूँ। दुनिया-के एकमात्र रत्न! मैं विकराल पोसायडनका सामना करनेके लिये तेरे दुश्मन-से मिलने जा रहा हूँ।

एण्ड्रोमीडा — ओह, जानेसे पहले मुझे छूते जाओ ताकि मुझे विश्वास हो कि तुम वास्तविक हो।

परसियस — मेरी मधुर शंकाशील, स्वप्न देखनेवाली, मेरे ये चुंबन तुझे विश्वास दिलायेंगे। अब मैं बाजकी तरह अपने शिकारपर झपटकर उसे लहरोंके बीच ही खतम कर डालूँगा। देखना, मैं तेरे लिये कैसे लड़ता हूँ। मैं शीघ्र ही अपने महान् साहसके पुरस्कारस्वरूप, तुम्हें अपनी बांहोंमें जकड़नेके लिये आ जाऊंगा।

(वह बाहर जाता है)

एण्ड्रोमीडा — उनके नामका संगीत मेरे कानोंमें अब भी गूँज रहा है। मैं तुझे क्या कहकर पुकारूं? परसियस, डेनीके पुत्र! परसियस! परसियस, एथिनी-की तलवार! परसियस मेरे सूर्यदेव! ओ उल्लसित! एण्ड्रोमीडाके मानव-देव! एथिनी, श्रद्धाके अभावको क्षमा कर तू! वह कैसे गरुड़की-सी तीव्र गतिसे उस भयावह जानवरपर झपटा है! भयकंपित जानवरका विराट् शरीर सुदूर लहरोंमें बल खाता हुआ ऊपर उठता है और अपना सारा कोप उसपर उगल रहा है। ओ महान् एथिनी! वह अपने आग उगलते निःश्वास मेरे परसियसपर धोंकनीकी तरह फेंकता है, उसके चेहरेपर समुद्रकी लहरें टकरा रही हैं। समुद्र मानों अपने ही ऊपर उलट गया है और उसका विशाल तल अजाने दिनकी किरणें देख रहा है। किन्तु परसियसकी ढाल सागरमें आगकी लपटें मिलाकर जानवरकी आंखोंमें झोंक रही है। अग्नि-बाण-सी उसकी बिजली क्षितिजमें कौंध रही है। सारा जगत् भय और विस्मयके साथ

उड़ते फेन और कोलाहलपूर्ण सागरसे घिरे हुए इस समुद्री युद्धको देख रहा है। ओ कैसा भव्य दृश्य है, मानव दृष्टिके लिये अति तीव्र और अति विकराल! लेकिन अच्छा हो कि मैं प्रार्थना करूँ। हे सुन्दरी कन्या एथिनी, हे मेरी आत्माकी क्वांरी माता! मैं अपने हाथ तुम्हारी ओर नहीं उठा सकती, क्योंकि वह चट्टानसे बंधे हैं, उनकी जगह अपना हृदय उठाकर बिनती करती हूँ, हे कुमारी कन्या, अपने वीर सैनिककी सहायता करो। नीचे पधारो हे शक्तिशाली कुमारी, हे जीयस पुत्री, उसके देवोचित मस्तिष्कमेंसे अनिष्टको नष्ट करनेवाली विजयी इच्छा-शक्तिके बाण छोड़ो। एक विजयी प्रहारमें ही उस सारी शक्तिको भरकर उस विकट शत्रुको खतम कर दे। तू, हाँ, तू ही ढाल और तलवार है और तू ही वह शक्ति है जो ढाल और तलवारका उपयोग करती है, हे कुमारी एथिनी! कोलाहल थम गया और सागर धीरे-धीरे शांत हो रहा है। देखनेकी हिम्मत नहीं होती फिर भी देखूँगी। आह मृत्यु, तू एक निश्चेष्ट पर्वताकारको मौजोंपर इधर-उधर उछाल रही है। हवाई जूतोंसे लहरोंको छूता हुआ तेजस्वी परसियस विजय प्राप्त करके मेरी ओर उड़ा आ रहा है।

(परसियस लौट आता है)

परसियस — तुझे संत्रस्त करनेवाला विकराल शत्रु मारा गया। एण्ड्रोमीडा, अब तू फिरसे सूर्यकी ऊष्मा सरीखी मुस्कुराहटोंसे दुनियाको आनन्दित कर।

एण्ड्रोमीडा — परसियस, तुमने मुझे मुक्ति प्रदान की, मेरे हृदय-सम्राट् परसियस!

परसियस — लड़की, मैंने अपना जो कुछ जीता है उसे अपनी भुजाओंमें लेता हूँ और इन चुंबनोंसे हर्षविभोर सिर, मुस्काती आंखों, लाल चमकते होठों और तेरे सब कुछपर अपनी मुहर लगाता हूँ। सीरियावासिनी, तेरा सारा श्वेत शरीर एक वीरका पुरस्कार है।

एण्ड्रोमीडा — परसियस!

परसियस — मेरे आतुर चुंबनोंको तू मधुर मुस्कानोंसे और गुलाबी शरमाते गालोंसे आनन्दित होकर बड़े प्यारे ढंगसे लेती है।

एण्ड्रोमीडा — परसियस, मैं जंजीरोंमें बंधी हुई हूँ और कुछ नहीं कर सकती।

परसियस — हे माधुर्यके स्मित! मैं इन अयोग्य बंधनोंको खोल दूंगा। और ठण्डे बहानेसे तुझे छुड़ा लूँगा।

एण्ड्रोमीडा — मेरी जंजीरें? अब उनसे जरा भी कष्ट नहीं होता। ऐसे सुखद उद्धारके लिये मैं उन्हें हजारों बार पहननेको तैयार हूँ।

परसियस — तू अभीतक कांप रही है।

एण्ड्रोमीडा — कोई मधुर अकारण भय मुझपर छा गया है। ओ, यह क्या है? मैं तुम्हारी तेजभरी आंखोंके साथ आंखें नहीं मिला सकती।

परसियस — हे मधुर कम्पन! इसके अन्दर बढ़ते रहो। परसियसकी रक्षामें रहते हुए कठोरतर भय तेरे गुलाबी शरीरको कभी छूने न पायें। मेरे पुरस्कार, मेरी एण्ड्रोमीडा, तू कितनी सलोनी है! ओ जंजीरोंमें बंधे हुए शरीर, तू मौत-के नहीं प्रेमके बंधनमें है, कितनी सुखपूर्ण निष्क्रियतासे तू मेरे स्पर्शको एक बार, और फिर बार-बार झेलती जाती है। हे मूढ़ श्रृंखलाओ, तुम हुंकार करती हुई समुद्रमें जा गिरो तुमने मेरे चुँबनोंके योग्य स्थानको हथिया लिया था। सीरियाकी राजकुमारी, महाराज सीफियसकी संतान आगे आ, तू मुक्त है।

एण्ड्रोमीडा — (पांवोंपर गिरकर उन्हें छातीसे लगाते हुए) ओ परसियस, ओ मेरे त्राता, क्या तुम मेरे प्रियजनोंको न बचाओगे? तुम मुझे जो नया जीवन दे रहे हो, उसे सार्थक न करोगे? मेरे पिता, माता, भाई, वे सब, जिनसे मुझे प्रेम था मेरी गलतीके कारण छुरी तले कांप रहे हैं।

परसियस — एण्ड्रोमीडा, वह शानदार गलती थी। अपने प्रियजनोंके लिये डर मत। अपना प्यारा शरीर निर्भीक होकर ऊपर उठा लेनेके लिये मेरे हाथोंमें सौंप सकेगी, जहां स्वर्ग भी तेरे सौन्दर्यको देखकर चकित हो जाय? या तुझे अपने अधरमें लटकते हुए पैरों तले, नीले विशाल सागरको देखकर डर लगेगा?

एण्ड्रोमीडा — तुम साथ हो तो मुझे डर नहीं लगता।

परसियस — मधुर बोझ, मुझसे लिपट जा। हम दोनों एक साथ ही अपने दुश्मनों-से मिलेंगे।

(उसे उठानेके लिये हाथोंको उसके शरीरकी ओर बढ़ाता है और परदा गिरता है)

दृश्य २

पोसायडनका मंदिर

(पोलीडियोन, थेरप्स, डेरसिटस, सिडोनी, दामेतेज और अनेक सीरिया-वासी पुरुष और स्त्रियां मौजूद हैं। एक ओर आयोलस बंधा हुआ खड़ा है। सशस्त्र पुरुषोंके बीच सीफियस और केसियोपिया।)

पोलीडियोन — सीफियस और केसियोपिया, मर्द और औरत, जो अब सत्ताधारी

नहीं रहे, लो, देख लो जो देवोंसे लड़ते हैं उनका क्या अन्त होता है।

केसियोपिया — मेरी आंखें बस तेरा अन्त देखनेके लिये तरस रही हैं।

पोलीडियोन — चलो, उन्हें कुछ अधिक सम्भव चीज दिखायें, रस्सीमें जकड़ा हुआ वह तेरा ही पुत्र है न? और वह वेदी दिखायी देती है? यह क्या! तेरी आंखें जो कभी आग बरसाया करती थीं आंसुओंमें डूब रही हैं। ओ केसियोपिया, तेरा वह दर्प कहां गया?

केसियोपिया — तेरे पोसायडनके सिवा और देव भी तो हैं। वे तुझे सजा देंगे।

पोलीडियोन — अगर तुझे इस परम रहस्यका पता चलता कि मैं कौन हूँ तो तू ऐसी बेकार और मूर्खतापूर्ण इच्छाएं प्रकट न करती। तेरी हत्याके बाद मैं अपने-आपको प्रकट करूंगा।

केसियोपिया — तू प्रकट कर ही चुका है कि तू क्या है। एक पागल आदमी और अमानुषिक दानव।

सीफियस — मेरी रानी, बेकार शब्द न बोलो।

दामेतेज — पेरिसस आ रहा है।

केसियोपिया — हाय भगवान्!

थेरप्स — देखो, देखो, रानी बेहोश हो रही है। आह, उनकी देखभाल करो।

(पेरिसस आता है)

पोलीडियोन — हां, उसे उठाओ, उसे होशमें लाओ, मैं इस अवसरपर उसे बेहोश न रहने दूंगा। क्या समाचार है पेरिसस! तेरा चेहरा अशांत है, तू फटी आंखोंसे घूर रहा है।

पेरिसस — मेरी आंखें घूर रही हैं क्या? हाँ, वे घूर सकती हैं क्योंकि उनके पास कारण है। राजप्रतिनिधि पोलीडियोनजी, आप भी जल्द घूरने लगेंगे।

थेरप्स — क्या विरल बात हो गयी? आकाशका छोर नीला ही था किन्तु आकाशमें हलचल विचित्र हो रही थी। तुमने क्या देखा?

पेरिसस — मैंने स्वर्ग और नर्कको जूझते देखा है।

पोलीडियोन — मुझे नरक और स्वर्गकी क्या परवाह है? अपने समाचार सुनाओ। क्या समुद्री दानव आया था और खाकर चला गया?

पेरिसस — आया तो था पर गया नहीं।

पोलीडियोन — लड़की नहीं पकड़ी गयी क्या?

पेरिसस — हां, हां, पकड़ी गयी। एक प्रगाढ़ और गहरी पकड़में!

पोलीडियोन — समुद्री दानवकी ही पकड़ थी न।

पेरिसस — कहते हैं कि हम सब जानवर हैं, तब तो वह भी जानवर था किन्तु एक भव्य जानवर !

पोलीडियोन — और क्या वह पूरी तरह निगल ली गयी ?

पेरिसस — हां, क्यों नहीं, एक तरहसे......अगर चुम्वन निगल सकते हों।

पोलीडियोन — हां ! हा ! मेरे सभी दुश्मनोंको ऐसा ही कोमल दुलार मिले। क्या उसे चीरा-फाड़ा नहीं गया ? क्या यूँ ही पकड़कर पूरी-की पूरी निगल ली गयी ?

पेरिसस — हां, कुछ-कुछ ऐसा ही हुआ ?

पोलीडियोन — तुम विचित्र ढंगसे धीरे-धीरे मुश्किलसे बोल रहे हो। तुम्हारी प्रसन्नतापूर्ण स्पष्टवादिता कहां है पेरिसस ?

पेरिसस — जानवरके साथ आ रही है। उसने लड़कीको जोरसे पहाड़ीपरसे उठाकर आकाशमें उछाला।

पोलीडियोन — तो रानी, अब तुम्हारे लिये एण्ड्रोमीडाका कुछ भी नहीं बचा !

पेरिसस — क्यों नहीं, बचा तो है। एक मधुर और सुन्दर भाग !

पोलीडियोन — मेरे विनोदप्रिय कसाई, उसकी वेटीके टुकड़ेको अपने साथ ले आना था न।

पेरिसस — आ रहा है।

पोलीडियोन — हो, हो ! रानी, तब तो तुम अपनी बेटीको देख सकोगी।

डेरसिटस — यह एक विकराल और अमानुषिक अट्टहास्य है। पुजारी ! अपने मिजाजपर काबू रखो। मेरी तलवार बेचैन हो रही है।

थेरप्स — यह पोसायडनके मन्दिरमें एक कलंक है।

पोलीडियोन — मेरा विरोध करते हो ? (थेरप्ससे) भूले-भटके मर्त्य, क्या तू पोसायडनका सामना करेगा ?

डेरसिटस — वह घूरता है, उसका मुँह शनैः-शनैः उत्तेजित हो रहा है। वह विक्षिप्त है। क्या एक पागल हमपर हुकूमत कर रहा है ?

थेरप्स — काफी अधिक हिंसा और उद्दण्ड निष्ठुरता हो चुकी है जो उपद्रवके समय तो क्षम्य है किन्तु अब विजयका शांत मुहूर्त है जब भद्रताका और दयाका भी राज्य होना चाहिये। इस बेचारी रानी और दुःख-कातर राजाको सतानेसे हमें क्या मिलेगा ?

पोलीडियोन — जरा इसकी सुनो लोगो ! यह महान् पोसायडनके शत्रुओंपर दया दिखाता है, थेरप्स देश-द्रोही हो रहा है।

दामेतेज — अच्छे पुजारीको डांट-फटकार सुनाता है।

चीखें — थेरप्स द्रोही है!

मेगास — थेरप्स, क्या तू राजाओंका पक्षपाती है? तू पोसायडन और उसकी प्रजा-का द्रोही है?

गारदास — मैं कहता हूँ थेरप्सकी बात सुनो। वह हमेशा ठीक कहता है, हमारा थेरप्स, उसमें दिमाग है।

चीखें — थेरप्सकी सुनो, थेरप्स!

थेरप्स — उन्हें सजा होनी चाहिये किन्तु सिर्फ देश-निकालेकी। मैं कोई देश-द्रोही नहीं हूँ। ओ प्रजाजन, मैंने तुम्हारे लिये काम किया है जब यह ढोंगी पुजारी टायराके राजासे मिलकर तुमपर परदेशी जंजीरें डालनेका षड़यन्त्र रच रहा था।

चीखें — हैं, यह ठीक है? यह सच है क्या? बोलो पोलीडियोन।

पोलीडियोन — क्या मुझे अपनी सफाई देनी पड़ेगी? तुम्हें विजयश्रीतक पहुँचाने-वाला और भीषण पोसायडनके कोपका शमन करनेवाला क्या मैं ही नहीं था? अगर तुम्हें मुझपर सन्देह है तो बलिको रोक दो। सीफियस और केसियोपिया-को राज्य करने दो किन्तु जब तुम्हारे पीछे क्रूर पोसायडनके कुत्ते भोंकने लगें तब सहायता मांगनेके लिये मेरे पास भागे-भागे मत आना। मैं हमेशा क्षमा न कर सकूँगा।

चीखें — पोलीडियोन! पोसायडनका वीर प्रतिनिधि, पोलीडियोन! थेरप्स-को मार डालो, आयोलसको वेदीपर डालो।

पोलीडियोन — अब तुम्हारी अकल ठिकाने आयी। थेरप्सको छोड़ दो। आयोलस-को वेदीपर ले आओ। उसका वक्ष छुरीके लिये खोल दो।

थेरप्स — डेरसिटस, क्या यह सब होने दिया जायगा?

डेरसिटस — हमें पोसायडनका सामना करनेका साहस नहीं करना चाहिये। यह खतम होगा तब मैं अपने वफादार भाला बरदारोंको लेकर कूद पड़ूँगा और राजा-रानीको बचा लूँगा। थेरप्स, इस उग्र पुजारी और उग्रतर भीड़का राज्य तो एक दुःस्वप्न होगा।

थेरप्स — सब अच्छे लोगोंको लेकर मैं भी तेरी सहायता करूंगा।

पेरिसस — थेरप्स, मेरे प्यारे, ओ जनसमूहके चुम्बक, मंडीके मधुभाषी देव जीयस! मैं जानता हूँ कि तेरा हृदय पश्चात्तापके मधुर रससे लबा-लब भरा हुआ है किन्तु अभी उसे बांध तोड़कर क्रियामें न आने दे। डेरसिटस अपने फड़कते हुए बरछों-को आराम करने दे। मेरे छोटे कप्तान, हर चीजका एक समय होता है, एक

ऋतु होती है। देखो, प्रतीक्षा करो। देवगण कार्य कर रहे हैं, आयोलस नहीं मरेगा।

पोलीडियोन — हम तभीतक प्रतीक्षा करते हैं जबतक हमारा प्रचण्ड कोप, हमारे देवत्वका विरोध करनेवाले बड़े अपराधीकी धज्जियां नहीं उड़ा देता और तब ओ केसियोपिया, मैं तेरी आंखोंको देखूंगा।

पेरिसस — पोलीडियोन, लो, लड़कीको देख लो।

(परसियस और एण्ड्रोमीडाका प्रवेश)

चीखें — एण्ड्रोमीडा! एण्ड्रोमीडा! उसकी जंजीरें किसने खोल दीं?

सीफियस — क्या यह एण्ड्रोमीडाकी छाया है?

थेरप्स — छायाएं इतनी ओजस्वी नहीं होतीं। उनकी मुस्कानें इतनी प्रदीप्त नहीं होतीं! उसे धरतीपर वापस भेजा गया होगा। अरे यह तो ओजस्वी, पंख-दार देव-हरमिस उसे ला रहे हैं।

डेरसिटस — उन्होंने ही समुद्र-तटपर हमें चकरा दिया था। मुझे लगता है देवता हमारे सीरियामें कार्यव्यस्त हैं।

(एण्ड्रोमीडा दौड़कर केसियोपियाके घुटनोंसे लिपट जाती है। उन्हें चूमती है। सैनिक उसे रास्ता देते हैं)

केसियोपिया — (अपने हाथोंमें एण्ड्रोमीडाका मुँह लेकर) ओ मेरी प्यारी बच्ची, तू जिन्दा है!

एण्ड्रोमीडा — मां, मां ! मैं जिन्दा हूँ और प्रकाश देख रही हूँ। दुःखका अंत हो चुका।

केसियोपिया — (एण्ड्रोमीडाको भुजाओंमें लेते हुए) मैं अपनी छातीपर फिरसे तुझे जीवित-जागृत पाती हूँ। अब भला क्या दुःख हो सकता है?

सीफियस — एण्ड्रोमीडा, मेरी बेटी!

पोलीडियोन — (विस्मयमेंसे जागते हुए) उफ! क्या-क्या उलझनें हैं? कसाई, तूने मुझे दगा दिया! इन्हें पकड़ लो। मेरी विराट् वेदीपर ये सब मरेंगे। पकड़ो इन्हें!

परसियस — (उसके सामने आकर) पोसायडनके और मृत्युके पुजारी! तूने मुझे तीन दिन दिये थे। आज सिर्फ दूसरा ही दिन है और मैं यहाँ खड़ा हूँ। हां, तो तुझे बलि चाहिये क्या?

पोलीडियोन — क्या तू कोई देवता है? मैं तुझसे भी महान् और अधिक भीषण हूँ। मुझसे डर और मेरे आगेसे चला जा। मुझे तेरी जरूरत नहीं।

परसियस — अपनी सजाकी राह देख। सीरियावासियो, मुझे अच्छी तरह देख लो। भयावह पोसायडनकी वेदीसे छीना हुआ बलि। मेरी तलवारने मधुर एण्ड्रोमीडाको बचाया है और समुद्री दानवको मारा है! तुम्हें बलि चाहिये न? लो मैं उपस्थित हूँ। किसका छुरा तैयार है? आये वह मेरे पास।

थेरप्स — महान् वीर, तुम कौन हो? इन लोगोंके सामने अपनी कीर्ति और अपूर्व और अद्भुत कार्य सुनाओ। युद्धक्षेत्रमें कौनसे शक्तिशाली देव तेरी सहायता करते है?

परसियस — सीरियावासी, मैं परसियस हूँ। जीयस और डेनीका वीर पुत्र। मेरी धमनियोंमें देवोंका रक्त दौड़ रहा है, मेरी भुजाओंमें देवोंकी सामर्थ्य है। एथिनी मेरी सहायता करती है। उनकी ढालको देख लो। इसे जरा खोल दूँ तो इसका विजलीका-सा प्रकाश तुम्हें अन्धा कर देगा। और यह तलवार हर्पी है जो धरती और पातालतकको वेध सकती है। मैंने जो भी किया एथिनीकी शक्तिसे किया है। अपने सेरिफस गांवसे इन पंखदार जूतोंपर निर्मल हवामें उड़ते हुए मैंने सुदूर पश्चिमके अनजान देशोंको, नामहीन भूखंडोंको तथा उन सागरोंको पार किया है जिन्होंने अभीतक मनुष्यके चप्पुओंकी छपछप नहीं सुनी। उष्ण समुद्र-तटपर रेगिस्तानकी गरम हवाओंमें झुलसते महान् अतलस आकाशको सहारा देते हुए देखा है। उनका विशाल सिर तारोंसे बातें कर रहा था। मैंने उन्हें एक पहाड़ीमें बदल दिया है। जहां प्रकृति विस्मयसे मौन है, और ठंडसे सुन्न होकर कड़ी शुभ्रतामें बदल गयी है, उस उत्तरी अगाध हिम-प्रदेशमें भी घूमा हूँ। उन अंधियारी गुफाओंमें गया हूँ जहां मौतने जन्म लिया था। और उस अंधकारमें बसनेवाली ग्रेई नामक डायनोंसे उनकी भूत और भविष्य देखनेवाली अद्भुत आंख चुरायी है। मैंने गारगन, भयावह मेडुसाकी हत्याकी है और अपने झोलेमें उसका सिर बन्द कर रखा है जिसे देखते ही जिन्दा आदमी पत्थर हो जाता है और आज सीरियाके कोलाहलपूर्ण इस एजियन समुद्र तटपर मैंने यह कार्य किया है जिसकी गाथा मनुष्य हमेशा गाया करेंगे। अपने पंखदार पैरोंके सहारे कोलाहलपूर्ण आकाशमें चढ़कर मैंने पोसायडनके समुद्री दानवोंको चीर डाला जिसके पहाड़ जैसे दांत और आगभरा मुख तुम्हारे बेटेबेटियोंको निगल जाता था। तुम्हारे उर्वर खेतोंको झागके असंख्य सिरोंसे भर देनेवाला समुद्र-देवका विराट् कदम कहां गया? मैंने कूदते-फांदते क्रुद्ध जलको पीछे धकेल दिया है। उनके सागर-सामर्थ्यने एक मर्त्यके आगे हथियार डाल दिये हैं। अभी मेरे बोलते-बोलते तुम्हारे आसपास दुनिया बदल गयी

है। सीरियावासियो, धरती शांत है, आकाश मुस्करा रहा है और एक गंभीर नीरवता सागरपर चुपचाप सुन रही है। यह सब मैंने किया है फिर भी मैंने नहीं, किसी अन्य महानतर विभूतिने। एथिनी और उनके सेवकोंमें ऐसी शक्ति है। लो, अब तुम मुझे जानते हो,ओ सीरियावासियो ! मैंने अपनी सामर्थ्यको छिपाया नहीं है। कोई यह न कहे कि मैंने उसे धोखा देकर उसका नाश किया। बोलो, तुममेंसे कौन है जो बलि चाहता है ? (वह रुकता है। सब मौन हैं) यह क्या ? तुम लोग भूँक रहे थे, पागलोंकी तरह बिलबिला रहे थे, तुमने सुकुमार ललनाओंको हत्याके लिये बांध दिया था और राजकुमारोंके हृदय नोंचनेके लिये गरज रहे थे और अब सब शांत हो गये ? अब कौन बलि मांगता है ? बोलो, कौन परसियसकी बलि चढ़ायेगा ?

थेरप्स — बोलो, क्या कोई ऐसा मूर्ख और मौतका अनुरागी है ?

परसियस — है कोई आदमी जो बलिकी मांग करता हो ?

चीखें — कोई नहीं, महान् परसियस, कोई भी नहीं।

परसियस — तब मैं यहां एण्ड्रोमीडा और आयोलसको मौतकी सजासे मुक्त करता हूँ। महाराज सीफियसको उनका मुकुट वापस देता हूँ। कोई आदमी मेरे कार्यका विरोध करता है क्या ? कोई है जो सीरियापर हुकूमत करेगा ?

चीखें — कोई नहीं, वीर परसियस।

परसियस — आयोलस, प्यारे मित्र, मेरा काम पूरा हो गया।

(उसके बन्धन काटता है)

आयोलस — ओ वीर पिता, उजड्ड हाथोंने तुम्हारे राजमुकुटको इस अशोभन मिट्टीपर पटक दिया था। मुझे अनुमति दो कि तुम्हारी ओरसे उठा लूँ। अब वह सुस्थिर रहेगा। डेरसिटस, क्या तुम फिरसे वफादार हो ?

डेरसिटस — हमेशाके लिये।

आयोलस — थेरप्स !

थेरप्स — मैंने बगावतसे हाथ धो लिये।

आयोलस — तब मेरे राजवंशी माता-पिताको सैनिक तड़क-भड़क और गाजे-बाजेके साथ महलतक पहुँचाओ। लोग अपनी आज्ञाकारितासे अपने बेहूदा बगावतके चिह्न तक मिटा दें। सबसे अधिक अपराधी एक सिर तुम सबकी ओरसे दण्ड चुकायेगा। बाकी लोग अपनी स्थिर बुद्धिसे नहीं, भय और धर्मांधताके कारण राजद्रोहके लिये प्रेरित हुए थे। इसलिये उन्हें क्षमा किया जायगा।

चीखें — आयोलस ! आयोलस ! सीरियाके उदार आयोलसकी जय हो !

आयोलस चिरजीवी हो!

आयोलस — एण्ड्रोमीडा और तू, मेरी प्यारी सिडोनी, तुम लोग उनके साथ जाओ।

सीफियस — बेटे, मैं तेरे निर्णयपर अपनी स्वीकृति देता हूँ।

(डेरसिटस और उसके सैनिक, थेरप्स और अन्य सीरियावासी सीफियस और केसियोपिया, एण्ड्रोमीडा और सिडोनीको अपने साथ ले जाते हैं)

आयोलस — पोलीडियोन अब......

पोलीडियोन — मैंने सब कुछ देखा और अट्टहास्य किया है। आयोलस और तुम ओ आरजील परसियस, तुम लोग जानते नहीं मैं कौन हूँ। मैंने तुम्हारी क्षणिक मूर्खतापूर्ण विजयोंको इसलिये सह लिया कि तुम्हें मेरी सजा और भी भयंकर और कड़वी लगे। अब समय हो गया। मैं अपने-आपको प्रकट करूंगा। राजकुमार, जब मैं तुम्हारे सिरपर मौत और समस्त सागर ढकेल दूंगा तब तुम्हारी भय-विस्फारित आंखें मुझे पहचानेंगी।

परसियस — यह आदमी पागल हो गया है?

आयोलस — पराजयने उसे पागल बना दिया है।

पेरिसस — एक-आध ऋतुसे मैं इसे आते देख रहा था। पहले यह सियार था किन्तु इस उपद्रवने उसे नाखूनदार पंजे और स्नायु दिये और वह शेर बन बैठा। अब यह इसका अंत है। पोलीडियोन, क्या है? पुजारी स्वस्थ हो, आंखोंको गोल-गोल मत घुमा। मैं तेरा दोस्त पेरिसस हूँ। मैं तेरा पुराना प्यारा सहपाठी हूँ। क्या अब हम एक ही धंधेके कारीगर नहीं हैं? पुजारी और कसाई?

पोलीडियोन — तुम्हें दीखता नहीं? मैं अपनी नीली जुल्फोंको लहराता हूँ और धरती कांपती है। कांप धरती! मेरे विराट् सागर! उठ। धरती, मेरे दुश्मनोंको अपनी पीठसे गिरा दे! सागर, बृहद् विलासी, उन्हें आलिंगनमें भर और चुंबनोंसे मार डाल। मेरे प्यारे दानवो, भूँकते हुए अपने अस्तबलसे निकल आओ। अपने खूनसने दांतोंसे और आग उगलती सांसोंसे मेरा बदला लो। उनकी विजयकी खिल्ली उड़ाओ। जीयस, भ्राता, तुम अपने आकाश-से उनपर अभिशापोंकी वर्षा करो। क्या सभी चुप हैं? हे सागर, तू मेरी आज्ञा नहीं मानेगा तो मैं तुझे पानीके चिथड़ोंमें फाड़ दूंगा और तेरे जलमग्न आधारभूत पहाड़ोंको नंगा कर दूंगा।

आयोलस — (आगे बढ़ते हुए) उसे पकड़कर बांधना चाहिये।

परसियस — ठहरो, देखो, उसके झाग निकल रहे हैं, मुट्ठियां बंध गयी हैं।

(पोलीडियोन जमीनपर गिरता है)

उसे सजा हो चुकी।

पेरिसस — पोलीडियोन, लंगोटिया यार, तेरी आत्मा क्या तेरे इस शरीरके लिये बहुत अधिक बड़ी हो गयी है? इस निकम्मी धरतीको लात मारकर स्वर्गको शाही घूँसे दिखाता है?

आयोलस — यह एक दौरा था और अब खतम हो गया। देखो, कैसा सफेद पड़ गया है और पड़ा-पड़ा कांप रहा है।

पोलीडियोन — (बोलते समय उसकी वाणी मौनके टुकड़ोंमें बंट जाती है, वह अपने चारों ओरके लोगोंसे बेखबर लगता है। उसकी सत्ता शरीरको छोड़ती जा रही है और वह सिर्फ आंतरिक चेतना और आंतरदर्शनमें ही जी रहा है।

मैं अभी, इसी क्षण तो पोसायडन था। अब वह मुझसे दूर होता जा रहा है और मुझे बलहीन अवस्थामें छोड़ रहा है। मैं एक निस्तेज, तुच्छ मर्त्य बन गया हूँ। (आधा उठता हुआ) मैं नहीं, तुम भगवान्‌से डर गये थे। मैं बोलना चाहता था पर तुम सुन्न और पत्थरसे नीरव हो गये। तुम्हें किसका भय था? क्या तुम मानव आत्मामें छिपे देवत्वसे डर गये या तुमसे भी महान् देवने तुम्हें डरा दिया? क्षमा, क्षमा करो! मुझसे दूर मत जाओ। तुम्हारी शक्ति ही मेरी सांस है और तुमने अपने-आपको खींच लिया तो बस तेरा काम तमाम हो जायगा। वह अब भी मेरे पास खड़ा है। मेरी ओर घूरता है। अपनी अवसादपूर्ण लटोंको हिलाते हुए कहता है कि मेरे पाप और झूठी महत्वाकांक्षा-ने उसका बेड़ा गरक कर दिया। क्या मैं तुम्हारे कहे अनुसार निर्भीक न था? उफ, वह अदृश्य विराट् नीरवताओंमें चला गया......किसकी, यह तेजस्वी प्रभा किसकी है? उसकी जगह कोई और खड़ा है और मेरी ओर ताक रहा है। उसका शांत दिव्य चेहरा बड़ा रौब-दाबवाला है, उसकी आंखोंसे सागरकी नीली अतल गहराइयां झांक रही हैं। उसके भव्य आकारपर समुद्री नील केशराशिका मुकुट सुशोभित हो रहा है। उसकी अक्षुब्ध शांत शक्ति एक रहस्यमय त्रिशूलसे सज्जित है। स्वयं अपने लिये और इस जगत्‌के लिये नव-जात-सा लगनेवाला यह व्यक्ति मुझसे मुड़कर अपने समुद्री साम्राज्यको ढूँढ़नेके लिये उमड़ती हुई सागर-तरंगोंको अपने डगोंमें भर रहा है। धरती उसके असह्य पैरोंतले भयभीत और विस्मित होकर कांपती हुई झुक रही है। आकाश उसकी राजोचित महानताके लिये एक दर्पण है।......किन्तु वह बृहद् और धुंधला-सा रूप किसका था? अंधकारका आतंक अब भी मेरे चारों ओर है किन्तु उल्लास और सामर्थ्य मेरे हृदयसे जा चुके हैं। और मैं एक क्षण-

भंगुर मर्त्य रह गया हूँ, एक बेचारा गरीब प्राणी जिसके साथ मौत और भवितव्यता मनमाना खिलवाड़ कर सकती है।......फिर भी उस उपस्थितिका अनुभव होता है, वह मेरे पास है,......क्या मैं पार्थिव मनुष्यसे बढ़कर कुछ नहीं था ?......वह मैं ही था, वह छाया, वह विरोधी देव ! मुझे अपने पापमयके हाथोंमें छोड़ दिया गया है। वही अंधकार था।......किन्तु मुझसे ज्यादा उग्र विकराल कुछ और भी था। तू जो कोई भी हो मुझे बचा ले......मैं चला... मैं पकड़में आ गया। अपने प्रचण्ड चंगुलमें उठाकर वह मुझे घने बादलोंमें लिये जा रहा है। मैं काला नरक देख रहा हूँ। आगकी नोकवाली छुरियां मेरी छातीको छू रही हैं। पोसायडन, मुझे छोड़ दो,....ओ तेजस्वी देवता, मुझे बचाओ, मुझे क्षमा करो और उबार लो !

(वह मरकर गिर पड़ता है)

परसियस — मनुष्यको अपने-आपसे कौन बचा सकता है ?

आयोलस — वह समाप्त हो गया। उसके पापोंने उसे नष्ट कर दिया।

परसियस — कुछ घण्टोंके लिये यह आदमी एक गुह्य और प्रचण्ड शक्तिका पात्र था और उस शक्तिने इससे बड़े उग्र, भयानक और अमानुषिक कार्य करवाये, किन्तु इसका छोटा और अंधेरा मन तथा अपवित्र कलुषित हृदय उस शक्तिको अपनेमें समा न सके। वह शक्ति इसके अन्दर पागलपन और राक्षसी लालसाओंमें बदल गयी। अपने असमर्थ और टूटे हथियारको छोड़कर शक्ति बाहर चली गयी और अपना सारा सामर्थ्य मानव-शरीरमेंसे खींच ले गयी। साधारण मनुष्योंके बीच एक अभीप्साहीन साधारण मर्त्य होकर रहना भला। बजाय इसके कि मानव शरीरके लिये दुर्दान्त दारुण शक्तिको अपने अन्दर खींचा जाय जो अत्याचार-पीड़ित दिङ्मूढ़ संसारको कष्ट ही पहुँचा सके और अंतमें स्वयं शक्ति-प्रयोग करनेवालेको भी तोड़ दे।

आयोलस — किन्तु स्वर्गके बालक बनकर रहना सर्वोत्तम है, सिर्फ देवोंके बालक ही देवोंको धारण कर सकते हैं।

पेरिसस — पोलीडियोन, तू चला गया ? छाती चीरनेवालोंके बादशाह, यह तो बड़ा दुखद अंत था। मेरे कसाई-साथी, तेरे लिये मेरा दिल दुख रहा है।

आयोलस — महत्त्वाकांक्षा तथा भयानक और वीभत्स क्रूरतामें प्रवीण अपराधोंके लिये दैवने उसे यह दण्ड दिया है।

परसियस — उसका धार्मिक विधिसे दाह-कर्म करना। शायद इससे उसकी आत्मा रसातलसे भी नीचेकी काली नदी पार कर सके। चलो चलें, और इन विचित्र

विप्लवोंका अंत लायें। सीरियाको अपने गुप्त स्थानसे पुरस्कार पानेके लिये बुलाओ। टिरेनस और जेलसे स्मरडसको लेते आना। सिडोनीके घरसे मनोहर डायोमिडी भी आ जाय। ऊंच या नीच जो भी हमारे साथी थे या हमारे मुसीबतोंके कारण थे, सबको यथायोग्य पुरस्कार मिलना चाहिये।

आयोलस — फीनियस कारण पूछेगा।

परसियस — उसे भी संतुष्ट कर दिया जायगा।

पेरिसस — उसे संतुष्ट करना असंभव है। उसकी नाक बहुत लंबी है। वह युक्तिकी बात नहीं सुनेगी क्योंकि वह सोचती है कि सारी दुनियाकी बुद्धिमत्ता और नीति उसके छोटे-से दिमागमें भरी पड़ी है जिसमें वह खुद नलीकी तरह लटक रही है।

परसियस — पेरिसस, मेरे साथ चलो। तुमने मेरी सलोनी प्रेयसीके साथ सहृदयतापूर्ण व्यवहार किया था। उसे याद रखा जायगा।

पेरिसस — इसमें कोई आश्चर्यजनक बात न थी। खरगोश जैसे आंतोंसे भरा-भरा है वैसे ही मैं भी सहज सौम्यसे भरपूर हूँ। महान् परसियस, मेरे अन्दर दयामाया है। क्यों, क्या मैं पेरिसस नहीं हूँ? क्या मैं कसाई नहीं हूँ?

(वे जाते हैं)

(परदा गिरता है)

दृश्य ३

(राजमहलका दरबार-गृह)

(सीफियस, केसियोपिया, एण्ड्रोमीडा, सिडोनी, प्रेक्सीला, मीडास)

सीफियस — केसियोपिया, मंगलकर्ता देवोंने हमारे आकस्मिक अनिष्टोंका आकस्मिक अंत भी कर दिया। दहशतके मारे एसीरियाकी सेनामें भगदड़ मची है। वे हमारी सीमा छोड़कर भागे जा रहे हैं।

केसियोपिया — और मुझे अपने बच्चोंके मुखड़े अपनी छातीपर वापस मिल गये। उस देवसम युवकके शीघ्र और विजयी परित्राणने हमें नरकसे कितने तेजोमय ढंगसे उबार लिया! इसके उपकारका बदला कैसे चुकाया जा सकता है।

सिडोनी — उसने अपना पुरस्कार एक छोटी-सी श्वेत मुद्राके रूपमें ले लिया है।

इससे ज्यादा वह न मांगेगा।

केसियोपिया — बेटी, क्या तेरा नाम सिडोनी है? तेरा मुख अपरिचित-सा है। तुमपर हमारी बांदियोंमेंसे तो नहीं हो?

सिडोनी — हां, हां, मैं बांदी हूँ। आयोलसकी बांदी। वह कभी-कभी मुझे अपनी रानी भी कह लेता है, किन्तु वह तो यूँ ही फुसलानेके लिये।

एण्ड्रोमीडा — ओहो, मां, तुम्हें मेरी प्यारी सिडोनीको जानना ही चाहिये। अगर तुम उसे अपने दिलमें स्थान न दोगी तो मैं समझूँगी कि तुम्हें मुझसे प्यार नहीं है क्योंकि जब मैं अपने टूटते दिलके साथ अकेली थी तब यही मेरे पास आयी थी और इसने मेरी आत्माको चुँबनोंसे सांत्वना दी थी।...हां, जब सागरसे संत्रास अपना सिर उठा रहा था तब भी यह अपनी हल्की-फुल्की बातोंसे मुझे घेरे रही। मुझे लगा मानो दुःख उस दुनियामें नहीं रहता जहां यह हो। अगर यह न होती तो शायद सहायता आनेसे पहले ही मैं शोकसे मर जाती।

केसियोपिया — सिडोनी, तुम मुझसे क्या मांगोगी? मुकुटतक तुम्हें मिल सकता है।

सिडोनी — नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये सिवाय इसके कि आपके सामने हमेशा आयोलसकी बांदी बनकर बिना झिड़कियां खाये खड़ी रह सकूँ।

केसियोपिया — मेरी बेटी, तुझे उससे अधिक मिलेगा।

सिडोनी — मेरी दो माताएं हैं। दो-दो आयोलस तो पहलेसे ही थे।
अरे ए लड़की आयोलस, तू परसियससे शादी न कर पायेगी। तू तो मेरी है। ओह, देखो इसे! कैसे शरमाना सीख गयी है!

एण्ड्रोमीडा – (उसका मुँह बन्द करती हुई) चुप रह पागल, बकवादी! वरना तेरे पागल मुँहको अपने मुँहसे ढक दूंगी।

(परसियस और आयोलसका प्रवेश)

सीफियस — स्वागत है, ओजस्वी विजेता, महान् परसियस! स्वागत है। सीरिया-के त्राता, देवोंके दूत, तुम्हें हमारे तटपर लानेवाली विधि बड़ी दयालु थी।

केसियोपिया — (आयोलससे आलिंगन करते हुए) आयोलस, आयोलस मेरे बेटे! मेरे स्वर्णकेशी आनन्द जिसे वे मारे डालते थे! परसियस, तुम्हारी मां है?

परसियस — महारानी, आप जैसी ही प्रेममयी मां है किन्तु वैभवमें आपसे कम?

केसियोपिया — मैं तुम्हें दे ही क्या सकती हूँ? सारी धरती तुम्हारे विचरणके लिये खुली है, तुम्हारे अन्दर शौर्य और उज्जवल सौन्दर्य है और साथ ही एक ममता-मयी मां भी है? फिर भी परसियस, अपनी सहायताके लिये मेरे आशीर्वाद

लो। क्योंकि महान् शक्तियां भी टूट सकती हैं और भागवत कृपा भी हमेशा नहीं बनी रहती। किन्तु जिन्दगीकी ऊबड़-खाबड़ राहपर तूने अपनी दयार्द्र शक्तिसे जिनकी सहायता की है, उनके आशीर्वाद कभी साथ न छोड़ेंगे।

सीफियस — तेजस्वी ओलिम्पसकी संतान, और मैं तुम्हें क्या दूं आरगीववासी परसियस ? मेरा आधा राज्य लोगे ?

परसियस — आपके राज्यपर आयोलसका अधिकार है। उसीके द्वारा मैं राज्यका सुख भोगूँगा। राजन्, आपके पास एक पुरस्कार था जिसकी मुझे आकांक्षा हो सकती थी किन्तु वह मेरी है। मैंने उसे मौतसे छीनकर अपनी संपत्ति बना लिया है।

सीफियस — मेरी प्रफुल्लवदन एण्ड्रोमीडा ! किन्तु वह टायरावासी भी तो है, पर उसने तो इसे मौतके हवाले कर दिया था इसलिये अब वह अधिकार नहीं जतला सकता।

आयोलस — पिताजी, बाबुलके व्यापारी और सीरियस प्रतीक्षा कर रहे हैं। जन-नायक और आपकी सेनाके कप्तान अपनी भग्न आज्ञाकारिताको फिरसे नया करनेके लिये आतुर हैं।

सीफियस — उन सबको मेरे पास आने दो। जा मीडास।

(जैसे ही मीडास जाता है डायोमिडी अन्दर आती है)

एण्ड्रोमीडा — डायोमिडी ! सखी, तू भी तो उत्पातमेंसे सही सलामत निकल-आयी। मैंने तो सोचा था हम दोनों ही डूबेंगे।

डायोमिडी— हां, ठीक ही तो है, अब तुम परसियससे शादी कर लोगी और मेरा दिल बहलानेके लिये प्रेक्सीलाके चाबुकके सिवा और कोई सखी न रहेगी।

एण्ड्रोमीडा — ओह, इसलिये तू इतनी असंतुष्ट और उखड़ी-उखड़ी-सी लग रही है ? चल, अपना मुँह ठीक कर ले, मैं तुझे दुनियाके दूसरे छोरतक घसीट ले जाऊंगी। और प्रेक्सीलाका काम अपने हाथोंसे करूंगी। तब तो खुश रहोगी न ?

डायोमिडी — मानो तुम्हारे नन्हें हाथ चोट पहुँचा सकते हों ! ओ प्रेक्सीला, ले मैं लाल बेरियां चुनने और समुद्री पंखियोंका चहचहाना सुननेके लिये आर-गीव चली और वहां समुद्रको साइक्लेडके लिये गाते सुनूँगी। और तुम्हारे लिये एकदम नये चमड़ेका चाबुक खरीद दूंगी जिससे तुम कभो-कभी मेरी स्मृतिको फटकारा करना, प्रेक्सीला।

प्रेक्सीला — लेकिन जानेसे पहले तुझे उसका स्वाद अवश्य मिलेगा। तुम दोनों सनकियोंकी अच्छी जोड़ी रहोगी। मुझे परसियसपर तरस आता है।

एण्ड्रोमीडा — तो तुमने हम दोनोंसे अच्छा छुटकारा पाया, मेरी बेचारी प्रेक्सीला !

प्रेक्सीला — राजकुमारी, नन्हीं राजकुमारी, मेरे हाथ हल्के होंगे पर दिल बहुत भारी रहेगा।

(थेरप्स और डेरसिटस कप्तानोंके साथ आते हैं, टिरेनस और स्मरडस भी आते हैं)

सब — जय हो सीरियापर पुनः प्रतिष्ठित राजदंपति,तुम्हारी जय हो।!

थेरप्स — महाराज, हमें स्वीकार कीजिये। भूतकालको भुला दीजिये।

सीफियस — भूतको भुलाया जा चुका है थेरप्स। डेरसिटस, तुम्हारा स्वागत है। तुम्हारा मित्र नेबेस्सार सो रहा है। उसने अपनी सेवा पूरी कर ली, अपना पुरस्कार ले चुका।

केसियोपिया — उसका खून सीरियाकी छातीपर एक गहरा दाग है।

डेरसिटस — महारानी, यह कलंक हमारे माथेपर है परन्तु जब हम एक एसीरिया-वासीके प्रदेशमें उन्हें दण्ड देने जायेंगे तब अपने खूनके प्रवाहमें उसे डुबा देंगे।

थेरप्स — अपने राजाके लिये मरना, स्वदेशके लिये मरनेसे कुछ ही कम गौरवमय है। यह परदेसी सैनिक हमें यह पाठ भली भांति सिखा गया।

केसियोपिया — थेरप्स, तो क्या सीरियामें अब भी राजा है ?

थेरप्स — महारानी, मेरे पापोंको याद न करें।

केसियोपिया — उन्हें गहराईमें गाड़ा जा चुका है। अगर तुम मेरी और मेरे द्वारा अपने देशवासियोंकी सेवा करनेके लिये मेरे मित्र बनोगे तो तुम्हारे धृष्टता-पूर्ण राजद्रोह, क्रूरतापूर्ण अपमान आदिको गाड़ दिया जायगा। यह करना तुम्हारे लिये कठिन होगा क्या ?

थेरप्स — ओ अभिजात देवी, आप दुष्कर्मोंके बदले कृपा दिखाती हैं ! मैं हमेशाके लिये आपका हूँ, मैं और यह सारी प्रजा।

सीरियस — (डायोमिडीसे)वक्ता होनेका यह लाभ है। अबकी हाटके दिन हम उसे राजाओंके प्रति वफादारी तथा रानियोंके कृपापात्र रखनेके दैवी अधिकार-के बारेमें चटपटा भाषण देते हुए सुनेंगे।

आयोलस — सीरियस, पुराने घूसखोर, तू अभीतक जिन्दा है ? पोसायडन तुझे भूल गया क्या ?

सीरियस — राजकुमार, मैं हाथ जोड़ता हूँ। मेरी पिछली मूर्खताओंकी याद मत दिलाइये। अब मैं साधु बन गया हूँ, अबसे कभी सत्ताधिकारियों तथा देवी-देवताओंके बारेमें भला-बुरा न बोलूँगा।

आयोलस — ओहो, तू सन्यासी हो गया क्या ? तब तो तुझे सोनेकी परवाह न होगी ? चलो, मुझे खुशी है, मेरी थैली हल्की होनेसे बच जायगी।

सीरियस — राजकुमार, मेरा तरुण वैराग्य आपको अपने पुराने वचन न तोड़ने देगा। क्योंकि पाप करना बुरा है किन्तु दूसरोंके पापका कारण बनना और भी बुरा है।

आयोलस — तुझे सोना और खेत मिलेंगे। मैं एण्ड्रोमीडाके और अपने वचनोंका पालन करूंगा।

सीरियस — महान् दानी प्लूटस देव ! ओ सुखी सीरियस !

आयोलस — महाजन टिरेनस, तुम केल्डिया जानेको तैयार हो।?

टिरेनस — पहले आपकी मुसीबतोंका सुखी अन्त देख लूँ और आपकी मधुर राजकन्या एण्ड्रोमीडा और अपने युवक उद्धारकका शुभ विवाह देख लूँ फिर चलूँगा।

आयोलस — मैं तुम्हें एक जहाज दूंगा और तुम्हारे नुकसानको पूरा करनेके लिये उसे सामानसे भर दूंगा।

परसियस — और हे केल्डियाके श्रेष्ठ वासी, साथ ही साथ हम तुम्हारे लिये प्रार्थना भी करेंगे। जगत्को तुम्हारे जैसे लोगोंकी जरूरत है।

स्मरडस — (स्वगत) मैं तो कांप रहा हूँ। वे मुझसे क्या कहेंगे ? मुझे दारुण दुख देंगे, मुझे सूलीपर चढ़ाया जायगा। किन्तु वह अपनी मुस्कानसे मुझे बचा लेगी।

आयोलस — क्यों स्मरडस, विश्वासघाती, गंदे, डरपोक !

स्मरडस — हाय हाय, मुझे यातनाओंकी धमकी देकर डराया गया था।

आयोलस — और सोनेके लिये ललचाया भी गया था। तुझे ऐसी सजा मिलेगी जो तेरे स्वभावपर चोट करे। किसान सीरियस !

सीरियस — राजकुमार प्लूटस !

आयोलस — इस आदमीको अपना गुलाम बना ले। यह मजबूत है। इससे अपने खेतों और बागोंमें काम करवाना।

स्मरडस — हाय हाय, यह तो सबसे बुरी बात है।

आयोलस — तू जिस दण्डके लायक है यह उससे कठोर नहीं है। तुझे सोनेका लोभ है न ? उसे दूसरेके लिये कमा। तू जान बचाना चाहता है न ? एक मुक्त-दासकी चल सम्पत्ति बन।

स्मरडस — अरे, मेरी ओरसे बोलिये न देवी एण्ड्रोमीडा !

एण्ड्रोमीडा — प्यारे आयोलस...

सीफियस — मेरी बेटी, तू साक्षात् दया है किन्तु न्यायका अपना स्थान है। असमयकी दया करके उसका संतुलन बार-बार हिला दिया जाय तो यह अपरिपक्व दुनिया बिगड़ जाती है। तेरा भाई मेरी ही आज्ञा घोषित कर रहा है।

आयोलस — जिसे तूने मौतके मुँहमें धकेला था उसीसे प्रार्थना करके तूने अपने अपराधको और भी बढ़ा लिया है। क्या तू निरा बेहया है? चुप भी रह!

एण्ड्रोमीडा — बहुत शोक मत करो। सीरियस तुमपर दया दिखायेगा। है न सीरियस?

सीरियस — आपका हुकुम हो तो यह भी करूंगा। और इस जैसेके साथ भी।

(बाहर शोर सुनायी देता है)

सीफियस — हमारे दरवाजेपर यह कौन-सी नयी आफत आ खड़ी हुई?

(पेरिसस अपना छुरा घुमाता आता है)

पेरिसस — बन्धु परसियस, अपनी तेज तलवार खींचो या फिर मुझे अपना छुरा चलाने दो।

सीफियस — कसाई, नाराज हो? तुम्हारे रोबदार धैर्यमें किसने विघ्न डाला?

पेरिसस — महाराज सीफियस, मैं नाराज न होऊंगा क्या? क्या आप फिरसे सीरियाके राजा नहीं हैं? और 'लम्बी नाक' महाराजके चरणोंको अपमानित कर सकेगी? क्या सूंड जैसी नाक आपकी महिमाको ठेस लगा सकती है? परसियस, तुमने उधर आदिम युगके दानवी मत्स्य-मकर की हत्या की है, अब मुझे इस नवीन मगरके टुकड़े करनेकी इजाजत दो।

परसियस — मेरे अच्छे पेरिसस, शांतिसे, स्पष्टतासे, इतने शब्दाडम्बरके बिना बोलो। महाराजको बतलाओ कि यह कैसा शोर है।

पेरिसस — मेरे राजा, टायराका फीनियस अपनी लंबी नाक आपके दरवाजेपर लेकर आया है और उसे आपके हुजूरमें लानेपर तुला है। उसकी शेखियोंने, महाराज, मेरे शांत विशाल हृदयको मथ डाला है।

सीफियस — वह अकेला है क्या?

पेरिसस — दामेतेज और अन्य बीसियों लोग उसकी नाककी दुमसे लटके हुए हैं किन्तु वें सब आलतू-फालतू लोग नीच हैं। एक भी प्रतिष्ठित कसाई नागरिक उस टोलीमें नहीं है। वे तलवारें घुमाते हैं, मुझे अपनी लोहेकी सीखोंसे छेड़ने-भेदनेकी धमकी दे रहे हैं — मुझे — पेरिससको, मेरे जैसे कसाईको!

सीफियस — हथियारोंसे लैस फीनियस! यह तूफानके बादकी उभार है।

परसियस — दोस्त, उस फीनिसियावासीको आने दो। (पेरिसस बाहर जाता है)

इस तरह हक्के-बक्के न हो। दल-बल सहित इस आदमीको संभालना मेरे लिये आसान होगा।

(एक भीड़के साथ नंगी तलवार लिये फीनियसका प्रवेश। टायरावाले नंगी तलवारें लिये आते हैं। दामेतेज, मोरस तथा अन्य व्यक्ति, सबसे पीछे पेरिससका प्रवेश)

सीफियस — टायरावासी, स्वागत है।

केसियोपिया — फीनियस, हमारे सामने सशस्त्र चले आये! कुछ पहले आते तो इन नंगी तलवारोंका स्वागत होता।

फीनियस — मैं स्वागतके लिये यहां नहीं आया, देवी। और महाराज सीफियस, क्या आप मेरा अधिकार मुझे देंगे या फिर मुझे तलवारके बल लेना होगा?

सीफियस — फीनियस, मैंने कभी किसी क्षुद्र-से-क्षुद्र मनुष्यको भी किसी ऐसी चीजसे वंचित नहीं किया जिसपर वह अपना अधिकार जता सके।

फीनियस — आपने ऐसा नहीं किया? तो आपकी सर्वांगसुन्दर पुत्री और मेरी वाग्दत्ताको इस आवारा यूनानीके हाथ किसने सौंप दिया?

केसियोपिया —टायरा नरेश, तुम्हारी गैरहाजिरीमें वह किसी संकटमें पड़ गयी थी।

फीनियस — एक घमंडी युवक, ख्यातिके लिये भटकता हुआ तलवारका धनी जो अपने-आपको डेनीका पुत्र बताता है और जिसके बापको शायद अंधेरी रात ही जानती हो — एक ऐसे व्यक्तिको आप एण्ड्रोमीडाका स्वामी बना रहे हैं, और वह भी प्राचीन टायराके समर्थ महाराजको दुत्कार कर।

सीफियस — हम तो उसे मौतके हवाले कर ही आये थे, इस युवकने ही उसे बचा लिया और अब वह उसकी है — वह चाहे तो उसकी वधूके रूपमें। जिस क्षण उसने अपनी तलवारके बलपर एण्ड्रोमीडाको क्रूर पोसायडनसे छुड़ाया है उसी क्षण-से वह उसकी है, वह जैसे चाहे, ले सकता है।

फीनियस — क्या उसके पराक्रम या आपकी लापरवाही, आपके दिये हुए वचनको रद्द कर सकती है?

आयोलस — महाराज फीनियस, क्या आप अपनी मरजीके मुताबिक उसे उठा और फेंक सकते हैं? अगर कोई रत्नको कीचड़में फेंक दे तो क्या वह शिकायत कर सकता है कि किसी औरने उसे उठा लिया?

प्रेक्सीला — और वह कभी इसकी थी ही नहीं। वह तो इससे नफरत करती थी।

फीनियस — मैं कोई कारण नहीं सुनूँगा, और उसे जबरदस्ती ले जाऊंगा। भले ही उसे प्रियजनोंके रक्तपरसे ही उठाना पड़े। टायरावासियो, सावधान!

(एण्ड्रोमीडा परसियसके आश्रयमें जाती है)

छोड़ दे, राजकुमारी, उस किशोर वक्षको छोड़ दे जहां तूने आसरा लिया है। एण्ड्रोमीडा, तूने अपने घरको समझनेमें गलती की है।

आयोलस — गलती तो तुम करते हो, फीनियस, जो उसे अपनी वधू समझ रहे हो। उसे छूना भी तुम्हारा सत्यनाश कर देगा। बस, यहांसे सही सलामत चले जाओ।

फीनियस — कुमार आयोलस, जिस तलवारने तुम्हारे साथ पोसायडनके अनुबन्धको काटा उससे मेरा अनुबन्ध नहीं कटता — उसे अस्वीकार करोगे तो तुम्हें और तुम्हारे पिताको कीमत चुकानी पड़ेगी।

परसियस — टायराके फीनियस, हो सकता है कि तुम्हारे साथ अन्याय हुआ हो, किन्तु तुम जिसे दोष दे रहे हो उसके हाथों नहीं। लड़कीके पिताने उसे मेरे सुपुर्द नहीं किया है।

फीनियस — तब उसकी मांने दिया होगा? मुझे लगता है सीरियाके राजपरिवारमें वही कर्ता-धर्ता है।

परसियस — मैंने उनसे भी लड़की नहीं मांगी।

फीनियस — तो क्या तुमने लड़कीसे ही प्रणय-प्रार्थना की है? अगर वह हजारों वार चूमकर हां करे तो भी तेरा कुछ नहीं बनेगा। सलोनी एण्ड्रोमीडा, क्या तू इस आवारेको अपना स्वामी बनायेगी? उसके साथ धरती और सागर पर भिखारीकी तरह भटकती फिरेगी? तेरे न चाहते हुए भी मैं तुझे इस सौन्दर्य और माधुर्यके अयोग्य उस भावीसे बचाऊंगा और तुझे टायरामें रानी बनाऊंगा। आरगीवके छोकरे, दूसरोंका माल हथियानेसे पहले मालसे नहीं मालिकसे पूछना सीख।

परसियस — मैंने उससे भी नहीं पूछा।

फीनियस — तो फिर गुस्ताख कहींके, तू किस अधिकारसे उसे अपने पास रख रहा है? वह इस तरह तेरी भुजाओंमें क्यों पड़ी है?

परसियस — अच्छा, यह बताइये महाराज फीनियस, कि आप किस बलबूतेपर उसे लेना चाहते हैं जब कि वह खुद और अन्य सब ना कर रहे हैं?

फीनियस — अपने पहलेके अनुबन्धके कारण।

परसियस — लेकिन तुमने तो उसे मौतके हाथों दे दिया था इसलिये तुम्हारा अनुबन्ध टूट चुका है। और अगर तुम अपना उपहार वापस लेना ही चाहते हो तो मौतके पास जाओ और उससे मांगो। वहांका रास्ता आसान है।

फीनियस — तब तो अपनी तलवारके बलपर, उससे या किसी औरसे पूछे बिना ही उसे ले लूँगा क्योंकि मैं राजा हूँ।

परसियस — अगर तलवारका ही न्याय हो तो टायरावासी, मैंने उसे अपनी तलवार-के बलपर लिया है। मैंने न उससे पूछा न किसी औरसे। मैं ही उसका राजा और उसका सम्राट हूँ। यह सुकुमार सुवर्ण मेरा है और उसके रुपहले किनारे भी मेरे हैं। यह समृद्ध देश मेरी संपत्ति है और वह मेरी मजबूत भुजाओंको कर-स्वरूप अपने माधुर्यका मधु देता है। फीनियस, मुझे आश्चर्य नहीं कि तू उसके लिये लालायित हो रहा है जिसे सारी दुनिया लेना चाहेगी। फीनि-शियावासी, ले उसे मुझसे छीन ले। वह अपने पिताके अधिकारमें नहीं है। (अपना थैला खोलते हुए) महाराज फीनियस, तैयार हो? फिरसे एक बार सीरियाकी हरी-भरी धरतीको देख लो, इस नीले आकाशको निहार लो।

फीनियस — युवक, तुमने जो पराक्रम किये हैं, मैं उनका महत्व नहीं घटाता फिर भी जिन्हें तूने वश किया था उनमें एक समुद्री-दानव मात्र था, दूसरी हेय लोगों-की टोली। जब कि मैं एक राजकुमार और वीर योद्धा हूँ। क्या मुझे भी अपनी ढालसे डरायेगा?

परसियस — डराऊंगा नहीं खतम कर दूंगा क्योंकि तूने मौतकी सजा पाने योग्य शब्द कहे हैं। चल, खुले आंगनमें चल। यह लड़ाईका स्थान नहीं है। अपने युद्ध-प्रिय सैनिकोंको मेरे विरुद्ध झोंक दे और सीरियाकी भीड़ भी उन्हें चीख-पुकार कर बढ़ावा देती रहे। तू उनका नेतृत्व करनेके लिये आगे रहना। मैं अकेला ही उनकी लगातार चोटोंका सामना करूंगा। डेरसिटस, हमें बस देखता रहेगा।

फीनियस — पिछली विजयोंसे तुम्हारा सिर फूलकर कुप्पा हो गया आरगीववासी, बाज आ, मैं तेरी मांके एकमात्र आनन्दको नहीं लूटना चाहता, उसने तुझे चाहे जैसे पाया हो। जिन देवोंके सिर उसकी प्यारी चालाकी मढ़ी गयी है वे ही उसे निबिड़ रात्रिकी मधुर भूलके लिये दंड दे सकते हैं।

परसियस — अच्छा चलो। मैं कहीं तुम्हें यहीं न मार डालूँ।

फीनियस — तुम्हें मौतसे प्रेम हो गया है किन्तु मैं दयामय हूँ, युवक परसियस, तुम मरोगे नहीं। मेरे आदमी तुम्हें जिन्दा पकड़ लेंगे। और ठेलेवाले टायरामें गुलामकी तरह बेचेंगे जहां कभी-कभार तू दूरसे राष्ट्रोंकी रानी एण्ड्रोमीडा-को देख सकेगा।

परसियस — अरे करुणामय पुरुष! किन्तु हे वीर, मैं तुझे मौत दूंगा और पत्थर-का स्मारक बना दूंगा जिसके तू योग्य है। क्योंकि तू जब जिन्दा था तो एक

महान् राजा और विख्यात योद्धा था। बाहर आ और लड़ और आ सके तो बादमें एण्ड्रोमीडाको लेने आना। तब तेरे कब्जा करनेमें कोई बाधा न देगा। कप्तान, मेरे पीछे रहो ताकि इस भीड़मेंसे कोई विश्वासघाती हमला करनेको न ललचाय।

(टायरावासियों, दामेतेज और सीरियाके अन्य नागरिकोंके साथ जो उसे पसन्द करते हैं फीनियस बाहर जाता है। उनके पीछे परसियस और डेरसिटस। उनसे काफी दूर सीरियस)

सीफियस — मेरी सूर्यकिरण, मुझे डर लग रहा है।

एण्ड्रोमीडा — लेकिन मुझे नहीं, पिताजी।

सीफियस — इतनोंके सामने अकेला!

आयोलस — पिताजी, मैं जाऊं, जरूरत हुई तो कूद पड़ूँगा।

सीफियस — कहीं वह नाराज न हो जाय। आह, सुनो,! फीनियसकी आवाज है।

आयोलस — वह सविश्वास कोई हुकुम दे रहा है।

सीफियस — टायरावाले धावा बोल रहे हैं। बस, उसकी शामत आ गयी।

(एक क्षण चुप्पी, सब सुननेकी चेष्टा करते हैं)

आयोलस — आवाजें बन्द हो गयीं। अचानक सन्नाटा छा गया।

सीफियस — इसका क्या मतलब होगा? यह सन्नाटा तो बड़ा भयावना है।

(डेरसिटस वापस आता है)

सीफियस — क्यों क्या खबर है? कप्तान, तुम कैसे सोतेसे चल रहे हो?

डेरसिटस — महाराज, आपका आंगन स्मारकोंसे भर गया है।

सीफियस — क्या मतलब? क्या हुआ? परसियस कहां है?

डेरसिटस — महाराज, फीनियसने अपने आदमियोंको हुकुम दिया कि वे उस यूनानीको जिन्दा पकड़ लें किन्तु जैसे ही उन्होंने हमला किया कि वीर परसियस चिल्लाये 'डेरसिटस', अगर जीना चाहो तो आंखें बन्द कर लो। और मैंने आज्ञा मान ली। फिर भी मैंने देखा कि अपने कमरबन्दमें लटकते थैलेमेंसे उन्होंने सांप जैसी कोई चीज निकाली। मैं अन्धा बना प्रतीक्षा करता रहा और निकट आते हमलेका शोर सुनता रहा। अचानक हमला रुक गया, आवाजें गूँगी हो गयीं और घोर निस्तब्धता छा गयी। आश्चर्यके मारे मैं कुछ ही क्षण गुमसुम रहा। फिर मैंने पलकें खोलीं तो देखा कि आंगन पथराये हुए या पथराते हुए द्रुतगामी आक्रामक वीरोंसे भरा था। वे हमलेके अभिनयमें तलवार उठाये, ढाल आगे किये, घुटना मोड़े, कदम उठाये हुए ही पथरा गये थे। एक जीता-

जागता मौन था। जिन्दगी पत्थर बन गयी थी। सिर्फ वह देवतुल्य विजेता ही जीवित था, उसके होठोंपर मुस्कान थी और वह थैलेका मुँह बन्द कर रहा था। मैं भयभीत होकर वहांसे चुपचाप चला आया।

सीफियस — सैनिक, वह कोई देव है या देव-गण उसके साथ-साथ चलते हैं। मुझे उसके पैरोंकी आहट सुनायी देती है। परसियस ! तुम्हारी जय हो।

(परसियस वापस आता है। पीछे-पीछे सीरियस है)

परसियस — महाराज, सब टायरावासी मर चुके। आपको उन्हें न जलाना पड़ेगा और न कब्रें खोदनी वड़ेंगी। अगर कोई पूछे कि सीरियाके राजमहलके आंगनमें इतनी संपूर्ण सुन्दर मूर्तियां किस शिल्पीने तराशीं तो कहना "एथिनीने, ओलिम्पियाके देवराजकी सर्वसामर्थ्यवान् संतानने परसियसके हाथसे एक दिव्य और लापरवाह वारमें इन मूर्तियोंको तराशा था" उन्हें ही यश देना।

सीफियस — ओ भयंकर विजेता ! मैं नहीं जानता कि क्या कहूँ और कैसे तुम्हारा गुणगान करूं।

परसियस — महाराज, कुछ मत कहिये। नीरवतामें देवोंका गुणगान कीजिये। मित्रों, इससे घबराइये मत। ऐसे चलते जाइये मानों कोई विघ्नवाधा आयी ही न हो।

सीरियस — अरे जीयस, मैं समझता था कि तुम सिर्फ पंखों और फोस्फरससे ही जादू कर सकते हो। देखता हूँ कि तुमने तो बाबुल और मिडासको भी जादूसे झुर्रियां दे डाली हैं (अपने-आपको हिलाते हुए) मुझे अभीतक विश्वास नहीं हो रहा कि मैं भी एक मूर्ति नहीं हूँ। उफ ! यह पथरीला जादू था।

पेरिसस — (जो बाहर जाकर वापस आता है) दोस्त परसियस, यह तुमने क्या कर डाला ? तुमने उसकी लम्बी नाकको हमेशाके लिये पत्थरमें अमर कर दिया। आनेवाली पीढ़ीके लिये यह बड़े अफसोसकी बात है। अपने पीछे ऐसे निराशजनक शिलीभूतका स्मारक छोड़नेका तुम्हें कोई अधिकार न था।

सीफियस — वीर परसियसके साथ मधुर युवती और सूर्य-नेत्री एण्ड्रोमीडाके विवाहकी तैयारीके सिवा कौनसा काम बाकी रह गया है ?

परसियस — महाराज, तो फिर जल्दी कीजिये ताकि मैं नील सागरसे घिरे अपने सेरिफसमें जल्दी पहुँच सकूँ जहां मेरी मां प्रतीक्षा कर रही है और अधिक साहसपूर्ण कार्य मुझे पुकार रहे हैं।

केसियोपिया — लेकिन परसियस, तुम्हारा मन मान जाय तो हमें तीन महीनेके के लिये अपना और मेरी प्यारी बच्चीका सहवास दो, पीछे चले जाना।

परसियस — जैसी आपकी इच्छा।

एण्ड्रोमीडा — परसियस, तुम देते ही रहते हो, कभी मांगते नहीं। मुझे अपने लिये कुछ मांगने दो।

परसियस — एण्ड्रोमीडा, मांग और ले ले।

एण्ड्रोमीडा — तब मेरी यह मांग है कि तुम्हारे पराक्रम सीरियामें अपने सुनहरे पद-चिह्न छोड़ जायं और उसकी अंधेरी वेदीपर बलियोंका रक्तपात न हो। उसकी जगह सारे प्रदेशमें और मनुष्योंके हृदयमें एथिनीका नाम छा जाय। तब शांत और सामर्थ्यशाली संकल्प-शक्तिकी विजय होगी और विशालतर मानस और सौम्यतर विवेकका राज्य चल सकेगा। मानव अधिक मानवीय, कोमल तथा करुणामय बनेगा।

परसियस — महाराज सीफियस, आपने सुना? क्या यह दिया जाय?

सीफियस — वीर, तुम तो हमारी दुनियाको हमारे लिये बदलने आये हो। तुम घोषणा करो, मैं सम्मति देता हूँ।

परसियस — तब धरतीकी छातीसे सूर्यके प्रकाशकी ओर निहारते इस देवालयसे रक्तकी लाल स्मृति धो दी जाय। और उसके गर्भगृहमें जो भयानक रूप रहता है वह तेजस्वी करुणामय देवमें बदल जाय जिसका सामर्थ्य सागरमें डूबते मनुष्यों-की मदद करेगा। वह नौकाध्वंसमेंजकड़े नाविकोंकी सहायता करेगा। नीलाकाशसे ढकी आपकी इन पहाड़ियों और विशाल सागरके बीच जीयस और महान् एथिनीके मानमें एक मंदिर बने जो प्रजाके लिये पूजाका भव्य स्थान हो। उनका सामर्थ्य आपके जीवनकी रक्षा करेगा और देशको बचायेगा। उनकी दिव्यताकी मानवमूर्ति, विवेक-बुद्धिका प्रकाश, दिव्य शांत शक्ति और जीवनमें दृढ़ दूरदर्शी शासन, व्यवस्था-शक्ति, सौंदर्यबोध, सामंजस्यपूर्ण विचार-धारा तथा आवेगोंपर शासन करती ऊंचे सिंहासनपर विराजती इच्छा-शक्ति, इन सबको संगमरमरमें एकत्रित कर दो। एक उन्नत नवीन प्रजाके श्वेत आदर्शको तराश कर रूप दो। क्योंकि ये सब देवी एथिनीके उपहार हैं जो वे अपने पुजारियोंको देती हैं। पूजा करो और जिसकी पूजा करते हो उस जैसा बननेकी कोशिश करो।

सीफियस — जो उग्र सत्ता यहां पहले थी वह यह सब होने देगी?

परसियस — पोसायडनसे मत डरो। वह शक्तिशाली देव मुक्त हो चुका है। उसने अपने अंधकारसे अपने-आपको खींच लिया है और अब ओलिम्पिककी चोटी-पर अपने नये महत् स्वरूपमें विराजमान है।

केसियोपिया — अमर देवगण और प्रकृति कैसे बदल सकते हैं ?

परसियस — एक-सी लगनेवाली दुनियामें सब कुछ बदलता रहता है। मनुष्यको सबसे अधिक बदलना चाहिये। वह समयकी आत्मा है। उसके देवता भी बदलते हैं और विशालतर ज्योतिमें रहते हैं।

सीफियस — तो मनुष्य भी ज्यादा ऊंचाईपर उठ सकेगा ? उसकी सत्ता देवोंके ज्यादा निकट जा सकेगी ?

परसियस — शायद

अध:लोककी अन्ध शक्तियाँ
अब भी किन्तु प्रबल हैं।
आरोहणकी गति धीमी है,
लंबा बहुत समय है।
तब भी सत्य उठेगा ऊपर,
तब भी शांति बढ़ेगी,
आयेगा वह दिन जन-जन
हिलमिल जब एक बनेंगे।
इसीलिये तो एक कदम
बढ़ना भी बड़ी विजय है।
जरा-जरा कर दिव की ओर
महीको मुड़ना होगा।
धूमिल आत्मा एक रोज
ज्योतिर्जग में जागेगी।

परिशिष्ट

(पुस्तकमें आये हुए यूनानी नामोंका परिचय)

पोसायडन — एक देवता जो जीयसका भाई था। इसका राज्य समुद्र और महासागरोंतक फैला हुआ था। यह अक्सर अपनी शक्तिसे ऐसी भयंकर और भीमकाय लहरें उठाता था जो सारी पृथ्वीको डुला देती थीं। नाविक और समुद्र-तटपर बसनेवाले डरके मारे इसकी पूजा करते थे क्योंकि वे इसकी शक्ति व कठोर दण्डसे भली-भांति परिचित थे। इस खूनके प्यासे देवताको प्रसन्न करनेके लिये भूमध्य सागरके आसपासके देश उसके मन्दिरमें नरबलि देते थे। प्रत्येक देशमें पोसायडनका अलग-अलग नाम था।

गोरगन मेडुसा — ये तीन गोरगन दानव थे जिनमेंसे एक नश्वर था और उसका नाम था मेडुसा। इनका स्त्रियोंका शरीर था, सिरपर बालोंके स्थानपर डरावने सांप थे, डरावना मुँह था जिसमें से जंगली सूअरकेसे दांत चमकते थे। जब किसी व्यक्तिकी ओर देखते थे तो वह पत्थरकी मूर्ति बन जाता था। इनके कंधे और टखनोंपर पंख थे जिनकी सहायतासे ये उड़ते थे। ये रहते थे पृथ्वीके अंतिम छोरके बर्फीले उत्तर प्रदेशमें । देवताओंकी सहायतासे मेडुसाको मारनेके लिये उसे ढूँढ़ता हुआ परसियस वहीं जा पहुँचा और सोती हुई मेडूसापर हमला किया और उसका सिर काटकर ले गया।

आरगस — इसके दादाका नाम भी आरगस ही था। कहते हैं कि इसके चार आंखें थीं, दो सामने और दो पीछे, एक दूसरी मान्यता यह भी है कि इसके सारे शरीरपर आंखें थीं, इसी कारण कोई चीज इससे छिपी नहीं रहती थी।

एथिनी — जीयसकी मानस पुत्री है। जब जीयसने अपनी पत्नीको निगला था तब वह गर्भवती थी। निगलनेके कुछ समय पश्चात् जीयसके सिरमें असह्य पीड़ा आरम्भ हुई। पीड़ा शांत करनेके लिये हिफैस्टसने तांबेकी कुल्हाड़ीसे जीयसका सिर चीरा। उस छिद्रमेंसे विजयोल्लास करते हुए सशस्त्र एथिनी प्रकट हुई। ये बुद्धि और ज्ञानकी देवी हैं। स्वयं वीरोंकी देवी हैं और उन वीर पुरुषोंकी रक्षा करती हैं जो मानव जातिके भलाईके लिये लड़ते हैं। ज्ञानका प्रतीक

उल्लू इनका प्रिय पक्षी है।

रोडिया — एक द्वीप जो अपने प्राकृतिक वैभव और भूतत्त्वीय महत्त्वके लिये प्रसिद्ध है। यह अपनी चित्रकलाके लिये भी मशहूर है। इसके नमूने हम गुलस्तों व अन्य पात्रोंपर देखते हैं।

एचियन — यूनानियोंका ही यह दूसरा नाम है। ईसामसीहके जन्मसे पहले २० वीं शताब्दीमें ग्रीसपर जिन्होंने पांच लगातार आक्रमण किये और फिर वहीं बस गये उन्हें एचियन कहते हैं। इन्होंने ग्रीसका दक्षिणी भाग हथियाया था।

ओलिम्पस — उस स्थानका नाम है जहां बहुतसे ऊंचे-ऊंचे पर्वत फैले हुए हैं उनमें-से मुख्य पर्वतका नाम ओलिम्पस ही है। यह 9570 फुट ऊंचा है। कहते हैं कि एक रहस्यमय बादलका जो टुकड़ा इसकी चोटीपर दिखायी देता है वही देवता-ओंका निवास-स्थान है। जिस प्रकार भारतमें हिमालयकी चोटीको स्वर्ग और देवताओंका निवास-स्थान माना जाता है उसी प्रकार यूरोपमें ओलिम्पस-की चोटीपर उनके देवोंकर स्वर्ग-निवास स्थान माना जाता है।

ग्रेई —— तीन बुढ्ढी डायनें जिनके पास सिर्फ एक ही दांत व एक ही आंख थी। बारी-बारीसे ये उसका उपयोग करती थीं। ये भूत और भविष्य भी देखती थीं। उनकी आंख व दांत चुराकर ही परसियसने मेडूसाका निवास-स्थान बतानेके लिये इन्हें विवश किया था।

हरमिस — जीयसके पुत्रोंमेंसे एक जो पंखदार जूते और अदृश्य होनेके लिये पंखदार टोपी पहनता था।

हरक्यूलिस — शारीरिक बलका देव।

सिबिल — उन्मत्त प्रकृति और जंगली जानवरोंकी देवी।

एटलांटिस — एक प्राचीन महाद्वीप जो अब सागरमें डूब चुका है।

लमुरिया — एक प्रदेश।

आयोन — एक देश।

नोसस — एक प्रदेश।

कोस — एक प्रदेश।

यूफेटिस — एक नदी जिसे दजला भी कहते हैं।

साइक्लेडीस — द्वीपोंका एक समूह।

हिट्टीट — सीरियापर विजय पानेवाली एक विदेशी जाति।

एटलास — एटलासने जीयसका विरोध किया। फलस्वरूप जीयसने उसे आकाश-को अपने सिर व हाथोंपर उठाये रखनेकी सजा दी। फिर जब परसियस उस

तरफसे गुजर रहे थे तो एटलासने उन्हें जानेसे रोका। इसलिये परसियसने उन्हें पर्वतमें बदल दिया।

पार्थियन —— पार्थियाकी एक पुरानी जाति जिसकी युद्धकलामें यह विशेषता थी कि वह घोड़ेपर भागते-भागते भी दुश्मनको तीरसे भेदती जाती थी।

प्लूटस —— यूनानी लोकगाथामें धनका देव।



वासवदत्ता



नाटक के पात्र

वत्स उदयन — कौशाम्बीका राजा।

यौगन्धरायण — वत्सके मंत्री, अभी हालतक कौशाम्बीके राज-प्रतिनिधि।

रूमण्वान — वत्सकी सेनाओंका नायक।

अलर्क
वसन्त — वत्सकी उमरके जवान लड़के, उसके मित्र और साथी।

राजाका द्वारपाल।

चंडमहासेन — अवन्तीका राजा।

गोपालक
विकर्ण — चंडमहासेनके बेटे।

रेभ — अवन्तीकी राजधानी उज्जैनी का शासक।

अवन्तीका एक सेना नायक।

एक सेवक।

पर्णक — उदयनके महलका एक सेवक।

अंगारिका — अवन्तीकी महारानी।

वासवदत्ता — चंडमहासेन और अंगारिकाकी बेटी।

अम्बा — वासवदत्ताकी दासी।

मंजुलिका — बंधुमतीका नया नाम, सौराष्ट्रकी राजकुमारी, अब वासवदत्ताकी सेविका।

वासवदत्ता

वासवदत्ता : मानव नहीं थी, शापके कारण मनुष्य रूपमें पृथ्वीपर अवतीर्ण हुई थी। जब वासवदत्ताके पृथ्वीपर आनेकी तैयारी हो रही थी तो एक बार इन्द्रने स्वप्नमें चण्डमहासेनसे कहा था —— "मेरी कृपासे तुम्हें एक अपूर्व कन्या प्राप्त होगी।" इसीलिये उसका नाम रखा था वासवदत्ता यानी इन्द्र द्वारा दी गयी।

वत्स उदयन : कथा सरित्सागरके अनुसार जब उदयनका जन्म हुआ था तभी आकाशवाणी हुई थी कि "उदयन नामका यह यशस्वी राजा उत्पन्न हुआ है। यह बालक समस्त विद्याधरोंका राजा होगा।"

उदयनकी माँने अपने पति राजा सहस्रानीकके नामसे अंकित कंकण इसे पहनाया। एक दिन आखेटके समय इसे एक सपेरा दिखाई दिया जो एक साँप को वशमें करनेकी कोशिश कर रहा था। द्रवित होकर उदयनने सपेरेको अपना स्वर्ण कंकण देकर उस सांपको मुक्त कर दिया। जाते समय उस सांप —— वासुकी के बड़े भाई वसुनेमिने प्रसन्न होकर उदयनको घोषवती वीणा, कभी न कुम्हलानेवाली माला और तिलक युक्तिके साथ कभी न सूखनेवाली पानकी लता दी।

अंगारवती : चण्डमहासेनकी पत्नी। अंगारवती अंगारकासुर दैत्यकी बेटी थी। एक बार जब चण्डमहासेन आखेटके लिये गये हुए थे तो अंगारकासुर शूकरका रूप धारण कर छल-कपटसे राजाको अपनी गुफामें ले आया। राजाने यहां अंगारवतीको देखा और चालाकीसे अजित अंगारकासुरका मर्मस्थान जानकर उसकी बाई हथेलीपर तीर चलाकर उसे मार डाला और अंगारवतीसे विवाह किया।

दैत्यकी बेटी और जन्मसे गुफामें रहनेके कारण ही अंगारवती अंधकारमें रहनेकी आदी थी।

चण्डमहासेन : ने कालीकी उग्र तपस्या की थी। कालीने प्रसन्न होकर इसे एक अस्त्र दिया था और कहा था कि तुम अपनी प्रचण्ड तपस्याके कारण चण्डमहासेन कहलाओगे।

लेखककी ओरसे

महाभारतके युद्धके एक शताब्दी बाद यह रूपक-कथा घटित होती है। अब क़ौशाम्बी राजधानी हो गयी है। साम्राज्य कुछ समयके लिये तो टूट ही गया है। अब भारतके राज्योंपर मुख्यरूपसे तीन महाशक्तियां छाई हुई हैं: पूर्वमें मगध, जिसका शासक प्रद्योत है, पश्चिममें अवन्तीका राजा चण्डमहासेन जिसने अब दक्षिण-के राजाओंको भी दबा लिया है; और बीचमें कौशाम्बी — जहां यौगन्धरायण सैन्य-शक्ति और नीतिसे परीक्षित-कुलके राज्यको बनाये रखनेके प्रयासमें है। अजेय चण्डमहासेनने, जबसे युवक वत्सके हाथमें राज्यकी बागडोर आई है, युद्धके उल्टे पांसोंका कटु अनुभव किया है, हालांकि यह है अनिश्चित। इस समय दोनों साम्राज्योंके बीच सशस्त्र शान्ति है।

इस नाटककी कहानी सोमदेवके 'कथासरित्सागर'से ली गयी है। भारतीय रोमांस और नाटककी यह कथा-वस्तु शुरूसे ही प्रिय रही है। लेकिन यहां कुछ परिस्थितियां, कुछ घटनाएं और कुछ नाम बदल या छोड़ दिये गये हैं और उनके स्थान-पर नये लिये गये हैं। मूल कहानीमें राष्ट्रका नाम वत्स था लेकिन यहां, नाटकमें, उदयनका ही नाम वत्स रखा है।

अंक १

दृश्य १

अवन्तीके राजप्रासादका एक कक्ष

चण्डमहासेन बैठे हैं, गोपालक उपस्थित है

महासेन — वत्स उदयन मेरे भाग्यको पीछे ठेले जा रहा है। एक महाबली लड़के-के आगे हमारी सारी शक्तियां पराजित होकर लौट आती हैं।

गोपालक — मैंने उसे युद्ध करते देखा है और आश्चर्य करनेके लिये जीवित हूँ। युद्ध-पथपर उसके चरण ऐसे विचरते हैं मानों द्रुत तालमें नाचनेवाली, लापरवाह लालित्यमें अपने कौशलको समेटे हुए, हंसमुख, उल्लासभरी बालाके दो पैर हों।

महासेन — अगर यह उषा हमारे द्वारोंपर अमंगल प्रभात लायी तो हमारे सूर्योंका अंत समझो। फिर भी मेरे सपने महान् थे। अवध और कौशाम्बी मेरे ऊंचे आभूषित द्वार थे, गंगा, गोदावरी और नर्मदा शेर-सी छलांगें भरती हुई, अपने पवित्र नीहार-कणोंसे मेरी विहार भूमिकी ज्योत्स्नामें चमकती मालती लताओंपर फुहार करती थीं। मेरी भू-छायामें यह महान् सूर्य-आलोकित भूखण्ड शांतिमें सोता था। किन्तु वे सब स्वप्न थे।

गोपालक — उन्हें साकार करनेके लिये क्या आप काफी महान् नहीं हैं?

महासेन — ओ मेरे पुत्र, धरतीपर कोई महान् कार्य हो उससे पहले अनेक उच्चाशय हृदयोंको प्रयास करना पड़ता है। कौन यह कहनेका साहस करेगा कि वही प्रयासमें सफल होगा? हमारा युग स्वप्न देखता है और दूसरा युग उसे जीता है।

गोपालक — उन पहाड़ियोंकी ओर देखिये जहां रुद्र अपने भयंकर त्रिशूलको पूर्व-की ओर ताने खड़े हैं। देवोंके बिखराये हुए विघ्नोंसे न डरिये। एक पराक्रमी भला अपनी आत्माका निरोध क्यों करे! तात, दानवी गतिसे विजयके लिये हाथ बढ़ाओ, और कुचल देनेके लिये पांव आगे करो।

महासेन — तू उड़ता तो बहुत ऊंचा है, लेकिन आंधीकी ओरसे आंखें बन्द किये हुए।

गोपालक — तो क्या आप दुश्मनसे इस अहंकारभरे कलहको बन्द करनेके लिये अनु-नय-विनय करेंगे ?

महासेन — ऐसा दृश्य कभी नहीं देखोगे। इस लड़केको तो गिरना ही होगा।

गोपालक — वह युवक, अभिजात, सुन्दर और साहसी है किन्तु उसे गिरने दो। हम पराजय कभी न मानेंगे।

महासेन — मेरे बेटे, लेकिन उसका पतन होगा कैसे ? यह ठीक है कि स्वर्गमें भी पूजित रुद्रदेव मेरे उग्र और ऊर्ध्व-द्रष्टा भाग्यकी रक्षा करते हैं, लेकिन उसके जन्मके समय भी तो अनेक देव स्मित बिखेरते खड़े थे। शुभ दिनोंको लिये हुए देवी लक्ष्मी आगे आयी थीं; स्वर्गसे भगवान् विष्णुने उल्लासभरे आशीर्वादोंकी वर्षा की थी और सारी धरतीपर पग फैलानेकी स्वीकृति दी थी और मनोहारिणी सरस्वतीने अपनी कोमल, कलाओंको उसके हाथमें सौंप दिया था।

गोपालक — उग्र तपोमय देव ही सबसे अच्छी सहायता करते हैं, आनन्द मग्न देवता नहीं। उसके अन्दर निहित गौरव पौरुषको न प्राप्त कर सकेगा। परिश्रमसे मुक्त और ऊंची चढ़ाइयोंपर सहारा पानेवाले चमकीले पंखवाले पक्षी धरती-के निकट ही उड़ते रहते हैं। बस विस्मरणशील उड़ानें ही उनके उदात्त क्षण हैं। मदिरा, गीत और नृत्यके पंखोंपर उसके शांत दिन उसकी आत्माको घेरे रहते हैं। उसे महानता प्राप्त करनेके लिये भव्य अवकाश ही कहां ?

महासेन — इसीमें तो हमारी आशाका निवास है। मेरे बेटे, बैरीके मनोभावोंका, उसके धनबल और जनबलका पता करो। तेरी आंखें उसकी दुर्बलताको खोज निकालें और तेरे हाथ वहींपर प्रहार करें।

गोपालक — प्रहार करनेका उपाय है आपके पास ?

महासेन — है तो मेरे पास पर युद्धकी रणभेरी-सा उदात्त नहीं।

गोपालक — वही सही, हम सीधे अपने उद्देश्यकी ओर कदम बढ़ाये चलें।

महासेन — तेरे बाहुबलकी आवश्यकता है।

गोपालक — वह आपहीकी सेवाके लिये है।

महासेन — कोई जबरदस्त युक्ति निकालो और उसे बन्दी बनाकर उज्जैनीके सुवर्ण उपवनमें ले आओ। क्या वहां उसे अपने हृदयको कैद करनेवाली न मिल सकेगी जो उसके हृदयकी चाबियोंके जादूको अपनी चुनरीके आंचलमें बांध लेगी। तब वह उसका बन्दी बनकर आनन्दकी कैदमें रहेगा, उसका और हमारा गुलाम बनकर।

गोपालक — गरुड़के नीड़में वह गरुड़ शावकके लिये लाया जायगा ? आप वासवदत्ताके हृदयके शिकारको उसके हाथोंमें सौंप देंगे ? महाराज, आपका उपाय अच्छा है। एक सोते हुए युवा अजगरपर स्वर्गसे झपटते हुए गरुड़की नाईंमैं उसे असहाय ही उठा लूँगा और अपने गगनचुंबी शिखरोंमें उड़ा लाऊंगा। उपाय नवीन, विचित्र तथा सूक्ष्म है, फिर भी है अच्छा। बस समझ लीजिये कि प्रहार हो चुका और आपका वैरी पकड़कर बांध लिया गया।

महासेन — मैं तेरी तेजी और संयोजित छलांगको जानता हूँ वह एक बार यहांतक आ जाय तो उसकी इंद्रियोंको हर सुन्दर वस्तुके संस्पर्शका अनुरक्त गुलाम ही समझो। तब वह वीर नहीं अपितु एक खेलती हुई सुकुमार आत्मा होगी, भावुक नेत्रोंवाला, हंसता खेलता विलासी युवक जिसे सभी मधुर स्वर और सारे मधुर दृश्य निश्चिन्त हर्षोन्मादके लिये बाधित करेंगे। मदिरा, संगीत, पुष्प और एक रमणीका उषासा स्मित उसे चारों ओरसे वासन्तक सुकुमारताकी जंजीरोंमें जकड़ देगा। वे जंजीरें कठोर जंजीरोंसे भी कहीं अधिक मजबूत होंगी। दो अधर उसके सामर्थ्यपर मुहर लगा देंगे, दो नेत्र उसके सभी क्रिया कलापोंपर ग्रह दशा लगाये रहेंगे।

गोपालक — मैं आपसे एक, सिर्फ एक मदद चाहता हूँ। राजन् अपने राज्यसे मुझे देश निकाला दे दीजिये।

महासेन — गोपालक, मैं तुझे देशसे निर्वासित करता हूँ। जा मेरे बेटे, मेरी उद्दाम इच्छाका पालन किये बिना वापस न लौटना।

दृश्य २

कौशाम्बीके राजमहलका एक महाकक्ष

यौगन्धरायण और रूमण्वान

यौगन्धरायण — मैं उसके सामर्थ्यको फूलोंसे ढका हुआ निद्रामग्न देख रहा हूँ। उसकी इस अल्पायुमें भी एक महानता छिपी है।

रूमण्वान — ऐसी बड़ी-बड़ी आशाओंको न पोसो।

यौगन्धरायण — मैं भली भांति जानता हूँ कि ये जवान उर्वरा धरतियां अपनी शस्य श्यामलतामें लहराते विषको पोसती हैं, और अंधेरेमें छिपे मधुर विषैले सर्पको

रोकनेके लिये मेरी सारी चिंता सतर्क रहती है। घनी हरियालीमें खतरनाक वासना अपने फनपर प्रेमकी मणि रखकर लहराती है। उसे अपने ही सिरसे मंत्रमुग्ध करके, पकड़कर एक ऊष्मावान महान् देवमें बदलना होगा। मैं वत्सके लिये एक वधू ढूँढ़ता हूँ।

रूमण्वान — सूझ-बूझकी बात है; किसे ?

यौगन्धरायण — एक ही लड़की अपने सौन्दर्यमें इतनी संपूर्ण है, बस वही उसकी चेतनाको इधर-उधर भटकनेसे रोक सकती है। प्रतिमा और सौन्दर्यके लिये विख्यात बालिका; एक उग्र लौह स्कन्धपर जादुई भाग्यके उगी हुई पुष्प-कली।

रूमण्वान — वासवदत्ता, अपनी अवन्तीकी कुन्दन-सी राजकन्या! इन विपरीत देवोंके गठ-बन्धनकी आशा न करो, प्रकृतिकी प्रेरणाको अपनाओ, उसके सीधे-सादे उद्देश्यको अपनी मानव नीतिसे विकृत न करो।

यौगन्धरायण — प्रकृतिको कला और विज्ञानसे पुष्पित पल्लवित होना चाहिये अन्यथा हम मनुष्य ही क्या हुए ? प्रकृतिमेंसे मानव भगवान्‌की जटिलताओं-की ओर जागृत होता है; उसके अनगढ़ सीधे-सादे तत्त्वको लेकर अपनी दक्षता-से असंभव चीजोंको दैनिक चमत्कारोंमें बदल देता है।

रूमण्वान — यह बात कठिन है और फिर फायदा भी क्या इसका ?

यौगन्धरायण — उससे हमें प्रगतिके लिये सूर्य-आलोकित लंबा मार्ग मिल जाता है। क्योंकि उस लड़कीके रूपमें हम पश्चिमके वज्रसम विजयीके सामने एक सु-कुमार ढाल खड़ी करेंगे। पिताका हृदय हमारा भारी कवच बनेगा और उस भयंकर मानवके राजसी मस्तिष्कको रोके रखेगा। और जब वह चला जायगा तो हम उसके दैत्याकार वीर पुत्रोंके होते हुए भी उसकी महानताके उत्तराधि-कारी होंगे।

रूमण्वान — इसपर राजी होनेके लिये उन्हें अपने दर्पपूर्ण स्वभावसे बहुत नीचे उतरना पड़ेगा।

यौगन्धरायण — बस और एक जबरदस्त पराजय हो जाय और उसे हमारी ही समझो।

रूमण्वान — तो फिर युद्धका शंख फूँक दो।

यौगन्धरायण — मैं अवसरकी तथा देवोंकी प्रेरणाकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

(प्रवेश करते हुए वत्ससे)

मेरे पुत्र, हवाखोरीसे बड़ी जल्दी लौट आये!

वत्स — उषाने अपना सारा ऐश्वर्य लुटा दिया है और मैं अलर्क और वसन्तको खोज रहा हूँ ताकि मध्याह्नके स्वर्णिम मौनके आगमन तक वीणावादन, कविता पाठ

तथा गीतोंका क्रम चल सके। देखिये, यह विचित्र पुष्प देखिये, जो मैंने सरिता-के नीचेकी ओरसे चुना है। इसकी हर पखुँड़ी एक विचार है।

यौगन्धरायण — और कौशाम्बी नरेश, राज्यकी चिन्ताएं ?

वत्स — मेरे ज्ञानी मानसिक पिता, क्या वे सब आपके लिये नहीं है ? मुझे झिड़-कियां न दीजिये। देखिये यह आपहीकी गलती है कि आप इतने महान् और बुद्धिमान हैं, जो काम आप श्रेष्ठ और पूर्ण रीतिसे कर सकते हैं उसे भला बुरी तरह करके मैं क्या लाभ पाऊंगा ?

यौगन्धरायण — और जब चल बसूंगा ?

वत्स — आपकी मृत्युका मैं निषेध करता हूँ।

यौगन्धरायण — वत्स, तुम कौशाम्बीके महाराज हो, कालके नहीं, मृत्युके भी नहीं।

वत्स — अच्छा, तब देवता मेरे उग्र आग्रहसे आपको मेरे पुत्रोंके वृद्ध मंत्री बननेके लिये धरतीपर रखेंगे। यह बात उन्हें माननी ही पड़ेगी। देवता हैं ही किस कामके अगर वे पृथ्वीपर हमारी न्यायसंगत इच्छाओंकी भी पूर्ति न करें।

यौगन्धरायण — खैर, समयसे खेलते रहो। तुम राजाकी संतान हो और यद्यपि तुम्हारे अन्दर अल्हड़ बाल प्रकृति अभीतक मचल रही है, पर मैं उसके गूँगे ज्ञानी मस्तिष्कपर विश्वास करता हूँ जो उसे देख सकता हू जिसे न तो हमारे कोलाहलपूर्ण विचार तर्कसे पकड़ सकते हैं न मनीषा देख पाती है। उसकी अपनी रहस्यमय मांग होती है और वह दिव्य रूपसे खेल और निद्राके पीछे अपनी बाल शक्तियोंको आकार देती हुई काम करती है।

वत्स — तो फिर मैं जाकर अलर्ककी वीणा सुन सकता हूँ ?

यौगन्धरायण — उदयन, छोटी-छोटी बातोंमें अपनी इच्छा शक्तिको साधते रहो, किन्तु बड़ी बातोंमें उसे भयानक धरतीसे जूझने दो।

वत्स — मेरी इच्छा तो बस आनन्दके लिये है। ये राज्य, ये कूटनीतियां, सुन्दर नहीं हैं। हां, युद्ध सुन्दर है, कवचधारी पुरुषोंकी चमकती पंक्तियां और गाती हुई एक दूसरेको चूमती हुई तलवारें, यह सून्दर है। युद्धके गुहगामी पक्षियोंकी तरह उड़ते हुए बाणोंके झुण्ड भी सुन्दर हैं। अच्छा अब हम लोग फिरसे कब लड़ेंगे ?

यौगन्धरायण — जब लड़ाई पक जायगी। और शादी ? उसकी इच्छा नहीं होती क्या ?

वत्स — नहीं, नहीं, अभी नहीं ! कम-से-कम मैं तो यही सोचता हूँ कि अभी नहीं। मेरे पिता, एक अजीव बात बताऊं। स्त्रियोंकी भुजाओंकी कल्पना करके ही

कांप उठता हूँ, मैं जानता हूँ यह हर्षातिरेक है लेकिन फिर भी उस हर्षको उठा लेनेकी हिम्मत नहीं होती। शायद उसकी इच्छा इतनी मधुर है कि वह हर्ष-मात्र उसके आगे रूखा और तुच्छ प्रतीत होता है। कहीं वह उस माधुर्यको बिगाड़ न दे। मेरे पिता, ऐसा ही है क्या ?

यौगन्धरायण — शायद, तो तुम्हारे अन्दर स्त्रियोंकी वासना है ?

वत्स — हर स्त्रीके लिये है और किसीके लिये भी नहीं।

यौगन्धरायण — शायद एक दिन तुम युद्धके साथ परिणयको जोड़ दोगे और अपने सुरक्षित घोंसलेमेंसे अवन्तीकी आश्चर्यजनक वासवदत्ताको बलपूर्वक उड़ा लाओगे।

वत्स — छलकते माधुर्यका नाम तो मैंने सुना है। दिन आयेगा जब मैं एक अद्भुत मुखड़ा भी देखूँगा और स्वर्गीय वीणाओंको पराजित करती एक आवाज सुनूँगा। कहीं वह देवोंकी कानाफूसी तो नहीं है ? अभी कुछ समयके लिये स्वप्न ही अच्छे।

यौगन्धरायण — हम इन बातोंपर विचार करेंगे।

(पर्णक प्रवेश करता है)

पर्णक — जय हो महाराज ! फाटकपर एक दीप्त भालवाला यात्री खड़ा, अन्दर आनेकी स्वीकृति मांग रहा है। वह है तो अकेला और रास्तेकी मिट्टी धूलसे पुता पर फिर भी किसी वीर राजाका पुत्र लगता है।

वत्स — उसे आदरके साथ ले आओ। ऐसे अतिथि मुझे बहुत प्रिय हैं।

यौगन्धरायण — पहले हमें पता लगाना चाहिये कि बाहर किस प्रकारका जीव खड़ा है और वह आया क्यों है ?

वत्स — यह बातें हम उसीके मुँहसे सुनेंगे।

यौगन्धरायण — राजदरबारमें अधिकतर सत्य सुननेकी आशा न रखना। सत्य ! कभी कभार ही अपने चमकते स्वर्णिम दण्डसे वासना, आशा और भयमें फंसे मनुष्योंके होठोंको छूता है। वह केवल देवोंके अधिकारमें है। उससे किनारा करनेके लिये हमारे गंभीरतम विचार भी टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं, और उसके स्पर्श-से घायल होकर वे रेंगते हुए अपने धुँधलकेमें चले जाते हैं। वे प्रायः उससे घृणा करते हैं क्योंकि वह उनके लिये अतिशय तेजोमय है जैसे हमारी आंखोंके लिये अंशुमाली। अगर वह यहां निवास करता भी है तो किन्हीं और ही आत्माओं-के साथ।

वत्स — सभी मनुष्य कीचड़के नहीं बने हैं।

यौगन्धरायण — लेकिन हर कीड़े-मकोड़ेमें दिव्य पुत्रको न देखो। अपने चारों ओर निगाह घुमाओ तुम्हें सतर्क और सावधान दुनिया दिखायी देगी। यहां जीवन-मात्र बन्द होकर, कवच पहने घूम रहा है। वत्स, तुम भी अपने हृदयके सामने मोर्चाबन्दी रखो।

(पर्णक गोपालकको अन्दर लाता है)

गोपालक — महान् कौशाम्बीके अधिपति उदयन कौन-से हैं?

वत्स — यह रहा। वत्ससे तुम क्या चाहते हो? बोलो।

यौगन्धरायण — रूमण्वान, इस चेहरेको ध्यानसे देखो।

गोपालक — जय हो, तब कौशाम्बी नरेश; हालांकि छोटे और सुकुमार पात्रमें किन्तु अभिजात कुलमें जन्मे हो! जय हो!

वत्स — तुम अवश्य ही इस धरतीके कोई महान् व्यक्ति हो जो अतिथि, सखा और मित्र बनकर मेरे साथ रहने आये हो। शायद इन सबसे भी बढ़कर।

गोपालक — राजन्, मैंने तुम्हारे विरुद्ध लड़ाई की है।

वत्स — यह और भी अच्छा! मुझे विश्वास है तुम अच्छी तरह लड़े थे। तुम शांति-के लिये आये हो या लड़ाईके लिये?

गोपालक — राजन् शांतिके लिये और तुम्हारे आगे याचक बनकर।

वत्स — मांगो, मैं देनेके लिये उत्सुक हूँ।

गोपालक — पहले मेरा नाम तो जान लीजिये।

वत्स — मैं तुम्हारी आंखों और तुम्हारे चेहरेको जानता हूँ।

गोपालक — मैं अवन्तीराजका पुत्र गोपालक हूँ। एक समय धरतीपर तुम्हारा सबसे भयंकर शत्रु समझा जाता था।

वत्स — राजकुमार, तुम एक शक्तिशाली नाम बता रहे हो, जो याचक वृत्तिका आदी नहीं है। फिर भी मांगो और ले लो।

गोपालक — तुमने मेरी बात ठीक तरह सुनी भी? मैं तुम्हारे शत्रुका बेटा हूँ।

वत्स — और इसीलिये वत्सके हृदयमें और भी स्वागत है। शत्रु! वे युद्धक्रीड़ा-में हमारे समीप समय वितानेवाले, हमारी इच्छाओंमें भाग लेनेवाले मित्रोंकी तरह प्रिय होने चाहियें। वे हमसे दुराव क्यों रखें? तुम उन सबमें अधिक उदात्त और अधिक वीर हो। ओ राजकुमार, उस महान् आमोद-प्रमोदमें मैं तुम्हारे साथ खेल चुका हूँ।

गोपालक — तब यह थे वत्स!

यौगन्धरायण — और महासेनका पुत्र अपने बैरी कौशाम्बीको क्यों ढूंढ रहा है?

और याचक बनकर अपने मुख्य शत्रुके यहां क्यों आया है ?

गोपालक — मुझे उस ललाटको जानना चाहिये। क्या यही महान् नीतिज्ञ मंत्रीवर हैं ? यह अच्छा हुआ। मैं आश्रय चाहता हूँ।

यौगन्धरायण — और तुम कहते हो कि तुम अवन्ती-नरेशके पुत्र हो ?

गोपालक — क्योंकि मैं हूँ ही उनका पुत्र। मेरे पिताने मुझे त्याग दिया है और एक बार जो प्रदेश मेरा माना जाता था, उसमें एक बित्ता भी मेरे कदमोंको न सह सकेगा। इसीलिये यहां आया हूँ। वत्स उदयन, महाराज, मेरे भटकते सिर-को ढकनेके लिये, अपनी जमीनपर कोई झोंपड़ी या गुफा या कोई क्षुद्रतम आश्रय दे दो। किन्तु जैसा कि इस युगकी प्रकृतियोंमें दीखता है, अगर तेरे हृदयमें डर बसा है, या सन्देहका सर्प पल रहा है तो मेरे विच्छिन्न जीवनको दु:खमय क्षितिजोंपर भेज दो।

यौगन्धरायण — सावधान, वत्स। उसके शब्द अपनी नग्न धूर्तताको छिपानेकी कोशिश चर रहे हैं।

वत्स — राजपुत्र, तुम जो मांगते हो वह और उससे भी अधिक बिना प्रश्नके तुम्हारा हो चुका। अब इच्छा हो तो अपने प्रतापी पिताके क्रोधके कारण बताओ, लेकिन अगर तुम्हारी इच्छा हो तभी।

गोपालक — उनकी आज्ञाका उल्लंन हुआ इसलिये मुझे देश-निर्वासन मिला।

यौगन्धरायण — ज्यादा स्पष्ट बोलो।

गोपालक — मुझसे मत पूछो। मैं लज्जित हूँ। और पुत्रको अपने पिताके अव-गुणोंको अनावृत न करना चाहिये। जिन्होंने हमें जन्म दिया वे अत्याचार करें तो भी हमारे लिये अति प्रिय और पूज्य बने रहते हैं। वत्स, बस इतना जान लो कि तुम्हारे विरुद्ध एक गुप्त बाण बनाया जा रहा था।

वत्स — अपने पिताका रहस्य रखे रहो। अगर वे शर-संधान करते हैं और तुम ही वह शर हो तो भी मैं अपने धड़कते हृदयमें तुम्हारा स्वागत करूंगा। तुमने जो मांगा है उसे लेनेके लिये मैं तुमसे अनुनय करता हूँ। तुम आश्रय चाहते हो, तुम्हें अपना घर मिलेगा। तुम पितासे भाग रहे हो यहां एक भाई तुम्हें आलिंगनबद्ध करनेके लिये प्रतीक्षा कर रहा है।

यौगन्धरायण — अत्यंत निश्छल, अतीव उदात्त !

वत्स — पास आओ। महासेनके पुत्र, क्या तुम महाराज उदयनके भाई और मित्र बनोगे ? मैंने जो रूखा वर दिया है उसपर इस अनुग्रहको न्यौच्छावर कर सकोगे ? क्या यह बहुत बड़ी मांग है ?

गोपालक — तुम्हारा भाई बननेकी मेरी हार्दिक इच्छा थी। यही इच्छा लिये हुए मैं आया हूँ।

वत्स — तो आओ गोपालक, मेरे आहार, विहार और शय्यामें, मेरे कठिन परिश्रमके काल और आमोदकी घड़ियोंमें हिस्सा बंटाओ। मेरा सब कुछ तुम्हारा है।

गोपालक — सारी धरतीपर तुम्हारी अंतरात्मा सबसे उच्च और महान् है।

वत्स — तात, त्योरियां न चढ़ाइये। मैं अपने हृदयकी आज्ञा मानकर चल रहा हूँ। इसका चेहरा देखते ही मेरा हृदय उछल पड़ा था। विश्वास रखिये, मेरा हृदय विवेकपूर्ण है। गोपालक, सन्तरीके रूपमें मनुष्यके अन्दर रहनेवाला प्रेम हमेशा अपने पात्रके लिये विचित्र आशंकाएं करता रहता है। इसीलिये मेरे मंत्रीको तुमसे किसी हानिकी आशंका है। तुम उनके प्रेमको आश्वासन देकर, उनके सन्देहको क्षमा न करोगे ?

गोपालक — राजन्, वह बुद्धिमान्, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ हैं और वही बुद्धि दिखा रहे हैं। लेकिन मैं शपथ लेकर कहता हूँ, महोदय , मैं आपके सामने प्रमाणित कर दूंगा कि आप जिसकी सेवा करते हैं और जिससे इतना प्रेम करते हैं उसके साथ घनिष्ट मैत्री ही मेरा उद्देश्य है। क्या यह पर्याप्त है ?

वत्स — तात, आपने सुना ? राजाओंके कुमार झूठी शपथें नहीं लिया करते।

यौगन्धरायण — इतना पर्याप्त है।

वत्स — आओ गोपालक, मेरे प्रासादमें और मेरे हृदयमें आओ।

(गोपालकके साथ महलमें जाता है)

यौगन्धरायण — ओह, कैसा जीवन है यह, राजाओंसे घिरा हुआ। यह क्या जाल है ? कैसा जादू है ? अवन्तीवासीकी आंखोंमें कपट था।

रूमण्वान् — उसने अपने-आपको शत्रुके हाथोंमें सौंप दिया है और उसने कसम खायी है। वह एक राजाका बेटा है।

यौगन्धरायण — हां, पिताकी ओर। परन्तु निस्तेज रानी अंगारिका किसी विचित्र अमानवी बापकी सन्तान थी, उसके विजेताने उसे धुंधली छायामेंसे खींच निकाला था।

रूमण्वान् — लेकिन कोई इलाज भी तो नहीं है अब। वत्स मानो अचानक मोहिनी मायामें फंस गया है।

यौगन्धरायण — मैं उसकी चाल-ढालपर नजर रखूँगा। जहां-जहां ये दोनों जायें वहां ऐसे धनुर्धर रखो जो दौड़ते हुए लक्ष्यको भी कभी न चूकें।

रूमण्वान् — फिर भी वत्सने बड़ा ही उदात्त व्यवहार किया।

यौगन्धरायण — यह उदात्तता दिव्यकालमें बुद्धिमत्ता समझी जाती थी। हमारे इस पतित समयमें नहीं। अब तो मधुर सद्गुण पराजयके जनक होते हैं। और निम्नतर, भयंकर जीव ही धरतीको उत्तराधिकारमें पाते हैं।

अंक २

दृश्य १

कौशाम्बीके महलका एक कमरा

अलर्क — मेरा ख्याल है, अंतमें वह कौशाम्बीपर राज्य करेगा।

वसन्त — कलाकार, अच्छे निरीक्षक बनो। उसकी आंखें युवा वत्सका शिकारकी तरह पीछा करती है, और सम्भावनाओंको नापती-सी लगती हैं। परन्तु राज्य करने या कौशाम्बीकी रक्षाके लिये नहीं। शासन करना उसका स्वभाव है, संकल्प नहीं।

अलर्क — यह मनुष्य एक ऊंची चट्टान-सा है जो अचानक बदलकर विचारशील जीव बन गयी है।

वसन्त — यही तो वत्सके लिये उसका आकर्षण है, वत्स वसन्त-सा सुकुमार, बादलों-से घिरे आकाशमें भागते चन्द्रमा-सा सुन्दर, और पत्तोंमें रमती हुई मल्लिका-सा विलासी है।

अलर्क — यह वत्स पौरुषको कब प्राप्त होगा। कठोर मस्तिष्कवाला रूमण्वान्, और गंभीर यौगन्धरायण, राज्य संचालन करते हैं; वे ही मानों राज्यकी दो भुजाएं हैं। एक लड़कीकी प्यारी गुड़िया-सा यह बालक उन दोनोंके बीच दुलारा, पुचकारा जाता है, धमकाया भी जाता है। वे उसे अपनी मरजीके मुताबिक उठाते-बिठाते हैं। वह भी आनन्दके तालबद्ध चित्र-सा घूमता रहता है और अपने ऊष्माभरे स्मितके साथ सब कुछ करता जाता है। अब हमारे छोटे-से राज्यमें जहां सौन्दर्य और संगीतका ही विधान है. उत्तुंग मौन आता है और उसपर अधिकार कर लेता है। वह हमारे सारे क्रिया-कलापपर अपनी हुकूमत चलाता है, वत्सको अपनी खुशीका एक और स्वामी मिल गया।

वसन्त — इस राजसी हृदयमें एक वारांगना है जो सबके आगे आत्मसमर्पण करती है और सब उसके बन जाते हैं। शायद यह भी बुद्धिमत्ता है। क्योंकि अलर्क, यह दुनिया हमारे मापदंडसे भिन्न ही है और हमारे विचारोंसे कहीं अधिक व्यापक विचारोंके अनुसार चलती है। हमारे विचार तो संकीर्ण हैं। किसी विशाल आत्माकी अतल इच्छा ही उसका गुप्त विधान है। वह अपनी अदम्य शक्तियों-

को घेरेमें रखती है और हमें हमारी इच्छाके अनुसार नहीं, अपनी मरजीके मुताबिक जहां चाहती है ले जाती है। मानव अपनी जरा-सी दुनियांपर भी शासन नहीं कर पाता है। हम डरते हैं, दोषारोपण करते हैं, जीवन अपने मनमाने ढंगसे उछल-कूद करता है, जरा लजाता तो है पर फिर भी अपनी बातपर अड़ा रहता है, हम उसे रोकनेकी कोशिश तो करते हैं पर रोक नहीं पाते। हां, वत्स बड़ा समझदार है। क्योंकि वह हर चीजको उसके अपने ढंगसे लेता है और उसका रस लेता है। और अगर हम रस लेनेके लिये नहीं हैं तो फिर हैं ही किस-लिये ? जबतक अभद्र मृत्यु दखल न दे तबतक अपनी प्रिय चीजोंको किसी कीमतपर पानेके लिये ही तो हैं। भगवान्‌का दूत इन सजीव गुड़ियोंको किसी दूसरे ही कक्षमें किसी ज्यादा अच्छे खेलके लिये ले जाता है — शायद ज्यादा अच्छे खेलके लिये।

अलर्क — फिर भी, जरा सोचो तो। इस अखण्ड दैवी वंशावलीको देखो। परीक्षित और जनमेजयका विचार करो, शतनीककी बात सोचो और फिर अपने वत्स-को निहारो। हिम-शिला, पर्वत और सारे-का-सारा-हिमालय, एकके ऊपर एक कैसे गरुड़के समान शिखर थे और अब यह सुकुमार कोमल तराई खिल उठी है। आनन्दकी शाखाओंपर कोकिल कूज रही है, भ्रमर पंख मारता हुआ अपनी इच्छाओंका गुंजन कर रहा है।

वसन्त —भगवान्‌ने अपने मनोरंजनके लिये यह सृष्टि बनायी है। क्योंकि अकेलेमें वह उदास-सा था। इसलिये गुप्त साक्षीको प्रसन्न रखनेके लिये सभी चीजें बदलती रहती हैं। प्रकृति अपना काम कितनी अच्छी तरह जानती और करती है। वह कैसे तीव्र विरोधोंको आपसमें मिला देती है। मृत्यु जीवनको पालती है ताकि जीवन मृत्युके मुँहमें दूध चुआ सके। उसकी निश्चितताएं जाल हैं, उसके स्वप्न ही विजयी होते हैं। वह कैसे-नन्हें-से बीजोंसे विशाल नियति-को पैदा करती है, जरा से स्मितसे दिखा देती है कि उसकी बड़ी-बंड़ी चीजें भी नगण्य-सी हैं। यहां सभी चीजें गुप्त रूपसे ठीक हैं और भगवान्‌की प्रतीतिमें सभी गलत हैं। संसार ! तू एक दिव्य अस्तव्यस्ततामें बड़ी बुद्धिमत्तासे ले जाया जा रहा है।

अलर्क — महामंत्री इस व्यक्तिकी गतिविधि बड़ी सतर्कताके साथ देखते रहते हैं। शायद उनका ख्याल है कि इसके मस्तिष्कमें कोई संकटापन्न प्रयोजन छिपा है।

वसन्त — मंत्रियोंमें वे सबसे अधिक सतर्क रहते हैं। वे तो छतपर बैठे दो कबूतरों-पर भी षड्यन्त्रका सन्देह करेंगे क्योंकि वे गुटर-गुँ कर रहे हैं।

अलर्क — सम्भव तो सभी कुछ है।

(वत्सका गोपालकके साथ प्रवेश)

वत्स — हां, मैं समुद्रके अपार विस्तारको देखना चाहूँगा। क्या वह भी उन मौन गिरिराजों-सा विशाल है जहां मैंने जन्म लिया और बड़ा हुआ। उसकी आवाज दैत्याकार झंझाके आलिंगनमें झूमते हमारे जंगलोंकी विशाल सरसराहट-सी है? हमारे कौशाम्बीमें यह तो है।

गोपालक — तब मुझे ये सब दिखाओगे? विन्धयाकी चट्टानें जिनके घने अंधेरे वन मेरी अवन्तीकी ओर उतरते हैं?

वत्स — चलो, हम चलेंगे और तेज भागनेवाले शिकारका पीछा करेंगे या अपने तीरोंसे वनराजको पदच्युत कर देंगे।

गोपालक — काश, हम जंगलकी निर्जनतामें अकेले भ्रमण कर सकें, उसे अपने कोलाहलसे दूषित न करें, अपने पदचापसे महान् प्रकृतिकी उस पाशविक तंद्राको विक्षुब्ध न करें, जिसके बलशाली, सहज वृत्तियोंसे अनुप्रेरित जीवनको बाड़में वन्द अंधेरे चंचल मनकी छटपटाहटने खराब नहीं किया हो।

वत्स — यह तो वही चीज है जिसके मैंने सपने लिये हैं। अलर्क, जाकर महामंत्रीसे कह दो कि हम अवन्तीकी सीमापर झुके विन्धयके जंगलोंमें मृगयाके लिये जा रहे हैं। यानी अगर मेरी इच्छा चलने दी जाय।

(अलर्क बाहरी महलकी ओर जाता है)

वसन्त — वत्स, वे तुम्हें इजाजत देंगे। लेकिन वह तुम्हें किस ओर ले जायगा महाराज?

वत्स — तेरे चाबुक लगें या मुँहमें ठेंठी लग जाय तो अच्छा हो।

वसन्त — मेरी आंखोंपर पट्टीसे भी काम चल जायगा।

वत्स — हम अलर्कके हाथोंमें सारंगीके सुरोंको जागृत करें या तुम चाहते हो कि मैं स्वर्गसे सीखी हुई तुम्हारी वह मनपसन्द तानें छेड़ूँ जिनसे पशु भी मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। हाथी वह मोहिनी स्वर सुनकर चिंघाड़ता आता है, हरी-हरी दूब पर रंग-बिरंगी तड़क-भड़कके साथ मोर नाचते हैं और नागराजका चमकता फन मरकतमणि-सी शस्यश्यामल हरियालीमें तालबद्ध व्याकुलता बनकर ऊपर उठता है।

गोपालक — वत्स उदयन, कुछ देर मुझे एकान्तमें रह लेने दे, मेरे अन्दर विचार उमड़ रहे हैं।

वत्स — ऐसा तो न होना चाहिये। क्या मेरा प्रेम खोयी हुई अवन्तीकी क्षतिपूर्ति

नहीं कर सकता ?

गोपालक — हमेशा; किन्तु कई बार पुराने आवासोंसे एक पुकार आती रहती है ।

वसन्त — कहीं निष्कासित पुत्रकी ओरसे उसके महान् पिताके, प्रतीक्षामें उत्कंठित हृदयके, पास कोई धुँधला-सा मेघदूत तो नहीं लौट रहा ?

गोपालक — तेरा व्यंग्य कृत्रिम है।

वसन्त — और तेरा उत्साह कुछ कम है ?

वत्स — चल मैं दो घड़ीकी दीर्घ विवर्ण क्षति तेरे विचारोंपर न्योछावर करता हूँ। जब इतना समय घिसटकर पूरा हो जायगा तब मैं तुझे कहां पाऊंगा ?

गोपालक — नदीके तटपर जहां लाल शाखाओं तले फूलोंकी वर्षा होती रहती है। जबतक तुम काव्य या संगीत सुनो, तबतक मैं वहां चहलकदमी कर लूँ।

वत्स — तुम्हारे बिना न सारंगी सुहाती है न काव्यका रंग जमता है। (गोपालक जाता है) एक-दूसरेको शरीर और मनके तारोंपर खोजनेवाली सदृश आत्माओंकी समस्वरता ही वह संगीत है जिसके लिये जीवन प्रकट हुआ था। वसन्त ! सारे दिन लपलपाती कांटोंकी आगकी भांति अपनी चटचंटाहट सुना। ऋतुराज, अपनी कोयलको बुला।

वसन्त — तो अपनी मूर्खताकी हरी टहनियोंको ईंधन बनाकर मेरी आगमें झोंको।

वत्स — मेरा ख्याल है कि मैं सारी दुनियाके लिये काफी देता रहता हूँ।

वसन्त — जगत्को कार्यरत रखना तो तुम्हारा पेशा है। मनुष्योंने राजा इसीलिये बनाये कि बेवकूफीको अन्न मिल सके। क्योंकि उनके रहते राजदरबारमें उनके बारेमें गप्पें चलती रहती हैं। दुनिया गाल बजाती है और वे लोग उसीको इतिहास कहते हैं। यह लो, हमारा आदमी वापिस आ गया।

अलर्क — महामंत्री कहते हैं इस मामलेमें और हर मामलेंमें अपनी खुशीके अनुसार कार्य कीजिये। लेकिन चूँकि यह मृगया भयानक सीमातक पहुँच सकती है इसलिये सशस्त्र दल पहाड़ियोंके दर्रोंपर पहरा देंगे, स्वयं महामंत्री पशुओं और हर हानिकारक वस्तुसे अपने स्वामीकी रक्षा करनेके लिये सतर्क होकर पहरा देंगे।

वत्स — यह उनका काम है। वे जो भी करेंगे अच्छा करेंगे।

अलर्क — सब मनुष्योंपर खुले हाथों प्रेम और विश्वास लुटाना हृदयका राजत्व दिखाता है मस्तिष्कका कौशल नहीं।

वत्स — मुझे अपना बड़ा भाई मिल गया है। अलर्क, मेरी इस खुशीपर मन मैला न करो। तू मुझसे अच्छी तरह प्रेम करता है न ?

अलर्क — क्या इसपर भी सवाल उठ सकता है ?

वत्स — तब मेरे साथ आनन्द मनाओ कि मुझे अपना भाई मिल गया है। मेरी खुशी-के साथ अपनी खुशी, मेरे प्रेमके साथ प्रेम और मेरे विचारोंके साथ अपने विचारों-का मेल करो। बाकी चीजें उन बड़े-बूढ़ोंपर छोड़ो जिनके जोड़-तोड़ने भगवान्-की इस सृष्टिको एक दफ्तर या बाजार बना दिया है। चलो हम लोग जो युवक हैं अपना मन बहलाते और मौज करते रहें।

अलर्क — उदयन, तुम सबका हृदय हर लेते हो किन्तु अपना किसीको नहीं देते। और फिर यह युवक राजकुमार गोपालक, दानव और महासेनका वंशज है, यह कठोर निर्मम और धुन्ना है। क्या वह भी हमारी तरह तुम्हारी मैत्रीका प्रत्युत्तर देता है ?

वत्स — प्रत्युत्तर न मिले तो भी प्रेम अपने-आपमें बड़ा मधुर है और फिर कई रहस्य मौन होते हैं।

वसन्त — इस फूलको रास्तेकी चट्टानपर चढ़ने दे। प्रकृतिकी दक्षताका विरोध न करो। वह अपने कलात्मक आनन्दसे वंचित रहना न चाहेगी। हरे मरू-द्यानके चारों ओर भीषण रेगिस्तान तरसता रहता है और हिम शील सरोवर कमलिनीकी गरिमाके लिये उत्सुक है।

वत्स — वह पहाड़ है, मैं फूल हूँ। इस उद्यानमें तुम कौन-सी भूमिका अदा करते हो ?

वसन्त — वांछाओंके स्वर्गसे जन्मे उस गुलाबका कांटा हूँ जिसे लोग वत्स कहते हैं।

वत्स — कवि, व्यंग्यकार, ज्ञानी, तू अपने प्रकट गुणोंके अतिरिक्त और क्या-क्या छिपाये बैठा है ?

वत्स — मैं सब कुछ लुटाता रहता हूँ, अपने पास कुछ नहीं रखता। तेरी तरह जगत्-को छलनेके लिये मधुका व्यापार नहीं करता।

वत्स — आह, धरती मधुमय है; मैं उसके सारे माधुर्यका पान करूंगा।

दृश्य २

विन्ध्य वनका एक छोटा-सा मैदान

विकर्ण और एक दलपति

विकर्ण — मृगयाकी आवाज अभी दूर ही है। किन्तु सारे रास्तेको सेनाएं-ही-सेनाएं

घेरती जा रही हैं। गोपालक कहां है ?

दलपति — शायद अपनी सेनाओंको सीमातक पहुँचानेसे पहले हमें कुछ कठोर कार्य भी करना पड़े।

विकर्ण — मैं वही चाहता हूँ। आहा, तीरोंकी वह सनसनाहट ! अभी तो मुझे समर-संगीत सुनना है।

दलपति — कोई आ रहा है क्योंकि जंगली जानवरोंमें भगदड़ मच गयी है ?।

(वे छिप जाते हैं। गोपालकका प्रवेश)

विकर्ण — इतनी तेजीसे कहां ? गोपालक, एक निष्कासित आदमीके लिये तुम सीमाके बहुत अधिक निकट हो।

गोपालक — मेरे पिताने तेरे जैसे उष्ण रक्तवाले लड़केको भेजकर अपने दोनों वेटों-की जान खतरेमें क्यों डाल दी ? इस कार्यमें मुझे उनकी बुद्धिमत्ता नहीं दिखती।

विकर्ण — खतरा होगा ? मैं खुश हूँ। मुझे किसीने भेजा नहीं, मैं तो विन बुलाये आया हूँ।

गोपालक — और बिना पूछे भी ?

विकर्ण — बिलकुल ठीक।

गोपालक — विश्वास कर मैं तुझे कोड़े लगवाऊंगा। फिर भी जब तू आ ही गया है तो बता रथ कहां खड़े हैं ?

दलपति — वे हमारी बांयी ओर प्रतीक्षा कर रहे हैं। वराहने पहाड़के रास्ते अवन्ती-तक जिस गुप्त सुरंगको खोदा था उसीमें छिपे हैं। राक्षसोंकी तराशी हुई गुफा जिसे लोग हस्तिगुफा कहते हैं; उसमें हमारे सैनिक मशाल लिये खड़े हैं। लेकिन जंगलके सब रास्तोंपर दुश्मन पहरा दे रहा है।

गोपालक — कुछ ऐसे भी हैं जिनकी वह रखवाली नहीं कर सकता। मैं इस जंगल-को उनके गुप्तचरोंसे ज्यादा अच्छी तरह जानता हूँ। जब मैं तेरी बात करूं और ताली बजाऊं तो चुपचाप सशस्त्र आकर हमें घेर लेना।

दलपति — और अगर उसके आदमी सामना करें।

गोपालक — नहीं, बस हम दो ही होंगे।

विकर्ण — छिः तो लड़ाई नहीं होगी ?

गोपालक — भाग भूत !

(वे छिप जाते हैं। गोपालक जाता है। उसी समय दूसरी ओरसे वत्स वसन्त और अलर्कके साथ आता है)

अलर्क — हमने अपने अनुरक्षकोंको खो दिया है।

वसन्त — मुझे तो लगता है कि उन्होंने हमें खोया है।

अलर्क — न जाने भाग्य विश्वासघात और कपटके साथ क्या षड्यन्त्र रच रहा है। हमारा रथ टूट गया हम अकेले पड़ गये। ऊपरसे रात आ रही है।

वसन्त — रूमण्वान् सब रास्तोंकी चौकी कर रहे हैं।

अलर्क — रात आ रही है।

वत्स — मित्रो, मैं यहीं विश्राम करूंगा, जहां सब कुछ हरा-भरा और मौन है, पक्षियों-और पवनकी कानाफूसी सुनायी देती है। अलर्क, जाओ, मृगयाके साथियों-से मिलो; उनके भटके हुए कदमोंको इस हरी छतवाले आश्रयस्थानकी राह दिखाओ।

अलर्क — यही तरीका अनिष्ट होते हुए भी सर्वोत्तम है। मैं तुम्हें रक्षाके लिये युद्ध-से अनभिज्ञ हाथोंमें सौंपकर जा रहा हूँ।

वसन्त — सब जानते हैं कि मैं कोई योद्धा नहीं हूँ। भाग, जल्दी कर। (अलर्क तेजीसे जाता है) तेरी सारी उतावलीके बावजूद कोई अवन्तीमें महान् देव शिवकी पूजा करके रहेगा। मैं पदचाप सुनता हूँ। (गोपालक वापस आता है) गोपालक, इतनी देरतक कहां थे?

गोपालक — जंगलमें दूर-दूर भटकता रहा क्योंकि एक श्वेत मृगने जादुई सौन्दर्य-की तरह मेरे उत्साहभरे कदमोंको हरी-भरी उलझनोंमें फंसा दिया था।

वसन्त — बड़ी आसान बात है! वहां तुम जो खोजते थे वह मिला?

गोपालक — मृग नहीं, शिकारी मिले, और वह भी हमारे दलके नहीं। हमने इस हरे मैदानकी चर्चा की जहांसे महाराजको कई रास्तोंसे ले जाया जा सकता है। मैं तेजीसे यहां आ गया हूँ।

वसन्त — जानेकी और भी जल्दी होगी।

वत्स — अलर्कके पीछे जाओ और उसके साथ ही लौटना।

वसन्त — क्या कहा? अपने-आपको जंगलके हाथोंमें फेंक दूं और रात्रिके मुखका कौर बन जाऊं?

अच्छा, इधर आओ और मुझे एक लंबी बिदाई दो। तुम्हारी आंखें आखिर खुल गयीं न? क्या इस योजनाके तुम ही कर्ता-धर्ता हो? चलो, और कुछ नहीं तो कम-से-कम इतना तो तुमसे जानना ही चाहूँगा।

वत्स — जब तुम्हारी आंखें हैं तो फिर पूछते क्यों हो? तुम देख सकते हो कि मेरी आंखें खुली हैं? और मैं चल रहा हूँ, कोई मुझे हांक नही रहा।

वसन्त — चल तो रहे हो लेकिन अपनी सुरक्षित राजधानीसे बहुत दूर।

वत्स — हर्ज ही क्या है?

वसन्त — और इस राजकुमार गोपालकके साथ?

वत्स — इसीलिये सन्देह? तो फिर यही क्यों नहीं सोच लेते कि अवन्ती जानेकी शायद मेरी ही इच्छा है?

वसन्त — अच्छा ऐसा?

वत्स — ऐसा तो नहीं, लेकिन अगर?

वसन्त — ओह, अगर! और अगर वापस आना जानेसे कम आसान न हुआ तो?

वत्स — आसान चीजोंकी बात ही किसने की है? तो मुश्किलके साथ वापस आऊंगा।

वसन्त — महाराज वत्स, मैं जा रहा हूँ।

वत्स — लेकिन यौगन्धरायण और दूसरे लोग जो अंधे क्षुब्ध विचारोंसे पीड़ित हैं, उनसे कहना मेरे भाग्यमें मानव या देव जो भी मुझे खोजता हो उसे मेरे और मुझे खोजनेवालेकी सामर्थ्यपर छोड़ दो। तुम्हारे राजाकी आज्ञाके बिना रणभेरी न बजने पाये। वत्स ही वत्सका उद्धार करेगा।

वसन्त — मैं कह तो दूंगा लेकिन कौन जाने वे सुनेंगे या नहीं।

वत्स — उन्हें मालूम है कि उनका स्वामी कौन है।

वसन्त — राजन्, कुशल हो।

वत्स — अवश्य होगा। यात्रा शुभ हो। (वसन्त जंगलमें अदृश्य हो जाता है) गोपालक, हम दोनोंने अपनी मिलन-वेला रख ली। मेरे धनुष, वहां लटकते रहो, जाओ मेरे बाण, तुम भी सो जाओ। मुझे अभी तुम्हारी जरूरत नहीं है। हाश, इस बातके बहुत बार स्वप्न देखे हैं कि राजदरबारोंकी तड़क-भड़कसे दूर अपने प्रियके साथ अकेला रह सकूँ; अंगरक्षकोंके पहरेमें और चारों ओर चिन्तापूर्ण मैत्रियोंके घेरेमें नहीं। सामान्य पुरुषकी तरह, जंगलके, अमित मौनमें लहराती नदीके पास, और पतझड़में पहाड़ियोंपर अकेले घूमना! जहां धरती माता अपने बच्चोंसे कानाफूसी करती और मुस्कराती है। गोपालक, हम इस मरकट लोकमें घुसें उससे पहले मुझे अपनी गोदमें सिर रखकर जरा आराम कर लेने दो। क्या हम उस हरी-भरी छतवाले मकानमें न जायेंगे जहां महिमामयी धरती मनुष्योंसे छिपकर रहती है? और क्या आकाशगामी शृंगोंके मित्र न बनेंगे जो मूक भाषामें हमें बुलाते हैं। हम झीलोंमें नहायेंगे, उछलते झरनोंके पास बैठकर स्वप्न देखेंगे और कई बार धीमी चन्द्रिकाहीन रातोंमें

किसी पर्णकुटीमें गलबहियां डाले राजप्रासादोंसे भी ज्यादा सुखी रहेंगे। या फिर इच्छा हुई तो शेरके साथ उसकी गुफामें ही कुश्ती लड़ेंगे, हिरणके पीछे पवन-वेगसे भागते फिरेंगे और वनवासियोंके वनोंकी समृद्धिमेंसे चुने हुए आहार-से हिस्सा बटायेंगे। गोपालक, मनुष्यके शहरी अड्डोंकी ओर जानेसे पहले हम यह सब करेंगे न ?

गोपालक — किसी दिन करेंगे।

वत्स — किसी दिन क्यों ? अभी क्यों नहीं ? मैंने अपने अंगरक्षकोंसे व्यर्थ ही पिंड छुड़ाया है क्या ?

गोपालक — व्यर्थ नहीं।

वत्स — मित्र, यह तलवार यूँ ही बोझ बढ़ाती है, इसे लेकर उधर किनारेपर पटक दे।

गोपालक — वह दूर ही है। मैं अपने हथियार तो यहीं रखता हूँ ताकि कहीं कोई जंगली हमारे इस हरे एकांतवासपर हमला न बोल दे।

वत्स — अपने हथियारोंको और मुझे रखो। आहा, इस तरह वृक्षोंके झुरमुटमें निवास बहुत सुखद है जहां मेरी रक्षाके लिये तुम हो, और तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं।

गोपालक — तुमने अपने-आपको पूरी तरह मेरे हाथोंमें सौंप दिया है।

वत्स — हां, मुझे ले लो, भाई।

गोपालक — मैं इस विश्वासका उपयोग करूंगा और साथ ही अपने-आपको उसके योग्य सिद्ध करूंगा।

वत्स — मैं तुझसे बहुत प्रेम करता हूँ गोपालक। तुम मुझसे कैसा प्रेम रखते हो ?

गोपालक — कहना कठिन था पर अब कह सकता हूँ। जैसे कोई सतर्क बड़ा भाई, या जैसे एक माता अपने सुन्दर कुसुमवत् कोमल शिशुसे प्रेम करती है या कोई वयस्क पुरुष किसी कोमलांगी लड़की, अपनी बहन, साथिन या सन्तानके लिये लालायित रहता है। इन सब रूपोंमें और इनके अतिरिक्त अनेक रूपोंमें प्यार करता हूँ किन्तु हमेशा सतर्क ईर्ष्याके साथ।

वत्स — क्यों ?

गोपालक — क्योंकि, वत्स, मैं तुझे पूरी तरह अपने लिये ही रखना चाहता हूँ उस तरह नहीं जैसे तेरी राजधानीमें जहां मेरे लिये अजाने हजारों व्यक्ति तेरी किरणोंमें हिस्सा बंटाते थे। मेरे अपने राज्यमें, दुनियाके उस भागमें जो मेरे लिये परिचित और प्रिय है, जहां तू राजा न होकर सिर्फ वत्स ही रहेगा। और मैं अपनी इच्छानुसार तुझे अति प्रिय बंधनोंमें बांध लूंगा। वत्स, मेरी यही

इच्छा थी और इसीलिये मैं तुम्हें इस तराईमें लाया हूँ।

वत्स — और इसीलिये मैं तुम्हारे साथ अकेला आया हूँ।

गोपालक — तुम्हें आगे चलना होगा।

वत्स — अच्छा? तो जल्दी करो। सुनसान वृक्षोंमेंसे यह हथियारोंकी झनझनाहट कैसी?

(वह उठनेको होता है किन्तु गोपालक रोकता है)

गोपालक — तेरे अंरक्षक हैं।

वत्स — मेरे?

गोपालक — मेरे पिताने तुम्हें बुलवाया है। वत्स, मैं तुम्हें पकड़ता हूँ, तुम मेरे हो। मेरे बन्दी और मेरा पुरस्कार हो। जैसे एक बार तुम्हारी माताको महान् गरुड़ उठाकर अपने अनधिगम्य गिरिशृंगोंपर ले गया था उसी तरह मैं भी तुम्हें कहीं दूर लिये जा रहा हूँ। (वह बोलता है और उसी समय सशस्त्र लोग दिखायी देते हैं) जल्दी करो, जल्दी! मैं राजकुमारको पकड़े हुए हूँ। वराह सुरंगकी ओर चलो।

दलपति — जल्दी, जल्दी। चारों ओर घुसपुस बढ़ रही है।

गोपालक — उसकी परवाह न करो, सिर्फ मेरे पीछे आओ और रक्षा करते रहो।

(वे वृक्षोंमें अदृश्य हो जाते हैं। कुछ क्षण बाद वसन्त आता है)

वसन्त — जंगल आवाज़ोंसे जी उठा है। बहुत देर हो गयी। काम हो चुका।

(यौगन्धरायण, रूमण्वान्,अलर्क और अन्य लोग चारों ओरसे टूट पड़ते हैं।)

यौगन्धरायण — महाराज वत्स कहां हैं? किधर हैं? उनका धनुष वहां लटक रहा है! उनकी तलवार यह रही और तीर वे पड़े हैं।

वसन्त — (अन्यमनस्क) मुझे नहीं मालूम।

अलर्क — नहीं मालूम! तुम उनके साथ थे!

वसन्त — नहीं। उन्होंने मुझे अपनेसे दूर कर दिया था। मेरा ख्याल है कि वे अवन्तीकी ओर शिवके पास जा रहे हैं।

अलर्क — और तुम हंस रहे हो? असमयके विदूषक!

यौगन्धरायण — प्रचण्ड वेगसे पीछा करो। जंगलके मार्गों और पहाड़के दर्रोंमें अवन्तीकी ओर भागते सैनिकोंकी बाढ़ ला दो। उन्हें अब भी पकड़ा जा सकता है।

वसन्त — पहले महाराजका संदेश और आदेश सुन लीजिये। उन्होंने कहा है, मुझे नियतिके गर्भमें मानव या पशु चाहे जो खोजता रहे पर आपके महाराजकी अनु-

मतिके विना रणभेरी न बजने पाये। वत्स ही वत्सका उद्धार करेगा।"

रूमण्वान् — तू अब भी मजाक कर रहा है क्या, या फिर यह कोई पागलपन था ? या फिर केवल लापरवाहीभरी चंचलता ?

यौगन्धरायण — देखो, रूमण्वान्, सिंह शावक कैसे निकल भागा। जिसे हम अपनी मुट्ठीमें सही-सलामत रखना चाहते थे वह अपने यौवन और शक्तिके उल्लासमें इस विशाल भयजनक जगत्में कूद पड़ा है। उसने सारी सहायताको ठोकर मारकर अपने-आपको अकेला ही दुश्मनकी गुफामें फेंक दिया है। मैं उसके उद्देश्यका अनुमान कर सकता हूँ किन्तु यह जल्दबाजी और उतावलापन है। अगर वह असफल हुआ तो ? कहां यह किशोर और कहां लौह-कठोर महासेन। फिर भी हमें आज्ञा माननी ही चाहिये।

रूमण्वान् — वह अभी सीमाके पार न गया होगा। फिर भी हम शस्त्रोंसे सज्जित होकर अवन्तीमें ढूंढ़ निकालेंगे। चलो, बढ़ो सीमाकी ओर। अब भी उन्हें सीमा लांघनेसे पहले पकड़ा जा सकता है।

(यौगन्धरायण और अलर्कके सिवा सब तितर-वितर हो जाते हैं)

यौगन्धरायण — सब बेकार होगा। कम-से-कम मेरे गुप्तचर उनके अंतःपुरको वेध लेंगे। जेलमें भी मेरी सहायता उसके नजदीक रहेगी।

दृश्य ३

अवन्ती मैदानकी ओर झुका हरा-भरा पहाड़ी प्रदेश

गोपालक उदयनके साथ रथमें। सशस्त्र पुरुष उन्हें घेरे हुए हैं।

गोपालक — पहिये रोक लो। मैदानकी ओरसे जुगनुओंकी तरह आनेवाली वे रोशनियां हमारी सेनाकी हैं।

वत्स — (नींदसे जागते हुए) क्या यह अवन्ती है ?

गोपालक — हम उसकी सीमा पार कर चुके हैं।

वत्स — अच्छा, प्रिय विश्वासघाती, तब तुम शुरूसे यह योजना बनाकर आये थे ?

गोपालक — योजना इसके लिये और इससे भी बढ़कर थी।

वत्स — तो तुम मुझे अपने पिताके घर लिये जा रहे हो ?

गोपालक — जहां तुम हमारी अत्यन्त प्रिय निधियोंके पास एक हीरेकी भांति सुरक्षित

रखे जाओगे। यौगन्धरायणके सारे दांव-पेंच तुम्हें हमारे पहरेसे न छुड़ा सकेंगे।

वत्स — ऐसा लगता है कि मानों मुझे दरबेमें बन्द रखा जायगा और जैसे कौशाम्बी-में मेरे ऊपर पहरा रहता था वैसे यहां भी सोनेके पिंजरेमें रखा जायगा। तो सभी मेरे ऊपर अपनी मरजी चलाना चाहते हैं। लेकिन मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि मैं स्वतन्त्रता पाके रहूँगा। और तुमसे भी अधिक छल-कपट या बलप्रयोग करके अपना प्रिय मनोरथ साधूँगा।

गोपालक — तुम? कभी नहीं। यदि धनुष तेरे पास होता तो और बात थी।

वत्स — तुमने मुझे खेल-खेलमें पकड़ लिया, मैं उसी आसानीसे भाग निकलूँगा।

गोपालक — भाग निकलना टेढ़ी खीर है। ऐसे पहरेदार होंगे जो तेरे पैरोंमें बेड़ी डाल देंगे।

वत्स — किन्तु मैं अवश्य निकल भागूँगा और तुम कौशाम्बीके राज्यसे जो चुरा लाये हो उससे कहीं अधिक मूल्यवान् वस्तु ले उड़ूँगा। मैं बदला लेके रहूँगा।

गोपालक — जिसे हमने आज पकड़ा है उससे बढ़कर हमारे पास कोई निधि नहीं है। इसलिये तेरी शेखी बेकार है।

वत्स — वह तो मुझे देखना है। (विकर्ण उधरसे निकलता है) हमारे रथके पीछे सवारी करता हुआ तुम्हारा भाई ही था न? वह इधरसे निकल रहा है। बुला दो जरा।

गोपालक — विकर्ण, इधर आ!

वत्स — पास आओ गोपालकके भाई, आओ गले मिल लो, अभीतक तुम उसके कारण प्यारे थे पर महासेनसुत, जबसे तुम्हें देखा है मैं तुम्हें चाहने लगा हूँ।

विकर्ण — वत्स उदयन, मैंने युद्धमें सेनाके अग्रणीके रूपमें तुमसे मिलनेकी आशा की थी और चाहा था कि रणकौशलमें तुम्हारा आधा होकर ही तुमसे प्रशंसा पा सकूँ। किन्तु यह ज्यादा पास है, ज्यादा अच्छा है।

वत्स — तुम सुदर्शन हो। तुम्हारे पिताके दो अभिजात पुत्र हैं। तुम्हारे इस कीर्ति-मान् वंशमें और कोई नहीं है?

गोपालक — केवल एक बहन।

वत्स — उसका नाम तो जग जाना है।

गोपालक — तुम उसे देखोगे?

वत्स — ओह, तब अवन्तीमें लाभ-ही-लाभ मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। आहा, सुन्दर तारोंभरी रातमें पेड़ोंपर बैठे लाखों झींगुर एक ही तीव्र गगन-भेदी ध्वनिसे गा रहे होंगे। हम उस सुवर्ण नगरीमें जल्दी पहुँच जायेंगे न? किन्तु तबतक

रात हो जायगी और मैं वहांके विख्यात मंदिरोंको भली भांति न देख पाऊंगा।

गोपालक — उज्जैनी दिखायी दे इससे पहले उषा हमारे रथोंसे आगे बढ़कर आकाशसे चढ़ चुकी होगी। हरावल नजदीक ही है। चलो जल्दी उसके साथ हो लें। रूमण्वानके सैनिक बस पीछे ही समझो।

वत्स — नहीं वे न आयेंगे। मेरा भाग्य ही बिना किसी रोक-टोकके मेरे साथ उज्जैनीतक चलेगा।

गोपालक — दलपतियो, कूच करो। मेरे पिताकी दिशामें सन्देशवाहकोंको सरपट भेजो। वे वहाँ जाकर इस पुरस्कारकी घोषणा करें। शिव हमें देखकर मुस्कराये हैं।

वत्स — और विष्णु मुझे देखकर। विकर्ण, हमारे साथ आ जा और मुझसे बातें करता चल।

अंक ३

दृश्य १

अवन्ती राजमहलमें राजप्रासादका एक कोष्ठ

महासेन, अंगारिका

महासेन — मैं फिर भी जीत रहा हूँ, भले ही गौरवभरे हथियारोंसे न सही। वह पकड़ा गया है। अब, विजयी युवक वत्स मेरा है। मेरे हाथोंमें बन्दी है।

अंगारिका — तुम हनुमानकी नाईं सूर्यको अपनी बगलमें दबाये हुए हो। तुम क्या करोगे उससे ?

महासेन — उसे अपना चन्द्र बनाऊंगा और उसकी ज्योतिसे प्राचीकी रातोंमें चमकूँगा।

अंगारिका — यह न कर सकोगे।

महासेन — मेरे घरकी प्रिय अविश्वासिनी, मैं कर सकता हूँ। मेरे सौभाग्य, जब मैं तुझे अपने बलबूतेपर तेरे अंधकारमय जगत्‌मेंसे, भयभीत अवस्थामेंसे खींचकर अपने सूर्य, पवन और नीलगगनके संसारमें लाया था, तबसे क्या मैंने अपनी हर इच्छा पूरी नहीं की है ?

अंगारिका — हां, बलसे। किन्तु यह कार्य तो बलसे नहीं हुआ। चण्डमहासेन ! क्या अपनी प्रकृतिके विपरीत चलकर भी विजयकी आशा रखते हो ?

महासेन — तू मेरा बल है, मेरी सौभाग्यलक्ष्मी है, किन्तु मंत्री नहीं।

अंगारिका — ना, मैं बस आज्ञा मानती हूँ और देखती रहती हूँ। तुम्हारी अजीब दुनियामें मेरे लिये यही काफी है क्योंकि मैं अपने पथको तुम्हारे प्रकाशसे आलोकित नहीं कर सकती। मनुष्य ऐसा प्राणी है जिसे सूर्यके प्रकाशने अंधा कर दिया है और देखते हुए भी भूलें करता रहता है किन्तु जो जगत् तुम्हारे लिये अंधकारमय है, उसमें विचरनेवालोंके पास देखनेवाली आंखें हैं। मैं उन जैसी हूँ क्योंकि छायाओंने मेरी आत्माको पाला-पोसा है।

महासेन — क्या देखती है तू ?

अंगारिका — कि वत्स तुम्हारी महानताके लिये अतिमहान् है, तुम्हारे कौशलके

लिये अतिकुशल है। वह तुम्हारे दबावसे न झुकेगा।

महासेन — तू, दानवीतक झुक गयी; फिर यह तो एक सुकुमार किशोर ठहरा जो ओस-कणों-सा या हर धकेलती हुई लहरसे झूम उठनेवाली कमलिनी-सा है। वीर? हां, आर्यकुमार तो सभी वीर होते हैं।

अंगारिका — तुम्हारी पुत्री वासवदत्ता वह लहर है जो इस कमलिनीको बहा ले जायगी!

महासेन — तूने देखा है?

अंगारिका — यह अच्छा है। यही चीज मेरा हृदय भी चाहता है। मेरी बेटीको साम्राज्य मिलेगा।

महासेन – नहीं, तेरे बेटेको।

अंगारिका — चाहे जिसे मिल जाय। इस युगका सर्वोत्तम पुरुष उसके हृदयमें वास करेगा। दर्प और प्रेम उसके दो अवगुण हैं, इसमें दोनों ही संतुष्ट होंगे। वह सुखी होगी।

महासेन — मेरी रानी, उसे यहां बुला लो। उसे जो करना है वह सिखा दिया जाय।

अंगारिका — उसका हृदय सिखायेगा। वीणा, राजकुमारीको यहां मेरे पास बुला ला।

महासेन — अरे हृदय, वह तो एक खतरा है, एक उन्माद है। विचारशील मनको ही छा जाने दो।

अंगारिका — महाराज, हम स्त्रियां हैं।

महासेन — नहीं, राजकुमारियां हो। मेरी पुत्रीमें गौरव, अभिमान, बुद्धि और उदात्त आशाएं हैं। वह ग्राम्य स्वभाववालोंकी तरह व्यवहार न करेगी।

अंगारिका — प्रेम उन सबको पदच्युत कर देगा और अपने कुसुम-कोमल चरणों तले दबा देगा।

महासेन — तूने हमेशा मेरे विचारोंका विरोध करना पसन्द किया है।

अंगारिका — यह उन लोगोंका तुच्छ प्रतिशोध है जिन्हें क्रियामें तुम्हारी आज्ञाका पालन करना ही पड़ता है। यह तुम्हारी ही सीख है महाराज!

(वासवदत्ता प्रवेश करती है और अपने माता-पिताको प्रणाम करती है)

अंगारिका — राजकीय बुद्धि, स्त्रीके मस्तिष्कको अपने अत्यन्त प्रिय विचारोंका, राजनीति और शासनकलाके उद्देश्यसे उपयोग करना सिखाये।

महासेन — मेरी बेटी, वासवदत्ता, तू ही मेरा सुख है। जिन माता-पितासे तेरा सृजन हुआ था उनका दीर्घ, प्रिय ऋण चुकानेका यही समय है। मेरी बात सुन, तेरी बुद्धि तीक्ष्ण है, तू झट समझ लेगी। कौशाम्बी नरेश वत्स, जो मेरा प्रति-

स्पर्धी, शत्रु और मेरे भाग्यका सबसे बड़ा अड़ंगा है, आज कैदी बनकर अवन्ती आ रहा है। वासवदत्ता, मैं चाहता हूँ कि वह तेरा पति बने और साथ ही तेरा गुलाम भी। अभी जो मेरा प्रतिरोध करता है, वह तेरे कारण अन्य वंशोंकी तरह मेरे अधीन हो जाय। तब तेरे पिताका भाग्य अपनी सीमा लांघ सकेगा और तब तेरे कुल, तेरे देश और सारी पृथ्वीपर राज्य करेगा ! यह मेरा संकल्प है, मेरी बेटी, क्या तेरी भी यही इच्छा है ?

वासवदत्ता — पिताजी, आपका संकल्प मेरा संकल्प है और वही नियतिकी इच्छा है। आप जिसे चाहें मुझे दे सकते हैं, इसमें आज्ञा-पालनके सिवा मेरा भाग हो ही क्या सकता है ?

महासेन — एक ज्यादा बड़ा भाग जो तुझे मेरा साथी और सुनहरा हथियार बनाता है क्योंकि तेरे बिना वत्सपर मेरी कोई पकड़ न रहेगी। बेटी, तू वह जंजीर होगी जो उसे मेरे सिहासनके साथ बांधे रखेगी। उसके मनको जीतनेके लिये तू ही राजदूत होगी और उसकी अधीनस्थ इच्छापर मेरी ओरसे तू ही राजप्रतिनिधि होगी।

वासवदत्ता — वह इसे स्वीकार करेगा ?

महासेन — हां, अगर तू चाहे।

वासवदत्ता — पिताजी, जब आपकी इच्छा है तो मैं यही चाहती हूँ। आप समस्त पृथ्वीपर राज्य करें यही मेरी अभिलाषा है। मेरे राज्यका गौरव मेरा सबसे बड़ा और सबसे प्यारा हित है।

महासेन — तूने मेरे पाठ याद रखें हैं। उन्हें भूलना मत। अरे, तू सर्वसामान्य प्रकृतिवालों जैसी नहीं है। तू अपनी महत्त्वाकांक्षाको पहला स्थान न देगी और न एक अंधे कोलाहलपूर्ण हृदयका समर्थन करेगी।

वासवदत्ता — अपने देश और तातके प्रति कर्तव्य ही मेरा शासन करेगा।

महासेन — मैं तेरे स्त्रीसुलभ कौशलको यह सिखाना नहीं चाहता कि इस युवकको कैसे गढ़ा जाय, तुझे रक्तके आवेशोंके बारेमें चेतावनी भी नहीं देना चाहता। तेरा हृदय और तेरी इंद्रियां सामान्य नारीसे कहीं ऊपर हैं। तेरा अपना मन है।

वासवदत्ता — तात, यह मेरा गौरव है कि आप मुझे अपने महान् भाग्यका चालक यंत्र बनाकर सम्मानित करते हैं। मैं बस वही हूँ।

महासेन — तू हृदयकी इच्छाके अधीन तो न होगी ?

वासवदत्ता — उसे इच्छा करने दो किन्तु मैं तिलभर न झुकूंगी। मैं आपकी बेटी हूँ। बड़े-से-बड़े राजाओंको भी मेरी कृपाकी भीख मांगनी होगी और उसे

अनपेक्षित सुखकी तरह स्वीकारना होगा।

महासेन — तू मेरी शिष्या है। तेरे श्रोता-मस्तिष्कपर शासन-कलाके व्याख्यान बेकार नहीं गये? मेरी रानी, देखा?

अंगारिका — महाराज, तुमने अपनी पुत्रीके साथ सन्धि कर ली? मानो यह शिशु कुछ समझता हो! जाओ, जाओ और मुझे अपनी बच्चीके साथ छोड़ दो। क्योंकि मैं उसके साथ एक दूसरी भाषामें बात करूंगी।

महासेन — लेकिन मेरे उद्देश्यके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं!

अंगारिका — तुम्हें उसका डर है?

महासेन — ना, लो, उससे बातें कर लो!

(कक्षसे जाते हैं)

अंगारिका — (वासवदत्ताको बाहुओंमें भरते हुए) यहीं विश्राम कर मेरी बच्ची, जल्दी ही एक और वक्ष तेरा आश्रय बन जायगा। तूने महाराजकी बातें सुनीं, अब अपनी मांकी बातें सुन। मेरी आनन्ददायिनी, तुझे स्त्रीके हृदय और शरीरकी उग्रतम मधुर अग्निपरीक्षाको जानना होगा। ओ मेरी बेटी, तू अग्निका निवास बनेगी, जीवित देवोंको देखेगी और जो कुछ तूने जाना, समझा है वह सब एक ज्वालामें पिघल जायगा और फिर पुनर्जन्म लेगा। मैं जो कह रही हूँ उसे तू अभी नहीं समझती किन्तु तेरी आंखें अनेक निद्राविहीन रातें व्यतीत करें उससे पहले ही तू समझ लेगी। मेरी बच्ची, फूल फूल होनेके लिये खिलता है, जन्म देनेवाली क्यारीको ऊंचा उठानेके लिये नहीं। तू मांकी कोखसे पिताके लिये नहीं जंन्मी है, तेरी मांने तेरे स्वभावके विकास और हृदयके उल्लासके लिये, पति और बच्चोंके लिये तुझे जन्म दिया है। मेरी बेटी, जो तुझे आलिंगनमें भरे उसीको देव समझ ताकि तू उसकी देवी बन सके। तुम्हारी विवाहित भुजाएं स्वर्ग बनें, उसकी इच्छा तेरी बन जाय और तेरी इच्छा उसकी। उसका सुख ही तेरा राजसी प्रताप हो। हे वासवदत्ता, जब तेरा हृदय जाग उठे तो तू अपने सम्राट हृदयका आदेश पालना, स्पष्ट द्रष्टा स्वार्थी देवोंके प्रति निष्ठा रखनेकी जरूरत नहीं। अभी अपने पिताकी इच्छानुसार कर, जब देवता जागेंगे तो वे अपनी इच्छानुसार करेंगे। हां, काप ले फिर भी किसीसे न डर। बेटी, तेरी मां तेरी निगरानी कर रही है।

(वासवदत्ताको अलग करके चली जाती है)

वासवदत्ता — मैं मांको सबसे ज्यादा प्यार करती हूँ लेकिन बिलकुल समझ नहीं पाती। मेरा मन हमेशा पिताजीके विचारोंको ग्रहण कर सकता है। अगर

मुझे विवाह करना ही पड़े तो उससे करूंगी जिसपर मैं शासन कर सकूँ। वत्स ! वत्स उदयन ! मैंने सिर्फ दूर-दूरतक फैला नाम ही सुना है। लेकिन वह पुरुष कैसा है? एक ज्वाला? एक पुष्प? या गोपालक-सा गौरवशाली या कुन्दन-सा सुन्दर, कोमल आंखोंवाला युवक? मेरा हृदय जाननेके लिये तड़प रहा है।

दृश्य २

वही स्थान

महासेन, अंगारिका, गोपालक और वत्स

गोपालक — अवन्तीके महाराज चण्डमहासेन, मैंने तुम्हारी इच्छा पूरी कर दी। तुम्हारे खतरनाक शत्रुको, उस किशोर को जो तुम्हारे प्रौढ़ विजयी कालसे प्रतिस्पर्धा करता था, बन्दी बनाकर तुम्हारे चरणोंमें ले आया हूँ।

महासेन — गोपालक, तूने बहुत अच्छा किया। तू सचमुच मेरा बेटा है। वत्स...

वत्स — जय हो, पश्चिमके अधिपति। हम युद्धमें बराबरीसे मिल चुके हैं। अब मेरी इच्छा हुई कि तुम्हारी महिमा और तुम्हारे पराक्रमके पास किसी और तरहसे आऊं।

महासेन — इच्छा हुई! 'घमण्डी युवक! नहीं, तेरी नियति तुझसे क्रुद्ध हो गयी है कि तू अधिक सौभाग्यशाली लोगोंका सामना करता है।

वत्स — तुम यही समझो। लो, मैं उपस्थित हूँ। राजन्, तुम मेरे साथ क्या करना चाहते हो और मुझे जबर्दस्ती अपने महलमें क्यों लाये हो?

महासेन — ताकि तू मुझे अपना एकमात्र स्वामी, अधिराज और प्रभु माने और जैसे सिन्धुसे दक्षिणतक लोग मेरे जुएको उठाये हुए हैं वैसे ही तू भी उसके नीचे आकर मेरी पूजा करने लगे।

वत्स — तुम गलती कर रहे हो। तुम्हारे सामने महान् कौशाम्बी नरेश नहीं है; केवल दिव्य पितरोंके वंशज शतनीकका बेटा वत्स ही है।

महासेन — और कौशाम्बीका तरुण प्रभुत्व, अगर तुम्हारे जैसे हिरण्यमय पात्रमें नहीं है तो कहां है?

वत्स — जहां उत्कृष्ट कौशाम्बीमें मेरा सिंहासन विराजमान है। तुम्हें इतना तो

मालूम होना चाहिये था कि राजसत्ता राजाओंसे ऊपर होती है। अगर वत्स नालायक हो, वत्स कैद हो जाय या मारा जाय तो भी उसे कैद नहीं किया जा सकता, उसे मारा नहीं जा सकता। राजत्व हमारे क्षुद्र मानवीय रूपोंसे परे है। यह एक प्रजाकी महानता है। हे राजन्, वही परीक्षित था, अर्जुनका बीज, जन्मजेय, वही शतनीक, वही वत्स, और जब वत्स न रहेगा तब भी वह हजारों नरेशोंमें अमर जियेगा।

महासेन — तू जैसा अपरिपक्व किशोर दिखता है वैसे ही बोलता भी है, तेरे विचार हवामें उड़ते हैं; परिपक्व मन पृथ्वीकी नम्र निश्चितताके निकट रहते हैं और उसका स्पर्श पसन्द करते हैं। मैं तेरे इस मनोहर शरीरको यहां पा कर ही संतुष्ट हूँ जो राजत्वकी धरती है क्योंकि मैं उसके साथ सम्बन्ध रखता हूँ, किसी ऊंचे अदृश्य आकारहीन विचारके साथ नहीं।

वत्स — मेरा शरीर! उसके साथ मनमानी करो। वह जितना तुम्हारी इच्छासे है उतना ही मेरी मरजीसे तुम्हारा गुलाम और कैदी है। हे राजन् तुम वत्सके साथ जैसा चाहो व्यवहार करो किन्तु मैं कौशाम्बीके राजत्वको, किसी तरह बंधक न रखूंगा। लेकिन वत्स तुम्हारा अपना है और तुम्हारे हाथोंमें है। तुम्हारे वज्र हस्तसे मैं उसकी रक्षा न करूंगा।

महासेन — मेरे कैदी, तुम इस तरह मेरे उद्देश्यसे भाग न सकोगे।

वत्स — मैं उसे गले लगाता हूँ। अगर मैं भाग निकलना चाहता तो इस समय यहां उपस्थित न होता। सींकचे या दरवाजे मुझे बन्द नहीं कर सकते।

महासेन — लेकिन, लड़के, मैं तुम्हें अपने सशस्त्र संतरियोंसे भी अधिक पक्के जेलरों-के हाथमें सौंपूँगा। उनके आगे तू अपने असहाय हाथ उठानेकी हिम्मत तक न कर पायगा।

वत्स — ढूंढ़ लो ऐसे, मैं संतुष्ट हूँ।

महासेन — अपने गर्वीले व्यवहारमें जरा नम्रता ला। तू वत्स हो या महान् कौशाम्बीका राजा, यहां तो बस मेरा कैदी और गुलाम भर है।

वत्स — मैं तुम्हारी कठोर भर्त्सनाको वैसे ही स्वीकारता हूँ जैसे अधिक ज्ञानी देवोंकी दी हुई अवस्थाको मानकर उनके विचारोंके अनुसार अपनी वृत्ति और क्रिया-ओंको मोड़ देता हूँ।

महासेन — वत्स, तुमने मेरे राजकीय संकल्पका सामना किया जो सभी देशोंको अपनी निजी जमीन बनाकर अपने शासक हलसे जोतनेके लिये खेत बनाना चाहता था। तुमने मेरे साथ युद्ध किया और उस युद्धद्वारा मैं तुम्हें वशमें न कर

पाया, यह तुम्हारा अनुपम गौरव है। अब मेरा उच्च अबाध सौभाग्य तुम्हें यहां खींच लाया है। वीर युवक, तुम्हें गुलाम बनकर मेरी आज्ञा माननी होगी। तुम यह नियम जानते हो कि जो अपना साम्राज्य ऊपर स्वर्गमें देवोंको यज्ञमें दे डालता है उसके यहां अन्य राजाओंको सामान्य सेवक बन टहल करनी पड़ती है। और कई गर्वीले नरेश इस तरह करनेके लिये वाधित हुए हैं, उनका उदय होता हुआ भाग्य काल-कवलित हो चुका है। अब मैं अपने राजसी दिनोंको राजत्वका उत्कृष्ट गंभीर अनवरत यज्ञ बनाऊंगा। तुम भरतके उत्तराधिकारी हो, उच्च सिंहासनारूढ़ सम्राटोंके बेटे और संसारमें मेरी बराबरी करनेवाले हो। तुम्हारे दीर्घ जीवनको मैं अपनी मदोन्मत्त महानताके प्रतीक और आभूषणके रूपमें रखूँगा; मेरे गर्वीले परिवारके राजसी सेवक! वत्स, तुम्हारी कोमल वयके अनुरूप, मैं तुम्हें अपनी बेटी वासवदत्ताका दास बनाता हूँ। उसकी दासियां तुम्हारी चौकी करेंगी, जिनके रमणीय किन्तु दृढ़ घेरेको तोड़नेकी तुम्हारी भी हिम्मत न होगी। क्या तुम सहमत हो?

वत्स — न केवल सहमत हूँ बल्कि गर्वभरे अभिलाषी अन्तरसे उसका स्वागत करता हूँ क्योंकि वासवदत्ता का सेवक होनेमें सुख और प्रतिष्ठा है, बड़े सौभाग्यकी देन है। इससे मेरी महानतामें चार चांद लगेंगे, उसमें कमी न आयगी, महाराज महासेन।

महासेन — गोपालक, तब मेरा यह उपहार अपनी बहनके चरणोंतक ले जाओ। इसके पास देवोंकी वाञ्छा करता संगीत है, प्रकृतिको मात कर देनेवाली तूलिका और स्वर्गके तेजस्वी गंधर्वोंका सिखाया हुआ गान है। वह इनके लिये आज्ञा दे सकती है या इन्हें ले सकती है क्योंकि जो कुछ वत्सका है वह उसीका है। लड़के, तुम मुस्काते हो?

वत्स — तुमने जो कुछ कहा वह बिलकुल सच है। तो भी मैं यह देखकर मुस्कराया कि बलवान् और घमण्डी मानस अपनी क्रियाओंके प्रभु होनेके बारेमें कैसे-कैसे स्वप्न देख सकता है।

(वासवदत्ताके कक्षकी ओर जानेवाले दरवाजेसे गोपालक और वत्स अंतःपुरकी ओर जाते हैं)

महासेन — अंगारिका, लड़का मधुर है। डींग मारता है और झुकता भी है।

अंगारिका — राजन्, उसने जो कुछ दिखाया है आप वही तो देखते हैं।

महासेन — तो क्या अब तू इस लड़की-जैसे सुन्दर, मनोहर बालकपर गंभीर विचारों और सूक्ष्म क्रियात्मक निपुणताका आरोप करेगी? मैंने बहुत अच्छा किया,

मैंने अन्तरकी गहराईसे प्रेरणा पायी थी।

(वह बाहरी महलकी ओर जाता है)

अंगारिका — (उनके पीछे देखती हुई) प्रेरणा तो पायी थी लेकिन वत्स और लड़की-के लिये। हम अपने लक्ष्यकी खोजमें विधिके लक्ष्यको सिद्ध करते हैं।

दृश्य ३

वासवदत्ताके महलका एक कक्ष

वासवदत्ता, मंजुलिका, अंबा

वासवदत्ता — तूने उसे देखा है?

मंजुलिका — हां।

वासवदत्ता — तो फिर बोल न, कुटिल मौनकी मूर्ति, जब तेरी इच्छा होती है तब तो तू खूब बक-बक करती है।

मंजुलिका — ओ साकार लक्ष्मी, मैं इसके सिवा कह ही क्या सकती हूँ कि जबसे तुम्हारे चरणोंने इस धरतीको धन्य किया है तभीसे तुम सौभाग्यवती रही हो? सौन्दर्य, समृद्धि और आनन्द तुम्हारी घड़ियोंमें छलकते रहते हैं, तुम्हारा वैभव भी अमित और अपार है। अब पृथ्वीका सबसे बड़ा नरेश तुम्हें सेवकके रूपमें दिया गया है।

वासवदत्ता — यह तो सबसे बड़े नरेशका सौभाग्य है मेरा नहीं। क्योंकि मेरे पिता महाराजोंके अधिराज हैं, अब कोई भी वस्तु मुझे अधिक ऊंचा न उठा सकेगी। ये बेकार-सी बातें हैं। मैं जो सुननेके लिये अधीर हो रही हूँ वह तो तू सुनाती नहीं। कैसा है वह?

मंजुलिका — मैंने सुवर्ण मानव-शरीर धारण किये साक्षात् कामदेवको देखा है।

वासवदत्ता — (आनन्दभरे स्मित के साथ) इतना सुन्दर?

मंजुलिका — ठीक तुम्हारे जैसा, बल्कि तुमसे भी बढ़कर।

वासवदत्ता — बढ़कर!

मंजुलिका — चिल्लाओ नहीं। उनकी आंखें देवोंकी-सी गर्वीली हैं और उनपर स्मित खेलता है। उनकी आवाज वसन्तकी आकस्मिक पुकार है।

वासवदत्ता — प्राणप्रिय सखी, ले इसे पहन ले (अपनी सिकड़ी उसके गलेमें डालती

है)

मंजुलिका — मेरा सुख तो इसीमें है। अपने उपहार धरे रहो।

वासवदत्ता — यही समझो न कि तुम्हारे गलेमें मेरा प्रेम ही पड़ा है। तूने सचमुच उसे देखा है? मेरे मनको बहकानेके लिये तो नहीं कहा था न? मेरी परम प्रिय सखी, वहां जो भी देखा हो सबका सब मुझे सुना दे। मुझे इन बातोंकी बहुत परवाह तो नहीं है फिर भी जानना चाहती हूँ।

मंजुलिका — (गोपालक और वत्सको दिखाती है) भले तुम्हारी आंखें परवाह न करें, फिर भी देख लो।

वासवदत्ता — मेरे भैया, कितने दिनोंतक मुझसे दूर रहे!

गोपालक — तेरे लिये ही तो दूर गया था! मेरी बहिना, मैंने तेरे चरणोंपर बहुत कुछ चढ़ाया है यह जानते हुए कि मेरे उपहार तेरे स्मितके लायक नहीं थे, पराजित सौराष्ट्रसे जीती हुई यह राजकुमारी भी तेरे योग्य उपहार नहीं थी किन्तु अब मैं सचमुच तुझे कुछ दे रहा हूँ। यह है विख्यात वत्स उदयन, कौशाम्बी नरेश, जिसे मैं तेरी सेवा करनेके लिये गुलाम बनाकर लाया हूँ। तेरा यह शाही गुलाम संगीतकार, गायक और परिचर है। उसे अच्छी तरह देखकर बता मैं अधिकारी हूँ या नहीं।

वासवदत्ता — बहुत प्रेमके अधिकारी, प्यारे भइया। हम जैसोंमें उपहारका कोई मूल्य नहीं होता किन्तु तुम्हारा प्रेम ही उसे मूल्यवान् बनाता है।

गोपालक — तुम दोनोंसे मुझे प्रेम है। मेरा यह उपहार मुझे बहुत मूल्यवान् लगता है क्योंकि मेरे हाथोंने उसे पकड़ा, उससे पहले मेरे हृदयने उसपर अधिकार कर लिया था। इसलिये तू भी उससे प्रेम कर। इस तरह तू मुझसे दुगना प्रेम करेगी।

वासवदत्ता — (वत्सको कनखियोंसे देखते हुए) तब तो यह मेरा गुलाम होते हुए भी प्रिय और मूल्यवान् है।

गोपालक — क्या हम सभी तेरे सेवक नहीं हैं? मेरी बहन, हे वासवदत्ता, तेरी भव्य मनोहरता, लालित्य और सौन्दर्य तथा तेरी आत्माकी मधुरिमाके आगे यह विशाल धरती भी नगण्य-सी है।

वासवदत्ता — हैं, ऐसा है?

गोपालक — मेरी बहन, तू लक्ष्मीके हृदयसे जन्मी थी। हम तेरे भाई यह अनुभव करते हैं कि हम नहीं तू ही पिताके प्रतापी नक्षत्रकी उत्तराधिकारी है। और सारी धरती तेरी मेखलासे बंधी है।

वासवदत्ता — मुझे मालूम है भाई।

गोपालक — बचपनसे ही लगता था कि तू यह सब जानती थी और लापरवाहीसे शासन करती थी। रानी, अब तू जानती है तो ले कौशाम्बी और अयोध्याको अपने वंशकी जागीरके रूपमें स्वीकार कर।

वासवदत्ता — (वत्सकी ओर दृष्टिपात करते हुए और उसकी आंखोंसे बचते हुए) यह मेरा गुलाम है तो वे भी मेरी हो चुकीं।

गोपालक — ना बहन, मेरी बात अच्छी तरह समझो, उन्हें अपना लो। वत्स, तुम अपनी मालकिनकी सेवा-टहल करो और उसकी आज्ञा मानो।

(वह बाहर जाता है)

वासवदत्ता — (स्वगत) यह एक लड़का है, अद्भुत कुन्दन-सम लड़का। मैं अवश्य अधिक बड़ी हूँ! मैं उसके साथ खेल सकती हूँ। कोई डरकी बात नहीं है, कोई मुश्किल नहीं है। (वत्ससे) तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारे ही मुँह-से सुनूँ जरा।

वत्स — वत्स।

वासवदत्ता — तुम कांप रहे हो वत्स। क्या डर लग रहा है?

वत्स — शायद; आनन्दातिरेकसे भी डर लगता है।

वासवदत्ता — (सस्मित) मैंने नहीं सुना। मेरा भाई तुमसे प्रेम करता है। धीरज रखो। अगर जी-जानसे मेरी सेवा करोगे तो तुम्हें दुःखका कारण न मिलेगा। तुम कौशाम्बीके महाराज हो......

वत्स — लोग ऐसा कहते हैं।

वासवदत्ता — और अब मेरे सेवक।

वत्स — मेरा हृदय यही दोहराता रहता है।

वासवदत्ता — (सस्मित) मैंने नहीं सुना। कौशाम्बी नरेश, मेरे गुलाम, मुझे प्रसन्न करनेके लिये तुम क्या-क्या कर सकते हो?

वत्स — तुम्हें प्रशांत देवोंको विचलित करनेवाले गीत पसन्द हैं या धरतीपर स्वर्ग-की वीणा सुननी है? या फिर तुम जीवित सत्यकी रेखा और रंग चाहती हो जिनके आगे धरतीकी छायाएं फीकी पड़ जाती हैं। या असीम गहन मौनको सस्वर और साकार देखना चाहती हो? ये सब चीजें मेरे जन्मके समय मुझे मूक हिमालयपर घेरे किन्नरियों, विद्याधरों और गंधर्वोंकी भीड़ने, मेरा बाहरी मन विचारोंको पकड़ सके, उससे भी पहले, मेरे अन्दर मुस्काते शांत देवको दी थीं। इन सबको तुम्हें अर्पित कर सकता हूँ।

वासवदत्ता — वत्स, मैं इन सबको ग्रहण करती हूँ। जिन्दगीके जितने भी आभूषण तुम धारण किये हुए हो उन सबको अपनाती हूँ और फिर भी संतुष्ट नहीं हूँ।

वत्स — क्या तुम चाहती हो कि अपने सर्वविजयी धनुषसे सारी धरती जीतकर तुम्हारी बना दूँ? मुझे युद्धके लिये भेज दो समझ लो धरती तुम्हारी हो ली।

वासवदत्ता — मैं धरती ग्रहण करती हूँ फिर भी संतुष्ट नहीं हूँ।

वत्स — तो कहो तुम्हें अपने गुलामकी कौन-सी चीज खुश कर सकेगी? तुम वत्स-से क्या चाहती हो?

वासवदत्ता — क्या मैं जानती हूँ? तुम्हारे पास जो कुछ है, तुम जो कुछ कर सकते हो, और जो स्वयं तुम हो इससे रंचमात्र भी कम नहीं।

वत्स — सब कुछ तुम्हारा है।

वासवदत्ता — मैं बोलती भी हूँ और सुनती भी, पर न जाने क्या बोलती हूँ, तुम्हारा मतलब भी नहीं समझ पाती।

वत्स — अत्यंत गहरी बातोंको मस्तिष्क नहीं पकड़ पाता। हमारी आत्माएं अपने गूढ़ अर्थोंको जीवनमें उतारती हैं।

वासवदत्ता — (विक्षुब्ध मौन, जिसमें वह संयत होनेका प्रयास करती है) न जाने हम इस लहरमें कैसे बह चले? ऐसे शब्द मन और हृदयको तकलीफ देते हैं। छोड़ो इन्हें।

वत्स — लेकिन शब्द तो बोले जा चुके।

वासवदत्ता — उन्हें वहीं पड़ा रहने दो। वत्स, मेरे गुलाम, मुझे बहुत-से वचन दे चुके हो, तुम मुझे बड़े-बड़े उपहार देनेको तैयार हो। पर मैं तुमसे छोटी-छोटी चीजोंके लिये मांग करूंगी। लेकिन वह होंगी कठिन।

यह मेरा कैदी है मंजुलिका और अंबा, तुम इस लड़केपर पहरा रखो। तुम दोनों उसकी कारापति हो। जब मुझे उसकी जरूरत हो तब उसे मेरे पास ले आना। चलो वत्स, अपने कक्षमें जाओ। (वत्स नमस्कार करके उसके पांव छूता है) यह क्या करते हो? यहां इसकी इजाजत नहीं है।

वत्स — (छूता ही रहता है) यह नहीं? बड़ी मुश्किल है।

वासवदत्ता — (क्षुब्ध) तुम अति साहसिक गुलाम हो।

वत्स — मुझे कम-से-कम अपने चरणोंतलेकी धरती तो बनने दो।

वासवदत्ता — अरे! दूर करो इसे। तंग आ गयी मैं इससे। अंबा, देखना, कहीं वह तुम्हें घूँस न दे। या फिर उससे भी बुरा......।

अंबा — तुम्हें चिढ़ानेके लिये मैं अवश्य घूँस लूँगी। इसे रखेंगे कहां? मीनारवाले

कक्षमें जो उस अट्टालिकासे लगा है जहां तुम दूर्वादलपर अलसाती ज्योत्स्नामयी रातोंमें घूमा करती हो ?

वासवदत्ता — वहीं; वह स्थान सबसे नजदीक रहेगा।

अम्बा — (वत्सका हाथ पकड़कर) चलो।

(दोनों वत्सके साथ जाती हैं)

वासवदत्ता — क्या वह अपने स्मितके जादूसे मुझे अपने लक्ष्यसे डिगा देगा ? कितना सुन्दर है वह, कितना सुन्दर! मुझे डर है। एक सुखद-सा डर। किन्तु वह मेरा है, उसकी आंखोंने मेरा शासन स्वीकार कर लिया है। मैं उसके साथ मनमानी जरूर कर सकूंगी। मैंने उसे दूर कर दिया क्योंकि उसके शब्द मुझे क्षुब्ध करते थे लेकिन साथ ही आनन्द भी देते थे। उनमें जादू भरा है,—नहीं, शब्दोंमें नहीं, उसकी आवाजमें! नहीं, उसकी आवाजमें नहीं, उसके स्मितमें भी नहीं शायद, उसके मुख, शायद फूल-सी कोमल आंखोंमें, ऊंहुं, इन सबमें और इनके अतिरिक्त कुछ और भी है (सिर हिलाती हुई) मुझे डर है कि काम भारी पड़ेगा।

दृश्य ४

छतसे लगा मीनारवाला कक्ष

वत्स एक पलंगपर

वत्स — मैंने उसके बारेंमें जो स्वप्न देखे थे और जो कुछ सुना था, उसकी मोहिनी उन सबसे बढ़कर है। वह मेरी है। वह मेरे स्पर्शसे कांप उठी थी। मेरी आंखोंमें झांकते हुए उसकी आंखें तीन बार लजा गयी थीं।

(वह आंखें बन्द किये लेटा रहता है। मंजुलिका अन्दर आकर उसे ताकती रह जाती है)

मंजुलिका — (स्वगत) ओ स्वर्णिम प्रेम! तुम इस धरतीके नहीं हो। यह युवक भी वासवदत्ताका है! सब कुछ उसीका है, जैसे आज मैं उसकी हूँ और एक दिन सारी पृथ्वी उसकी होगी। (प्रकट) वत्स, तो तुम सो नहीं रहे ?

वत्स — मेरी आंखोंमें किसी औरकी छवि देखकर ईर्ष्यालु नींद बाहर ही प्रतीक्षा कर रही है।

मंजुलिका — तुम आज्ञा भंग करते हो। तुम्हें झटपट सो जानेकी आज्ञा मिली थी न ?

वत्स — नींद अवज्ञा करती है, मैं नहीं। किन्तु तुम भी तो जाग रही हो, यद्यपि तुम्हारे अन्दर तो ऐसे विचार न उठने चाहियें जो पलकोंको मुंदने न दें।

मंजुलिका — तुम क्या जानो ? मैं तुम्हारी जेलर हूँ और गश्त लगा रही हूँ।

वत्स — ओ प्रफुल्ल, तीव्रबुद्धि कारापति ! तुम बिना कारण चिंतत हो। स्वर्ग-के सुनहरे कटघरेसे कौन भाग निकलेगा ? तुम्हारा नाम मंजुलिका है न ? तुम्हारा तन भी धरतीकी समस्त ललित लताओंके कुंज जैसा है।

मंजुलिका — मेरा एक नाम और था किन्तु वह खतम होकर भुलाया जा चुका है।

वत्स — तब तुम सौराष्ट्रकी राजकन्या थीं ?

मंजुलिका — मैं अब भी बादलोंमें छिपा वही राजबीज हूँ, जैसे तुम कौशाम्बीके वंदी महाराज हो। गोपालक युद्धमें कैद करके मुझे वासवदत्ताके लिये तुच्छ भेंट बनाकर यहां ले आया।

वत्स — जब हमारे भाग्य एक-से हैं तो हमें मित्र बनकर ही रहना चाहिये न ?

मंजुलिका — किस निर्भीक उद्देश्यके लिये ?

वत्स — तुम्हें क्या मालूम कि मेरा कोई उद्देश्य भी है ?

मंजुलिका — काश, मैं पुरुष होती !

वत्स — तुम स्वाधीनता चाहती हो ? मेरी मदद करोगी ?

मंजुलिका — जिस स्वामिनीकी सेवा करती हूँ और जिससे प्यार करती हूँ उसके विरुद्ध किसी काममें नहीं।

वत्स — नहीं, उसकी अधिक सेवाके लिये, उससे अधिक प्रेमके लिये, उसे सारी आर्य धरतीकी रानी बनानेके लिये, अभिसंधि करो।

मंजुलिका — और मेरा पुरस्कार ?

वत्स — जब सब कुछ हमारा हो जाय तब अपने-आप ही ठीक कर लेना।

मंजुलिका — मैं सन्तुष्ट हूँ, पुरस्कार बहुत बड़ा होगा।

वत्स — चाहे जितना बड़ा हो।

मंजुलिका — अब मेरे भाग्यका प्रतिशोध होगा। मैं जानती हूँ कि तुम्हारा हृदय क्या चाहता है। तुम्हारी आंखें तृष्णाको खुले रूपमें लिये फिरती हैं। वत्स, वह तुम-से ऐसे प्रेम करती है जैसे एक अधखिली कली अद्‌भुत उषाके आगमनसे रोमांचित हो उठती है या कोई अर्धजागृत स्वप्न-द्रष्टा सूर्यालोकसे जगमगाते जगत्‌के अस्पष्टसे आरम्भका संकेत पा लेता है। अपनी सफलताके बारेमें शंका मत करो, वह उतनी ही निश्चित है जितना उषाका आगमन, क्योंकि

वह तुम्हारी है।

वत्स — इस मधुर आश्वासनके लिये मेरे हृदयकी कृतज्ञता स्वीकार करो।

मंजुलिका — मैं लोभी हूँ, बस कृतज्ञता ही ?

वत्स — तुम क्या लेना चाहोगी ?

मंजुलिका — वत्स, तुम्हारी उगंली पर जो अंगूठी है, वह अपनी उंगलीके लिये।

वत्स — (उसकी उंगलीमें पहनाते हुए) यह भी एक अधिक सुन्दर हाथपर ज्यादा खुश रहेगी।.

मंजुलिका — वत्स, तुमने तत्काल पुरस्कार दे दिया और वह भी अच्छा-सा। मैं तुम्हारा काम उत्साहपूर्वक करूंगी। किन्तु मेरा बड़ा पुरस्कार तो अभी भविष्य-के गर्भमें है।

वत्स — वह हमारी कौशाम्वीमें मांग लेना।

मंजुलिका — हां वहीं, अव सो जाओ।

वत्स — तुम्हारी सुखकर सहायतासे अब मैं सो सकूँगा। (मंजुलिका जाती है) संगीत मधुर है किन्तु मानव वीणाओंकी समृद्ध हृत्तन्त्रियोंपर शासन करना कहीं अधिक मधुर है। कला भव्य है किन्तु उसके साथ महान् उद्देश्यों-को मिलाना और अधिक भव्य है। गर्वीले, उग्र विरोधोंको तोड़कर खतरे और मुसीबतोंको स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना भव्यतर है। संगीत दिव्य है परन्तु दिव्यतर है प्रेम !

दृश्य ५

वासवदत्ताके कक्षमें एक कमरा

वासवदत्ता — मैं जो कहती और करती हूँ उसपर मेरा जरा भी अधिकार नहीं रहा। क्या यही वह आग है जिसके बारेमें मांने कहा था ? ओहो, यह तो मधुर है, कैसी मधुर है यह ! लेकिन मैं किसी अपने समान प्राणीका प्रभुत्व न स्वीकार करूंगी। वह आज्ञाकारी सेवककी तरह मेरी सेवा करे तो मैं उसके सुन्दर सिरपर वहुमूल्य कृपाओंका ढेर लगा दूंगी। वह मेरा है, मेरा अपना है। वह मेरा गुलाम है, मेरा खिलौना है जिसके साथ मैं मनमाना खेल कर सकती हूँ और वह मेरे साथ खेलनेका साहस न करेगा। लेकिन, शायद वह ऐसा साहस करता है। मुझे नहीं मालूम, मेरा ख्याल है कि वह ऐसी धृष्टता

कर बैठेगा। वह कोमल, ओजस्वी, वहादुर और सुन्दर है। मैं उसे बुलाकर डाटूँगी ताकि वह अपना स्थान समझ ले। मैं उसे कठोरतासे डाटूँगी। उसे दुस्साहस न करना चाहिये।

अरे मैं पिताकी वात प्रायः भूल-सी गयी लेकिन वह मेरी भी इच्छा थी। एकदम भूल जानेसे पहले मैं इस लड़केसे जबर्दस्ती एक वचन ले लेना चाहती हूँ। जब वह पूरी तरह मेरा अपना है तो क्या यह काम मुश्किल होगा? (वह पुकारती है) अंबा! वत्सको मीनारसे मेरे पास ले आओ। (स्वगत) उसका संगीत एक आवाज है जो मुझे पुकारती रहती है। उसके गान जंजीरें हैं जिन्हें उसने मेरे हृदयपर डाल रखा है। मुझे यह ज्यादा न सुनना चाहिये। इससे मैं भूल जाती हूँ कि मैं वासवदत्ता हूँ और वह मेरे कुलका शत्रु है; सिर्फ वत्सकी अनुभूति होती है, वत्सके ही विचार आते हैं, बन्दी हृदय वत्स-जगत्में ताल देता है और वत्सपर धड़कता है। यह न होना चाहिये। (अंबा वत्सको लाती है और पीछे हटती है) अंबा, जा। वत्स, मेरे सामने खड़े रहो।

वत्स — यह मेरी साम्राज्ञीकी आवाज बोल रही है।

वासवदत्ता — चुप रहो और अपनी आंखें नीची करो, मेरे गुलाम, ये आंखें मुझे बड़ी धृष्टतासे ताकती हैं।

वत्स — मेरी आंखोंको दोष न दो। वे एक गूँगे हृदयकी गतिका अनुसरण करके तुम्हारी पूजा करनेके लिये ऊपर उठती हैं।

वासवदत्ता — (कांपती आवाजमें) वत्स, सचमुच मेरी पूजा करते हो तुम?

वत्स — पृथ्वीकी एकमात्र देवी, हां।

वासवदत्ता — (नरमीसे) किन्तु, वत्स, लोग अपनी विनम्र आंखें इष्टके चरणोंमें जमाकर पूजा करते हैं।

वत्स — तो मुझे भी इसी तरह नम्रतासे अपने चरणोंकी पूजा करने दो। उनकी तन्द्रिल चन्द्रकिरणें मेरी आंखोंमें हों और मेरे हाथ स्वर्गमें उन फूलोंके नीचे हों जो इस ठंडी, लापरवाह धरतीको अनेक बार अपने स्पर्शसे धन्य करते हैं। अपने गुलामको इससे वंचित न करो। मुझे इस तरह पूजा करते हुए अपनी वाणीका सुखद आलाप सुनने दो।

वासवदत्ता — वत्स, तुम्हें इतनी धृष्टता न करनी चाहिये।

वत्स — ओ, जब तुम्हारी आवाज इतनी धीमी है तब भी प्रत्येक शब्द मेरी आत्मातक पहुँच रहा है।

वासवदत्ता — क्या तुम मुझे स्वतन्त्र न होने दोगे?

वत्स — हां, अगर तुम्हारी आज्ञा हो। पर ऐसी आज्ञा न देना।

वासवदत्ता — (उसके बाल सहलानेके लिये झुकती है) अगर तुम सचमुच, औंर गुलामकी तरह, पूजा करते हो, इससे अधिक कुछ नहीं, तो मैं आज्ञा न दूंगी।

वत्स — जब इसीका अर्थ सब कुछ है तो ज्यादा कैसे हो सकता है ?

वासवदत्ता — लेकिन तुम अगर मेरी सेवा करते हो तो तुम्हारा सब कुछ मेरा नहीं है क्या ? वत्स, मुझसे मेरी चीजको अलग क्यों रखते हो ?

वत्स — सब ले लो, सबपर अधिकार जमा लो।

वासवदत्ता — (संयत होती हुई) सबसे पहले कौशाम्बी दो।

वत्स — वह तुम्हारी होगी, तुम्हारे चरणोंका एक रत्न।

वासवदत्ता — और वत्स, अपना राज्य भी दो......मेरी इच्छाके अनुसार शासित होनेके लिये।

वत्स — वह भी तेरा होगा। तेरे वैभवका एक उपवन-सा।

वासवदत्ता — होगा ?

वत्स — क्या वह दूर नहीं है ? मेरी रानी, हमें वहांतक जाना पड़ेगा, तुम्हें लेनेके लिये और मुझे देनेके लिये।

वासवदत्ता — मैं वहां जाना तो चाहती हूँ। लेकिन उदयन, तुम्हें वचन देना होगा और उस वचनसे बंधे रहना होगा कि और कोई कौशाम्बीकी रानी न बनेगी और तुम मेरे सेवक-स्वरूप, मेरे सिंहासनके पास आज्ञापालनका व्रत लिये हुए बने रहोगे।

वत्स — केवल तुम ही मेरे हृदयकी रानी होगी। हां, अगर तुम चाहो तो मेरे विचारों-पर, मेरी आशाओंपर, मेरे उद्देश्योंपर अपना निरंकुश शासन चला सकती हो। लेकिन मेरी मधुर साम्राज्ञी, तुमने अपनी आज्ञाकी अवज्ञा करनेका आदेश दिया तो मैं उसे न मानूँगा।

वासवदत्ता — (सस्मित) मैं इस अपवादका अधिकार देती हूँ। (संकोचके साथ) किन्तु वत्स, यदि मैं तुम्हें अपने तात, महामहिम चंडमहासेनकी प्रजाके रूपमें राज्य करनेका आदेश दूँ ?

वत्स — मेरी रानी, वह अमान्य होगा ?

वासवदत्ता — अमान्य ? और तुम्हारी शपथ ?

वत्स — किसी दूसरे सम्राटकी सेवा करना मेरे लिये राजद्रोह न होगा क्या ?

वासवदत्ता — (उद्विग्न और साथ ही प्रसन्न होकर) आह, तुम तो मेरे साथ खिलवाड़ कर रहे हो।

वत्स — नहीं, मेरी रानी नहीं, जो पूरा-पूरा मेरा है उसे पूरी तरह लें लो। लेकिन यह तो बहुतसी अन्य आत्माओंकी संपत्ति है।

वासवदत्ता — किनकी ?

वत्स — उनकी नामावलीका अंत नहीं। सबसे प्रथम हैं भरत जिन्होंने इस आर्यावर्तपर शासन किया जो अब उनका नाम धारण किये है, और महान् दुष्यंत तथा पुरुरवाके जैसे विख्यात वीर और उनका अनुपम वंश, फिर अर्जुन परीक्षित और उनका वंश जिन्हें गद्दीपर बिठानेके लिये स्वयं भगवान् अवतरित हुए थे। और वे सब जो हमारे पीछे आयेंगे, मेरे और तुम्हारे उत्तराधिकारी क्योंकि तुमने मेरा वरण किया है और सारे देशके हजारों लोग और कुरु पितृगण तथा पीछे आनेवाली प्रजा; इन सबकी सहमति होनी चाहिये।

वासवदत्ता — तुम्हारे विचार बहुत ऊंचे हैं। लेकिन अगर तुम्हारी जिन्दगीको यहींपर कारागार मिले तो ? मेरे पिता वज्र-कठोर और निष्ठुर हैं।

वत्स — क्या तू सचमुच अपने हृदयसे यह चाहती है ? वत्सका पतन तेरा अपना पतन नहीं होगा क्या ?

वासवदत्ता — तुमने मेरे शासनमें रहनेका वचन दिया है न ?

वत्स — जब तुम कौशाम्बीके सिंहासनपर विराजमान होगी तो तुम्हारी हर आज्ञा मानूँगा, यहाँ तुम्हारे पिताका कैदी बनकर नहीं, वहाँ तुम्हारा बनकर।

वासवदत्ता — जाओ, वत्स, छोड़ दो मुझे। अंबा, इसे मुझसे दूर कर।

अंबा — (प्रवेश करते हुए, वासवदत्ताके कानमें) अब किसे घूँस मिली ? अब हम सब राजद्रोही बन गये !

(वत्सको लेकर जाती है)

वासवदत्ता — ओहो, कैसा आनन्द होता अगर वह और यह सब केवल मेरा ही होता ! अहो, उसकी और समस्त पृथ्वीकी रानी होनेमें कैसा गौरव है ! पिताके घरमें विद्रोही बन रही हूँ।

अंक ४

दृश्य १

राजमहलका एक कक्ष

अंगारिका, वासवदत्ता

अंगारिका — तू अच्छा गाने लगी है। तेरे गीतमें वत्सकी कलाकी भनक आ गयी है। (वासवदत्ताको अंकमें भरती है) मेरी बेटी, मेरी ओर देख, मुझे अपनी आंखोंमें झांकने दे और उनके मौनमें अपने संजोये हुए अमूल्य विचारों-को समझने दे। तू जानती है न कि मनुष्यकी पलकोंके बीच उसके धड़कते हृदयके रहस्योंको पढ़ सकती हूँ? मैं वासवदत्ताकी आंखोंमें यह ढूंढ़ना चाहती हूँ कि वत्सने कौनसे विचित्र कौशलसे मेरी बेटीकी आवाजमें प्रवेश पा लिया। तू अपनी बरौनियां नीची ही रखेगी? मुझे देखने न देगी? लेकिन मैं यह भी पढ़ सकती हूँ।

वासवदत्ता — ओ मां, मेरी मां, मुझे तंग मत कर। तू सब जानती है, मुझे दिलासा दे।

अंगारिका — तुझे भी दिलासेकी आवश्यकता है?

वासवदत्ता — हां, अपने-आपसे बचनेके लिये, जिसने मेरे दिलकी मुसीबत कर रखी है।

अंगारिका — क्यों? जानती तो मैं सब हूँ। तू न बोलेगी? तो मैं ही तेरी ओर-से बोलती हूँ। (वासवदत्ता डरकर अंगारिकाके मुँहपर हाथ रखती है) दूर हो! क्योंकि तेरा अमर अंश जिसे हर्षोन्मत्त होकर चाहता है, और मर्त्य अंश जिसके लिये तड़प रहा है, उसे रोकनेमें तू असमर्थ है। क्योंकि अभीतक तेरे गर्विष्ट हृदयको झुकना नहीं आता।

वासवदत्ता — मां, काश तू जान सकती।

अंगारिका — नहीं, तू अभी प्रेममें नौसिखिया है, तेरे अन्दर इच्छा तो है किन्तु उसकी कला नहीं। ओ मेरी गर्विष्ठ मधुर अबोध बेटी, वह रास्ता निकालेगा और तेरा हृदय जिसके लिये आतुर है, वह चीज जबरदस्ती करवाये जानेका तू रस

ले सकेगी। इतना काफी है ?

वासवदत्ता — ओ मां ! (अंगारिकाके वक्षमें मुँह छिपा लेती है)

अंगारिका —तूने अपने पिताकी इच्छा पूरी कर दी ? तेरा पति तेरे पिताके अधीन होकर रहेगा ?

वासवदत्ता — क्या मेरे कोई पिता या वंश भी है ? नहीं, कोई नहीं, कुछ भी नहीं, उनके सिवा किसीका अस्तित्व नहीं।

अंगारिका — तेरे लिये तेरे प्रियतमके सिवा और किसीका भी अस्तित्व न हो। वासवदत्ता, मैं तुझे आदेश देती हूँ कि जब तू सुदूर कौशाम्बीमें राज्य करे तो उसपर आनन्दकी वर्षा करती रहना, हमेशा उसकी भलाईमें लगी रहना। उसके सद्भाग्यको और भी ऊंचा उठाना, शोक और दुःखसे उसके हृदयकी रक्षा करना, अपने आंसू बहाकर उसके लिये सुख और शांति जुटाना। और अपने अहंके एक भी कोलाहलपूर्ण विचारको उसके आगे विद्रोह न करने देना।

वासवदत्ता — मां, तू मेरा हृदय देख सकती है। क्या यह सब वहा नहीं है ? इस तरह पराजित होनेके बाद चाहकर भी और कुछ करनेका रास्ता बचा है क्या ?

अंगारिका — बेटी, तेरे हृदयको वाणी देना और उसके उच्चतर प्रेमपूर्ण अंशसे बांध रखना मेरा कर्तव्य है। अबसे यही तेरा गौरव हो।

वासवदत्ता — यही है, ऐसा ही है। किन्तु मां, शासन करना बड़ा मधुर है और अगर मैं उसपर उसीके भलेके लिये शासन करूं, अपने लिये नहीं, तो ?

अंगारिका — तुझे सुधारना असंभव है। पिद्दी रानी, करना शासन। अब जा। तेरा भाई आ रहा है। (वासवदत्ता अपने कक्षकी ओर भागती है; बाहरी दरवाजेसे विकर्ण प्रवेश करता है) तेरा ललाट इतना काला क्यों है ?

विकर्ण — महाराज वत्स किस लिये उज्जैनी लाये गये हैं ? उन्हें बन्दी क्यों बनाया गया है ?

अंगारिका — तेरे पिताकी इच्छासे, न जाने क्यों ?

विकर्ण — किन्तु, मुझे जानना है।

अंगारिका — उन्हींसे पूछ।

विकर्ण — (अपने हाथोंमें उसका मुँह लेकर) मैं तुमसे पूछता हूँ; तुम्हें उत्तर देना होगा।

अंगारिका — तेरी बहनको ब्याहनेके लिये।

विकर्ण — तो फिर उनका विवाह कर दो और उन्हें मुक्त करो। हमारे नामपर बट्टा लग रहा है; शहरमें कानाफूसी हो रही है। वत्सके राज्यकी ओरसे

लड़ाईका भय है और हमारा उद्देश्य निन्दनीय है।

अंगारिका — ब्याहकर वत्सको हमारे अधीन सामन्त बनकर रहना होगा।

विकर्ण — क्या सामन्त इस ढंगसे बनाये जाते हैं? साम्राज्य इस तरह खड़े किये जाते हैं? यह बड़ी लज्ज़ाजनक बात है। पहले उन्हें मुक्त करो फिर धर्म-युद्ध कर परास्त करो।

अंगारिका — तू अपने पिताकी उग्र, अटल इच्छासे परिचित है, जिसे हम सबको मानना ही पड़ेगा।

विकर्ण — मैं न मानूँगा, निन्दनीय बातोंमें नहीं।

अंगारिका — अपने पिताका सम्मान कर। वे जबतक संतुष्ट न होंगे अपने शत्रु-को मुक्त न करेंगे। ऐसी मांग मत कर।

विकर्ण — तो मैं ही उन्हें मुक्त करूंगा।

अंगारिका — किस अधिकारसे छोड़ेगा उसे जो तेरे कुलका संकट है?

विकर्ण — वह वीर है और मेरा मित्र है।

अंगारिका — क्या तूने उसे बन्दी बना यहां लानेमें मदद नहीं की थी?

विकर्ण — वासवदत्ताके लिये। मैं उन दोनोंको अपने रथमें बिठाकर शहरसे दूर पहाड़ियोंकी स्वच्छन्दतामें ले जाऊंगा। जो मेरा सामना करेंगे मारे जायेंगे।

अंगारिका — दुःसाहसी और उग्र लड़के, इस तरह तू बुरेको और भी बुरा बना देगा। उस घड़ीकी प्रतीक्षा कर जब वत्स स्वयं तेरी सहायता मांगेगा।

विकर्ण — वह घड़ी आयेगी?

अंगारिका — वह अवश्य मुक्त होगा।

विकर्ण — तो फिर जल्दी, वरना मैं स्वयं कुछ करूंगा।

(वह जाता है)

अंगारिका — यह भी अच्छा है। और सबसे बढ़कर यह कि सब पुरूषोंके हृदयमें-से पुराना शौर्य और क्षात्र-धर्म मिट नहीं गया है। हे भगवान् शिव, तुमने ऐसे लड़के देकर मुझे बड़ा भाग्यवान् बनाया है।

दृश्य २

वासवदत्ताका कक्ष

वत्स, वासवदत्ता

वत्स — तेरे हाथ अभी तंत्रियोंका कौशल नहीं पकड़ पाये। स्पर्श नहीं बल्कि स्पर्श-की विशेष रीति भरभराते भावको जगाती है — ऐसे फुसफुसाते भावको।

वासवदत्ता — मैं कर नहीं पाती। मेरा हाथ साथ नहीं देता।

वत्स — तो उससे जबरदस्ती करवाऊंगा। (उसका हाथ अपने हाथमें लेता है) तूने फटकारा नहीं।

वासवदत्ता — मैं डांट फटकारकर थक गई। और जिसे डांटखानेमें ही मजा आता है उसपर शासन भी कैसे करूं? और फिर मेरा हाथ ही तो था। अरे, क्या करते हो?

(वत्स बाहु पकड़कर उसे अपनी ओर खींचता है)

वत्स — वही जिसके लिये तेरी आंखोंने आज्ञा दी और जिसके लिये मेरा भूखा हृदय दर्दसे कराह रहा था।

वासवदत्ता — छोड़ेगा नहीं इसी समय? ढीठ कहींका।

वत्स — जबतक तेरे हृदयकी इच्छा पूरी न हो जाय तबतक नहीं।

(प्रतिरोध करती हुई वासवदत्ताको अपने अंकमें खींच लेता है)

वासवदत्ता — कैसी इच्छा? मैंने कोई आज्ञा नहीं दी। इच्छा, कौन-सी इच्छा? वत्स, वत्स, मैंने कुछ नहीं कहा था। यह अच्छा नहीं है।

(वह उस पर काबू पाकर उसे वक्षसे लगाता है। वासवदत्ताका सिर उसके कंधे पर गिरता है)

वत्स — ओ मेरी कामना, जो आनन्द हमें पुकार रहा है उससे हम अब भी क्यों वंचित रहें? खुशीका विरोध मत कर। मुझे वह मधुर मर्त्य अधिकार दे दे जो मुझे पूर्णकाम स्वर्गके सबसे सुखी देवके समान बना देगा। अहो, तेरे सुमधुर फिरे हुए गालपर! मेरी रानी, मेरी जिद्दी साम्राज्ञी, तुम व्यर्थ ही अपने ओठों-

का खजाना मुझसे दूर करती हो। मैं कबसे उनका अधिकारी बन चुका हूँ।

वासवदत्ता — वत्स! वत्स!

(वत्स उसके ओठोंको ऊपर करके चूमता है)

वत्स — आह, तेरे ओष्ठोंका मधु! और वह आनन्द। आनन्द और भी मीठा था। आखिर मैंने स्वर्गमें मधुपान कर ही लिया। अब जो होना हो होता रहे।

(वासवदत्ता छूटकर दूर खड़ी कांपती है)

वासवदत्ता — वहीं खड़े रहो! मेरे पास मत आओ।

वत्स — मैंने सोचा था कि यह युगोंके लिये काफी होगा। किन्तु ऐसा नहीं है।

वासवदत्ता — मुझसे दूर रहो। अपने कक्षमें जाओ।

वत्स — क्या मैंने तुम्हें इतना नाराज कर दिया है? लो मैं जाता हूँ।

(जानेका बहाना करता है)

वासवदत्ता — वत्स, मैं नाराज नहीं हूँ। मत जाओ। बैठो, मुझे तुम्हें डांटना पड़ेगा। क्या इस तरह मेरे अनुग्रहका फायदा उठाना ठीक था — मेरी दया-माया-को गलत समझना ठीक था? —ना, मैं गुस्सा नहीं कर रही। तुम आखिर एक छोटे लड़के ही तो हो। मैंने तुम्हें प्रेम करनेकी अनुमति दे दी क्योंकि तुमने कहा था कि तुम अपने-आपको रोक नहीं सकते। तुम्हें फिरसे यह न करना चाहिये — इस तरह नहीं।

वत्स — तो मुझे सिखा दो कैसे!

वासवदत्ता — (परेशान स्मितके साथ) मैंने ऐसा ढीठ गुलाम कभी नहीं देखा। तुम्हारे लिये कुछ सजा सोचनी पड़ेगी।

(अचानक उसके पास जाती है। उसे वक्षसे लगा आवेशसे चूमती है)

वत्स — ओ, अगर यही बात है तो मैं फिरसे नाराज करूंगा।

(वासवदत्ता उससे लिपट जाती है। चूमती है फिरसे उसे अलग कर देती है)

वासवदत्ता — मुझसे दूर हो, चले जाओ। नहीं जाओगे।? मंजुलिका!

वत्स — तेरे अपने ही हृदयके विरुद्ध तेरे मदद करनेके लिये वह यहां नहीं है। लेकिन मैं चला जाऊंगा। तुम चाहती हो न।

वासवदत्ता— तुम मुझे छोड़ दोगे?

वत्स — कभी नहीं। ऐसे ही, हां, इसी तरह मेरे हृदयमें बढ़ती रह वासवदत्ता।

वासवदत्ता — ओ मेरे सुख! ओ मेरे वत्स, धरतीपर यही एकमात्र मधुर नाम है जिसे मैंने घण्टों चुपचाप जपा है। मुझे आनन्द दो, मैं सदा-सर्वदा तुम्हारे आलिंगनमें बंधी रहूँ। सारी धरती पर यही सबसे प्यारा सिर है।

वत्स — ओ वासवदत्ता ! अगर हम युगों तक ऐसे ही बने रहें और काल भी ऐसे परमानन्दसे न थके !

वासवदत्ता — मैंने तुम्हें हमेशा चाहा है, जब मुझे इसका पता भी न था तब भी वत्स, क्या हमारे बीच छिपा प्रेम ही तुम्हें यहां जबरदस्ती खींच नहीं लाया ?

वत्स — अब तो तू अपने ओठ देनेसे इन्कार न करेगी ?

वासवदत्ता — तुम्हारे लिये किसी बातसे इन्कार न होगा।

वत्स — अबसे तू मेरी समर्पित रानी होगी और मैं तेरा सिंहासनारूढ़ गुलाम। खुले दिलसे अपना दान दे ताकि मैं सारे जीवन तेरी निरंकुश आंखोंका गुलाम और तेरे सौन्दर्यका बन्दी बना रहूँ, तेरी मधुर, शासक, आत्माको श्रद्धांजलि देता रहूँ। इस तरह, हां, इसी तरह मुझे स्वीकार कर।

वासवदत्ता — मेरे राजा, मैं तुम्हारी सेवा, भक्ति और प्रेमको स्वीकार करती हूँ। उसके बदले मैं तुम्हें अपना सर्वस्व देकर तुमपर न्यौच्छावर हो जाऊं तो काफी होगा ? क्या वह तेरे जीवनको संभाले रख सकेगा जैसे तुम मेरे जीवनको परिपूर्ण करोगे ?

वत्स — तू सुबह, दुपहर और शाम सबमें गुँथ जा। हम ऐसे स्त्री-पुरुष न होंगे जो आंशिक एकतासे संतुष्ट हो जाते हैं, हम अपने कार्योंमें अलग होंगे पर होंगे एक विराट् आत्मा जो दो प्यारे शरीरोंमें और भी आनन्द पानेके लिये विभक्त होगी। मेरे सब कार्योंपर तेरा अधिकार होगा और जो कार्य मुझे तेरी आनन्दमयी छायासे दूर ले जायं वे भी तेरी मधुर स्मृतिमें, तेरे ही द्वारा प्रेरित होंगे।

वासवदत्ता — अगर तेरा हृदय मुझसे भटक......

वत्स— मेरा हृदय, कभी नहीं ......

वासवदत्ता — और वत्स, अगर तेरी आंखें मुझसे भटकें......

वत्स — अगर मैं सभी वस्तुओंको सहज आनन्दसे देखूँ तो मुझे माफ करना क्योंकि तू भी उस आनन्दमें हिस्सेदार होगी।

वासवदत्ता — लो, मुझे वहां तुम्हारा ही सौन्दर्य देखना होगा।

वत्स — प्रिये, आज रात हम हृदयसे हृदय मिलाकर,...इसी तरह सारी रात न काट दें, मेरी रानी ?

वासवदत्ता — आह वत्स, नहीं।

वत्स — क्या तेरा हृदय हां, हां नहीं चिल्ला रहा ? क्या हमारा परिणय नहीं हुआ ? प्रिये, क्या हम स्वर्गकी सीमापर ही समय गंवाते रहेंगे ? क्या वह घड़ी स्वर्ग-को न उतार सकेगी ?

वासवदत्ता —— (कातर स्वरमें) मंजुलिका !

वत्स —— प्रिये, तेरी आंखें अनुनय कर रही हैं कि मैं तुझे अपनी कामनाके वशमें कर लूँ।

(मंजेलिकाका प्रवेश, वत्स वासवदत्ताको छोड़ देता है)

मंजुलिका —— राजकुमारी !

वासवदत्ता —— मंजुलिका ! तू क्यों आयी ?

मंजुलिका —— तुमने बुलाया नहीं था ?

वासवदत्ता —— मैं भूल गयी। हां, याद आया। वत्सको उसके बंदीगृहमें ले जानेके लिये बुलाया था। (धीरेसे) तू मुस्करायेगी तो पीटूँगी। सब तेरा ही दोष था

मंजुलिका —— वस जरा-सा। चलो, देर हो गयी। राजकुमारीकी दासियोंका दल आता होगा। अनिच्छुक आंखें पीछे मत घुमाओ। चलो, आओ।

(वत्सकी दोनों कलाइयां पकड़ उसे बाहर ले जाटी है)

वासवदत्ता —— मेरे अन्दर एक आग है, एक पुकार है। मेरी कामनाओंमें बाढ़ आ गयी है और मैं उनकी लहरोंमें डूबती-उतरती हूँ। उसके अंगोंकी मनोंहरता-के लिये तड़पनेवाली ओ मेरी इच्छा तू इसके समस्त शरीरके साथ एक अनुभव करनेके लिये, अपनी आत्माको उसकी मधुर उत्तर देनेवाली आत्माके साथ लीन करनेके लिये पुकार रही है। क्या तू आजकी रातके लिये शान्त नहीं रह सकती ? मैं सारी रात छिटकती चांदनीमें छतपर टहलती रहूँगी, शायद यह विशाल, नीरव रात मुझे शान्ति दे सके। सोना तो अब बेकार है। काश, मैं उसकी बाहुओंमें होती ! उसकी भुजाएं मुझे लपेटे होतीं और बाकी दुनिया भूली-बिसरी रहती !

दृश्य ३

छतसे लगा मीनारवाला कक्ष

पलंगपर वत्स सो रहा है; मंजुलिका

मंजुलिका —— वह सो रहा है और अब अपने शिकारको फांस लाऊंगी। राजकुमारी ! वासवदत्ता !

वासवदत्ता —— (दरवाजेके पास आती हुई) मुझे बुलाया तूने ?

मंजुलिका — हां, चांदनीसे चांदके पास आनेके लिये। तुमने अभीतक उसे सोते हुए नहीं देखा।

वासवदत्ता — वह सो रहा है!

मंजुलिका — चन्द्रमाके चारों ओरके बादलोंकी भांति उसकी अलकें एक सुनहरे हाथको तकिया बनाये हुए हैं। क्या तुम नहीं देखोगी?

वासवदत्ता — हिम्मत नहीं होती। मैं यहीं खड़ी-खड़ी देखूँगी।

मंजुलिका — यह न होगा। या तो आगे चली जाओ या फिर अन्दर आ जाओ।

वासवदत्ता — क्या तानाशाह बन रही है? मैं यहीं खड़ी रहूँगी और यहींसे देखूँगी।

मंजुलिका — (हठात् उसे ढकेलती है) चल अन्दर।

वासवदत्ता — मंजुलिका!

मंजुलिका — चुप, उसे जगा मत! (पलंगके पास घसीटती है) सुन्दर है न?

(वह पीछे हट जाती है और क्षणभरमें चुपकेसे बाहर जाकर दरवाजा बन्द कर देती है)

वासवदत्ता — ओह, आधी-आधी रातको जागकर मां जब मेरे ऊपर झुका करती करती थी उस समयके हृदयकी अवस्थाको अब समझ सकती हूँ। इसने अपने विचित्र जन्मके बाद मां या बहनके प्रेमको कभी नहीं जाना। ओ मेरे प्रियतम-की सोई हुई आत्मा! मेरी प्रतिज्ञा सुन, जबतक तुम्हारी वासवदत्ता जीवित है तुम्हारे हृदयकी एक भी इच्छा, एक भी कोमल शारीरिक वाञ्छा अपूर्ण न रहेगी, मैं तुम्हारे लिये एक ही साथ पत्नी, मां, बहन, प्रेमिका, सखी, सहचरी, मित्र, रानी, सलाहकार सब कुछ बनूँगी। विवाहित जीवनके झंझटोंको लेकर मेरा अहं मेरे हृदयको भाव-शून्य न बनायेगा। आयु या रस्म-रिवाज मेरे प्रेमकी ज्वालाको निस्तेज न कर सकेंगे। मुझमें वह सामर्थ्य है, देवोंकी भांति प्रेम करनेकी सामर्थ्य।

(उसके बालोंकी एक लट वत्सके मुखपर गिरती है और उसे जगा देती है)

वत्स — ओ वासवदत्ता! तू मेरे पास आ गयी!

वासवदत्ता — नहीं, मैं नहीं, मंजुलिका मुझे घसीट लायी थी। कहां गयी वह? किवाड़! (वह जल्दी-जल्दी किवाड़की ओर जाती है और देखती है बाहरसे चिटकनी बन्द है) मंजुलिका! यह कैसा मजाक? मैं नाराज हो जाऊंगी। खोल दे।

मंजुलिका — (बाहरसे गंभीर स्वरमें) चिटकनी लगी है।

वासवदत्ता — प्यारी मंजुलिका, दया कर!

मंजुलिका — मैंने अपना हिसाब ठीक कर लिया। सुखी रहो। मैं जा रही हूँ।

वासवदत्ता — मत जा, मत जा, मंजुलिके !

वत्स — (उसके पास आता हुआ) धन्य है, धन्य है, यह शरारतकी पुड़िया धन्य है। वह चली भी गयी। तूने जो सुखकर कारागार मुझे दिया था वह आज रातके लिये तुझे भी बन्द रखेगा। देवि, तू अपने सुखके साथ ही तो बन्द है। फिर भला स्वर्गके द्वारसे क्यों निकल भागना चाहती है ?

वासवदत्ता — नहीं, आज रात नहीं ! धीरज धरो ! मैं पिताजीसे पूछूँगी। वे तुम्हें मेरा कन्यादान दे देंगे।

वत्स — तेरा ख्याल है कि एक गरीब ब्राह्मणकी तरह भिक्षाके रूपमें तेरे पिताके हांथोंसे लूँगा ! वीरोंकी सन्तान इस तरह नहीं ब्याहा करती। समर्थ राज-रानियोंकी कोखके जाये इस तरह नहीं किया करते। वे स्वच्छन्द नेत्र मिलाकर, उदारताके साथ हृदय-दान करके, नील गगनको पुरोहित मानकर और हृदय-के स्पन्दनोंको मंत्र समझकर परिणयमें बंधते हैं या फिर इच्छित बल-प्रयोगसे अनेक सशस्त्र पुरुषोंके बीचमेंसे, अनुमति होते हुए भी प्रतिरोध करती हुई हर ली जाती है। हे वासवदत्ता, मैं भी इसी तरह तेरे साथ विवाह करूंगा। इसी तरह तुझे जबरदस्ती अपने शत्रुओंके घर और नगरसे, यहांके बैरी द्वारोंमेंसे निकाल ले जाऊंगा। और एक लम्बे चुंबनसे तेरे इन ओठोंको बन्द कर दूंगा जो व्यर्थमें मना करते हैं। हे वासवदत्ता, इन बातोंकी जगह अपने हृदयको आनन्दकी वाणी बोलने दे।

वासवदत्ता — मेरे साथ जो मरजी करो। मैं तुम्हारी हूँ।

अंक ५

दृश्य १

वासवदत्ताके महलका एक कक्ष

वासवदत्ता, मंजुलिका

वासवदत्ता — अच्छा, तूने आनेकी हिम्मत की !

मंजुलिका — हां की। तू मेरे साथ आंखें मिलानेकी हिम्मत कर सकती है ! नहीं कर सकती। तब ?

वासवदत्ता — क्या तुझे सजाका डर ही नहीं ?

मंजुलिका — सजा, तुझे स्वर्गमें कैद करनेके लिये ? नहीं, विलकुल नहीं।

वासवदत्ता — तूने यह हिम्मत कैसे की ?

मंजुलिका — गर्वीली लड़की, तूने राजाओं और राजकुमारियोंको अपना गुलाम बनानेकी हिम्मत कैसे की ? सौराष्ट्रके महाराजकी पुत्रीको यहां घसीट लानेकी हिम्मत कैसे की ? उसे अपनी नौकरानी बनाने और उसपर उपहार, लाड़-प्यार, डांटें और आदेश लादनेकी हिम्मत कैसे की ? उसे अपने निरंकुश स्वेच्छाचारके हाथों कठपुतली बनानेकी हिम्मत कैसे हुई तेरी ? शायद तू सोचती होगी कि मेरा हृदय जलता न होगा ? किन्तु अब मैंने तुमसे और सबसे बदला ले लिया है।

वासवदत्ता — बदलेकी भावनासे भरी, नमकहराम लड़की, पीटूंगी तुझे।

मंजुलिका — हां, पीटो, और मैं हंसूंगी और तुमसे रातकी बात पूछूंगी।

वासवदत्ता — अच्छा, ले अपनी सजा।

(उसे पकड़कर अपनी करधनीके फुंदनेसे पीटती है)

मंजुलिका — बन्द कर ! अब और न सहूँगी। अपना हृदय यूँ खेलमें बहलाते हुए शरम नहीं आती तुझे ? तू जानती है कि तूने क्या किया है और उसका क्या परिणाम हो सकता है ? अब तो यह सोच कि आनेवाले खतरनाक कलके लिये क्या करेगी।

वासवदत्ता — देख, तूने क्या कर दिया ? अब मैं पिताजीकी आंखोंमें कैसे देखूंगी ?

कैसे बोलूँगी ? क्या करूंगी ? अपने वत्सकी रक्षा कैसे करूंगी ?

मंजुलिका — तेरे पिताको इसका पता न लगना चाहिये।

वासवदत्ता — तेरा ख्याल है कि मेरी खुशी सबकी आंखोंसे छिप सकेगी ! तेरे सिवा मेरी और दासियां भी तो हैं।

मंजुलिका — ऐसी कोई नहीं जो तुझे धोखा दे सके। अगर इस बातका पता चल गया तो तेरे पतिपर तेरे पिताके कोपका आघात होगा।

वासवदत्ता — बेहतर है मुझपर हो। मैं अपने हृदय और शरीरको उसकी दोहरी ढाल बनाकर बीचमें डाल दूंगी।

मंजुलिका — तुम दोनोंको खींचकर अलग किया जायगा और वत्सको किसी गहरे गड्ढेमें ठूँस दिया जायगा या उस निर्मम पुरुषके अपमानित हृदयको शांत करनेके लिये इससे भी भयंकर बदला लिया जायगा।

वासवदत्ता — हाय ! तेरे अन्दर बुद्धि है; तू ही मुझे सलाह दे। तूने ही तो सारी गड़बड़ खड़ी की है अब उसका उपाय न करेगी ?

मंजुलिका — अगर तू बहुत अनुनय-विनयसे कहे तो मैं कर सकती हूँ और करूंगी।

वासवदत्ता — तो मैं तुझसे अनुनय-विनय करूंगी !

मंजुलिका — तो गर्वीली बच्ची, अपनी मदद अपने-आप कर लेना।

वासवदत्ता — अरे, कभी तू भी मेरे चुंगलमें आये ! ठहर ! मैं याचना करती हूँ, मेरी मंजुलिका......

मंजुलिका — और अधिक विनयसे...

वासवदत्ता — ओ ! (घुटने टेकती है) अरे गुइंयां, तेरे पैर पकड़ती हूँ, दुःखभरे आग्रहके साथ तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि मेरे लिये सोच, योजना बना, अपने सब विचार मेरे लिये केंद्रित कर दे। याद कर मैंने तेरी गिरी हुई जिन्दगीको कितनी सांत्वना दी है, उसके बिना वह कितनी अधिक कठोर होती। हे मेरी सहेली, जो हमेशा मेरी खुशी, मेरी सेविका और मेरी बहन रही है, मेरी मदद कर, उन्हें बचा, मेरे पिताके कोपको ठगकर फिर जितना बड़ा इनाम चाहे मांग लेना

मंजुलिका — कुछ नहीं चाहिये। तेरे पिता और गोपालकसे बदला ले लिया यही काफी मधुर है। अब मैं संतुष्ट हूँ। पहले मुझे वचन दे, वत्स जबतक मुक्त न हो जाय तबतक हर बातमें पूरी तरह मेरी आज्ञा मानेगी।

वासवदत्ता — मैं वचन देती हूँ। तू मेरी मार्गदर्शक है और मैं बड़े ही धार्मिक भावसे तेरे बताये मार्गपर चलूँगी।

मंजुलिका — तो समझ ले किला सर हो गया।

वासवदत्ता — (वत्सका प्रवेश, उसकी ओर मुस्काते हुए) वत्स, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया।

वत्स — तूने बुलाया था। मैंने तेरे हृदयको पुकारते हुए सुना था।

मंजुलिका — सुनो तो! दरबारमें यह शोर और हंसी कैसी? देखो, देखो, वह बूढ़ा मसखरा! क्या हरकतें कर रहा है।

वत्स — मैं उन आंखोंको भली-भांति जानता हूँ। मंजुलिका, वह एक मित्र है। उसे तो मेरे पास लाना चाहिये।

मंजुलिका — राजकुमारी, चलो उसे बुलायें। कमालका विदूषक है।

वासवदत्ता — धिक्कार है! क्या यह हंसी-मजाक और छिछोरेपनका समय है?

मंजुलिका — (उसकी ओर अर्थपूर्ण दृष्टिसे देखते हुए) हां।

वासवदत्ता — बुला लो।

मंजुलिका — और तुम अन्दर जाओ।

वासवदत्ता — अन्दर क्यों?

मंजुलिका — कैसी लड़की है! तुमने मेरा आदेश माननेका वचन नहीं दिया?

वासवदत्ता — हां।

(वह अन्दर जाती है। मंजुलिका नीचे सतरती है)

वत्स — यौगन्धरायणने उसे भेजा है। ओ, वह ठीक समयपर आया है मानो किसी देवताने सारी योजना पहलेसे ही बना रखी हो। यह जगत् एक मौन इच्छा-शक्तिका खिलौना है जो हमारे कार्यों और विचारोंके पीछे अकल्पित रूपसे घूमती रहती है। घटनाएं हक्की-बक्की-सी उसके धुंधले निर्देशनका अनुसरण करती है और जहां जरूरत हो वहां जा इकट्ठी होती हैं। ओ हमारे दिव्य स्वामी, क्या तुम इसी तरह शासन नहीं करते और तनिक भी चिंता नहीं करते क्योंकि कालके उस पार तुम्हारा आनन्द और तुम्हारी शक्ति स्वयं तुम्हारे अन्दर मौजूद हैं? (मंजुलिका वसन्तको छद्मवेशमें अन्दर लाती है) यह पुरानी छाया कौन है जिसे तुम लिये आ रही हो?

मंजुलिका — मैं जानना चाहती हूँ कि उसकी जीभ भी उसके कुख्यात कूबड़-जैसी हास्यपद है या नहीं। यह जाननेके लिये उसे यहां लायी हूँ।

वसन्त — इस युगकी एकमात्र सुन्दरी कहां है? राजकुमार या फिर नौकर......

मंजुलिका — महाशय, दोनोंमें से कुछ-कुछ।

वसन्त — तो फिर राजकुमारोंके सरदार, यह न समझना कि मैं तुम्हारे और अधिक

गर्वीले राजवंशका तिरस्कार करता हूँ फिर भी कोई मेरे भूखे बूढ़े कुबड़ेको अवन्तिकी सुविख्यात ललनाओंमें अनुपम सुन्दरीसे मिला दे तो में उसे अपने इनाममेंसे हिस्सा जरूर दूंगा।

मंजुलिका — यौगन्धरायणके जासूस, अवन्तिके राज्यपाल और कैदखानेसे क्यों नहीं ?

वसन्त — (वत्सकी ओर देखते हुए) यह क्या ? यह क्या ?

मंजुलिका — एक जवान बूढ़ेके लिये विशेष पौष्टिक !

वत्स — अपना सन्देश बेझिझक सुना दो। यहां सुननेवाले सब मित्र ही हैं।

वसन्त — (मंजुलिकाकी ओर सस्मित दृष्टि डाल़ते हुए वत्ससे) तुमने अपना समय वेकार नहीं खोया। लेकिन विनोदी महिला, तुमने तो इन गरीब जवान बालों-को डराकर प्राय: सफेद कर दिया। लो सुनो, मैं इस सफेद दाढ़ी और राजसी कूबड़के राजचिह्नके नीचे क्यों दुबका पड़ा हूँ — खैर मजाक बहुत हो चुका। सुनो वत्स, तुम्हारे नगरमें लोग शोर मचा रहे हैं। वे तुम्हारे मंत्रियोंको घेरते हैं, उनपर राजद्रोहका आरोप लगाते हैं और तुम्हारी मांग करते हैं। उनके गुस्सेको किसी तरह ठंडा नही किया जा सकता। अब तुम्हें जो करना है जल्दी-से-जल्दी करो और भाग निकलो वरना युद्ध तुम्हारी मांग करता हुआ इन फाटकों-तक चढ़ आयेगा। मैं अवन्तिकी पहाड़ियोंपर छिपे मंत्रीके लिये तुम्हारा सन्देश लेने या अगर तुम्हें जरूरत हो तो मदद देने आया हूँ।

वत्स — उज्जैनीसे निकटतम स्थानपर जहां वनस्थली अवन्तिके गेरुआ परिधानपर मेखलारूपमें खड़ी है, वहीं, उन्हीं जंगलोंमें मेरी सेनाको छिपाये रखो। वे लोक-नाथकी पहाड़ीके नीचेकी कंदरामें प्रतीक्षा करें। किन्तु जबतक मेरा रथ न आ जाय तबतक कोई सीमाको न लांघे।

वसन्त — बस, इतना ही ?

वत्स — बाकी सब मैं अपने सामर्थ्यसे कर लूँगा।

वसन्त — अच्छा तो मैं चलूँ ?

वत्स — हां, लेकिन शुल्क-रूप कुछ सोना लेता जा ताकि तेरी यात्रा सुनहरी हो। प्रिय मित्र, उनके लिये सोना ले आओ या वासवदत्तासे कोई छोटा-सा रत्न या गहना ले आओ जो ईर्ष्याभरी आंखोंके आगे इसके मुखौटेको सच्चा सिद्ध कर सकेगा।

(मंजुलिका अन्तःपुरमें जाती है)

वसन्त — यह मेरे ऊपर छोड़ दो।

वत्स — मेरे लिये बडे खतरेका सामना किया।

वसन्त — बेचारा अलर्क आनेके लिये बहुत रोया-धोया लेकिन इस काममें बुद्धि चाहिये और उसके पास भोथरी हिम्मत है या फिर एक वीणा, खतरा तो कुछ न था लेकिन उफ यह कूवड़ ! अब मैं जल्दी सीधा न चल सकूँगा और न इन दर्दोंसे छुटकारा पा सकूँगा जो इस स्वामिभक्तिके कारण पल्ले पड़े हैं।

वत्स — मेरे मित्र, अगर पकड़े जाते तो कहीं अधिक भयंकर यातनाएं पीछा करतीं। मैं याद रखूँगा। (मंजुलिका सोना और एक गहना लेकर आती है) लो, यह चीजें लो, जल्दी करो, तेजीसे चलते बनो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे ही आ रहा हूँ।

(वसन्त जाता है)

मंजुलिका — अपनी योजना बताओ मुझे।

वत्स — इन कक्षोंकी कड़ी निगरानी होती है।

मंजुलिका — किन्तु प्रमोदवन जो है।

वत्स — वासवदत्ता उस वनमें अपने भाइयोंको बुलाये और वहां मदिराका दौर चले। आजकल तो चांदनी रातें हैं। कितने फाटक हैं ?

मंजुलिका — तीन, लेकिन दक्षिणका फाटक किलेके ज्यादा नजदीक है।

वत्स — वहां पहरेदार कितने हैं ?

मंजुलिका — तीन सशस्त्र किरातिनें फाटककी रक्षा करती हैं।

वत्स — मैं उनपर प्रहार नहीं कर सकता। तुझे कोई और रास्ता ढूँढ़ना पड़ेगा।

मंजुलिका — उन्हें शराबमें डुबा दिया जायगा। वाहरके रास्ते ?

वत्स — एक रथ — मेरे लिये ढूँढ़ रखना। वक्षमें वासवदत्ताको लिये हुए मैं युद्ध नहीं कर सकता।

मंजुलिका — मेरा ख्याल है मैं ढूँढ़ लूँगी।

वत्स — इतना कर लेना। बाकी आसान है, नगरके पहरेदारोंके घेरेको एक उग्र क्षणमें तोड़कर बाहर दूर निकल जाना होगा। महलमें काफी हथियार तो हैं ?

मंजुलिका — शस्त्रागार, जिसका मैं कभी-कभी उपयोग करती हूँ।

वत्स — उन्हें उद्यानमें छिपा देना। नहीं, उन्हें रथमें ही मेरी प्रतीक्षा करने दो।

मंजुलिका — ऐसे युद्धमें दोनों हाथकी जरूरत होगी। वत्स, मैं तुम्हारी सारथी बनूँगी।

वत्स — तू रथ चला सकती है ?

मंजुलिका — अपने राज्यमें भी मुझसे अच्छा सारथी पानेकी आशा न करना।

वत्स — तब, मेरी युद्धकी साथिन ! तब तो हमारे बीचमें शब्दोंकी आवश्यकता नहीं।

(वह जाता है)

मंजुलिका — यह सब खतम होते-होते मैं तुम्हारे लिये इससे भी बढ़कर कुछ बनूँगी। सद्भाग्य कठिन कामोंको भी आसान कर देता है क्योंकि भगवान् खुले हाथों देते हैं। अगर महारानीके विचित्र अध-कहे शब्दोंका कुछ अर्थ निकलता है तो विकर्णका रथ अपनी बहनको सुख और साम्राज्ञीके सिंहासनकी ओर ले जायगा।

दृश्य २

उज्जैनीका राजमहलका प्रमोदवन

गोपालक, वत्स, विकर्ण

थोड़ी दूर वृक्षोंके नीचे अंगारिका, वासवदत्ता, अम्बा

गोपालस — वत्स, मदिरा मेरे दिमागमें गा रही है यह ज्योत्स्ना मेरी आत्माको आप्लावित कर रही है। इन्हीं क्षणोंमें आंख और कानके परदे उतर जाते हैं और हम हवामें लहराते केशोंवाले गंधर्वोंको विचित्र आलोकमय आकाशमें गाते हुए सुनते हैं। वत्स, तुम भी एक ऐसे गन्धर्व हो जो कैदमेंसे भाग निकला है और मानवताके बीच मुस्कान बिखेरता और वीणा बजाता चलता है।

वत्स — तुम्हारी इस पार्थिव ज्योत्स्नाने, और गोपालक तुमने, विन्ध्य पर्वत तथा वासवदत्ताने, सबने मुझे यहां खींचा है। तुम कौशाम्बीकी चांदनीमें मेरे साथ मदिरा पियोगे।

गोपालक — वत्स, कब? विकर्ण, आज तुम्हारे पांव इतने उत्तेजित और चंचल क्यों हैं?

विकर्ण — मदिराके कारण। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

गोपालक — किसकी?

विकर्ण — (कठोर हास्यके साथ) क्यों, मदिरा अपना काम पूरा कर ले, उसीकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

गोपालक — वासवदत्ता कहां है? उसे यहां बुला लो। वह अलग-अलग घूमती रहे तो हमें मजा नहीं आता।

विकर्ण — उधर, पेड़ोके झुरमुटमें मांके पास बैठी है।

गोपालक — उन्हें बुला लो, वत्स, तुम, वह और मैं एक ही प्रेमके प्यालेमेंसे पियेंगे और मदिराके साथ हमारे हृदय कभी न बिछुड़नेका प्रण करेंगे। हे आलसी और फिसड्डी प्रेमी, तुम यूँ ही दिन गंवाते रहते हो।

वत्स — बस यह आखिरी है। कलका दिन किसी दूसरे ही दृश्यपर प्रकाश डालेगा।

गोपालक — यह अच्छी बात है कि तुम अपने हृदयको उस ओर मोड़ रहे हो। मेरे पिता कठोर और अधीर होते जा रहे हैं। यह हो जाय तो सब कुछ ठीक हो जायगा।

वत्स — इस गरीब दुनियामें सभी अपनी नहीं चला सकते। उसके आनन्द सीमित हैं। ऐसा लगता है कि मैं झुक रहा हूँ। गोपालक, तू अपने हृदयको झुकायेगा ?

गोपालक — किसलिये ?

वत्स — इस सुन्दर ज्योत्स्नामय रातके परिणाम और उसके पीछे आनेवाली बातोंकी ओर।

गोपालक — आसानीसे, मैं वचन देता हूँ।

वत्स — निश्चय ही सब कुछ मंगल होगा। (मंजुलिका फाटकसे अन्दर आती है, अंगारिका, वासवदत्ता और अम्बाके साथ पेडोंके झुरमुटसें वापस आता हुआ विकर्ण उससे मिलनेके लिये आगे बढ़ता है।)

विकर्ण — हो गया ?

मंजुलिका — वे फाटकके पास आधी बेहोशीमें पसरी हैं।

विकर्ण — सबको बांधकर मुँहमें कपड़ा ठूँस दिया होता तो और भी अच्छा होता। वत्सको खबर दे दो।

(वह फाटकोंकी ओर जाता है)

अंगारिका — मंजुलिका, आज ही रातको न ?

मंजुलिका — देवि, क्या ?

अंगारिका — (गालपर हल्कीसी चपत लगाकर) विकर्ण आज रातको घुड़सवारी करेगा न ?

मंजुलिका — आज ही रातको सवारी करेगा।

अंगारिका — उसे या किसी औरको पता न लगे कि मैं जानती हूँ।

(वह औरोंके पास लौट जाती है)

गोपालक — ओ मटर-गश्ती करनेवालो, चलो इधर। मा, यह रहा एक प्याला। हम इसे चढ़ाये उससे पहले अपने जादू भरे हाथोंसे इसे असीस दो न।

अंगारिका — जो जो इससे पीयें वे हृदयसे एक हों, महान् बनें और जीवन भर प्रेमके

सूत्रमें बंधे रहें। उनपर, जीवन भर और उसके परे शिवकी कृपा और लक्ष्मी-का वरद हस्त रहे।

गोपालक — वत्स, पी ले। इस प्यालेमें तीन हृदय मिल रहे हैं।

अंगारिका — जो पहले पियेगा वही पहला होगा और वही औरोंके बीचकी कड़ी बनेगा।

गोपालक — पी ले बहन वासवदत्ता, सबकी रानी।

अंगारिका — रानी तो तू अवश्य बनेगी बेटी, जैसे हृदयकी रानी है वैसे ही प्रेम और सौभाग्यकी भी रानी होगी।

गोपालक — मेरी बारी सबसे पीछे।

अंगारिका — तू कहता है, पर मेरे बेटे, बहुतसे मनुष्योंमें तू पहला होगा।

गोपालक — जो भी स्थान होगा, इसी गांठमेंसे मिलेगा।

अंगारिका — वासवदत्ताको जोरसे आलिंगनमें जकड़ लेती है) अपने परम सुख-में अपनी मांको भूल न जाना। गोपालक, मेरे साथ जरा घर तक चल, तुझसे कुछ कहना है बेटे।

गोपालक — आया।

(वे महलकी ओर जाते हैं)

वत्स — समय हो गया!

मंजुलिका — फाटक उस ओर है।

वत्स — प्रिये! वासवदत्ता?

वासवदत्ता — वत्स! वत्स! बोलो न, आज रात हवामें यह कैसी सनसनी है?

(वत्स उसे अपने बाहुओंमें भर लेता है)

वत्स — तुम्हारा ही सम्मोहन है प्रिये, हर्षातिरेक है यह। लो अपने पिताके घर-द्वारपर आखिरी नजर डाल लो।

वासवदत्ता — हाय! यह कैसा दुःसाहस? तुम खाली हाथ हो; पहरेदार तुम्हें मार डालेंगे।

वत्स — डर मत! तू मेरी भुजाओंमें होगी तो हमारे भाग्य दुहरी ढाल बनेंगे। आज रात तुझे डरनेकी या कुछ भी करनेकी जरूरत नहीं है। बस रथमें मेरे घुटनोंके बीच लेटी रहना और अपनी अलकोंमें हवाकी सीटियां सुनती रहना जो तुझे सुदूर कौशाम्बीके उपवनोंकी बातें सुनायेंगी।

(उसे फाटककी ओर ले जाता है। विकर्ण लौटता हुआ दिखायी देता है।)

विकर्ण — जल्दी करो, जल्दी ! सब कुछ तैयार है।

मंजुलिका — अम्बा ! अम्बा ! इधर !

अम्बा — (दौड़ती हुई आती है) अरे यह सब क्या ?

विकर्ण — क्या इस लड़कीको बांध नहीं देना चाहिये ?

अम्बा — उसकी जगह अपना आदेश दीजिये।

मंजुलिका — तू कोप सह सकेगी ?

अम्बा — हां, अपनी प्रिय स्वामिनीके लिये। अगर महाराज मुझे मार भी डालें तो यह संतोष रहेगा कि मैं जिसके लिये जन्मी थी उसीके लिये जिन्दा रही और उसीके लिये मरी।

मंजुलिका — लताकुंजमें छिप जा। जब दीवारसे कोलाहल बढ़ता सुनाई दे तो महल-की राह लेना और अपने आपको बचाना। देखना, तबतक कोई तुझे ढूँढ़ने न पाये।

अम्बा — दूरकी झाड़ियोंमें जा छिपूँगी। तुम सब सुरक्षित बच निकलना। तुम इस बातमें मुझपर विश्वास न कर सकीं ?

मंजुलिका — रो मत ! अगर तू जिन्दा रही तो तुझे कौशाम्बी बुलवा लूँगी।

विकर्ण — चलो, पीछे, चले जाओ। वह फाटकतक जा पहुँचा।

मंजुलिका — मैं अपनी मुक्तिकी ओर वह अपने राजमुकुटकी ओर !

दृश्य ३

वासवदत्ताका महल

महासेन, अंगारिका, बंधी हुई अम्बा, सशस्त्र स्त्रियां

महासेन — वह यहां भी नहीं है। ऐ विश्वासघातिनि ! अगर इसमें तेरा हाथ हुआ तो तू सूलीपर लटकेगी या तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे।

अम्बा — मैंने तो आत्मसमर्पण कर दिया है।

अंगारिका — महाराज, एक स्त्रीकी हत्यासे अपनी आत्मापर दाग लगाओगे ?

महासेन — बात सच है। कुचलनेके लिये वह बहुत ही तुच्छ है। उपवनोंमें नहीं तलाश किया ? मटरगश्तीकी हिम्मत करनेवाले ये गुलाम कौन हैं ? कोई पकड़ा गया तो जरूर मारा जायगा।

अंगारिका — अगर इसे बुरा ही समझो तो क्या तुम बुरेको और भी बुरा बनाओगे ?

महासेन — क्या कहती हो ? यह बुरा नहीं है ? मेरे कुलकी लाज गयी,मेरा गर्व कुचला गया; पहले ही सारा देश चकराये हुए महासेनपर हंस रहा है जिसकी कन्याको एक सुकुमार किशोर उसकी सुनहरीं नगरीसे अनगिनत सेनाके होते हुए उड़ा ले गया। अव कौन मेरा मान करेगा ? कौन मुझे पूजेगा ? कौर आदेश सुनेगा ? मेरी तलवारसे भी कौन डरेगा ?

अंगारिका — कौशाम्बी-नरेशने आये-धर्मको निभाया है, तुम्हारी पुत्रीका इसमें तनिक भी अपमान नहीं हुआ, उसे वह कुलीन रीतिसे मानके साथ ले गया है।

महासेन — यह ऐसा धर्म है जिसका मैं तिरस्कार करता हूँ। मेरी इच्छाको पैरों-तले कुचला गया, अपने दर्पकी रक्षा करना या उसका वदला लेना योद्धाका धर्म है। उदयन मरेगा। अगर वह अपनी राजधानीतक पहुँच भी पाया तो मेरी सेना गरजती हुई जायगी और उस नगरको अग्निज्वाल बना देगी — उसके खंडित, अपमानित शवके लिये एक चिता।

अंगारिका — क्या तुम अपनी वेटीका हृदय भूल गये ? उसकी भलाई, उसका सुख, तुम्हारे लिये कुछ भी नहीं है ?

महासेन — क्या वह मेरी बेटी है ? वह अपने पिताका जीता-जागता अपमान बन-कर जीना पसन्द न करेगी।

अंगारिका — तुम समझते हो वत्सने उसे उसके हृदयकी सहमतिके विना यूँ ही पकड़ लिया है ?

महासेन — अगर ऐसी बात है और वह मेरी इच्छा और मेरे रक्तके विरुद्ध द्रोही है तो उसकी आंखोंको, उसके वासनामय द्रोहके कारणको, भालोंसे क्षत-विक्षत दशामें देखने दो।

अंगारिका — तुम आर्य राजा होकर इस तरह धमकाते हो ? क्या तुम्हें अपनी पुत्री स्वार्थके लिये ही प्रिय थी ?

महासेन — चुप रहो, मेरी रानी ! क्रुद्ध सिंहराजको इस तरह न खिजाओ।

अंगारिका — अगर ऐसी मनोदशा है तब तो बाघ कहना होगा।

(एक किरातिनीका प्रवेश)

महासेन — तू आ गयी, आलसी दासी !

किरातिनी — महाराज, सारे मैदान छान मारे। पहरेदार दक्षिणी फाटकके नीचे मुँह-वंधे पड़े हैं। सब कुछ खाली है।

महासेन — गोपालक कहां है ? उसे भी अवकाशकी सूझी है।

किरातिनी — किलेकी दीवारोंकी ओरसे एक सेनानी आ रहा है।

महासेन — हां, उसे ले आओ। (किरातिनी अवन्तिके सेनानीको लाती है) तो फिर ?

सेनानी — वत्स भाग निकला है। द्वारपाल हताहत पड़े हैं। वासवदत्ताको लिये हुए उसका विजयी रथ उल्लसित होता हुआ चांदनी-भरे मैदानोंमें दूर जा चुका है।

महासेन — ओ कटु सन्देशवाहक ! पीछा करो, पीछा करो !

सेनानी — रेभ, अपने सशस्त्र आदमी लिये तेजीसे पीछा कर रहा है।

महासेन — उज्जैनीकी रक्षा करनेवाली पूरी सेना समान गतिसे उनके पीछे दौड़ायी जाय। जा, विकर्णको बुला ला; अपनी बहिनका अपहरण करनेवाले वत्सकी हत्या करके लड़का युद्धमें पहली विजय पाये।

सेनानी — महाराज, मेरे शब्दोंका बुरा न मानें, कुमार विकर्णका रथ ही उनकी बहिनको लिये जा रहा था और वे स्वयं रक्षक बनकर घोड़ेपर जा रहे थे।

महासेन — (एक आश्चर्यभरे विरामके बाद) क्या मेरा सारा परिवार, मेरा अपना रक्त, मेरे विरुद्ध विद्रोह कर रहा है ?

सेनानी — आपकी पुत्रीकी सेविका, राजकुमारी बन्धुमति वत्सके पास बैठी रथ चला रही थी।

महासेन — मैं उसे दोष नहीं देता, फिर भी भयंकर दण्ड दूंगा। सेनापति, जाओ, मेरे रथोंको इकट्ठा करो और उन भगोड़ोंकी बनायी हुई ताजी लकीरोंपर दौड़ते हुए उनका पीछा करो। (सेनापतिका प्रस्थान, गोपालकका प्रवेश) गोपालक, बेटे, मेरी सेनाका नायक बन; हमेशाके लिये मुँह काला होनेसे पहले अपनी बहनको लौटा ला। अपने पिताकी मानहानिका बदला चुकाये बिना न लौटना।

गोपालक — मेरे पिता, मेरी भी सुन लीजिये। यद्यपि यह घटना हमारी योजनासे बिलकुल उलटी है फिर भी इस काममें किसी अपमानका धब्बा नहीं लगा है। वीरकी नाईं वत्सने एक वीरकी कन्याका हरण किया है। हमने उसके लिये जांल फैलाया था, उसने गौरवभरी उग्रतासे जवाब दिया है। हमने अपने कुलके रत्नको उसके आगे झुलाकर, उसे लालच देकर अपना सामन्त बनाना चाहा, उसने अपनी स्वतन्त्रता भी रखी और रत्न भी ले लिया। क्योंकि हमने पांसा फेंका और हार गये तो अब हमें अभिजात जुआरीकी तरह व्यवहार करना चाहिये। भगवान्के दिये विपरीत फलको एक मित्रकी भांति स्वीकारें और सामान्य स्वभाववालोंकी तरह चोट खाये हुए अन्धे विचारोंको अपने अन्दर

घर न करने दें। इस आनन्ददायी घटनाको स्वीकृति दीजिये; हमारे और वत्सके कुलमें प्रेम हो।

महासेन — मैं देख रहा हूँ कि अपने हृदयमें सभीने मेरी महत्ताके विरुद्ध षड़यन्त्र रच रखा है। तू अवन्तिका राजकुमार है, मेरे बाद तेरा ही स्थान है। तो सुन! अगर वे लोग उज्जैनीकी और मेरी सीमाओंके बीचमें पकड़े गये तो मेरी भयंकर इच्छा उन्हें अवश्य दण्ड देगी; लेकिन अगर वे स्वतन्त्र विन्ध्यतक पहुँच गये तो तू स्वयं उनसे संधि कर लेना। वासवदत्ताका सारा सामान, यह लड़की और उसकी सारी सम्पत्ति तथा आभूषण भी लेता जा; उसे वापस ले आ या कौशाम्बीतक उसके पीछे-पीछे जाना, किन्तु जबतक वह वत्सकी रानीके रूपमें अभिषिक्त न हो जाय तबतक कौशाम्बी न छोड़ना। उदयनके पार्श्वमें सिंहासनपर बैठी वह अकेली ही राज्य करे; तभी हमारे राज्योंमें शान्ति स्थापित हो सकेगी।

गोपालक — और मैं विकर्णको वापस ले आऊंगा।

महासेन — पुत्र, कदापि नहीं। मैं उस विद्रोहीको नाम और कुलसे निष्कासित करता हूँ। जिस वत्सको उसने चुना है वह उसीके साथ रहे। बनने दो उसे मेरे शत्रुका सेवक।

(वह बाहर जाता है, पीछे-पीछे अंगरक्षक जाते हैं। गोपालक अम्बाके बन्धन काटता है)

अंगारिका — अगर उनके कोपको समय दें तो वह धीरे-धीरे शान्त हो जायगा। अगर पिताका हृदय नहीं तो कम-से-कम उनका गर्व ही विकर्णको वापस बुला लेगा।

गोपालक — जल्दीसे, उसकी सम्पत्ति और उसका सामान इकट्ठा करो। मैं तेजीसे जाना चाहता हूँ। कहीं दुर्भाग्यवश वत्स अमंगलके लिये पकड़ा न जाय।

अंगारिका — डरो मत, मेरे बेटे, ऐसी सेना अभीतक जन्मी नहीं जो हाथोंमें शस्त्र लिये उन दोनोंका सफलतासे सामना कर सके।

दृश्य ४

अवन्तीका जंगल, ज्योत्स्नामयी रात्रि

वत्स, वासवदत्ता, मंजुलिका

वत्स — तूने रथकी बागडोर अद्भुत कौशलसे संभाली। हम अपने राज्यकी सीमा-के पास पहुँच रहे हैं।

मंजुलिका — लेकिन शत्रु घेरा डाल रहा है।

वत्स — हम घेरा तोड़ देंगे जैसे दो बार तोड़ चुके हैं। लो, विकर्ण आ रहा है।

(घोड़ेपर सवार विकर्ण आता है)

विकर्ण — वत्स, रेभ तुमसे संधि-वार्ता करना चाहता है; करोगे? मैं उसे यहीं रोके रहूँगा और इस बीच हम जंगलको परदा बनाकर एक लंबे रास्तेसे उनके घेरेमेंसे निकल जायेंगे।

वत्स — सामर्थ्यके बल निकलना उत्तम है।

विकर्ण — वत्स, मेरे मनमें यह उत्तमसे भी अधिक है किन्तु मैं वासवदत्ताको भयानक भीतियोंसे बचाना चाहता हूँ। वह कहती तो कुछ नहीं फिर भी उसे संताप हो रहा है।

वत्स — अच्छा! हम तुम्हारा शान्तिपूर्ण तरीका अपनायेंगे।

(विकर्ण नीचे उतरता है)

वासवदत्ता — वत्स, अगर मैं खड़ी होकर उनके नेतासे पीछा न करनेके लिये कहूँ, क्योंकि मैं अपनी इच्छासे जा रही हूँ, तो वे रुक जायेंगे।

वत्स — प्रिये, उससे मेरी उपलब्धि और विजयमें — जो सचमुच तेरी है — कमी आयेगी।

वासवदत्ता — तो रहने दो। मेरे कुलके सिरको कुचलता हुआ तेरा रथ आगे बढ़ता जाय तो भी मैं तुम्हारी सामरिक कीर्तिपर कलंक न लगाऊंगी।

मंजुलिका — (जम्हाई लेती हुई) उफ! हम सोनेके लिये संधि-वार्ता कर सकते तो अच्छा होता इस लड़ाईके मारे बहुत नींद आती है।

(विकर्ण रेभके साथ लौटता है)

वत्स — अच्छा, सेनानायक, तुम्हारी मांग सुनूँ।

रेभ — वत्स, तुम घिर गये हो। बोलो हथियार डालते हो?

वत्स — तुम उपहास करते हो? तुम्हारे कमजोरसे घेरेको हम तीसरी और अन्तिम बार तोड़ देंगे। तुम्हारे मुर्दे गिने जा चुके?

रेभ — जीवित संख्यामें उनसे बहुत अधिक हैं; और भी सेना उज्जैनीसे बढ़ी चली आ रही है। इसलिये राजकुमारीको हमें सौंप दो और तुम मुक्त होकर अपने राज्यमें जा सकते हो।

वत्स — जानते हो, तुम्हारा यह प्रस्ताव एक धृष्टता है?

रेभ — तो राजकुमार, बुरे-से-बुरे परिणामके लिये तैयार रहो। हम तुम्हें जीते-जी बंदी बनाकर या फिर तुम्हारी लाशको अपनी नगरीमें ले जायेंगे। मेरा व्यूह तुम्हारे चारों तरफ तीन-तीन चक्र बनाये हुए हैं। तुम्हारे घोड़े थक कर चूर हो गये हैं और तुम्हारे पास अर्जुनका तरकश भी नहीं है। उषाकी तैयारी है; समझ लो यही तुम्हारी आखिरी उषा है।

वत्स — मैं तुम्हें दोपहरको अपनी सीमामें भेंट करनेका निमंत्रण देता हूँ।

(रेभ जाता है)

विकर्ण — जल्दी करो, वह अपनी सेनातक पहुँचकर फिरसे चढ़ाई करे उससे पहले हमें दूर निकल जाना चाहिये। मंजुलिका, मेरे घोड़ेपर सवार हो यौगन्धरायण-के पास जाओ और उनसे कहो कि अपनी सेनाको ले आयें क्योंकि मैं अवन्तीके मैदानोंमें अपनी ओर कूच करती हुई, गरजती हुई सेनाओंको देख रहा हूँ। रथ-का संचालन मैं कर लूँगा।

मंजुलिका — और घोड़ा?

विकर्ण — उन झाड़ियोंके पास बंधा है। लगाम ढीली रखना, कुलीन और ओजस्वी घोड़ा है।

मंजुलिका — मुझे सिखाओ मत। अभीतक ऐसा घोड़ा नहीं जन्मा जिसपर मैं सवारी न कर सकूँ। इस पत्तोंकी भूल-भुलैयामें मेरा मार्ग कौन-सा है?

(झाड़ियोंकी ओर जाती है)

विकर्ण — इसमें भूल नहीं हो सकती क्योंकि वह सामने जो रास्ता है वह सीधा हमारी सीमाके परे लोकनाथकी पहाड़ीपर जाता है। बस चल पड़ो।

वत्स — जब मैं लड़ रहा था तो चन्द्र-ज्योति और रातकी उल्लसित हवाओंने चमकते हुए पत्तोंके अन्दर मर-मर ध्वनिसे मेरे लिये विजयगीत गाये थे।

लेकिन अब जब तुम्हें वक्षपर सुरक्षित लिये हुए आगे बढ़ रहा हूँ, तो उन्हें भी सुख-समाधिकी नीरव तानमें डूब जाने दो।

वासदवत्ता — काश, मैं तुम्हें सुरक्षामें जकड़ सकती !

दृश्य ५

अवन्तीकी सीमा

रूमण्वान्, यौगन्धरायण, अलर्क और सैनिक

रूमण्वान — उषाने पहाड़ियोंको गुलाब और कुमकुमका मुकुट पहना दिया है फिर भी वत्सके वचनानुसार उसके पहियोंका चिह्न कहीं दिखायी नहीं देता। दूसरी दोपहरी होने आयी।

यौगन्धरायण — दो दिन पहले ही तो वसन्त यहां आया है। फिर भी चुपके-चुपके आलस्यके पर्देमें तैयारी करके प्रहार करनेमें उदयन बड़ा तेज है।

रूमण्वान — हमें उसका ज्ञान वहुत देरमें हुआ। एक लड़केका उद्दाम साहससे अपने जीवन और राज्यकी बाजी लगाकर विकट परिस्थितियोंसे खेलना ! शासन-का उदय बड़े संकटोंमें हो रहा है।

अलर्क — देखो, देखो, अवन्तिके छोरसे एक घुड़सवार हमारी ओर बढ़ा चला आ रहा है। वह आंखोंसे आगे-आगे कुछ खोज रहा है।

रूमण्वान — जो भी हो, लम्बी यात्रा करके आ रहा है। उसका घोड़ा कठिनाईसे लड़खड़ाता हुआ बढ़ रहा है।

यौगन्धरायण — यह घुड़सवार नहीं है। है तो सशस्त्र और शीघ्रगामी, किन्तु है एक स्त्री।

अलर्क — उसने हमें देख लिया है और घोड़ेसे उतर रही है।

यौगन्धरायण — एक स्त्री घोड़ेपर आ रही है ! मेरे मनमें आशंका होती है। कहीं कोई अपशकुन तो नहीं है। कहीं वह शोककी संतप्त दूती तो नहीं है ? वह ऐसे दौड़ रही है मानो कोई पीछा कर रहा हो।

अलर्क — वह सुन्दर और तरुण है।

(मंजुलिका आती है)

मंजुलिका — क्या आप ही महाराज वत्सके सेनानायक हैं ?

रूमण्वान — मैं वही हूँ।

मंजुलिका — अपनी सेना इकट्ठी कीजिये क्योंकि वत्स तीव्र गतिसे इस ओर रथ बढ़ाये चले आ रहे हैं किन्तु रथकी धूलिके पीछे ही शत्रु सेना उमड़ रही है। शीघ्र ही सहायता लेकर जंगलमें जाइये। कहीं, ऐसा न हो कि शत्रुकी सख्या और उसका वेग उनके थके-मांदे घोड़ोंसे और रिक्त तरकशसे बाजी ले जाय।

यौगन्धरायण — रूमण्वान, जल्दी करो। (रूमण्वान जाता है) लेकिन तू है कौन और इस बातका क्या प्रमाण है कि तू अवन्तिवासी नहीं है जिसे हमारी सेनाको बहकाकर किसी गुप्त स्थानमें ले जानेके लिये नहीं भेजा गया है ?

मंजुलिका — निश्चय ही आप दूरदर्शी बुद्धिवाले यौगन्धरायण हैं। लीजिये, मैं आपके प्रश्नका उत्तर देती हूँ। पर बाकी योजना जल्दी पूरी कर लीजिये ताकि भाग्य आपके सजग विचारोंका मजाक न उड़ाये। मेरा नाम बन्धुमति है और मेरे पिता सौराष्ट्रपर शासन करते थे, लेकिन मैं, उनकी पुत्री, पकड़ी गयी और अवन्तिमें वासवदत्ताकी सेवा करती रही। आप इस अंगूठीको पहचानते हैं ?

यौगन्धरायण — यह तो वत्सकी है।

मंजुलिका — मैं युवक विकर्णके घोड़ेपर उड़ी आयी हूँ जो अपनी बहनका अपहरण करने और उसे आनन्द देनेवालेकी, क्रुद्ध पीछा करनेवालोंसे रक्षा कर रहे हैं। क्या ये पहेलियां, आप जैसे नीति-निपुणकी सावधानी भरी शंकाओंका समाधान कर सकेंगी ?

यौगन्धरायण — तेरी कहानी विचित्र है किन्तु कम-से-कम तू सच्ची है।

मंजुलिका — आप सिर्फ दूरदर्शी ही नहीं है !

यौगन्धरायण — तब आगे बढ़ो। रूमण्वानका शिविर तत्पर है।

दृश्य ६

अवन्तीके जंगलके किनारे

रूमण्वान, यौगन्धरायण अलर्क, मंजुलिका और सेना

रूमण्वान — ठहरो, कूच रोक दो। वत्सका रथ आ रहा है। थके मांदे घोड़े लड़खड़ाते हुए रुक रहे हैं।

यौगन्धरायण — पीछे- पीछे सेनाओंका कोलाहल है और जंगलसे अवन्तीके रथके

पहिये बाहर निकलते दिखायी देते हैं।

(वत्स, विकर्ण, वासवदत्ता आते हैं)

वत्स — तात, सब चीजें अपने समयके अनुसार सच्ची हुई। लीजिये, मैं अपना पांसा ठीक फेंककर लौट आया। मुझे सारी चीज गुप्त रखनेके लिये क्षमा कर दिया न आपने?

यौगन्धरायण — अब तुम मेरे शिष्य और पुत्र नहीं, वीर और राजाधिराज हो! तुमने अवन्तीके सिरपर अपना पांव रखा है।

वत्स — लेकिन फिर भी आपका वत्स ही हूँ।

यौगन्धरायण — जय हो, वासवदत्ता, महान् कौशाम्बीकी रानीकी जय हो।

वासवदत्ता — (वत्सकी ओर स्मित करते हुए) मेरा मुकुट भीषण भयोंके बीचमें-से जीता गया है।

वत्स — बड़ी भयानक स्पर्धा थी। अन्तमें भाग्य बस एक बित्तेभरसे जीता। अगर रास्ता उनकी बड़ी सेनाको भूल-भुलैया बनकर चकरा न देता तो हमारा यहां-तक पहुँचना संभव न होता, हमें अनेक बार रुक-रुककर घोड़ोंको आराम देना पड़ रहा था। किन्तु वे कम संख्यामें आगे बढ़नेका साहस न करते थे।

यौगन्धरायण — अब वे युद्धकी तैयारी कर रहे हैं।

वत्स — आप उनसे बातचीत कीजिये। युद्ध न छिड़ना चाहिये।

यौगन्धरायण — तो संधि-वार्ताके लिये मांग करो।

वत्स — अगर हमें लड़ना भी पड़े तो पीछे हटते हुए, सिर्फ प्रतिरक्षाके लिये। अगर वे हमारी सीमामें बहुत दूरतक घुस आयें तो और बात है।

विकर्ण — रेभ आ रहा है।

(रेभका प्रवेश)

रेभ — क्या आप संधि-वार्ताके लिये प्रार्थी हैं?

विकर्ण — रेभ, अपनी पिटी हुई सेनाके साथ!

रेभ — रथमें तुम्हारी बहन भी थी इसलिये हमारे बाणोंके मार्गमें बाधा आती रही।

विकर्ण — और तलवारोंसे भी, ये सैकड़ों आदमी दो लड़कोंको पराजित न कर सके।

रेभ — कुमार विकर्ण, आज आपने अपने कुल और जातिके विरुद्ध जो किया है, मैं उसका मूल्य आंकनेसे बचूँगा। युद्धमें आपका पहला प्रयास ही तो है।

विकर्ण — तुम योग्यतर व्यक्तियोंके कार्योंका मापतौल न करके अच्छा ही कर रहे हो।

यौगन्धरायण — रेभ, क्या व्यर्थ ही इस झगड़ेको आगे बढ़ाओगे? अभीतक जो कुछ हुआ, निजी कार्य और द्वन्द्व था; अब अगर तुम युद्धके लिये आग्रह करो

तो दो राष्ट्र उलझ जायेंगे और किस उद्देश्यसे ?

रेभ — मैं वत्स और राजकुमारीको वापस ले जाऊंगा। मेरे महाराजका यही आदेश है।

यौगन्धरायण — असम्भवकी आशा किसी मनुष्यसे नहीं की जाती। इधर हम लड़ेंगे उधर महाराज वत्स बिना किसी विघ्न-बाधाके बन्दिनी राजकुमारीको लिये अपने ऊंचे प्राकारवाली राजधानीमें चले जायेंगे।

रेभ — यह मेरे महाराजका आदेश है। मैं उनकी भुजा हूं, परामर्शदाता नहीं; न मुझे किसी बातमें अपनी बुद्धि लड़ानेका अधिकार है सिवा इसके कि उनके प्रतापी, निरंकुश आदेशका पालन किस तरह जल्दी-से-जल्दी किया जाय।

यौगन्धरायण — अगर उज्जैनीसे आदेश आ जाय तब तो पीछा करना बन्द कर दोगे न ?

रेभ — तब तो अवश्य।

यौगन्धरायण — तो रेभ एक घुड़सवारको भेजकर पुछवा लो। तबतक सब कुछ जैसा है वैसा ही रहे।

रेभ — मैं कोई घुड़सवार न भेजूंगा; मैं लड़ूंगा।

यौगन्धरायण — तो फिर युद्ध !

रेभ — हम डरते नहीं। यह विचित्र धृष्टता है। अवन्तीकी भूमिपर खड़े होकर उसी देशके सामन्तोंको आज्ञाएं देना !

(वह जाने लगता है)

रूमण्वान — रेभ, जरा रुक जाओ ! तुम्हें सन्देश-वाहककी जरूरत नहीं है। देखो, उधरसे तीव्र वेगसे उछलता हुआ रथ आ रहा है और उसपर अवन्तीराजकी ध्वजा लहरा रही है।

रेभ — राजकुमार गोपालक है। मैं इससे बहुत खुश हूं।

वासवदत्ता — ओह, अगर मेरा भाई आ रहा है तो सब ठीक है।

वत्स — क्योंकि तू लक्ष्मी है ! तू मेरे पास हो तो विधि और भाग्य, शान्ति और युद्ध सबको मेरी तरंगी कामनाओंके पंखकी जरा-सी फड़फड़ाहटको भी मानना पड़ेगा।

(गोपालक आता है उसके साथ-साथ अम्बा भी)

गोपालक — जय हो वत्स ! हमारे प्रदेशोंमें शान्ति और प्रेम हो !

वत्स — मैं उन्हें यहां मूर्तिमान रूपमें लिये हुए हूं। उन्हें सम्पादित करनेवाले वीर, स्वागत है।

गोपालक — साई और प्रमाणके रूपमें पलायनमें सहायता करनेवाली इस सुन्दर सहापराधिनीको बिना दण्डके स्वीकार करो। वहन लो, इसे अपनी भुजाओंमें भर लो।

वासवदत्ता — ओ अम्बा, तू मेरे पास सुरक्षित आ गयी।

गोपालक — और मेरी वहनकी सारी माल-मत्ता और सम्पत्ति मेरे पीछे शीघ्र आ रही है। अवन्ती सिर्फ एक बातपर अधिकार रखती है, मेरी वहन ही तुम्हारी एकमात्र रानी होकर सिंहासनपर बैठेगी। क्षमा कीजिये, यह समारोह हमारी प्रतिष्ठाके अनुकूल और मेरी आंखोंके आगे ही होना चाहिये।

वत्स — गोपालक, कौशाम्बीका राज्य परदेशका इतना-सा हस्तक्षेप भी न सहेगा। निश्चय ही मेरी इच्छा और प्रेम, शक्तिशाली अवन्तीकी सन्तानको नहीं किन्तु वासवदत्ताको सबसे ऊंचे सिंहासनपर बिठायेगा। वह अकेली होगी या नहीं, इसका निर्णय मेरी और उसकी इच्छासे, प्रजा और राज्यकी भलाईको दृष्टिमें रखते हुए होगा। इसलिये, मेरे भाई, इस अधिकारके लिये आग्रह न करो।

गोपालक — यह चीज हमारे वीच भेद पैदा न करे। वर्तमानका सुख काफी है। उदयन, भविष्य उसका और तुम्हारा है, तुम्हें कोई बाधित न कर सकेगा। (विकर्णसे) लड़के, तेरा विद्रोह दुःसाहसपूर्ण और प्रचण्ड था जिससे तेरे कुल और तेरे महान् पिताकी इच्छाका अपमान हुआ है। उनके कोपके ठंडे पड़नेतक तुझे सुदूर कौशाम्बीमें प्रवासी बन कर रहना पड़ेगा।

विकर्ण — भाई, मुझे परवाह नहीं। मैंने अपना संकल्प पूरा किया है, और धर्मका पालन किया है। वत्स और मेरी वहनके पास मेरे लिये जगह है और मैं नये-नये देश देखूंगा।

वत्स — गोपालक, हमारे पीछे आओ; अपनी वहनका सामान और अपनी इच्छानुसार सेना भी लेते आओ। हम तेजीसे रथमें आगे जा रहे हैं। अलर्क, तुम अपने घोड़ेपर हमारे साथ-साथ चलो; तुम्हारी वीणा वासवदत्ताको प्रेमकी स्तुति और स्वर्णिम जीवनकी बातें सुनाये।

प्रिये, तूफान चला गया, संकट कट गया। मेरी रानी, अब हम हरित-स्वर्ण वनोंमें, स्वर्ण-क्षेत्रोंके बीच, विचरते रहेंगे, ओ धरतीकी कनक-लक्ष्मी, जबतक हमारे लिये तुम्हारे स्वर्गीय निवासके दीप्तिमान शाश्वत द्वार नहीं खुल जाते तबतक स्वर्णिम स्वप्नोंमें तैरते रहेंगे।

रोडोगुन



नाटक के पात्र

एण्टिओकस — क्लियोपेट्राका, स्वर्गीय पति निकानोरसे, बेटा।
टिमोक्लीस — एण्टिओकसका जुड़वा भाई।
फायलस — सीरियाका एक मंत्री।
निकानोर — सीरियाके राजघरानेका कुमार, यूनिसका पिता।
फिलोक्टीटस — एण्टिओकसका साथी।
मेलिटस — राजभवनका प्रबन्धक।
थोआस
थेरामिनीस
लेओस्थनीस — सीरियाकी सेनाके नायक
केलिक्रेटस
थीरास
एरीमाइट — एक रहस्यमय व्यक्ति।
क्लियोपेट्रा — सीरियाकी रानी, सीरियाके राजा एण्टिओकसकी पत्नी।
रोडोगुन — पार्थियाकी राजकुमारी, पार्थियाके राजा फ्राटेसकी पुत्री, क्लियोपेट्रा-की बन्दिनी सेविका।
यूनिस — निकानोरकी बेटी, एण्टिओकस और टिमोक्लीसकी चचेरी बहन, और क्लियोपेट्राकी संगिनी।
क्लिओन — फायलसकी बहन और क्लियोपेट्राकी संगिनी।
मेंथो — एण्टिओकस और टिमोक्लीसकी मिस्री दाई।
जोयला — क्लियोपेट्राकी सेविका।

स्थान : सीरियाकी राजधानी, एण्टिओक।

रोडोगुनमें आये हुए नामोंका परिचय

मैगियन — फारस जादूगरोंकी एक खास जाति।

मैसिडोन — यूनानका एक शहर।

पर्सीपोलिस — इस्पाहान (ईराककी राजधानी) के दक्षिणमें एक बहुत बड़ा शहर। उसके खण्डहर अब भी मौजूद हैं।

अलेक्जाण्ड्रीया या सिकन्दरिया, थीबीस या थीब — मिस्रके शहर।

डफनी — एक जलपरी जिसपर सूर्यदेव-एपोलो मोहित हो गये थे, किन्तु जलपरी उनसे बचना चाहती थी इसलिये वह लौरल नामका एक वृक्ष बन गयी। रोमन और यूनानियोंके लिये इस वृक्षके पत्तोंका विशेष महत्व है। विजयी-को जयमालकी जगह लौरलका मुकुट पहनाया जाता है।

ओरोण्टस — सीरियाकी एक नदी।

दजला और फरात — दो नदियां।

पार्थिया — यूनानका एक शहर।

औरमुज्द — इराकका प्रकाश और अच्छाईका सबसे ऊंचा देव।

सोग्डियाना — एशियाका एक देश। ओक्सस और जक्साटके बीच, असलमें समर-कंद और बुखाराकी हुकूमतमें।

एकबाटना — मेदी नामके फारस राज्यकी राजधानी।

ओक्सस और जक्साटस — समरकन्द और बुखारा।

गेड — समुद्रतटपर इराकका एक प्रदेश।

फ्राटेस — रोडोगुनके पिता।

सेल्युसिडी — ऐंण्टिओकके वंशका नाम।

मेमफीस — मिस्रके किसी स्थानका नाम।

नीओबे — यूनानी गाथाकी एक स्त्री जो अपने बच्चोंके मारे जानेपर रोती ही चली गयी और पत्थरकी मूर्ति बनकर भी रोती ही रही।

थ्रासिलस — एक स्थानका नाम।

इजीयन — यूनानके आसपासका समुद्र।

कोआ — अपने झीने वस्त्रोंके लिये प्रसिद्ध एक स्थान।

आर्कने — लीडियाकी एक लड़की जो कशीदाकारी और वस्त्र बुननेमें प्रवीण थी। अपनी कलाका उसे इतना गर्व था कि उसने हस्तकौशल (विशेषरूपसे कशीदाकारीकी देवी) मिनरवाके साथ प्रतियोगिता की और उसे हरा दिया। इसीसे मिनरवाने नाराज होकर लीडियनको मकड़ीमें बदल दिया।

गोर्गन — यूनानी कथाओंकी तीन बहनें जिनकी दृष्टि पड़ते ही आदमी पत्थर बन जाते थे।

अंक १

दृश्य १

एण्टिओक। राजमहल, समुद्रके नजदीकका एक मकान

एण्टिओकका राजमहल, क्लियोपेट्राकी ड्योढ़ी क्लिओन बैठी है।

उसके पास यूनिस आती है।

क्लिओन — क्या हमेशा जिन्दा ही रहेगा !

यूनिस — ना, वह नहीं, उसकी बीमारी। क्योंकि मनुष्यमें विराजमान देवत्व उस पीड़ित शरीरसे कबका हट चुका है,—उसका गर्व, उसकी महानता, आनन्द, प्रभुत्व, वह अनाम शक्ति जो अपनी सृष्टिसे संघर्ष करती रहती है — वे सब जा चुके हैं — खोखला पंजर, मात्र पशु ही जीवित है। फिर भी उस पंजरके भी हृदय है, मन है और सब पुरानी परिचित जरूरतें हैं, और चूँकि वे हैं इसलिये —ओ, दयनीय दशा है,—सच्चे सन्मानसे वंचित, यह देखनेको बाधित है कि अब मौत छोड़कर उसे और कोई नहीं चाहता।

क्लिओन — तुम्हें दया आती है ?

यूनिस — तुझे आश्चर्य होता है ? मुझे दया आती है। मैंने उनसे कभी प्यार नहीं किया — और किया ही किसने है ? फिर भी मैं मानव हूँ और आंसुओंका स्पर्श मुझे भी लगता है। मौत मनचाही होते हुए भी मौत है और आदमी दुश्मन होते हुए भी आदमी। अगर मैंने कभी हत्या भी की तो प्रहारके पीछे करुणा होगी और हत्या इसलिये करूंगी कि वह जरूरी होगी।

क्लिओन — यह मूर्खतापूर्ण विचार है।

यूनिस — हां, अगर वह दुर्बलता हो और प्रहार करनेमें देर करवाये।

क्लिओन — महारानी अभी तक उनकी सेवामें हैं ?

यूनिस — अब नहीं। क्योंकि औपचारिक ढंगसे जब वे सेवा कर रही थीं तो उनके स्वामी, मरते सम्राटने उनपर एक कड़ी दृष्टि डाली और बोले, "औरत, अपनी खुशीको दबानेकी असफल चेष्टासे मेरी मौतको कष्टकर न बना। अपने बेटों-

को वुला ले ! वे आयें उससे पहले मैं अंधकारमें जा चुकूंगा। फिर भी बहुत अधिक न फूल, कहीं क्रुद्ध देवता तुझे अपने बेटोंके आगमनके द्वारा ही सजा न दे दें। उसी आगमनद्वारा जिसके लिये तू इतनी खुश है"।

क्लिओन — तो फिर अब रानी कहां हैं और उनकी सेवामें कौन है ?

यूनिस — रोडोगुन।

क्लिओन — वह बांदी ! कोई कुलीन सेवक नहीं ?

यूनिस — लगता है मैं छिछोरोंकी भाषा सुन रही हूं। क्लिओन तुम, उस बिरादरी-की हो क्या ?

क्लिओन — राजकुमारी ! मैं तुम्हारे विचित्र आकर्षणपर विस्मित हूं ! तुम एक काले तौलियेमें विरक्तिकर ढंगसे लिपटी खड़ियाकी पुतलीसे प्यार करती हो और उस पर मुग्ध हो।

यूनिस — उसके फीके रंगमें गुलाब हैं लेकिन वे हाथीदांतमें छिपी लज्जाकी लाली-की स्मृति हैं। वह एकदम मौन, मृदु, विवर्ण और पवित्र है, साथ ही बुझी-बुझी-सी प्रकृतिवाली जिसका हृदय निद्रासम सुकुमार है।

क्लिओन — वह एक धुंधली आत्मा है जो निश्छल नहीं है, यूनानी नहीं है। शायद किसी मैगियनकी बेटी हो जिसमें आधी रातके जादू-टोने भरे हैं। सोचती हूँ, शायद किसी मृतात्माने उसकी देहमें प्रवेश किया है। मैं उस जादूगरनीसे घृणा करती हूँ !

यूनिस — क्लिओन, हमें एक ऐसा राजा मिलेगा जो जवान होगा और रोडोगुन सुन्दर है। तुम्हारी क्या राय है, ऐ छोटे कड़वे दिल !

क्लिओन — आशा करती हूँ वह गुलाबोंको और दिनके प्रकाशको पसन्द करेगा।

यूनिस — तेरा मतलब है, तुझे ? ओ, उसकी चाल देखो ! ज्योत्स्नामें तैरती कुमुदिनी उसकी बहन होगी।

(रोडोगुनका प्रवेश)

रोडोगुन — आखिर, उनकी यातना खतम हुई।

क्लिओन — रोडोगुन, तुमने अपनी मालकिनको और नौकरीको क्यों छोड़ दिया ?

रोडोगुन — अब वे मुझे अपने पास नहीं रखना चाहतीं। कहती हैं मैं उनकी ओर बहुत आश्चर्यभरी और बड़ी-बड़ी आंखोंसे देखती हूं इसलिये वे अकेली ही अपने पतिके अंत और अपनी रिहाईकी प्रतीक्षा कर रही हैं। हाय, वीरवर, महाराज, कितने ही मौतके खेतोंको रौंदनेवाले ! वे सिद्धिको पुकारते तो वह दौड़ी-दोड़ी आती थी। उन्होंने विजयको अपना रण-अनुचर बना लिया था। अब

वे कैसे परित्यक्त पड़े हैं ! उनका अंत देखनेवाला कोई नहीं। उनके चाटुकार आसपास फुसफुसाते हैं, वे अब उनके नहीं रहे। उनकी प्रायः विधवा बनी रानी मुस्कराती है यदि मनुष्य अपना अंत देख पाते तो दयाकी आवश्यकताको ज्यादा समझ सकते।

क्लिओन — मेरे चप्पलकी डोरी ढीली हो गयी है। घुटने टेककर उसे बांध दे, पार्थियन रोडोगुन।

यूनिस — क्लिओन, तुझे भी शायद अभी करुणाकी जरूरत होगी।

(क्लियोपेट्रा राजमहलके दालानोंमेंसे होती हुई तेजीसे प्रवेश करती है)

क्लियोपेट्रा — एण्टिओकस मर गया और आखिर अब मैं अपने बेटोंके मुँह देख सकूँगी। ओहो, मैं महलके ऊपर चढ़कर उल्लासके मारे चिल्ला सकती हूँ ! यूनिस, मेरी ओर इस तरह मत घूर। मैंने अपनी आत्माकी तीव्र वेदनाके साथ अठारह वर्ष मौन रहकर बिताये हैं जब कि सारे समय मेरे अन्दर मांका हृदय अपने बच्चोंकी पलकोंके लिये चिल्लाता रहा, जिन्हें कष्टसे जन्म दिया था उन नन्हें शरीरोंका स्पर्श पानेके लिये रोता रहा। दीर्घ ठंडी और उदास उषाएं उस सुखके बिना ही बीत जाती थीं। बस मेरा कुत्सित पति और उसका मुकुट ही होते थे,—उसका मुकुट !

यूनिस — दुनियाकी दृष्टिमें तो वे महान् पुरुष थे, उच्च विचारोंवाले, भव्य और वीर। उन्हें मौतके हवाले करके तुम अपने बच्चोंके साथ आनन्द मनाओ।

क्लियोपेट्रा — वह मेरे बच्चोंको मेरे पास आने न देता था इसलिये मैं उसके शवपर थूकती हूँ। यूनिस, तूने कभी सोचा है कि जब मेरे मजबूत लंबे-चौड़े लड़के, जो दो तुतलाते बालक, सुकुमार शिशु थे, बड़े-बड़े डग भरते हुए आयेंगे तो वह दृश्य कैसा विचित्र लगेगा ? कभी सोचती हूँ कि वे एकदम नहीं बदले और मैं अपने नन्हें एण्टिओकसको छोटे-छोटे सूर्यसे प्रकाशित मनोहर अलकोंके साथ देखूँगी जो एकदम अपने पिताकी-सी हैं। और उसकी वे आंखें जिनके कटाक्षोंमेंसे उसका शिशु राजत्व झांकता था। टिमोक्लीस हवाके झोंकोंसे खिले फूलकी-सी आंखें लिये अपने भाईका हाथ थामे मेरी ओर डगमागाता आता और उसके गुलाबी होंठ मेरे वक्षकी ओर हंसते हुए बढ़ते। क्या यह विचित्र न होगा, कितना मधुर और विचित्र ?

यूनिस — और वे मिस्रसे कब आयेंगे ?

क्लियोपेट्रा — आह, यूनिस, मिस्रसे ? वे यहां हैं यूनिस।

यूनिस — यहीं !

क्लियोपेट्रा —— प्यारी मूर्ख, इस कमरेमें नहीं लेकिन एण्टिओकमें, इस तरह छिपे हैं कि क्रूर आंखें उनपर न पड़ने पायें। क्या तुम सोचती हो कि इतने रिक्त वर्षोंके बाद मांका भूखा हृदय आनन्दके एक फड़फड़ाते क्षणको भी खो सकता है ? थेरामिनीस, जो पूरा बाज है इस शुभ रोगकी मददसे तीरकी तरह उस पार गया और उन्हें ले आया। यूनिस, वे यहां हैं ! फिर भी उन्हें देख न सकी, उन्हें गले न लगा सकी। लेकिन अब एण्टिओकस, मर चुका, और मेरे ओठ उन्हें चूमेंगे ! संदेशवाहक अपने खुरोंमें तूफान लिये रास्तोंको छोटा करते हुए उन्हें मेरे पास ला रहे हैं !

यूनिस —— इस नये आनन्दकी घड़ीको घृणाभरी स्मृतियोंसे खतरेमें मत डालो। क्योंकि निष्कासित आत्माएं भयावह होती हैं और देवोंकी अपनी सनक होती है।

क्लियोपेट्रा —— मैं क्रूर एण्टिओकससे घृणा करती थी क्या इस कारण दैवी प्रकोप भड़क उठेगा ? जब मैं अपने रिश्तेदारोंकी हत्या करूं तब वह भड़क सकता है। यह मृत व्यक्ति मेरे हृदयके लिये शून्यसम था। मेरा पति तो निकानोर था, मेरा उच्चाशय, सुनहरे केशोंसे सुशोभित सुन्दर और खिले मुखवाला स्वामी। जब वह घृणित पार्थियनकी जंजीरोंके कैदी बनकर दयनीय दशामें मर गये तो मेरा दिल टूट गया, सिर्फ अपने बच्चोंके कारण मैंने दिलके टुकड़ोंको जोड़कर मजबूतीसे बुना था, मेरे नन्हें-मुन्ने जिन्हें मुझे अपनेसे दूर भेजना पड़ा था ! लेकिन वह निराशाजनक अमंगल और घृणित जीव —— एण्टिओकस —— कठोर चेहरेवाला, हृदयसे क्रूर, वह पड़ावों और कवायदोंकी प्रचण्ड दलदल,—वह मेरा स्वामी कभी नहीं था। वह तो राज्यका कारण मात्र, नीतिकी एक चाल था; और उसने मेरे बच्चोंको देशनिकाला दिया। तू कभी मां नहीं बनी !

यूनिस —— मैं तुम्हारे साथ प्रेम तो कर लूंगी, लेकिन क्लियोपेट्रा ,घृणा करनेके लिये तैयार नहीं हूं।

क्लियोपेट्रा —— मुझसे प्यार कर और जिनसे मुझे प्यार है उनके साथ भी उसी तरह प्यार कर जैसे तू अपनी शांत और पार्थियावासिनीसे करती है जिसे मैंने तेरे कारण ही नहीं मारा।

क्लिओन —— वह भी, पार्थियावासिनी,—तुम्हें दोष देती है। क्या उसीने यह नहीं कहा था कि तुम्हारी खुशी तुम्हारे बेटोंपर अभिशाप लायेगी ?

क्लियोपेट्रा —— क्या तुझे जरा भी डर नहीं ?

यूनिस —— उसने ऐसा कभी नहीं कहा !

क्लियोपेट्रा —— अब भी डर और समझदार बन ! मेरे पास अब गुस्सा नहीं फटक

सकता ! इस हंसी-खुशीकी दुनियामें जिसने मेरे बेटे मुझे लौटा दिये हैं, फिर-से दुःख जन्म न लेगा। मैं सिर्फ अपने बच्चोंकी प्यारी भुजाओंके बारेमें सोच सकती हूँ। मेरे हृदयमें दोसुरी संगीत उमड़ता है और वह दोहरे नाम गाता है, दो जुड़वां सुरोंको दोहराता है, एण्टिओकस और टिमोक्लीस, टिमोक्लीस और एण्टिओकस, दोनों मेरे दिमागमें सुखी प्रेमियोंकी तरह अपना स्थान बदलते रहते हैं।

क्लिओन — लेकिन उनमेंसे कौन-सा हमारे सीरियामें राजा बनेगा ?

क्लियोपेट्रा — दोनों राजा होंगे, मेरे राजा मेरे वक्षपर राज्य करनेवाले मेरे नन्हें राजसी मुखड़े ! उससे हीन सिंहासनपर बैठकर दोनोंके लिये कौन हुकूमत चलाता है इसका क्या महत्व है ?

(जोयलाका प्रवेश)

जोयला — देवि, समुद्रकी ओरके मीनारपर झंडा लहरा रहा है।

क्लियोपेट्रा — ओ मेरी आत्मा, उनपर जा बैठनेके लिये उड़ ! क्या ऐसा नहीं लगता कि दूर-दूर खेल-कूदकर थके हुए बच्चे मांकी ओर भागते आ रहे हैं और ये उनके वस्त्र हैं ?

(वह कमरेसे जाती है, पीछे पीछे जोयला)

यूनिस — तू, तू,क्लिओन ! अगर तेरा अंत सुखद हो तो मानूँगी कि देवता इस धरती-पर नहीं है।

रोडोगुन — उसे न फटकारो। मुझे किसी मानव प्राणीसे शिकायत नहीं। प्रकृति और भाग्य ही सब कुछ करते हैं।

यूनिस — क्योंकि मेरी रोडोगुन, तू सहन करने और मधुर बनी रहनेके लिये जन्मी है जैसे क्लिओन ठेस पहुँचानेके लिये है। हा सर्पिणी ! अपने सोने और गुलाब के बावजूद !

रोडोगुन — मैंने न सोचा था कि उसके बे-गुनाह बेटोंको उसका कर्ज चुकाना होगा। हिसाब-किताब स्वर्गमें ही रहता है और फिर हमारे लिये तो अपने अपराधों-का भार ही बहुत होता है।

(रोडोगुन और यूनिस जाते हैं)

क्लिओन — वह पार्थियावासिनी कठपुतली, जिससे वह इतना दुलार करती है वह मेरी ओर एक नजरतक नहीं डाल सकी ! मुझे खुशी है वह विषादभरा अभि-मानी, एण्टिओकस मर गया। ओह, अब आमोद-प्रमोद, नाच-रंग, यौवन और फूल होंगे। यौवन, यौवन ! क्योंकि अब हमारे सिंहासनपर कोई लंबी

सफेद दाढ़ी न होगी। उसकी जगह कोई आनन्दके लिये जन्मा प्रतापी युवक होगा जिसके साथ हम हमेशा जवान बने रहेंगे। (प्रवेश करते हुए फायलससे) खुशी मनाओ, भइया, वह मर गया।

फायलस — तब तो मेरी इच्छा और डरने ही उसे मार डाला क्योंकि वह मेरे हिसाब में टांग अड़ाने लगा था। वे दो राज-शावक यहां कब आ रहे हैं और कौन-सा मुकुटधारी सिंह बनेगा?

क्लिओन — फायलस, तुम जानते हो यह बात गुप्त है।

फायलस — जानता हूँ। जी चाहता है कि मैं यह भी जानता कि किसलिये गुप्त है। शायद छिपानेके सिवा छिपानेका और कोई कारण भी न हो! स्त्रियां स्वभावसे ही ढोंग करती और झूठ बोलती हैं जैसे सांप कुंडली मारता है, उसका कुछ मतलब नहीं होता। या फिर घृणित राजाकी यही इच्छा थी?

क्लिओन — वे एण्टिओकमें हैं।

फायलस — मैं जानता हूँ।

क्लिओन — तुम जानते थे?

फायलस — महारानी क्लियोपेट्रासे भी पहले। जो राजकाज चलाते हैं वे बेखबर सोते नहीं रहते। उनकी आंखें और कान खुले रहते हैं।

क्लिओन — जानते थे और फिर भी वे जिन्दा हैं!

फायलस — बेकार हत्या क्यों की जाय? मरते आदमीके लिये डरका कोई कारण नहीं रहता, न ही वह किसी तरहकी आशा रखता है। उसकी चिंताएं और तरहकी होती हैं। इन सीरिया-शावकोंमेंसे जो भी मुकुट पहने, वह भूखा होगा, जवान होगा और अफ्रीकी होगा! उसे रसद जुटानेवालोंकी जरूरत होगी।

क्लिओन — तो क्या वे नहीं मिलेंगे?

फायलस — मिस्रमें लोगोंकी आवश्यकताएं और तरहकी होती हैं। वहां वासना दावतोंकी तरह खुली होती है। विज्ञान, काव्य और प्रशिक्षित रुचियां किताबोंतक ही सीमित नहीं है, वहां जीवन ही कला है। वहां झिलमिलाते रहस्य हैं, सनसनीदार आडम्बर हैं, उग्र वशीकरण मंत्र चलते हैं और लुकी-छिपी औषधियां भी हैं। वहां कामनाका परिपूर्तिसे गठबंधन होता है, दुःखका मजा लिया जाता है और प्रेम कभी-कभी मौतके लिये शिकार ढूंढ़ लाता है। राजाको यहां भी उन विचित्र और भड़कीले रंगोंकी जरूरत होगी, नीरस कूटनीति और कठोर हथियारोंकी नहीं। उस समय राजनीतिकी सूखी आवश्यकताओंकी ओर फायलसको छोड़कर कौन ध्यान देगा?

क्लिओन — तो हम ऊपर उठेंगे ?

फायलस — मैं यही बात जाननेके लिये तुम्हारे पास आया हूँ। मुझे विकासकी जरूरत है। मुझे लगता है कि एक किरण मेरे मस्तकके नजदीक आ रही है। दुनिया मेरे सामने फैलती जा रही है। तू मेरी वृद्धिमें सहायता करेगी ? — क्योंकि तेरे अन्दर हिम्मत, छलकपट, और मस्तिष्क है,—मेरी वृद्धिसे तुम्हारी भी सहायता होगी — यह तो मानी हुई बात है।

क्लिओन — क्योंकि मैं रानीके पास हूँ ?

फायलस — शायद, इससे भी मदद मिले लेकिन यह मेरे लक्ष्यसे नीचे ही रहेगी। अगर तू राजाके नजदीक हो तो,—तो क्या !

क्लिओन — मुझपर भरोसा रखो।

फायलस — क्लिओन, हम जरूर ऊपर उठेंगे।

दृश्य २

समुद्रकी ओर खुलती हुई बारहदरी

(एण्टिओकस, फिलोक्टीटस)

एण्टिओकस — बुलावा नहीं आ रहा, मेरी जिन्दगी अभीतक इंतजार कर रही है।

फिलोक्टीटस — प्यारे एण्टिओकस, धीरज धरो। अभीतक वे अंधेरेके सामने हैं।

एण्टिओकस — मैंने कभी उनकी मौत चाहनेकी बात नहीं कही। उनका ऐसा ढांचा था जिसे अमर होना चाहिये था। लेकिन जब सभी एक लक्ष्यके यात्री हैं और यात्रीको रोकनेकी इच्छा करना बेकार है तो मैं भी अपनी आशाओंको संजोए हुए हूँ। ओ फिलोक्टीटस, हम जो उनकी जिन्दगी नहीं देख पाये उन्हें उनके अंतकी स्मृति रखनी चाहिये ! वे हमारी आंखोंसे ओझल अपरिचित अंधेरे-में जा रहे हैं, हमें उनकी इन गंभीर घड़ियोंसे वंचित रखा जा रहा है।

फिलोक्टीटस — सब मनुष्य आप जैसे नहीं होते मेरे स्वामी, यह राजा महान् था लेकिन साथ ही रेगिस्तानोंमें विचरते शेर-सा खतरनाक भी। उसे दूरसे हीं देखकर सराहिये।

एण्टिओकस — ओ डर और क्षुद्र सन्देह, प्रकृतिके अत्यन्त अशुभ अंग, तुम हमारी भव्य जिन्दगीको कैसा बिगाड़ देते हो ! तुम्हारे दोषसे सारी ऊंचाईयां नीची

हो जाती हैं, हमारे विराट् आलिंगन सीमित हो जाते हैं और ईश्वरका स्वाभाविक सूर्य-प्रकाश काला पड़ जाता है। हम अंधेरेके लिये नहीं बने थे, न षड्यन्त्र और घृणाके लिये, दूसरोंमें अपनी नीचता देखनेके लिये भी नहीं, वरन् अच्छे पहलवानोंकी तरह, दिली दोस्तोंकी तरह, या दिली दुश्मनोंकी तरह जिन्दगीके बड़े अखाड़ेमें आघात और आलिंगन लेने-देनेके लिये बने हैं।

फिलोक्टीटस — मांके प्रेम, मांके डरको कुछ बहाना मिल ही जाता है।

एण्टिओकस — मुझे ऐसे प्रेमकी परवाह नहीं। हे फिलोक्टीटस, मैं इस सारी सुखद रातमें सो न पाया क्योंकि मेरे मनमें गौरवशील सपने आते रहे जिनमें मैं सीरिया-के शक्तिशाली सिंहासनपर बैठा था या पार्थियामें अपनी सेनाका लोहा झन-झनाता हुआ आगे बढ़ रहा था या सिंधु नदीकी तरंगोंमें अपने घोड़ेको फेंककर उसे पार कर रहा था या फिर गंगातक पहुँचकर, तपते हुए दक्षिणतक जाकर सीरियाके राज्यका विस्तार कर रहा था। राजा बनना धरतीपर ईश्वर होना है।

फिलोक्टीटस — लेकिन अगर कमजोर ज्येष्ठ साबित हुआ तो? अगर टिमोक्लीस भाग्यद्वारा मनोनीत राजा निकला तो?

एण्टिओकस — प्यारा विनोदी टिमोक्लीस! वह मुकुटका लौह भार लेना पसन्द न करेगा। अगर मौज मजा मिल जाय तो बस उसके लिये काफी है। सूर्यका प्रकाश और हंसी-खुशी तथा दोस्तोंके हाथ उसके प्रफुल्लित मनके साम्राज्यकी रक्षा करते हैं।

फिलोक्टीटस — काश, विधाता स्वभावको परिस्थितिके अनुसार घड़नेका यत्न करता! किन्तु वह कभी-कभी अजीब विषमताओं और अनगढ़ विडम्बनाओं-को पसन्द करता है।

एण्टिओकस — क्या मेंथो दाईने कई बार मेरे आगे कसम नहीं खायी कि उसने नहीं, मैंने धरतीको पहले देखा था?

फिलोक्टीटस — और स्त्रियोंकी जीभने गुस्सा या निन्दा छोड़कर कब सच कहा है?

एण्टिओकस — फिलोक्टीटस, क्या तू नहीं चाहता कि मैं राजा बनूं?

फिलोक्टीटस — तो फिर मैं नीलको अपने खेतोंमें और मिस्रको अपनी रेतपर सोता क्यों छोड़ आया? जबतक राजाओंकी दुनियामें तुम्हारे जहाजकी पताका सबसे ऊंची न फहराने लगे तबतक तुम्हारे शत्रुओंको छिन्न-भिन्न करते हुए जीवन-सागरमें तुम्हारी साहसपूर्ण प्रगतिमें तुम्हारे पीछे रहनेके लिये ही न? लेकिन चूंकि हम इस अस्तव्यस्त न्यायहीन धरतीपर लड़खड़ाते हुए चितातक

जा पहुँचते हैं, न कोई शक्ति हमारा पथप्रदर्शन करती है न कोई कानून, और न ही हमें वह मिलता है जो हम चाहते हैं या जिसके अधिकारी हैं, बल्कि दुरूह दुर्भाग्य और उपहासास्पद विडंबनाएं हमें दबोचती हैं, इसलिये अधिक आशा न करना ही अच्छा है।

एण्टिओकस — अपनी आशाओंको स्वर्गतक ऊंचा उठाना और समस्त विशाल धरती-तक फैलाना कहीं अच्छा है। दैवने मुझे यह राजसी स्वभाव, वीर स्वरूप और ये मुकुटधारी विचार व्यर्थ ही नहीं दिये हैं, ये उपहासके लिये या प्रजाका दिल दुखानेके लिये नहीं हैं। तुम्हें घोड़ोंकी उत्साह-भरी टाप नहीं सुनायी देती ? मेरा राज्य मेरी ओर चढ़ा आ रहा है।

(स्तम्भावलीकी दूसरी ओर जाता है)

फिलोक्टीटस — हे ओजस्वी युवक, जिसकी भुजाएं धरतीको कस लेंगी, एक गर्वीली व्याकुल मांकी तरह आशा और प्रेमकी डोरीसे खिंचा हुआ, इच्छा करता हुआ, डरता हुआ, प्रशंसा और शंका करता हुआ उल्लासमें झूमता, थरथर कांपता और डांट-फटकार करता हुआ तुम्हारे पीछे आया हूँ। उसे अपने सुन्दर वीर बालकपर गर्व है फिर भी वह कांपती है कि कहीं उसका साहस और सौन्दर्य उस घातक ईर्ष्याको न जगा दे जो अदृश्य सिंहासनसे हमें ताका करती है।

(थोआस और मेलिटस फाटकसे आते हैं)

थोआस — क्या यही सीरियाके जुड़वां भाई हैं ?

फिलोक्टीटस — केवल उनमेंसे बड़ा, सीरियाका एण्टिओकस।

थोआस — निकानोरके पुत्र ! अभिजात सेल्यूसिड एण्टिओकस, अचेतन नदीमें सफर कर रहा है और सीरियाका सिंहासन उत्तराधिकारीके लिये खाली पड़ा है।

एण्टिओकस — देशोंमें दुःख फैलाता हुआ, जिन देशोंको उसने हराया उन्हें भी दुखी करता हुआ एक तेजस्वी सूर्य आकाशसे गिर गया है। यह प्रकृतिका नियम है कि हम जिनसे प्रेम करते हैं उनका स्थान लेनेके लिये अपने हृदयकी भावना-ओंके बावजूद ऊपर उठते हैं। मैं प्रसन्न हूँ कि इतनी जल्दी मुझे ऐसे वीर पुरुषों-के देशपर राज्य करनेका बुलावा आया है। क्या तुम थोआस नहीं हो ?

थोआस — मेसिडोनका थोआस।

एण्टिओकस — थोआस, हम दोस्त बनेंगे। वह दिन आनेमें देर है क्या जब हम दुनियाभरमें अपने घोड़े दौड़ाते हुए पर्सीपोलिसमें उन्हें बांध सकेंगे ?

(वह टिमोक्लीसकी ओर मुड़ता है जो अभी-अभी आया है और

महलके अन्दर जाता है)

मेलिटस — यह वीरोंके तौर-तरीके हैं और यह राजाका चेहरा है।

थोआस — एकदम राजा है। केशोंके प्रभामण्डलके नीचे क्या चेहरा दमकता है!

टिमोक्लीस — सीरियावासियो! मैं तुम्हारा अभिवादन करता हूँ। क्या मैं तुम्हारे नाम जान सकता हूँ?

मेलिटस — मैं हूँ मेलिटस और ये थोआस हैं।

टिमोक्लीस — मेलिटस? ओह, हां मेसिडोनके।

मेलिटस — नहीं, एण्टिओकका।

टिमोक्लीस — एक ही बात है। हम अलेक्जाण्ड्रीया और थीबीसमें तुम सभी प्रसिद्ध सेनानियोंकी चर्चा किया करते थे। तुम्हारी महान् ख्यातिसे हम सुपरिचित हैं और अब तुमसे परिचय होगा, तुम्हें सराहना और प्रेम मिलेगा।

मेलिटस — आपका सौजन्य मुझे अभिभूत करता है लेकिन मैं कोई सेनानी नहीं हूँ। सिर्फ महाराजका गरीब गृहप्रबन्धक हूँ। आपका सेवक आपका अभिवादन करने आया है।

टिमोक्लीस — इसलिये कुछ कम प्रिय नहीं हो जाते। तुम्हारा कर्तव्य हमारी दिन चर्याको अधिक सरल और सुखी बनाता रहेगा। थोआस, तुम्हारा नाम हमारे प्रदेशकी पुस्तकोंमें इतने गहरे अक्षरोंमें खुदा है कि उसे मेरे जैसे व्यक्तिसे, जिसने अभीतक क्रोधमें तलवार नहीं खींची, थोड़ीसी प्रशंसाकी जरूरत नहीं है।

थोआस — कुमार, मैं सम्मानित हुआ। यह मत भूलिये कि आपकी माता अठारह वर्षके बाद आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।

टिमोक्लीस — मेरी मां! आह, आखिर मेरे भी एक मां है। आप सब सामंत रास्तेमें चलते-चलते मुझे बताते चलें कि वह कितनी गोरी है या फिर हमारी मिस्री सुन्दरियों-सी श्यामा है, लम्बी चौड़ी और उदात्त है या फिर रानीपनके साररूप वामन है। और उसका मुखड़ा — वह, निश्चित ही वही प्यारा मधुर मुख होगा जिसे मैंने मिस्रमें, अनेक बार देखा है जब जागते हुए पड़ा-पड़ा चांदनी रातोंमें खिड़कीके बाहर हवाको अनेक आवाजोंमें फुसफुसाते हुए सुना करता था। थोआस, एक बच्चेके लिये अपनी मांको तब देखना जब अठारह वर्षोंने उसे बड़ा कर दिया विलम्ब ही तो है, है न? यह, हां, यही स्वर्ग है, मां, दोस्त और सीरिया। हमारे सांवले मिस्रमें कोई जिन्दगी न थी,—हालांकि जब मैं वहां था तो मुझे वही पसन्द थी; लेकिन ओह, तुम्हारा सीरिया! मैंने घण्टोंपर घण्टे तुम्हारी दमकते सुन्दर मुखड़ोंवाली तन्वियोंको आते-जाते

देखनेमें विताये हैं। और तुम्हारे फूल, क्या फूल हैं ये! और सबसे बढ़कर तुम्हारा सूर्य, मिस्रको तपानेवाला सूर्य नहीं बल्कि उत्साह, आनन्द और ममता-मय ओजस्विताका स्रोत। ऐसे प्रदेशपर राज करना बड़ा सुखमय होगा।

एण्टिओकस — (घरसे वापस आते हुए) चलो, हम घोड़ोंपर अपने राज्यकी ओर चलें।

टिमोक्लीस — प्यारे सीरियामें एण्टिओक, देवोंका धाम, और डफनीके स्वर्णिम कुंज, और समुद्रकी ओर भागती हुई मधुर ओरोण्टस! आओ मेलिटस, मेरे रहो और मुझे सब कुछ बताते चलो।

दृश्य ३

महलमें क्लियोपेट्राका कमरा। क्लियोपेट्रा बैठी है, रोडोगुन।

क्लियोपेट्रा — उनके घोड़ोंकी टाप मेरे हृदयमें बढ़ती चली आ रही है। ऐसा ही होगा। मुझे अब नफरतसे क्या वास्ता? पार्थियावासिनी रोडोगुन, तूने महानगर पर्सीपोलिसके अपने राजसी विचारको और पिछले ठाटवाटको भुला दिया है या तेरे स्वप्न अब भी सिंहासनके चारों ओर मंडराते हैं?

रोडोगुन — मेरा ख्याल है कि सब गिरे हुए लोगोंको अपने सुखद भूतकालमेंसे कुछ सपनोंको बचाकर रखना ही होता है,—वरना जीना कितना कठिन हो जायगा।

क्लियोपेट्रा — ओ, अगर चिंताओंके अंधकारमें कोई आशा, चाहे जितनी छोटी क्यों न हो, बनी रह सके तभी हम जी सकते है, हां, सिर्फ तभी जी सकते हैं।

रोडोगुन — आशा! मैं भूल चुकी हूँ कि लोग आशा कैसे करते हैं।

क्लियोपेट्रा — रोडोगुन, सीरियायी एंटियोकमें अपने कट्टर शत्रुके यहां बांदी बनकर रहनेमें तेरा जीवन बहुत कठोर है क्या?

रोडोगुन — जब आप इतनी मधुरतासे बोलती हैं तब नहीं। मैं हमेशा परिस्थिति और अन्दरकी शान्त आत्मामें बाहरी सामंजस्य बनाये रखकर उसे मधुर बनानेकी कोशिश करती हूँ लेकिन है वह मेरे भाग्यसे परे।

क्लियोपेट्रा — पार्थियावासिनी, मेरे पतिकी हत्याके कारण मेरे अन्दर तेरे सारे राष्ट्रके लिये घृणा पैदा हो गयी थी, तुझे वह घृणा सहनी पड़ी है। जब मैंने तुझे अपनी एड़ीसे छुआ तो मानों दजला और फरातको पैरोंतले कुचला और सारे पार्थियाने कष्ट पाया। मैंने तुझे इसलिये जीने दिया क्योंकि मैं तेरे शरीर-

में अपने वदलेकी भावनाको पोस रही थी। किन्तु मैं आशा करती हूँ कि उन क्रूरता और दुःखसे भरे विचारोंको उसी भूतकालके साथ काटकर गाड़ दूँगी जिसने उन्हें जन्म दिया था। वच्ची, तू मेरी मदद करेगी ? क्या तू मेरे साथ एक नया जीवन और नयी भावना शुरू कर सकेगी ?

रोडोगुन — अगर हमारे भाग्य करने दें। लेकिन वे कोमल नहीं हैं।

क्लियोपेट्रा — मेरी जिन्दगी फिरसे शुरू हो रही है। अपने प्यारे वेटोंमें मेरी जिन्दगी फिरसे शुरू हो रही है और मेरे मृत पति फिरसे जी उठें हैं। सब कुछ मधुरता-से जुड़ गया है। अव मुझमें बैरकी इच्छा नहीं रही। युद्धके घृणास्पद और भयंकर हाथोंसे मुझे डर लगता है। आह, हमारी प्रजाएं,माताएं और बालक आरामसे यूनानी एण्टिओक और पर्सिपोलिसमें रहें। हम उन सुनहरे सिरों-को अपने वक्षकी गहराइयोंमें दूर छिपाये रखें। उन्हें फिरसे बन्धन और मौत-के पास कभी न जाने दें। शान्ति, शान्ति, हम हमेशा शान्तिमें रहें।

रोडोगुन — और क्या शान्ति मुझे अपने पिताकी बांहोंमें पहुँचा देगी ?

क्लियोपेट्रा — या फिर तुम्हें राजसिंहासनपर रोक रखेगी। उससे ज्यादा सुखद पाश भी है।

रोडोगुन — अगर ऐसा ही होना है।

क्लियोपेट्रा — क्या तू एकदम संवेदनाहीन है या ऊपर उठनेसे डरती है ? मैं सोच नहीं सकती कि बर्बर देशोंतकमें आदमी कहलानेवाला कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो सिंहासनके वदले गुलामी और कोड़ोंकी मारको पसन्द करे। या है कोई ऐसा ?

रोडोगुन — क्या मैं पहले अपने पतिको नहीं जान सकती ?

क्लियोपेट्रा — मैंने तुम्हारी पसन्द नहीं पूछी। यह भी रोज दी जानेवाली आज्ञा-ओंकी तरह एक आज्ञा है जिसका पालन करना होगा।

रोडोगुन — तो मैं उसे गुलामके रूपमें दी जाऊंगी, पत्नी रूपमें नहीं ?

क्लियोपेट्रा — मुझे लगता है तू अपने भाग्यके साथ-साथ बहुत जल्दी ऊपर उठ रही है। या मैंने जैसा देखा है तू उससे भिन्न है या फिर तू ढोंग रचती है ? अरी धूर्त बर्बर, क्या अभीतक तू शिष्ट दासताका मुखौटा पहने हुए थी ?

रोडोगुन — अभी इतनी मधुरतासे बोलनेके बाद इतनी कठोरतासे मत बोलिये। मैं आज्ञा मानूँगी।

क्लियोपेट्रा — अपनी पार्थियाई आत्माको फिरसे सिंहासनपर बिठाकर हुकूमत करते हुए मुझपर भी राज करनेकी आशा करती है क्या ?

रोडोगुन — अभीतक मैं आपके गुलामोंमें अंतिम रही हूँ जिसकी सबसे कम परवाह की जाती है, सीरियाके सिंहासनपर बैठकर आपके सर्वप्रथम गुलामके सिवा और क्या हो सकती हूँ ? मुझे न हुकूमत करनेकी आशा है न महत्त्वाकांक्षा-भरे सुखोंकी चाह। मुझे चाह है सिर्फ प्यारकी जिसकी पार्थिया छोड़नेके बाद हमेशा कमी रही।

क्लियोपेट्रा — तब मेरी बात मान, याद रख, जो हाथ सिंहासनपर बैठाता है, वह नीचे भी उतार सकता है।

रोडोगुन — मैं याद रखूँगी और आज्ञा मानूँगी।

(वह अपनी जगह चली जाती है)

क्लियोपेट्रा — उसके गर्वके ताव कौंधकी तरह आते-जाते हैं। क्या इतने क्रूर, काले और निर्दय वर्षोंके बाद आनेवाले वर्ष उसे सुख देनेका षड्यन्त्र न रचेंगे ? रानी मेरी गुलाम होगी जिसका मानस हुकुमकी राह देखनेका अभ्यस्त होगा, जिसका सीरियामें अपना कोई दल न होगा, जिसे मेरे बेटेको मुझसे छीननेकी या मेरी राजसत्ता चुरानेकी इच्छा न होगी। ओ, वे आ रहे हैं। धीमे चलो, मेरे दिल ! अति उल्लाससे कहीं टूट न जाना।

(यूनिस तेजीसे आती है)

यूनिस — क्या आपको यह बतानेवाली मैं पहली हूँ कि वे आ गये हैं ?

क्लियोपेट्रा — आह लड़की, मुझसे स्वर्गकी बात करनेवाली तेरी जीभ दुनियापर सुखकी वर्षा करती रहे !

(क्लिओनका प्रवेश)

क्लिओन — (यूनिससे) वे तो धरती और स्वर्गसे भी ज्यादा सुन्दर हैं। (क्लियोपेट्रासे) आपके बच्चोंके पांव महलकी सीढ़ियोंपर हैं।

क्लियोपेट्रा — ओ, नहीं नहीं, महलकी नहीं, मेरे दिलकी सीढ़ियोंपर। मैं उनके पदचापको ऊपर आते हुए सुन रही हूँ। चुप हो जा, मेरे वक्षमें धड़कनेवाले, चुप हो जा। मैं रानी हूँ, मेरे अन्दर तुम्हारी आवाज नहीं आनी चाहिये।

(थोआस और मेलिटस एण्टिओकस और टिमोक्लीसको लिये प्रवेश करते हैं)

थोआस — महारानी ! हम क्लियोपेट्राके बेटोंको उनके पास लाये हैं।

क्लियोपेट्रा — मैं तुम दोनोंको धन्यवाद देती हूँ; पास आओ। दिल इतनी जोरसे क्यों धड़क रहा है कि मेरी सांस ही रुकी जा रही है ?

(वह दोनोंको रुकनेका इशारा करती है और चुपचाप उन्हे निहारती है)

टिमोक्लीस — यह मेरी मां है। मैंने इसीके सपने देखे थे।

यूनिस — यूनानी ओलिम्पसके अभिजातवासियो, मानवके छद्म रूपमें पार्थिव दृष्टि-से हम मर्त्योंको जालमें फंसानेके लिये आप सबमेंसे कौन-सा विद्युत वेगसे स्वर्ग-से उतरा है?

क्लियोपेट्रा — सीरियाकी प्रजासे कहो कि वह ईश्वरके चुने योग और मुहुर्त्तमें अपने महाराजको जानेंगे। लेकिन पहले कुछ दिन तो मांके अपने हैं।

थोआस — आपके प्रति देवोंका जो ऋण है उसे याद करके इसमें किसीको आना-कानी न होगी।

(थोआस और मेलिटस कमरेसे जाते हैं)

क्लियोपेट्रा — मेरे बच्चो, ओ मेरे बच्चो, मेरे प्यारे बच्चो! मेरे पास आओ, नजदीक आओ, मेरी भुजाओंमें समा जाओ। तुम सुन्दर हो, ओजस्वी हो, ऊंचे पूरे और हृदयको फंसानेवाले हो, तुम एकदम अपने पिताके अनुरूप हो।

टिमोक्लीस — मां, मेरी प्यारी मां! मैंने वर्षों तुम्हारे ही सपने देखे!

क्लियोपेट्रा — और क्या सपना ज्यादा सुन्दर था, मेरे बच्चे? कैसा विचित्र है, कैसी मधुर कटुता है कि मुझे अपने बच्चेसे उसका नाम पूछना पड़ रहा है!

टिमोक्लीस — मैं हूँ तुम्हारा टिमोक्लीस।

क्लियोपेट्रा — आओ, मेरे बाहुपाशमें तुम ही पहले आ जाओ! ओ हां, ठीक है, एकदम ठीक है। मेरे प्यारे, यह तुम्हारा विशेषाधिकार है। मुझे प्यार करो, ओ, और एक बार, मेरे छोटे बेटे टिमोक्लीस। आह क्या सुख है, जिन अंगों-को अपने अन्दर धारण किया था उन्हीका स्पर्श! ओ मेरे छोटे तेजस्वी टिमोक्लीस, मेरी गोदमें लेटनेके लिये तुम बहुत बड़े हो गये हो, मुझे मांका वह सुख नहीं मिल पाया।

टिमोक्लीस — मां, मैं अब भी तुम्हारा छोटा टिमोक्लीस हूँ जो बड़ा होनेका खेल करता है। तुम मुझे उस मधुर आश्रयसे वंचित न रख सकोगी जिसे खोकर मैं मातृ-हीन मिस्रमें तड़पता रहा।

क्लियोपेट्रा — और मेरे नन्हें! तू छोटे बच्चेकी तरह अपनी मांको बस अपने लिये ही रखेगा? क्या मुझे तुझको अपनेसे दूर हटाना होगा? अब एण्टिओकस, मेरे लंबे एण्टिओकसको अपना हिस्सा लेने दो।

रोडोगुन — वे जिस स्वर्गसे आये हैं उसीकी तरह ऊंचे और सुन्दर हैं। मैंने आजसे पहले इतनी महान् और शक्तिशाली कोई चीज नहीं देखी।

एण्टिओकस — देवि, मैं आपका आर्शवाद चाहता हूँ; मुझे उसके लिये अपने आगे

घुटने टेकने दीजिये।

क्लियोपेट्रा — घुटने टेकना! आ बेटे, मेरे हृदयमें आ। तूने भी मेरे सपने देखे थे, एण्टिओकस ?

एण्टिओकस — महान् वीर निकानोरकी विधवाके, और सीरियाकी रानीके और अपने जीवनकी पुनीत धाराके सपने देखे थे।

क्लियोपेट्रा — एण्टिओकस, ये ठंडे, भावशून्य और गर्वीले शब्द हैं। तूने अपनी मांके सपने नहीं देखे, अपनी प्यारी मांके ?

एण्टिओकस — तुम मेरे लिये मातृत्वका विचार थीं, एक पवित्र और उदात्त वस्तु। मैं उससे प्रेम करता था।

क्लियोपेट्रा — और कुछ नहीं ? मेरे बेटे, अपनी बातोंमें तुम इतने उदासीन हो ? ओ बेटे एण्टिओकस, तुम्हें अपने पिताका चेहरा मिला है। मुझे आशा है कि दिल भी उन जैसा होगा। क्या तुम मुझे प्यार नहीं करते ?

एण्टिओकस — जरूर, मैं प्यार करनेकी आशा करता हूँ।

क्लियोपेट्रा — बस, आशा करते हो!

एण्टिओकस — देवी, मेरे शब्दोंको बहुत महत्व न दीजिये।

क्लियोपेट्रा — मैं महत्व देती हूँ। तुम्हारे शब्द, तुम्हारे होठ, तुम्हारा दिल, तुम्हारा देवों-सा यह कांतिमान शरीर जिसे मैंने, हां, मैंने अपने गर्भमें बनाया था, इन सबको प्रकाशमें लानेके लिये यंत्रणा सही थी। मेरा उन सबपर अधिकार है। तुम मुझसे प्रेम नहीं करते ?

एण्टिओकस — मैंने आपकी यादसे प्यार किया है, सन्मान दिया है, स्नेहसे संजोया है। स्वयं आपके आदेशसे हम एक दूसरेके लिये विचार मात्र थे, किन्तु अब हम मिल रहे हैं। मुझे विश्वास है कि मैं अपनी मांके प्रति कर्तव्य, प्रेम, आदरमें असफल न होऊंगा।

यूनिस — वे देखनेमें राजा जैसे हैं किन्तु उनकी वाणी भावशून्य है।

रोडोगुन — क्यों उन्हें झूठ बोलकर अपने देवत्वसे भ्रष्ट होना चाहिये ? दोष देवीका और अनुचित मांगका है।

क्लियोपेट्रा — खैर, ठीक है। मेरे हृदयने इसीके लिये मुझे अधमरा किया था! ओ टिमोक्लीस, मेरे नन्हें टिमोक्लीस, फिरसे गले लगा जा। अपने बच्चेका स्पर्श पाऊं जिसने मिस्रमें अठारह वर्षतक मेरे सपने देखे। यहां मेरे घुटनोंसे लगकर बैठ जा और मुझे मिस्रकी बातें बता,— वह मिस्र जहां मैं जन्मी थी, मिस्र, जहां मेरे प्यारे बेटे मुझसे अलग करके रखे गये थे! प्यारा मिस्र, घिनौना

मित्र !

टिमोक्लीस — मुझे उससे प्यार था क्योंकि उसने मेरी मांको जन्म दिया था लेकिन वहुत प्यार न कर सका क्योंकि मां मुझसे दूर थी।

क्लियोपेट्रा — वहां तुम्हारा जीवन कैसा था। तुम्हारे सवेरे और तुम्हारी शामें, तुम्हारे रातोंके सपने, इन सबपर मुझे अधिकार करना है; मेरे हाथोंमेंसे जितने मधुर वर्ष निकल गये हैं उन सबपर अधिकार करना है। क्या तुमने वहांके निरभ्र प्रभातमें उठकर, नीलको, पूज्य पिता नीलको, मिस्रकी रेतमें महान् मंदिरोंके आगे गंभीरतासे बहते देखा था? तुमने सौ दरवाजोंवाला थीब देखा है न, मेरा थीब और मेरा ऊंचा मीनार जहा बैठकर मैं तुम्हारे सजातीय, सूर्यको देखा करती थी? और असंख्य सफेद पालोंवाला सिकन्दरिया? मेरा मेरा भाई, महाराज टोलेमी, क्या उसे तुम्हारे नन्हें अंगोंमें अपनी बहनका आलिंगन करना प्यारा न लगता था? कितनी बातें करनी हैं किन्तु अभी नहीं! यूनिस, कुछ देरके लिये इन्हें मुझसे कुछ दूर ले जा ?। रोडोगुनको ले जा और दूसरे गुलामोंको बुला ले। वे मेरे दोनों बेटोंको महान् राजाओंकी तरह सजायें, जिन्हें बहुत पहले ही राजा होना चाहिये था। जाओ, बेटे एण्टिओकस, जा टिमोक्लीस, मेरे छोटे टिमोक्लीस।

एण्टिओकस — हम भावीका ऐश्वर्य हैं और इसलिये भूतकालकी भव्यताके प्रति भी हमारा कुछ कर्तव्य है। अपनी यात्राके लिये सुसज्जित, महान् एण्टिओकस अभी मुश्किलसे ठंडे हो पाये हैं। धरती उनके ऐश्वर्य और महानताका मूल्य न आंक सकी। इससे पहले कि विषादपूर्ण छायाएं उसे ले उड़े, मैं उनके सामने घुटने टेककर उसे अपनी आत्मामें ले लेना चाहूँगा।

यूनिस — यह एक करारी चोट थी। क्या यह किसी भावनाहीन और व्यंग्यपूर्ण देवका काम है?

क्लियोपेट्रा — महान् एण्टिओकस — उसके सपने देखते थे तुम? तुम उनके भतीजे हो! पार्थियावासिनी, राजपुत्रको मृत महाराजके शव-गृहमें ले जा और फिर उसके अपने कमरेमें ले जाना।

एण्टिओकस — (स्वगत) वही पार्थियावासिनी थी! महान् एण्टिओकस, आपने मुझे सीरिया दिया है और साथ ही यह भी, और ईरानको भी बादमें मेरा रमणीय और मोहक बननेके लिये छोड़ गये हैं।

(वह रोडोगुनके साथ जाता है)

टिमोक्लीस — (यूनिसके पीछे चलते चलते) बहन, बता तो,— मुझे पता ही न

था कि यहां मेरी इतनी सुन्दर बहनें हैं,—क्या यही पार्थियाकी राजकुमारी रोडोगुन थी।

यूनिस — फ्राटेसकी बेटी, राजकुमार, तुम्हारी मांकी गुलाम है यह।

टिमोक्लीस — तो सीरियाके चेहरोंसे भी ज्यादा सुन्दर चेहरे हैं।

(यूनिसके साथ जाता है)

क्लियोपेट्रा — हा दैव, हे स्वर्गके देवो, तुम हमें हृदय इसलिये देते हो कि जिन्दगी उसे कुचला करे! क्लिओन, मैं बहुत व्याकुल हूँ।

क्लिओन — क्यों, देवी, आप टिमोक्लीसके जैसा हंसमुख और मनोहर पुत्र पाकर भी व्याकुल हैं!

क्लियोपेट्रा — लेकिन दूसरा, हाय वह दूसरा! एण्टिओकस! उसके चेहरेसे लगता है कि मुझे अपना पति वापिस मिल गया है किन्तु वह मुझसे प्यार नहीं करता।

क्लिओन — फिर भी वही राजा बनेगा। आपने कहा था कि वही जेठा है।

क्लियोपेट्रा — मैंने कहा था? मैं असमंजसमें थी।

क्लिओन — वह राजा बनेगा। यह भावशून्य, आनन्दविहीन हृदयवाला मनुष्य आपको महलके किसी दूरके कोनेमें धकेल देगा और आपके स्थानपर राज्य करेगा। वह सीरिया, पार्थिया और सिन्धु तटको भी युद्धके कोलाहलसे भर देगा। वह हमारे प्रेमियोंको और पुत्रोंको मौतके घाटतक ले जायगा! हमारे बेटोंको! शायद टिमोक्लीसको भी ले जाय और उसे एक सुन्दर बलिके रूपमें युद्धके क्रूर देवको अर्पित कर दे।

क्लियोपेट्रा — मेरा टिमोक्लीस! मेरा एकमात्र सुख! नहीं, नहीं, अबसे हम शांति रखेंगे और हमारी उषाएं रक्तहीन होंगी। मेरे दूत आज ही जा रहे हैं।

क्लिओन — वह उन्हें वापस बुला लेगा। यह ऐसा आदमी नहीं है कि पड़ोसी राज्योंमें दूसरोंकी पताका फहराती रहे और यह आरामसे, सुख-शान्तिसे बैठ सके। उसकी आंखोंसे युद्ध और महत्त्वाकांक्षा झांक रही है; उसका हाथ तलवारकी मूठ पकड़नेके लिये बना था। महारानी, इसे रोकिये। हमारे टिमोक्लीसको राजा बनने दीजिये।

क्लियोपेट्रा — तूने क्या कहा? तू पगला गयी है क्लिओन? ऐसे तुच्छ छल-कपटको देवोंका आशीर्वाद कभी न मिलेगा। काश, ऐसा हो सकता! किन्तु हो नहीं सकता।

क्लिओन — यह होना ही चाहिये। टिमोक्लीस मर जाय, आप एक उपेक्षित माता

और राजसिंहासनसे च्युत प्रेमहीन संतानवाली रानी रह जायें इससे तो निपूति रहना भला। आपका बुढ़ापा वैसा ही एकाकी और सुनसान होगा जैसे ये लम्बे उन्नीस वर्ष थे। तब आपकी आशा थी, अब तो कोई आशा भी न रहेगी।

क्लियोपेट्रा —— अगर मैं ऐसा समझूंगी तो सभी ज्ञात विधि-विधानोंका उल्लंघन करुंगी और दैवके प्रचण्ड कोपको सहनेके लिये भी तैयार रहूँगी। मेरी हंसी उड़ानेवाले देवो, मैं हमेशा ही तुम्हारे अन्याय न सहती रहूँगी। चुप, चुप, क्लिं-ओन! ऐसा न होगा। मैंने सोचा था कि मेरा हृदय खुशीसे फट जायगा लेकिन अब कितनी विभिन्न भावनाएं मेरी हृत्तंत्रियोंको झकझोर रही हैं। क्लिओन, ओ क्लिओन! हाय, मेरे मधुर सपनो, तुम अपने सुखी साम्राज्यको भय और व्यथाओंके हवाले करके कहां उड़ गये? क्या मैं वही स्त्री हूँ जिसने एण्टिओकस-की मृत्यु-शैयाको हंसते-हंसते छोड़ा था.?

(वह अपने कक्षमें चली जाती है)

क्लिओन —— कुमार, हमारे पास गुलाब, आलोक और हास्य होना चाहिये, हथियारों-का कठोर कर्कश प्रकाश नहीं। हम तुम्हारी विजयको, तुम्हारी विजयश्रीको एक अच्छे खासे यूनानी झूठसे तुरंत उड़ा देंगे। एण्टिओकस जहां गये हैं उसकी प्रशंसा करो, उन्हें लौटानेका नाम न लो।

अंक २

दृश्य १

एण्टिओकका राजमहल। महलका एक कक्ष।

क्लिओन, फायलस

फायलस — रानीके अंत:करणको अच्छी कुतियाकी तरह झंझोरते हुए उसकी मुसीबत कर दे। अगर यह काम ठीक तरह चला तो मैं अलक्षित रूपसे सीरिया-के सिंहासनपर बैठ जाऊंगा।

क्लिओन — मुझे न भूलना।

फायलस — तू अपने-आपको न भूले तो मैं तुझे कैसे भूल जाऊंगा?

क्लिओन — मैं याद रखूंगी।

फायलस — क्लिओन, अगर खेल ही खेलमें तू रानी हो, और मैं तेरा मंत्री तो तू अपनी हुकूमतका खेल कैसे शुरू करेगी?

क्लिओन — पार्थियावासिनीको कष्ट देनेके लिये अनेक उत्पीड़क यंत्रणाएं खोजूंगी, प्रत्येक नाड़ीके लिये एक अलग यातना। मैं फूलोंमें पड़ी-पड़ी साइप्रसकी मीठी शराब पिऊंगी और उसे कराहते हुए सुनूंगी।

फायलस — मुझे तेरा विचार पसन्द नहीं, ज्यादा अच्छे विचार रख।

क्लिओन — क्या मैं अपने प्रेमको, द्वेषको संतुष्ट नहीं कर सकती? तब तो राज्य न करना ही भला।

फायलस — हे घृणा, प्रेम और कोप, तुम ही वह उपकरण हो जिनसे हम हांके जाते हैं। क्लिओन, देवता अपने उद्देश्यके लिये इनका उपयोग करते हैं, हम इन्हें अपने काममें नहीं लगा सकते।

क्लिओन — फायलस, मैं अपनी इच्छाके अनुसार करूंगी, तुम अपनी इच्छासे करना।

फायलस — पहले राज्य तो हाथ आये! अभी नहीं। (पीठ फेरते हुए) मेरे शांत लक्ष्योंके लिये यह बहुत उग्र है। महत्त्वाकांक्षा नहीं, वासना इसे हांक रही है। हे चुननेवाले देवों, मैं तुम्हारी सेवामें हूं। अगर भाग्य मेरा उदय चाहता है तो वही उसके लिये कारण और उपकरण भी जुटायेगा।

(अंतःपुरसे टिमोक्लीस प्रवेश करता है)

टिमोक्लीस — मेरा ख्याल है कि मैं उससे बात करते डरता हूँ। थीब या सिकन्दरियामें मिस्रकी लड़कियोंके साथ तो कभी ऐसा न लगा था। तुम फायलस हो न?

फायलस — आपको चेहरे खूब याद रहते हैं, और नामोंके लिये भी तरकीब जानते हैं, एक राजाकी तरकीब।

टिमोक्लीस — सब कहते हैं एण्टिओकस राजा बनेगा।

फायलस — लेकिन मैं कुछ और ही कहता हूँ और मैं जो कहता हूँ उसमें हो जानेका चमत्कारिक गुण है।

टिमोक्लीस — तुम मेरे दोस्त हो!

फायलस — मैं अपना दोस्त हूँ और इसलिये आपका भी।

टिमोक्लीस — यह तुम्हारी बहन है?

फायलस — क्लिओन।

टिमोक्लीस — ऐसा नाम जो अपने स्वरोंमें सीरियाके गुलाबोंसे मिलता है। क्लिओन, क्या तुम भी मेरी मित्र हो?

क्लिओन — राजकुमार, आपकी प्रजा।

टिमोक्लीस — और दोनों क्यों नहीं?

क्लिओन — सेवा करना ज्यादा अच्छा है।

टिमोक्लीस — तुम्हारी परीक्षा लूँ? (आलिंगन करते हुए) क्लिओन, ओ गुलाब, तू मेरे होठोंपर गरम आग है।

क्लिओन — अब मेरी बारी है, मैं भी परीक्षा लूँ?

टिमोक्लीस — ओ जरूर!

क्लिओन — गुलाब अपने कांटोंसे परीक्षा लेता है — ऐसे। (उसके गालपर हल्की-सी चपत लगाकर बाहर चली जाती है)

टिमोक्लीस — (ठुड्डी सहलाते हुए फायलसकी ओर असमंजससे देखकर) यह सिर्फ शिष्टाचार था, — हमारे मिस्री ढंगका।

फायलस — उसका सीरियाका था। बहाने मत ढूँढ़िये, मैं उसका भाई हूँ।

टिमोक्लीस — (जानेके लिये मुड़ता है, हिचकिचाता है, फिर लौट आता है) ओ, फायलस, क्या तुम यहां एक पार्थियावासिनी महिला रोडोगुनको जानते हो?

फायलस — (स्वगत) क्या हवा पूरबकी ओर चल रही है? किन्तु अगर वह मेरा भला करे तो जिधर मरजी चला करे। (प्रकट) मैं उस बच्चीको जानता हूँ।

सुन्दर है। आपको चाहिये ?

टिमोक्लीस — छि: छि: लानत है तुमपर फायलस !

फायलस — राजकुमार, मेरी जीभ स्पष्टवक्ता है, जब मुझे भूख लगती है तो वह स्वीकार करती है कि मेरे एक पेट है। आप अपनी भाषामें बोलिये। मैं पुरुषों-की भाषा समझता हूँ यद्यपि उसका उपयोग नहीं करता।

टिमोक्लीस — इतना बुरा मत सोचो ! वह उन सामान्य फूलों-सी नहीं है जिनका बाहरी रूप तो सुन्दर, होता है, किन्तु जिन्हें कोई भी मामूली हाथ चुन सकता है। ऐसे फूलोंको हम यूँ ही लगा लेते हैं, सूंघते हैं और फिर फेंक देते हैं। वह उन जैसी नहीं है।

फायलस — नहीं ? फिर भी उन सबका जन्म एक ही प्रकृति जननीसे हुआ है। अगर वह फुर्तीले जंगलियोंका परिधान जिसे लज्जाशीलता कहते हैं, पहन भी लो तो क्या है ? उस झिलमिलेके पीछे अन्तमें हमेशा नारी होती है। उस वस्त्रको खींचो तो वह गिर जायगा और बाकी रह जायगी वही प्रकृति।

टिमोक्लीस — मैंने उसकी आंखें देखी हैं, वे तरल पवित्रता हैं।

फायलस — फिर भी उसमें एक मछली तैरती है जिसे लोग प्रेम कहते हैं किन्तु वास्त-विकता उसे काम या वासना कहती है। राजकुमार, कोई डरकी बात नहीं है, मछली ऐसे मछुएकी बंसीमें फंस जायगी।

टिमोक्लीस — मुझे या उसे गलत मत समझो। ऐसी चीजें की तो जाती हैं किन्तु उस जैसोंके साथ नहीं। वह स्वर्गकी पवित्र प्रतिमा है और स्वर्गकी तरह पूजा-से ही जीती जायगी।

फायलस — तब फिर आप उससे क्या चाहते हैं और मुझसे क्या मांग कर रहे हैं ? मैं हमेशा बहुत कुछ कर सकता हूँ।

टिमोक्लीस — इसके सिवा और कुछ नहीं कि उसके आगे घुटने टेककर उसे निहारता रहूँ और उस छोटे-से हाथको छू सकूँ जो ज्योत्स्नासे आलोकित तितली-सा मेरी मांके बालोंपर मंडराता था। अगर वह स्वीकृतिमें थोड़ा-सा मुस्करा भर दे तो मैं इतना करनेकी हिम्मत करूंगा।

फायलस — ऐसा क्यों, वह तो आपकी बांदी है !

टिमोक्लीस — किसी दिन मैं उसके आगे झुक जाऊंगा और उसके हाथका स्पर्श भालपर होगा।

फायलस — (स्वगत) पता नहीं यह कैसा जानवर है। किन्तु यह जानता हूँ कि यह जानवर मेरे लिये हैं, मेरी मेधा मुझसे यही कहती है। (प्रकट) राज-

कुमार, मैं इस मामलेमें पड़ूँ उससे पहले मुझे घूँस चाहिये।

टिमोक्लीस — कैसी घूँस, फायलस ?

फायलस — एक नाम – आपका दोस्त।

टिमोक्लीस — ओ केवल दोस्तसे कहीं अधिक ! मुझे उस धुँधले और पवित्र मन्दिर-में ले चलो जहां मेरी अपनी आशाएं और भय जानेसे रोकते हैं तब फिर मैं तुम्हारा हूँ, फायलस, और तुम सब बातोंमें मेरे।

फायलस — जरूरत पड़े तो मुझे याद कर लेना।

(जाता है)

टिमोक्लीस — मेरा एक मित्र है ! यही पहला व्यक्ति है जिसे एण्टिओकसने नहीं जीता। और अब प्रेम बिजलीकी तरह मुझपर कूद पड़ा।

दृश्य २

वही स्थान

यूनिस, रोडोगुन

रोडोगुन — मैं मानती हूँ मेरी गुलामीमें दैवका कोई उद्देश्य था !

यूनिस — आजकल ऐसे पुरुष दिखायी नहीं देते। उसकी निगाहोंसे कैसा शांत प्रभुत्व टपकता है ! हम उनकी प्रजा हैं और वह धरतीपर इस तरह कदम रखता है मानो वह उसकी हो भी चुकी।

रोडोगुन — सबको होना पड़ेगा। मैं गुलामकी तरह रही हूँ किन्तु मैंने हमेशा अपने-आपको यूनानी स्वामियोंसे ऊंचा माना है। किन्तु जब वे बोले, जब उन्होंने मेरी ओर देखा तो मैंने वास्तविक गुलामीका स्पर्श पाया और इस बार वह मुझे बड़ा भला लगा।

यूनिस — ओ, तुम भी रोडोगुन !

रोडोगुन — मैं भी ! तुम्हारा मतलब क्या है ? यूनिस क्या तुम.........

यूनिस — मेरा मतलब, हमारा कंटीला गुलाब क्लिओन भी बांके टिमोक्लीसके प्रेममें फंसा है।

रोडोगुन — अरी झूठी, बकवादी ! मैंने और नजदीककी बात सोची थी जिससे मेरे दिलमें दहशत बैठ गयी।

यूनिस — तो फिर तू उससे प्रेम करती है ?

रोडोगुन — मैंने क्या कहा है, यूनिस ? मैंने कहा ही क्या था ? मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा।

यूनिस — तूने नहीं कहा, ना ! अरी सुन्दर प्यारी बुद्धू, प्रेमको लज्जासे आरक्त कपोलोंसे छिपा ले और प्रेमभरे तरल नयनोंपर सहमी-सहमी पलकें गिरा दे ! कांपती जा, मेरी हिरनी, ! मैं बदला तो ले ही सकूँगी कम-से-कम। ओ मधुर, मधुर हृदय, मेरी सुकुमार पार्थियावासिनी ! मुझे अपने लिये रोडोगुनको छोड़र कोई और प्रेमपात्र नहीं चाहिये। मेरी सुन्दर जंगली रोडोगुन, उदात्त कोमल लालित्य लिये, बड़ी-बड़ी आंखोंवाली और हल्का अस्पष्ट पीलापन लिये झिलमिलाते हाथीदांत-सी रोडोगुन !

रोडोगुन — मेरी अपनी यूनिस !

(दोनों आलिंगन करती हैं, फायलसका प्रवेश)

फायलस — (अपनी ठुड्डी सहलाते हुए) मुझे अपव्ययसे हमेशा नफरत रही है।

यूनिस — तुम्हारे कदम भी चोरी करते हैं, फायलस ?

फायलस — मेरे पास एक सन्देश है।

यूनिस — मुझे सन्देशवाहक पसन्द नहीं है और किसीको ढूँढ़ लाओ तो मैं सन्देश सुन लूँगी।

फायलस — तुमने मुझे निकाल बाहर किया।

यूनिस — क्या दिवालिया बन गये ? लोग कहते हैं तुमने अपने हिसाबमें काफी जमा कर लिया है।

फायलस — तुम्हारे लिये बुलावा आया है। क्लिओन ने कहा है महारानी जल्दीमें हैं।

(यूनिस जाती है)

पार्थियावासिनी, तुम सीरियाकी रानी बनोगी या नहीं ? मैंने तुम्हें चौंका दिया। राजकुमार टिमोक्लीस तुम्हारे सौन्दर्यमें फंसकर छटपटा रहा है। लज्जाका मुखौटा मत पहनो, उसे टिमोक्लीसके लिये रहने दो। मैं एक संधिका प्रस्ताव रखता हूँ। मेरी सहायतासे तुम अपने पग सीरियाके सिंहासनतक बढ़ा सकती हो: कुमारका बिस्तर सीढ़ी है और तुम उसपर चढ़ोगी, मैं तुम्हें सिंहासन-पर बिठाये बिना चैन न लूँगा। बोलो, मैंने तुम्हारी सहायता की है न ? हम दोनो मित्र होंगे न ?

रोडोगुन — तुम ऐसी भाषा बोलते हो जो मुझे नहीं सुननी।

फायलस — ओह, भाषा ! तुम सब भाषाके पीछे हो। क्या तुम पार्थियाकी राज-कुमारी नहीं हो ? क्या तुम सिंहासनपर नहीं बैठाना चाहती ?

रोडोगुन — तुम्हारी मददसे नहीं और न ही सीरियाके टिमोक्लीसकी वधू बनकर। तुम कैसी बातें करते हो ?

फायलस — मेरी वाणीको मत तोलो, मेरी सच्चाईको देखो। मेरी जीभ सभी स्त्रियोंको नाराज करती है। उसकी ओर ध्यान न दो ! मेरा दिल अच्छा है, मेरा आशय और भी अच्छा।

रोडोगुन — शायद ! किन्तु यह समझ लो कि मैं सिंहासनके लिये लालायित नहीं हूँ। और अगर होती भी तो एण्टिओकस राजा है, यह चमकीला छोटा कुमार नहीं।

फायलस — यही तुम्हारी बुद्धि है ? तुम छली गयी। और फिर वह तुमसे प्रेम नहीं करता, वह कभी स्त्रीका जुआ अपने कंधोंपर न लेगा। इस स्त्रियोंके हाथके लौंदे, टिमोक्लीसको चुन लो। मेरी मददसे तुम्हें साम्राज्य और सुख मिलेगा, हृदयकी सब आवश्यकताएं पूरी होंगी और शारीरिक विलास मिलेंगे।

रोडोगुन — मुझे ऊंचे सिंहासनपर स्थित अपने हृदयको छोड़कर अन्य साम्राज्यकी जरूरत नहीं। मैं प्रेमके राज्यदण्डके सिवा और कोई शक्ति नहीं चाहती। ओरमुज्द जो मदद देते हैं उसके अतिरिक्त कोई मदद नहीं मांगती। बस। आपको धन्यवाद देती हूँ।

फायलस — तुम इन यूनानियोंसे भी ज्यादा दुर्बोध हो। तब क्या कुमार विरहमें तडपते रहेंगे ? क्या उन्हें अपनी वकालत करनेका भी अवसर न मिलेगा ?

रोडोगुन — जो तुम कहते हो वह अगर सच है तो मैं नहीं चाहती कि वे अपने हृदय-को व्यर्थका कष्ट दिया करें। उन्हें बता दो कि यह नहीं हो सकता।

फायलस — जो जवाब केवल तुम ही दे सकती हो उसे वे मुझसे न सुनेंगे ? लगता है तुम इसलिये टालती हो कि हमला और भी जोरदार हो।

रोडोगुन — जो चाहो सोचा करो पर मुझे छोड़ दो।

फायलस — तुम्हारा यही आशय है तो उसे स्पष्ट करनेके लिये उसे आने दो। तुम ढोंग करती हो, तुम्हारा मतलब यह नहीं है वरना तुम उसके मुँहपर इन्कार करती।

रोडोगुन — (कोपसे लाल होकर) करूंगी, आनेके लिये कह दो उनसे।

फायलस — मैंने यही सोचा था। वे जरूर आयेंगे। मुझे याद रखना।

(जाता है)

रोडोगुन — मैंने उसे बुलाकर अच्छा नहीं किया। यह जवान रक्तकी बहती तरंग मात्र है। मैंने कभी नहीं सुना कि उसे ठेस लगी हो। वह सिर्फ चमचमाता, चंचल परवाना बना मिस्री फूलोंपर नाचता रहा।

(टिमोक्लीस उतावलीमें प्रवेश करता है, हिचकिचाता है, फिर झपटकर आगे बढ़ता और अपने-आपको रोडोगुनके पैरोंपर डाल देता है)

टिमोक्लीस — रोडोगुन! मैं तुमसे प्यार करता हूँ। राजकुमारी, तुमने मुझे पागल कर दिया। मैं नहीं जानता कि मैं क्या करता हूँ और क्या बोलता हूँ। किस भयंकर देवने मेरे दिलपर कब्जा कर लिया है? मैं टिमोक्लीस नहीं हूँ और न मुझे अपने ऊपर काबू ही है। मैं एक आग हूँ, बवण्डर हूँ जो तुमपर अधिकार करनेके लिये बढ़ रहा है। मैं एक उड़ता हुआ पत्ता हूँ। ओ रोडोगुन, मुझसे मुँह न मोड़। माफ कर, हां, मुझे माफ कर। अगर तूने मुझसे प्रेम करवाया है तो मैं बेबस हूँ। घबराओं मत और इतनी पीली न पड़ो। इस तरह दहशत भरी आंखोंसे न देखो मानो आगने तुम्हारे कपड़ोंको अपनी लपेट-में ले लिया है। मैं तेरा चाकर हूँ, तेरा गरीब कांपता हुआ गुलाम और तुम एक ही बार त्यौरियां चढ़ाकर मुझे कत्ल कर सकती हो।

रोडोगुन — मेरा हाथ न छुओ! तुम्हारे स्पर्शके लिये बहुत ज्यादा पवित्र है!

टिमोक्लीस — वह परम पवित्र है। और गौरववर्णा देवि! तुम्हारा गुलाबी नाखूनतक एक रहस्य है, एक विचित्र पवित्रता है। भाड़में जाय वह हाथ जो तुम्हें अपने जरा-से भ्रष्ट स्पर्शसे अशुद्ध करनेकी हिम्मत करे। ओ गंभीर हृदयवाले चमत्कार, तुम्हारी अद्भुत आंखें मृदु होकर उस अपराधको माफ कर दें तो और बात है। ओ पार्थियाकी अद्भुत कुमारी, मेरे प्रेमसे मत डर; वह ऐकान्तिक पूजा बन गया है। देखो, मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ! देखो, मैं दूर जा सकता हूँ। बस एक बार मेरी ओर देखो, एक नजर अनेकों बारह महीनों-की खुराक होगी।

(यूनिस वापस आती है)

यूनिस — भइरा, तुम अपनी मांके साथ अन्याय करते हो। तुम पास नहीं होते तो उनके लिये हर क्षण भारी हो जाता है। वे हमेशा तुम्हें बुलानेके लिये कहती रहती हैं।

टिमोक्लीस — मेरी मां! हे भगवान्, कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके प्रेमसे ऊब जाऊं।

(जाता है)

यूनिस — यह क्या था? बोल।

रोडोगुन — क्या भाग्य मेरी गुलामीसे संतुष्ट न था ? क्या इससे भी बदतर चीज प्रतीक्षा कर रही है ? पहले ही आकाश खिन्न, कठोर और मेघाच्छन्न था किन्तु था शान्त। अब मैं घने अन्धकारमय क्षितिजसे ये बिजली भरे बादलोंको उठते देख रही हूँ।

यूनिस — मुझे सब कुछ बता दे। फायलसने, भयानक धूर्त फायलसने जो जहर फैलानेके लिये ही बोलता है, तुझसे क्या कहा ?

रोडोगुन — उसने प्रेम और सिंहासन और टिमोक्लीसकी बातें कीं; वह उसी तरह बोला जैसे स्वार्थी धूर्त लोग अच्छा कहकर बुराईकी बात करते हैं।

यूनिस — और टिमोक्लीस उसके पीछे कैसे आया ?

रोडोगुन — उसीका बुलाया हुआ। मैंने कभी सोचा तक न था कि आदमीकी आंखोंमें ऐसी बेलगाम वासना दिखायी दे सकती है। यह सब कैसी हलचल है ?

यूनिस — हम चाहे जो सोचें करते वही हैं जो करना पड़ता है, वह नहीं जो हमें पसन्द हो। तुम्हारा रूप एक मशाल हे जिसे लेकर तुम्हें दुनियाभरमें घूमना होगा। अगर उससे राज्य भस्मीभूत होते हैं तो हुआ करें, यह तुम्हारे बसकी बात नहीं है।

रोडोगुन — मैं प्रार्थना करती हूँ कि ऐसा न हो। हे एकमात्र शासक प्रभु, कोई बुरी शक्ति एण्टिओकसके लिये दुर्भाग्य लानेमें मेरे प्रेमका दुरुपयोग न करे।

(मेंथो आती है)

मेन्थो — पार्थियाकी कन्या कौन-सी है ?

यूनिस — यह देखिये।

मेन्थो — एण्टिओकस तुम्हें लेस्बियाकी शराबका जाम लिये अपने कमरेमें बुलाता है।

यूनिस — वह बुलाता है ? तो देवोंने हस्तक्षेप करनेके लिये मुहूर्त चुन लिया है। चल, फिर पार्थियाके मोहरे चल।

रोडोगुन — किसी औरको भेज दो। मैं नहीं जा सक्ती।

यूनिस — लगता है कि तू भूल गयी है कि तू गुलाम है। तू मेरा मोहरा है और मैं तुझे चलाकर रहूँगी। जल्दी चल।

रोडोगुन — निश्चय ही उन्होंने मेरा नाम नहीं लिया होगा ?

मेन्थो — मेरी बेटी, डरती क्यों है ? वे भले हैं और महान् हैं। और ममतासे बोलनेवाले हैं। वे अपने नौकरोंके साथ कोमल व्यवहार करते हैं।

रोडोगुन — (धीरेसे, स्वगत) मैं उनसे नहीं अपने-आपसे डरती हूँ।

यूनिस — उसके बदले मुझसे डर। इसी क्षण न गयी तो चाबुकसे बुरी तरह खबर ली जायगी।

रोडोगुन — हाय, यूनिस।

यूनिस — निर्दयतासे चाबुक लगेंगे ! क्या मैं एक ऐसे मोहरेके लिये जो हिलनेका नाम न ले, इतनी बड़ी बलि दूंगी। जा, जा, और अगर तू बुद्धिमान् है तो चुँबन लिये बिना न आना। (रोडोगुनको दरवाजेकी ओर धकेलती है और वह जाती है, पीछे-पीछे मेन्थो) उनका दिल आजाद नहीं है, न इसका ही, वरना मैं हुकूमतपर अपना हाथ आजमाती। देवोंको इसके द्वारा पसन्द है तो इसीके द्वारा सीरियापर हुकूमत करूंगी।

दृश्य ३

एण्टिओकसका कमरा

एण्टिओकस, सामने एक मानचित्र है

एण्टिओकस — एकबाटना, सूसा और सोग्डिआना, आर्यप्रदेश जिसे सिंधु नदी घेरे है, युफ्रेटिसकी धारा और टाइग्रिसकी सुनहली बालू, ओक्सस और जक्साटस और चन्द्रको कन्धोंपर उठाये हुए ये सब अस्पष्ट और बृहदाकार पर्वत जिनके धूमिल क्षितिजके पीछे बड़े-बड़े देश छिपे हैं; साम्राज्य हो तो ऐसा हो ! सीरिया, यूनान, और गेडके नील समुद्र तटकी क्या बिसात है ? मेरी आत्माको धारण करनेके लिये वे बहुत संकरे हैं, उसकी भूखको संतुष्ट करनेके लिये, उसकी महत्ता-के सामने अति क्षुद्र हैं। हे काली अलकोंसे घिरे तरल आंखोंवाले पार्थियाके गौर मुखड़े और धरतीके इस प्रतीकको ढके हुए ओ ललित अवयव, तुम मेरी आंखोंको सूसापर न टिकने दोगे। अभीतक मैं किसी स्त्रीके लिये नहीं तरसा। जब टिमोक्लीस थीबाकी सुन्दरियोंसे अपने लापरवाह हृदयको बहलाता था तो मैं अलग हट जाता था। पार्थिया और यूनान ही मेरी प्रियतमाएं थीं लेकिन अब मेरे हृदयमें एक गोरी लड़की समा गयी है। हे कुसुमायुध, विजयोल्लास मत कर, मैं पहले तुम्हें त्वरित और स्थायी प्राप्तिसे चुप कर दूंगा और फिर तुमसे अनन्त ताल दिलवाता रहूँगा। पार्थियाकी राजकुमारीसे पूर्व जन्मोंमें और अनेक युगोंसे प्रेम करता आया हूँ। सुकुमार रोडोगुन ! ओ माधुर्य-भरे नाम ! विख्यात फ्राटेसकी पुत्री, राजाओंकी कली,—अनुनयभरे नेत्रों-वाली मेरी शानदार बन्दिनी ! ओ महान् एण्टिओकस, जिसने उसे रक्षा

करनेवाले भालोंके बीचमेंसे खींचकर बाहर किया था, तुम चल बसे पर सुन्दर विजित ईरानकी इस भविष्यवाणीको मुझसे प्रेम करनेके लिये छोड़ गये। तू वही है, मेरी रोडोगुन।

(रोडोगुनका प्रवेश)

रोडोगुन — (नीची निगाहें किये) मैं शराब लायी हूँ।

एण्टिओकस — ओ पार्थियावासिनी, तू ही एकमात्र शराब है। ओलिम्पियाके देवोंको भी उत्तेजित करनेवाली शराब इसी शानदार सुराहीमें है। जामको नीचे रख दे। उसकी जगह अपने दीर्घ तरल नयनोंको ऊपर उठा। इस मरमरके फर्शसे मुझे डाह है रोडोगुन। तू अच्छी तरह जानती है कि मैंने तुझे क्यों बुला भेजा है। क्या हमने एक-दूसरेकी आंखोंमें आंखें नहीं डाली थीं और क्या तेरी आंखोंने अपने ज्ञानको स्वीकार नहीं किया था ?

रोडोगुन — राजकुमार, मैं आपकी माताकी गुलाम हूँ।

एण्टिओकस — मेरी, मेरी, ओ रोडोगुन, क्योंकि मैं ही सीरिया हूँ।

रोडोगुन — आपकी।

एण्ओिकस — ओह, आखिर तू बोली !

रोडोगुन — मुझे मत छुओ, मत छुओ, एण्टिओकस ! निकानोरके पुत्र, मुझे छोड़ दो, अपने-आपको बचाये रहो। हाय अभागी मैं ! मैं जानती हूँ देवता किसी मौतकी तैयारी कर रहे हैं। मैं जीता-जागता दुर्भाग्य हूँ। -

एण्टिओकस — आनन्ददायिनी रोडोगुन, तू स्वर्गीय सुखका उपहार है, अगर इसकी जगह तू मेरे भाग्यमें स्वयं मृत्यु बनकर आती तो भी मैं तुझसे आनन्द लूटनेमें आगा पीछा न करता। बल्कि धरतीपर चाहे जितना अल्प समय क्यों न हो मैं तेरा आनन्द लेता। मेरी रोडोगुन, घड़ियोंसे मत खेल। क्षनभंगुर मनुष्य अपने आनन्दके क्षणोंको पीछे क्यों धकेलता रहता है और ऐसे प्रतीक्षा क्यों करता है मानों जीवन अनन्त हो ? समय रुकता नहीं, मौत ढील नहीं करती।

रोडोगुन — हाय !

एण्टिओकस — तू अब भी झिझकती है ? हमें अलग रखनेवाले इन कुछ कदमोंके बीच सेतु बांधनेके लिये हमारे दिलोंकी पुकारती धड़कनोंको क्या तू अस्वीकार करेगी ? अच्छा, तो मैं तुझे गुलामकी तरह हुकुम दूंगा। ओ सर्वांग सुन्दरी रोडोगुन, तू मुझे अपनी ओर खींचने नहीं देती, तो ओ मेरी पार्थियाकी बन्दिनी ! खुद आकर मेरी भुजाओंमें समा जा।

रोडोगुन — एण्टिओकस, मेरे राजा !

एण्टिओकस — इसी तरह एक मौजकी भांति मेरे वक्षपर हमेशाके लिये लहराती रह। मधुमय श्वासोंसे भरे उपद्रव ! वसन्तकी तरह स्नेहके साथ मेरे वक्षमें घुल जा।

रोडोगुन — ओ छोड़ दो मुझे !

एण्टिओकस — अरी आकस्मिक जादूगरनी, ले, मेरी छातीपर मर ! मेरी भुजाएं वह रस्सी हैं जो तुझे खूँटेसे बांधती हैं जहां तू धीरे-धीरे रक्तपीत लपटोंमें भस्म हो जाय।

रोडोगुन — छोड़ दो, मुझे छोड़ दो !

एण्टिओकस — जबतक हमारे होठ शाश्वत परिणयमें जुड़ न जायं तबतक नहीं। मैं इस मुहरसे, इससे और ऐसी ही असंख्य मुहरोंसे तुझे अपने लिये मुद्रांकित कर लूँगा। मैं तुझसे जितने चुंबन चाहता हूँ उनके लिये अनन्त काल भी बहुत कम हैं। हे पीत चारूता, मंद रहस्य ! अपने होंठ मेरे होंठोंपर दबा। आज्ञा मान। फिरसे, एक बार फिर ! और इसी तरह बार-बार हमेशाके लिये प्रेमके गीत गाये जा। ओ अद्भुत चमत्कार, तेरे होठोंका उद्दाम संगीत तेरे हृदयकी गहराईमेंसे लड़खड़ाता हुआ मेरे वक्षमें समा जाय।

(रोडोगुन उसके पैरोंपर गिरती है और उसके घुटनोंसे लिपट जाती है)

रोडोगुन — मैं तेरी हूँ, तेरी ही हूँ, सदाके लिये तेरी हूँ।

(उठकर अपना मुँह हाथमें छिपा लेती है)

एण्टिओकस — (उसका मुख खोलते हुए) प्रेमसे अपना मुँह न छिपा। स्वर्गसे देव हमारी ओर ताक रहे हैं। हम भी उनपर निश्छल आनन्द भरी निर्भीक दृष्टि डालें और उनसे कहें कि अब न तो काल और न उनके भेजे दुर्भाग्य ही हमारा कुछ बिगाड़ सकेंगे। इस क्षण दो हृदयोंके ऐक्यका आवेग मृत्युके पदचापोंका हमेशाके लिये बहिष्कार करता है।

रोडोगुन — मेरे दिलकी धड़कन बन्द हो गयी है। मैं इतना तीव्र आनन्द नहीं सह सकती। अरे, इस समय छोड़ दो ताकि मैं तुम्हारे लिये जीवित रह सकूँ।

एण्टिओकस — तू जहां है वहीं रह या चली जा, अब तो तू मेरी है और मैं तुझे जब चाहूँ भेज सकता हूँ और जब चाहूँ बुला सकता हूँ। रोडोगुन, जा और तू जाकर भी मेरे पास ही रह। (रोडोगुन लड़खड़ाते कदमोंसे जाती है) ओ, प्रेम, तू भोगमें और भी दिव्य है। क्या अब मैं अंधी आंखोंको खोलकर इस मानचित्रको देख सकूँगा ? ना, अब भी वही है। मैं एकबाटना नहीं उसकी आंखें देख रहा हूँ।

दृश्य ४

महलका एक बड़ा कमरा

टिमोक्लीस, फायलस

टिमोक्लीस — ओ, सारा माधुर्य और गौरव एक ही मुस्कुराती जिन्दगीमें इकट्ठा हो गया है और बाकीके लिये निष्फल, असह्य, कठोर, उजाड़, एक नारकीय निस्तब्धता और खोखलापन जो मर्त्य मानवकी कल्पनासे भी परे हैं, किन्तु उसका सहना तो और भी कठिन है। मेरी मां मेरे साथ यह अन्याय कर रही है! हम दोनों जीवनभर प्यारे भाई रहे,—आह मिस्रमें हम एक दूसरेसे कितना प्यार करते थे! —हम इस पुरस्कारको बांट क्यों न लें? सीरियाका मुकुट भले उसका हो जाय — ले लेने दो उसे! रोडोगुन मेरी होगी।

फायलस — वह मानेगा?

टिमोक्लीस — ओ, जरूर और मुस्कानके साथ। वह उदात्तता और वीरोचित विचारोंकी मूर्ति है। मेरा महान् एण्टिओकस! मैं उससे वह चीज छीननेका स्वप्न भी कैसे ले सकता हूँ जिसे वह इतनी अच्छी तरह धारण कर सकता है? मेरे पास प्रेम, सुख और रोडोगुनको रहने दो। मेरे लिये सूर्यका प्रकाश ही काफी है।

फायलस — हो सकता है। किन्तु दोनोंके लिये काफी नहीं है। देखो! वह आ रहे हैं। ऐसे चलते हैं मानो सारे आकाशमें वही एकमात्र सूर्य हैं। हाय, उसे अंधेरा करना है!

(एण्टिओकसका प्रवेश)

टिमोक्लीस — भाई दयालु देवोंने ही तुम्हें यहां भेजा है।

एण्टिओकस — प्यारे टिमोक्लीस, हम दिन-दिन भर नहीं मिलते। मिस्रमें तो ऐसा न था। मुझे बताओ इतने व्यस्त घंटोंमें तुम क्या करते रहे? इस प्रदेशकी कितनी हंसती लड़कियोंको अपने प्रेमपाशमें बांधा?

टिमोक्लीस — तुमने सुना नहीं?

एण्टिओकस — क्या, टिमोक्लीस ?

टिमोक्लीस — हमारी मां राजमुकुट देती हैं और उसीके साथ रोडोगुन भी हिस्से-में आयेगी।

एण्टिओकस — हमारी राजमाता ? क्या वे उनके हैं जो वे दे सकें ? मैं दूसरोंकी इच्छासे शादी नहीं करता।

टिमोक्लीस — ना भाई, ना ? कम-से-कम हमारे दिल तो अपने हैं। एण्टिओकस, मेरा ख्याल है कि तुमने उस गोरी मधुर पार्थियावासिनी रोडोगुनको गौरसे नहीं देखा।

एण्टिओकस — (मुस्कुराते) नहीं भइया ? तुम कहते हो मैंने लक्ष्य नहीं किया ?

टिमोक्लीस — तुम स्त्रियोंके सौन्दर्यके प्रति अंधे हो। तुम सिर्फ महान् कार्य और प्रतापी सेनाओंसे प्रणय निवेदन करते आये हो। मेरे लिये तो यही अच्छा है कि तुमने भव्य पृथ्वीके साथ गठबन्धन पसन्द किया है। प्यारे एण्टिओकस, यह कहते हुए लज्जा आती है कि शीघ्र ही तुम्हारे सिरपर जो मुकुट इतने गौरव-के साथ बैठेगा उसके लिये मुझे ईर्ष्या हो रही है। उसे ले लो, भइया, लेकिन मेरी सुकुमार देवी, रोडोगुनको छोड़ दो।

एण्टिओकस — तेरी देवी ! तेरी !

टिमोक्लीस — यह तो हो नहीं सकता कि तुम भी उससे प्रेम करते हो !

एण्टिओकस — मैं किस व्यक्तिसे या किस वस्तुसे प्रेम करूं उससे तुझे क्या मतलब ? तू कहता है कि मैं उससे प्रेम नहीं करता ?

टिमोक्लीस — तब मेरा सुझाव न्याय संगत और भ्रातृवत् है और इससे यह अकारण कोप न होना चाहिये।

एण्टिओकस — तेरा अद्भुत प्रस्ताव ! दो चीजोंमेंसे जो कि मेरी ही हैं, एकको मेरी ओर फेंककर यह कहना कि 'लो, यह मुझे नहीं चाहिये, मैं दूसरी लूँगा !'

टिमोक्लीस — (रुंधे गलेसे) क्या उन्होंने तुझे राजा बना दिया है ?

एण्टिओकस — मैं स्वभावसे और जन्मसे ही राजा हूँ। मुझे कुछ बनानेके लिये किसी मानव आवाजकी जरूरत नहीं। सीरियामें और कौन राज्य चलायेगा ? क्या तू समझता है कि तेरा निकम्मा छिछला सिर मुकुट पहनने योग्य है ?

टिमोक्लीस — मिस्रमें तुम ऐसे न थे एण्टिओकस।

एण्टिओकस — रातको सपनोंमें भी पार्थियाकी लड़कीको मत देखा कर ! उसका नाम भी याद न करना।

टिमोक्लीस — वह मेरी मांकी बांदी है। मैं उनसे मांगूँगा और पा लूँगा।

एण्टिओकस — उसके पहले तेरी हृत्तंत्रियोंपर मेरी तलवार होगी। वह राज्यका पुरस्कार है और राज्यके साथ मेरी है।

टिमोक्लीस — मेरा स्वप्न, उन अद्‌भुत आंखोंवाली मेरी देवी! अपने ही लावण्यकी छायामें घूँघट निकाले छिपा हुआ मेरा मधुर तारा! तू बीसों बार भी मेरा भाई क्यों न हो मैं न तो उसे और न राजमुकुटको ही तुम्हें सौंपूंगा।

फायलस — (स्वगत) शाबाश! मजा आ गया। ओ मेरे भाग्य! मेरे सद्‌भाग्य!

टिमोक्लीस — तू उससे प्यार नहीं करता। उसे गुलाम और खरीदी हुई बांदी सोचनेकी हिम्मत करता है, मानो वह किसी युद्धमें जीतने लायक उपहार हो।

एण्टिओकस — बस, अब एक भी शब्द न बोल।

फायलस — (स्वगत) और भी! हां और भी! मेरे सितारे, तू इस तूफानमेंसे उदय हो रहा है।

एण्टिओकस — तुझे माफ करता हूँ, मेरे भाई टिमोक्लीस, तेरे स्वेच्छाचारी आवेश ही तेरी सफाई हैं। अब फिर कभी न खिजाना। जहांतक पार्थियावासिनीकी बात है, वह मेरी है और अगर देवता भी उसकी चाह करते हों तो भी उसे मैं ही रखूँगा। अब आगेसे अपनी ढीठ आंखोंको उसकी जूतीसे ऊपर न उठने देना।

(वह जाता है)

फायलस — यह है तुम्हारा भाई! उसीको मुकुट मिलेगा न?

टिमोक्लीस — नहीं, न तो लड़की और न सीरिया।

(रोडोगुन और यूनिस उधरसे गुजरती हैं)

टिमोक्लीस — मेरी रोडोगुन, मेरे नक्षत्र! तुझे लेकर अन्य लोग जो वाणिज्य करना चाहते हैं उसे तो तू जानती है न। इसका विरोध कर। इस ठंडे भावशून्य निर्णयके अपमानको रोक दे। कह दे कि तू मुझसे प्रेम करती है।

रोडोगुन — राजकुमार, मुझे आपपर दया आती है लेकिन आपसे प्रेम नहीं कर सकती।

(वह चली जाती है)

यूनिस — मेरे भाई टिमोक्लीस, सब फूल तुम्हारे ही चुननेके लिये नहीं होते। सीरियामें काफी गुलाब खिले हैं जो तुम्हारी इच्छा पूरी करनेके लिये लालायित हैं। यहां होशियार रहो। मेरी पार्थियाकी कलीको मत छुओ।

(चली जाती है)

टिमोक्लीस — मेरे ऊपर कैसा वज्रपात हुआ है।

फायलस — क्या इससे पछाड़ खा जाओगे? उसके दिमागमें यह विचार डाला

जाता है कि सीरियामें एण्टिओकस राज्य करेगा।

टिमोक्लीस — नहीं, वह उससे प्रेम करती है।

फायलस — क्या प्रेम इतनी जल्दी जन्म लेता है? ओह, तब तो वह उतनी ही जल्दी मर भी जायगा। यूनिस तुम्हारे विरुद्ध काम कर रही है। वह एण्टिओकस-की ओर है।

टिमोक्लीस — सब, सब कुछ एण्टिओकसका है, राजमुकुट, सीरिया, पुरुषोंका सन्मान, स्त्रियोंके हृदय, उनका जीवन और उनका माधुर्य तथा मेरा प्रेम सब उसके हैं।

फायलस — तरुण राजकुमार, आदमी बनो। लड़कीपर उपहारों और कृपाओंका घेरा डाल दो; एक रानीकी तरह उससे प्रणय भिक्षा मागों या फिर उसके असली स्वरूप गुलामकी तरह जोर देकर उसपर कब्जा कर लो। मजबूत बनो, तेज बनो, इस गर्वीले भाईकी चालसे पहले ही अपनी चाल चल दो।

टिमोक्लीस — स्वर्गके सब देवता भी अनुमति दे दें तो भी उस लड़कीकी पवित्र और घूँघटमें छिपी आत्माका अपमान न करूंगा।

फायलस — सुकुमार, सुदर्शन मूर्ख! तब अपनी मांसे उपहारस्वरूप मांग लो।

टिमोक्लीस — (जाते हुए) फिरसे तूफान मेरी आत्माके पीछे लग गया है।

दृश्य ५

क्लियोपेट्राका कमरा

क्लियोपेट्रा और क्लिओन

क्लियोपेट्रा — मैंने निश्चय कर लिया है लेकिन मिस्रकी मेन्थो इन जुड़वा बच्चों-का सच्चा क्रम जानती है। उसे मेरे पास भेजो। (क्लिओन बाहर जाती है) हे उच्च आसनपर विराजमान भावनाशून्य देवो, तुम कभी-कभी सोते हो, कहते हैं कि तुम सोया करते हो। तो अब सो जाओ। तुम लोगोंकी लापरवाह इच्छा-ओंने जिसे उलझा दिया है मैं उसे सुलझा भर रही हूँ। (मेन्थोका प्रवेश) मेन्थो, मेरे पास बैठ, मेन्थो, तूने हमारे रहस्यके बारेमें कानाफूसी तो नहीं की? मेन्थो, उसे अपने हृदयकी गहराईमें मरेकी भांति छिपाये रख और एक रानी-को अपनी क्रीतदासी बना ले।

मेन्थो — मरा हुआ! क्या सत्य मर सकता है?

क्लियोपेट्रा —— हाय, मेन्थो, सत्य ! लेकिन कभी-कभी सत्य भयंकर होता है। न्याय ! लेकिन क्या आजतक धरतीपर कभी न्याय दिखायी दिया है ? मनुष्य जीवित है क्योंकि वह न्यायी नहीं है और सच्चा औचित्य न्याय और रीति-रिवाज-के साथ नहीं रहता। न्याय उसीके साथ है जिसके आनेसे हमारा क्षणिक सुख ज्यादा-से-ज्यादा निश्चित हो सके और मर्त्य मानवमें कुछ समयके लिये दुख-का प्रवेश निषिद्ध हो जाय।

मेन्थो —— मुझे इसी बातका डर था। कैसी दुष्टता है ! खैर, रानी, मैं समझती हूँ।

क्लियोपेट्रा —— मैं एण्टिओकसको तुमसे कम प्यार नहीं करती। किन्तु टिमोक्लीस पार्थियाकी रोडोगुन मांगता है। हाय, कहीं यह भ्रातृप्रेम द्वेपमें बदलकर हम सबको मार डाले तो ! जिसे तूने दूध पिलाया है उसे रहने भी दे। सिंहासन-पर चाहे जो बैठे राज तो उसीका होगा न जिसे धरती और आकाश दोनोंने स्वीकार किया है, जो वास्तविक राजा है, वही निर्बल टिमोक्लीसका संरक्षक होगा, युद्धोंमें उसका दाहिना हाथ होगा, उसका स्तंभ, प्रहरी और उसके कार्यकी तलवार होगा। वह राजभक्तिमें गौरवशाली और अधीनतामें राजोचित तथा प्रेमके लिये विख्यात होगा। तब किसीको दुख और शोक न होगा और सब कुछ हमारी इच्छाओंसे सहमत होगा।

मेन्थो —— महारानी, क्लियोपेट्रा, क्या मैं बोलूं, आदर सम्मानको भूल जाऊं ? भग-वान् मुझसे आवाज उठानेकी मांग करते हैं। तब मैं तुझसे कहती हूँ कि तेरे अविवेकी मस्तिष्कने एक ऐसी दुष्टताकी रचना की है जिसकी तुलना नहीं हो सकती। यह एक हृदयहीन, क्रूर और मांको शोभा न देनेवाला षड्यन्त्र है जिसे अपने शब्दोंद्वारा बदलनेका तू व्यर्थ प्रयत्न कर रही है। हे अपने-आपको धोखा देनेवाली प्रकृति, हे अन्धे हृदय ! नारी तू अपने जिस पतिके प्रेमकी डींग मारती थी, उसीको अपने बेटेके रूपमें धोखा दे रही है।

क्लियोपेट्रा —— हाय, मेन्थो, मेरी दाई, तुझे कारण नहीं मालूम।

मेन्थो —— मुझे जाननेकी जरूरत नहीं। क्या तुम आलिम्पस निवासी जीयस हो ? क्या उन्होंने तुम्हें अपना राजदण्ड दिया है और उलझी हुई दुनियाका पथ प्रदर्शन करनेका भार सौंपा है ? उनकी व्यवस्थाको उलट दोगी ? उनके विधानको सुधारोगी ? क्या तुम्हारा मंद नारी-मस्तिष्क और छिछला प्रेम उनकी सर्वज्ञ दृष्टिसे भी ज्यादा अच्छा मार्गदर्शक है ? ओ सीमाबद्ध मानवोंके अद्भुत घमंड, जो सोचता है कि मैं सर्वज्ञ देवसे भी ज्यादा जानता हूँ ! उनके वज्रसे सावधान रह और उनकी इच्छाका पालन कर। उन्होंने जो बनाया है उसे

14/16

बिगाड़नेकी चेष्टा न कर बल्कि ऐसी भीषण भूलके अनर्थकारी दायित्वसे दूर रह। तेरे इस कार्यसे कहीं मृत्यु और संत्रास फट पड़े तो क्या तेरे मानव कंधे उस भारी बोझको सह सकेंगे? भागवत इच्छाका पालन करो, ठीक काम करो और बाकी सब ऊपर बैठे भगवान्‌पर छोड़ दो।

क्लियोपेट्रा — तेरे शब्दोंने मुझे विचलित कर दिया।

मेन्थो — तुम्हारे पति ही तुम्हें प्रभावित और विचलित करें। निबिड़ अंधकारमें तुम उनसे कैसे मिल सकोगी? 'मेरे बच्चोंकी हत्यारी, मेरे पास मत फटकना!' कहकर वें अपना शाही मुँह न फेर लेंगे?

क्लियोपेट्रा — आह मेन्थो, मुझे शाप मत दे। मेरे पतिकी आंखें मुस्कुराते हुए मुझ-से मिलेंगी। मेन्थो, मेरी दाई, तू यह बात एण्टिओकससे तो न कहेगी न?

मेन्थो — मैं न पागल हूँ, न कुटिल। इस निश्चयपर डटी रहो। यह स्वप्नमें भी न सोचना कि दुष्टताभरी जड़ोंसे सुख फूटेगा। भगवान् सबको अभिभूत करते हैं और यदि सत्यका खंडन किया जाय तो वह और बलवान् हो उठता है।

अंक ३

दृश्य १

एण्टिओकका महल

महलका दरबार

निकानोर, फायलस और दूसरे लोग बैठे हैं; यूनिस, फिलोक्टीटस,

थोआस मंचके इर्द-गिर्द

थोआस — क्या यह स्पष्ट है? क्या वही बड़ा है? क्या हम जानते हैं?

यूनिस — क्या उसीका राज्य न होना चाहिये?

थोआस — अगर भाग्य बुद्धिमान् है तो उसीका शासन होना चाहिये।

यूनिस — क्या टिमोक्लीस महान् पर्सीपोलिसको वर्बाद कर सकेगा? मैं सोचती हूँ जल्दी ही फ्राटेस यहां घात लगायेगा। वह महान्, दृढ़ और धैर्यवान् रहस्य-मय पुरुष आयेगा और इस आवारे से सेल्युसिडीके विलासी एण्टिओकको छीन लेगा।

थोआस — शायद। लेकिन ज़िस देशने मुझे आश्रय दिया है उसीके कानूनके विरुद्ध वगावत करूं? मैं जिस तलवारको खींचता हूँ वह उसकी है।

यूनिस .— क्या कानून और न्याय हमेशा एक होते हैं? सोच देखो।

थोआस — अगर न्यायका उल्लंघन हुआ तो मैं वार करूंगा।

(वह दरबारके दूसरे कोनेमें चला जाता है)

यूनिस — आदमी समझदार है किन्तु एक महान् हृदयमें महत्वाकांक्षा भड़क उठे तो भाग्य जल्दी ही आग पकड़ लेता है। तब सिर्फ एक चिन्गारीकी जरूरत होती है।

फिलोक्टीटस — क्या सिर्फ इतनेकी ही जरूरत है? तब चिन्गारी जरूर होगी।

(वह जला जाता है)

यूनिस — बाकीका काम भाग्य या संयोगका होगा। मैंने तुम्हारी शक्तियोंको एक

मार्ग दिखा दिया है।

(पास आते हुए निकानोर यूनिसके सामने रुक जाते हैं)

निकानोर — तुम्हारी मंत्रणा-सभा खतम हो गयी ?

यूनिस — कैसी मंत्रणा पिताजी ?

निकानोर — मैंने देखा है यद्यपि मैं बोला नहीं। तुम्हारे लिये जो बातें बहुत बड़ी हैं उनमें दखल न दो। यह राज्य और यह जाति तुम्हारे बन्द कमरोंमें बैठकर महीन षड्यन्त्र बुननेकी रेशमी अण्टी नहीं हैं।

यूनिस — हमारे पास अन्य मनोरंजन भी हैं। आपका मतलब क्या है ?

निकानोर — एण्टिओकससे मेल-जोल कम कर दे। अपने दुःसाहसी स्वभाव, अपने आवेग और महत्त्वाकांक्षाको खुली छूट न दे, न अपनी हठीली इच्छापर लगाम लगानेवाले प्रत्येक कानूनकी प्रत्यक्ष अवज्ञाको यहां घसीट । तुम्हें रोकनेके लिये मुझे कोई जंजीर ढूंढ़नी पड़ेगी ?

(वे दूर चले जाते हैं)

यूनिस — मेरे सावधान और दुनियादार पिता ! ये पुरुष सोचते हैं कि बुद्धिमत्ता उन्हींकी दाढ़ियोंसे बंधी रहती है। हमारे भी सिर हैं और मेरा ख्याल है कि उनमें ज्यादा अच्छे दिमाग हैं !

(वह मंचपर चढ़ती है, लेओस्थनीस, कालिक्रेटिस और अन्य सब एक साथ प्रवेश करते हैं)

थोआस — पार्थियाके लेओस्थनीस ! युद्ध बढ़ रहा है ?

लेओस्थनीस — एक सेनापतिकी प्रतीक्षामें है।

थोआस — आज उसे सेनापतियोंका राजा मिलेगा।

लेओस्थनीस — मैंने लड़केको देखा है। लेकिन शायद कुछ रहस्य है ? क्या वह राजा बनेगा ?

थोआस — अगर भाग्य प्रकृतिका साथ दे तो अवश्य।

लेओस्थनीस — मेरा ख्याल है दोनोंमेंसे कोई भी इतनी बुरी तरह गलती न करेगा। क्योंकि अगर ऐसा हो तो मनुष्यकी इच्छा-शक्ति भाग्यको अपदस्थ करनेका अधिकार पा लेगी। और यह हो नहीं सकता।

(क्लियोपेट्रा एण्टिओकस और टिमोक्लीसके साथ प्रवेश करती है; क्लिओन और रोडोगुन साथ-साथ सेवामें हैं। रोडोगुन खूब सजी हुई)

फिलोक्टीटस — देखें, वे उसे कहां बिठाती हैं !

थोआस — अपनी दायीं ओर।

फायलस — यह बस तिरिया चरित है या मुझे इतने मजबूत मोहरेके सामने शुरूसे ही प्रतिकूल अवस्थामें बाजी चलनी होगी ?

क्लियोपेट्रा — शक्तिशाली एण्टिओकस बहुत शीघ्र अंधेरी घाटीमें उतरकर उस मौन जगत्में चले गये जहां एक दिन हमें भी उनका अनुसरण करना होगा। एक तरुण हाथ उनका राजदण्ड ले रहा है और उनकी तलवार पकड़ रहा है। सीरियाके ये जुड़वां भाई निकानोरके बेटे हैं; एण्टिओकस और टिमोक्लीस। इन्हें इतने समयतक क्यों छिपाया गया था, उनके अधिकारको क्यों कुचला गया था, उनमें पहले पिछलेकी बात क्रूरतासे क्यों गुप्त रखी गयी थी — यह सब भूल जाओ। पुराने दुखोंको पुराने द्वेषोंको भूल जाओ। उन्हें कलशमें गड़ा रहने दो, उन्हें रातके अंधकारमेंसे न निकालो।

निकानोर — जो बातें गड़े मुरदोंकी तरह छिपी और दफना दी गयी है उनपरसे परदा हटानेकी हमें कोई अवश्यकता नहीं। लेकिन कहीं एक शंकाके कारण मृत भूतकालका कलुषित और भारी हाथ हमारे उज्ज्वल भावीपर न पड़ जाय इसलिये हम सब शपथ लें कि महारानीकी आज्ञाका पालन इस तरह करेंगे मानो वे भगवान्की ओरसे बोल रही हैं। संघर्षका सारा कारण उनके और सर्व-द्रष्टा देवोंके बीच ही रहने दो।

फायलस — राजकुमारोंको शपथ लेनी चाहिये क्योंकि अगर वे सहमत हों तो फिर प्रजा कैसे झगड़ सकती है ?

क्लियोपेट्रा — नहीं, सीरियाके शाही रक्तको शपथोंसे बाधित न करो! मेरे बेटो, तुम सहमत हो ?

टिमोक्लीस — मां, तुम्हारे बच्चोंपर तुम्हारी परम इच्छाका ही राज होना चाहिये। हमारा भ्रातृप्रेम और एक-दूसरेकी खुशीमें खुशी, हारनेवालेकी स्वाभाविक खीजको डुबा देगी।

क्लियोपेट्रा — एण्टिओकस, मेरे बेटे !

एण्टिओकस — देवि, आपका प्रश्न टिमोक्लीसके लिये था; मेरे जवाबकी कोई आवश्यकता नहीं है।

फायलस — तुम अपनी मांके चुनावको स्वीकार करते हो न ?

एण्टिओकस — भगवान्के चुनावको। मेरी मां एक छिपी हुई घटनाकी बात करेगी। किसी अनिश्चित घटनाकी नहीं।

फायलस — राजकुमार, सीरिया यहां इससे अधिक स्पष्ट उत्तर चाहता है।

एण्टिओकस — तुम कौन होते हो ? क्या तुम सेल्युकसके वंशके हो जो सीरियाके

राजाओंसे यूँ सवाल करते हो ?

क्लियोपेट्रा — बस। मेरे बेटे अपने शाही जन्मका मान रखना जानते हैं। आजसे एक नया युग शुरू हो रहा है। पार्थियाकी राजकुमारी, उठो, फ्राटेसकी बेटी, इस सिंहासनपर बैठो, तुम ही शांति और प्रेम हो और आज तुम्हारा राज्याभिषेक होना चाहिये। सीरियाकी प्रजा, विस्मित मत होओ क्योंकि अभीतक मेरे सन्देशवाहक घोड़ा दबाए, शांतिका सन्देश लिये पर्सीपोलिसकी राहमें होंगे।

थोआस — यह रहस्यमय जल्दबाजी थी ?

लेओस्थनीस — क्या यह सम्भव है ? हमारी एड़ी पार्थियाके गलेपर थी।

क्लियोपेट्रा — जबसे पार्थियाने महान् मेसिडोनके फंदेको नष्ट करते हुए पूर्वी ईरान-को उजाड़ा है तभीसे हमारे देशोंके बीच युद्ध विक्षुब्ध अंधेरे सागरकी तरह हल-चल मचा रहा हे। कितनी हृत्तंत्रियां टूटी हैं, दु:खके कितने आंसू बहे हैं और कितनी आंखें कभी वापस न आनेवाली आंखोंको पूरबकी ओर ढूँढ़ती रही हैं ! प्रसन्नता रक्तरंजित बालूमें दफना दी गयी। व्यर्थका रक्तपात, निरर्थक रोदन ! धरतीको इसीलिये विशाल बनाया गया था कि असंख्य लोग एक ही मांके वक्षस्थलपर गौरव और प्रसन्नताका उपभोग कर सकें। लेकिन हम दूसरों-के हिस्सोंको हड़पते हुए अपना हिस्सा भी खो बैठते हैं। जो राष्ट्र विजयके द्वारा अधिक-से-अधिक फैलते हैं उन्हींका नाश पहले होता है क्योंकि उद्विग्न प्रजाकी घृणाके कारण उनकी जीवन-शक्ति रिस जाती है। बुद्धिमान् वही हैं जो अपने समृद्ध भाग्यकी सीमा पहचानते हुए समय रहते दैव-प्रकोपका भाजन बननेसे बचे रहें। सीरियाकी प्रजा ! घोर युद्धके बाद मैंने उज्ज्वल शांतिकी स्थापना की है। यह शुभ कार्य मैंने सीरियाकी रानी बनकर शुरू किया था, उसपर मुहर लगानेसे सीरियाके राजाको इन्कार न करना चाहिये।

एण्टिओकस — मैं बिलकुल अस्वीकार करता हूँ। शान्ति नहीं होगी।

क्लियोपेट्रा — मेरे बेटे !

एण्टिओकस — शांति ! क्या पार्थियावासी हमारे द्वारपर खड़े हैं ? क्या एक-बाटना पर आतंक नहीं छा गया है ? कभी ऐसा देखा या सुना है कि विजेता-ने शान्तिकी याचना की हो ? और उसका कारण, नारीकी दृष्टिसे बस यही कारण, कि बहुतोंका रक्तपात हुआ है, और अनेकोंने अश्रु बहाये हैं। इन आंसु-ओंसे और उदारतासे बहाये रक्तसे ही प्रजाकी महानताका निर्माण होता है। मैं इस शान्तिको, इस स्त्रैण शान्तिको यहीं रद्द करता हूँ। मैं विजयनादसे उसके प्रति संहरणकी घोषणा करूंगा।

फायलस — अभी ?

थोआस — आप ठीक बोले, महाराज !

टिमोक्लीस — एण्टिओकस, अभी तो तुम्हारा राज्य-तिलक नहीं हुआ।

एण्टिओकस — सीरिया निषेध करता है। सीरियाका भाग्य अट्टालिकाओंसे सिंहनाद कर रहा है, पर्सीपोलिसकी ओरको शान्तिका वर्जन करते हुए नर-सिंघे गरज रहे हैं।

क्लियोपेट्रा — मेरे बेटे, हम शान्तिकी याचना नहीं करते, प्रांतोंको और रोडोगुन-को लेकर, शान्ति प्रदान करते हैं।

टिमोक्लीस — रोडोगुनका मूल्य अनेक वीरोंके साहसिक कार्योंसे बढ़-चढ़कर है और पृथ्वीकी बड़ी-से-बड़ी विजयोंको भी मात करता है।

एण्टिओकस — उसके और प्रांतोंके लिये ! घोर लज्जाकी बात है ! इन्हें तो हमारी तलवारने जीता है। हम दिवंगत महान् विजेताओंका अपमान करते हैं। प्रांत ! जमीनें किनकी हैं वे जिनके लिये हमें याचना करनी होगी ? रही राजकुमारी ! वह तो मेरी बांदी है, है न ? तब क्या मुझे चकरायी हुई पार्थियाकी प्रजासे अनुनय-विनय करके पूछना होगा कि मैं यहां, एण्टि-ओकके अपने ही राजमहलमें अपनी बांदीके साथ क्या करूं ? सीरियाकी रानी, यह काम नीचतासे किया गया है।

क्लियोपेट्रा — जानती हूँ तुम मुझसे प्रेम नहीं करते। तुम्हारे शीत हृदयमें प्रेमके लिये कोई स्थान नहीं है फिर भी मैं तुम्हारी मां हूँ। क्या राजा बनकर इसी तरह मेरा सन्मान करोगे ?

एण्टिओकस — मैं आपका सन्मान आपके स्थानपर करूंगा जहां आप अपने महलों-में प्रतिष्ठापित होंगी और अपनी दासियोंपर राज करेंगी — सीरियापर नहीं।

क्लियोपेट्रा — छोड़ो इसे। तुम शान्तिका विचार नहीं करोगे ?

एण्टिओकस — हां, जब हमारी सेनाएं पर्सीपोलिसतक पहुंच जायेंगी।

मेलिटस — महारानी कितनी हताश लग रही हैं ! इसका क्या परिणाम होगा ?

निकानोर — (जो यूनिसको ध्यानसे देखता रहा है) इस चर्चाको खतम करो। सीरियाको मालूम हो कि उसका राजा कौन है ?

(क्लियोपेट्रा उठती है और एक क्षण मौन खड़ी रहती है)

टिमोक्लीस — मां !

क्लियोपेट्रा — अपने महाराजको देखो।

मेन्थो — हा दैव, उसने कर डाला !

(विस्मित मौन)

निकानोर — महान् टोलेमीकी पुत्री, भगवान्‌को याद करते हुए फिरसे एक बार बोलो। बोलो, क्या हम ठीक समझे हैं ? क्या टिमोक्लीस हमारा राजा है ?

क्लियोपेट्रा — (यंत्रवत् कठोर चेष्टाके साथ) अपने महाराजको देख लो !

(निकानोर घटनाको पूरा हुआ मानकर स्वीकारात्मक इशारा करता है)

निकानोर — तब महाराज अपने राजसिंहासनपर विराजें !

लेओस्थनीस — (आधा उठता हुआ) थोआस !

फिलोक्टीटस — महाराज एण्टिओकस, क्लियोपेट्राके नहीं, ईश्वरके चुने हुए महाराज, बोलिये।

थोआस — एण्टिओकस, बोलो।

एण्टिओकस — तुमने सिर्फ मुझे ही सीरियाके राजकुमारोंका नाम क्यों दिया था ? मुझे अपनी दाहिनी ओर क्यों बिठाया था ? अगर छोटेको ही चुन लिया गया था तो उस निकट भविष्यके लिये जब मैं राजा बनूँगा, मोल-तोल करते हुए मेरी अनुमतिके लिये अनावश्यक बहस क्यों की गयी ? क्या तुम इस झूठपर मुहर लगानेके लिये देवोंका आवाहन करोगी ?

क्लियोपेट्रा — मेरी ही दुनियामें इस तरह मेरा अपमान करते हो ? मेरे बेटे, आओ, सिंहासनपर चढ़ो।

एण्टिओकस — ठहरो, टिमोक्लीस — अपने बड़े भाईका अधिकार हथियानेके लिये इतनी जल्दबाजी न करो, मेरे भाई।

टिमोक्लीस — मेरा बड़ा......?

(वह क्लियोपेट्राकी ओर देखता है)

क्लियोपेट्रा — मैंने सत्य कहा है।

मेन्थो — नहीं, तुमने सत्य नहीं कहा; तुम सरासर झूठ बोलीं, एक विकट और बीभत्स झूठ।

क्लिओन — चुप, काली कलूटी गुलाम। चुप।

मेन्थो — मैं चुप न रहूँगी। रानी देवोंका अपमान कर रही है। मैं मिस्रकी मेन्थो हूँ जिसने अपनी आंखोंसे राजकुमारोंको जन्म लेते देखा था। सीरियाको लोगो, वह तुमसे झूठ कहती है। राजकुमार एण्टिओकस धरतीपर पहले आया था।

थोआस — आखिर सत्य प्रकाशमें आ ही गया।

फायलस — वह नील नदीकी फालतू कीचसे पैदा हुई एक बांदी ही तो है। क्या हम उसकी बात सुनकर रानीके साथ अन्याय करेंगे ?

मेन्थो — सीरियाई कुत्ते, मैं दासी नहीं मैमफीसके एक रईसकी बेगम थी, और मेरी बात झूठी कसमें खानेवाली रानीका सामना कर सकती है ?

यूनिस — (सामने झुकती हुई) क्या हो गया ?

(निकानोर जो अभीतक हिचकिचाता रहा है उसकी गतिविधिको देखता है और बोलनेके लिये आगे बढ़ता है)

निकानोर — मिस्रका शाही खून कभी झूठ नहीं बोल सकता। क्या सीरियाकी रानीसे जवाब-तलब किया जायगा ? क्या साधारण लोगोंके साधारणसे शब्दोंको राजाओंकी वाणीके साथ तोला जायगा ? ओ राजकुमारो, बेलगाम लड़ाई-झगड़े न करो। एण्टिओकस, यह गर्व एक पुत्रको शोभा नहीं देता। इसे त्याग दो। निकानोरके पुत्र, अपनी माता और मातृभूमिको घायल न करो।

थोआस — क्या झूठकी विजय होगी ?

निकानोर — (फिरसे यूनिसकी ओर देखते हुए) तो तुम लोगोंके बीच यह बात तै हो चुकी थी ! ऐसा ही हो। मेरी तलवार नंगी है। मैं सीरियाके महाराजके पक्षमें हूँ।

फिलोक्टीटस — (सर्वव्यापी असमंजसके बीच) निकानोर, मिस्रका फिलोक्टीटस तुम्हारी चुनौतीको स्वीकार करता है।

एण्टिओकस — मेरी ओर कौन है सीरियामें ?

थोआस — मैं अपनी तलवार निकानोरसे भिड़ानेको तैयार हूँ।

लेओस्थनीस — मैं लेओस्थनीस हूँ। मैं अपने विजयी इस्पातको महाराज एण्टिओकसके लिये खींचता हूँ।

एण्टिओकस — और कौन है मेरे लिये ?

अनेक — मैं ! मैं ! और मैं ! और मैं !

केलिक्रेटिस और दूसरे — हम महाराज टिमोक्लीसकी तरफ हैं।

लेओस्थनीस — इन्हें मार डालो, झूठोंके दलको खेत कर दो।

(चारों ओर कोलाहल, चिल्लाने, तलवारें खींचने और चलानेकी आवाजें)

निकानोर — महाराजकी रक्षा करो। उद्धत विद्रोहको एकदम ठंडा कर दो, उसे अपने ही रक्तमें डूबने दो ।

लेओस्थनीस — मैं सारे संघर्षको दूसरोंका अधिकार दबा लेनेवालोंके साथ ही समाप्त कर दूंगा।

थोआस — ठहरो, रुक जाओ, लेओस्थनीस —

एण्टिओकस — ठहरो, धीरज धरो, मैं कहता हूँ। सब चुपचाप हो जाओ! महान् सेल्यूकसका वंश बूचड़खाना न बनेगा। मैं अपने सिंहासनपर भाईकी हत्या करके या गंवारू दंगे-फिसाद करके न चढ़ूंगा, बाकायदा युद्धकी वीरोचित सीढ़ियां पार करके वहां पहुँचूंगा। टिमोक्लीस, भाई, असंख्य बार चूमा हुआ तेरा सिर मेरी तलवारके लिये पवित्र है। निकानोर, तुमने चुनौती दी है और मैं और मैं स्वीकार करता हूँ।

क्लियोपेट्रा — सुनो, मेरी बात सुनो, बेटे एण्टिओकस।

एण्टिओकस — मैंने मांके रूपमें तुम्हें त्याग दिया है।

रोडोगुन — हाय!

क्लियोपेट्रा — ओ अभागी औरत!

(जल्दीसे जाती है, पीछे-पीछे रोडोगुन, यूनिस और क्लिओन चलती हैं)

निकानोर — तुम्हें लाखोंकी सहायता क्यों न मिले, तुम यह कुकर्म न कर पाओगे।

(वह टिमोक्लीस, फायलस, केलिक्रेटिस और अपने दलके लोगोंके साथ बाहर चला जाता है)

फिलोक्टीटस — क्या हम भवनपर कब्जा करके नगरको काबूमें ला सकते हैं? हम काफी संख्यामें हैं।

थोआस — निकानोरकी सेना एण्टिओकपर काबू किये हुए है।

लेओस्थनीस — यहां नहीं, यहां नहीं। बाहर कूच करती सेनासे मिलें! सीरियाका सिंहासन वहां है, यहां एण्टिओकमें नहीं।

एण्टिओकस — मेन्थो, हमारे साथ चलो। हमारी सारी शक्तिको इकट्ठा करो और फिर पार्थियाकी ओर चल पड़ो।

दृश्य २

महलका एक बड़ा कमरा

रोडोगुन, यूनिस

रोडोगुन — ईश्वरने मुझे हृदय और मन दिया है; वे रानीके नहीं हैं कि वह मुझे इस अधम व्यभिचारके लिये बाधित कर सके। मैं पार्थियाकी राजकुमारी हूँ, एक ऐसी जातिकी कन्या जो एक ही स्वामीका वरण करती है, मृत्यु, आग

और तलवारोंके बीच, नर्क और स्वर्गमें सदा उसीके साथ रहती है।

यूनिस — महारानी एकदम टूट चुकी है। उसके पीछे फायलस बोल रहा था। वह लपककर परिस्थितिको काबूमें कर चुका है और पूरी तरह उसका स्वामी बन बैठा है। ऐसे हाथोंमें बन्दी बनकर हम क्या आशा कर सकती हैं ? तुम अपने चुने हुए स्वामीके साथ सीरियाके सिंहासनपर नहीं टिमोक्लीसकी शैयापर एक गुलामकी तरह चढ़ोगी।

रोडोगुन — अगर हम रहीं तो ! लेकिन मरनेके लिये रहेगा कौन ? पार्थियाके रेगिस्तानमें, एण्टिओकसके तम्बूमें, हम खतरेपर मुस्कुरा सकेंगी।

यूनिस — हां, ठीक है। हमारे लिये मरुभूमि सुरक्षित है, एण्टिओक नहीं, चलो।

(बाहरसे एण्टिओकस और फिलोक्टीटस प्रवेश करते हैं)

एण्टिओकस — यूनिस, रोडोगुन, मैं तुम्हें ढूँढ़ रहा था। चलो, सवार हो जाओ ! हमारे ब्याहकी धूमधाम और मशालें जैसा हमने सोचा था उससे भिन्न प्रकार-की होंगी।

(थीरासके साथ फायलस अन्दरसे आता है)

फायलस — आज ही, बादमें नहीं। मित्रका विद्रोही हमारी रानीका हरण कर रहा है ! मदद ! मदद !

एण्टिओकस — हट ! सीरियाई न्योले !

(फायलसको दूर फेंककर यूनिस, रोडोगुन, फिलोक्टीटसके साथ बाहर जाता है)

फायलस — थीरास, उनका पीछा कर।

(थीरास जल्दी-जल्दी जाता है, फायलस खिड़कीकी ओर दौड़ता है)

फायलस — एण्टिओकस भागा जा रहा है ! संतरियों, उसका सामना करो। उसके सिरके लिये हजार सिक्के मिलेंगे। निकल भागा। काश, एक तेज बाण होता !

(टिमोक्लीस क्लिओनके साथ आता है)

टिमोक्लीस — कौन भाग रहा है ?

फायलस — तुम्हारा भाई, अपने साथ रोडोगुनको जबरदस्ती लिये जा रहा है। और उनके साथ-साथ यूनिस भी भाग गयी।

टिमोक्लीस — रोडोगुन !

फायलस — उसे जबरदस्ती ले गया वह।

टिमोक्लीस — बिलकुल नहीं, वह मुस्कराती और खुश होती गयी है। ओ ना-समझ

फायलस, तुम मेरा साथ क्यों देते हो, एक अभिशापित मनुष्यको क्यों अपनाते हो ? वह वापस आकर अपने पिताके सिंहासनपर बैठेगा और देशोंपर शासन करेगा। तुम मरना क्यों चाहते हो ? सब, हां, सब कुछ उसके लिये है और हमेशा उसीके लिये रहा है। मुझे हमेशा छिछले प्रेम, छिछोरे दोस्त मिलते रहे, किन्तु जिस किसीको मैंने चाहा उससे प्रतिदान कभी न मिला। हमारे बचपनमें ऐसा ही था अब भी वही चल रहा है। वह स्वर्गका चहेता है, धरती उसकी है और मानवजाति भी उसीकी। मेरी अपनी मांतक नीओबे[1]की तरह रोती रहती है क्योंकि उसने उसे छोड़ दिया है।

फायलस — यह सब देखकर मैं कारण समझ सकता हूँ।

टिमोक्लीस — मैं जिन चीजोंकी चाह करूं, जिन्हें महत्त्व दूं वे सब उसीको क्यों मिल जाती है ? उसकी मैत्री अपना हृदय खोलनेकी आवश्यकतासे बढ़कर क्या है, ऐसी मैत्री जो उसके लिये आइना होगी और उसकी महानताको बढ़ायेगी ? फिर भी विवेकशील फिलोक्टीटसने उसीको चुना। मेरे शाही चाचा भी उसीके कन्धेका सहारा लेते थे, डांट-फटकार और प्रेम भी उसीपर बरसाते थे। मुझे तो प्रशंसा या निन्दाके लिये अति तुच्छ समझकर देखकर बस मुस्करा भर देते थे। उसका राजत्व हत्याकाण्डकी आडम्बरपूर्ण लिप्सा नहीं तो क्या है, एक अमानवीय महत्त्वाकांक्षा और घमण्डी मानस जो अपने-आपको उच्च-ऊपर उठाये हुए है मानो उसके पार्थिव शरीरमें किसी देवका निवास हो और बाकी सब उसके आगे हेय हों। फिर भी सर्वाधिक गर्वीले लोग, थोआस, थेरामिनीस, लेओस्थनीस, बिन बुलाये ही उसके चाकर बन बैठे हैं। उसका प्रेम क्या है ? एक निरंकुश शासककी गुलामके लिये विषय-वासनाभरी, कठोर, आदरशून्य, तानाशाही लिप्सा। प्राणकी एक भूख मात्र, जिसे व्याकुल हृदयतक उठाकर विशुद्ध नहीं किया गया है। फिर भी रोडोगुनने, मेरी रोडोगुनने अपनी ज्योत्स्नामें प्रकाशित पवित्रता तथा माधुर्यकी गुप्त आवश्यकता उसे अर्पित कर दी है। आह, उसने अपने मधुर, दर्पभरे प्रेममय हृदयका घूँघट उसके सामने खोल दिया है। मैं उसकी पूजा करता था पर वह मेरी ओर आंख उठाकर भी न देखती थी। फायलस, तुम भी जाओ, क्लिओन, जा और तंबुओंमें उसकी सेवा कर। भविष्य वहां है इस भुरभुरे सिंहासनके साथ नहीं

[1] यूनानी गाथाकी एक स्त्री जो अपने बच्चोंके मारे जानेपर रोती ही चली गयी और पत्थरकी मूर्ति बनकर भी रोती ही रही।

जिसपर देवोंने व्यर्थके खेलमें मेरी हंसी उड़ायी है।

फायलस — इन सबके भीतर कहीं पुरुष जरूर होगा।

क्लिओन — तुम उनसे इस तरह नहीं बोल सकते। अपने चारों ओर देखिये, महाराज टिमोक्लीस! देखिये कितने लोग आपके भाईकी अपेक्षा आपको ज्यादा पसन्द करते हैं। मैं आपकी हूँ, फायलस आपके लिये काम करता है, शाही निकानोर आपकी रक्षामें लगे हैं। विख्यात केलिक्रेटस आपका समर्थक है। आपकी माता आपके लिये भय देखकर रोती है, आपके भाईके प्रेममें नहीं।

टिमोक्लीस — रोडोगुनने मुझे छोड़ दिया है।

फायलस — हम उसे वापस ले आयेंगे। यह दुःसाहसपूर्ण राजद्रोह आज शुरू हुआ है और आज ही खतम हो जायगा। महाराज टिमोक्लीस, उठिये,आदमी बनिये, अपने सिंहासनपर कब्जा कीजिये, रोडोगुनको फिर प्राप्त कर लीजिये।

टिमोक्लीस — तुम उसे वापस न लाओगे तो मैं जी न सकूँगा।

फायलस — वह तो किया जा रहा है। मेरे घुड़सवार उनके आगे पहाड़ियोंपर थ्रासिलसकी ओर जा चुके हैं। उनके पलायनकी वहीं मट्टी पलीद हो जायगी।

टिमोक्लीस — ओ कुशाग्रबुद्धि, तेज तर्रार, तिकड़मी और दूरदर्शी फायलस! तुम, तुम ही मेरे एकमात्र मंत्री हो। क्लिओन, दैवोंने तुझे इसलिये सुन्दर बनाया कि तू मुझसे प्रेम करे।

(क्लिओनके साथ जाता है)

फायलस — मंत्री! कुछ तो है पर वह सब नहीं जिसके लिये मैं काम कर रहा हूँ। (थीराससे जो प्रवेश करता है) अच्छा फिर?

थीरास — वह निकल गया। महामंत्री, इस बार आपका पांसा उलटा पड़ा।

फायलस — मैंने उसका तेज पलायन तो देखा था लेकिन फिर?

थीरास — सीरियाई फ्लीअसका दल फाटकपर खड़ा था। हम जोरसे चिल्लाये किन्तु उसने हमसे भी तेज और ऊंचे तूरानके नरसिंघेके मुक्त स्वरमें घोषणा की, "सीरियाकी प्रजा, मैं तुम्हारा नरेश हूँ", और वे एकदम चिल्लाये "यशस्वी महाराजकी जय" और घोड़े दौड़ाते हुए उसके पीछे चल पड़े। अंतमें वे पूर्वी रास्तेपर एक सफेद किनारीपर टंकी छोटी-छोटी बूँदों जैसे दिखने लगे।

फायलस — जाने भी दो उन्हें। थ्रासिलस तो है न। अगर वह लौट भी आया तो चाहे सब देवता उसकी सहायता करते हों, चाहे विजय उसकी मित्र बनकर उसके साथ चले, फिर भी मैं उसका सामना करनेके लिये मौजूद हूँ।

दृश्य ३

सीरियाके पहाड़ोंमें

एण्टिओकस, उसके सेनाध्यक्ष, सिपाही; यूनिस, रोडोगुन, मेन्थो

एण्टिओकस — वे जिन खड़े दर्रोंमें मुझसे सुरक्षित थे, वहांसे किन देवोंने उन्हें हटा दिया ?

थोआस — निश्चय ही उनको सन्देश मिला है कि हमें जिन्दा पकड़ लें।

लेओस्थनीस — आगे बढ़ो।

थोआस — वे तीन हजार हैं और हम छह सौ सशस्त्र सैनिक। आगे बढ़े क्या ?

लेओस्थनीस — फिर भी आगे बढ़ो, मैं कहता हूँ !

एण्टिओकस — हां, बढ़ो ! मैं पीछे न हटूंगा। कहीं ऐसा न हो कि मेरी प्रतापी नियति मुझसे आंखें फेर ले। सौ सैनिक राजकुमारियोंकी रखवालीके लिये रहें।

(वह जाता है, पीछे-पीछे थोआस,लेओस्थनीस, फिलोक्टीटस जाते हैं)

यूनिस — वह उन्हें समुद्रकी फुहारोंकी तरह तोड़ देगा। वे उसके आगे टिक न सकेंगे।

रोडोगुन — हे निर्धारित देवदूतो ! एण्टिओकसकी रक्षा करना।

(जब वह बोलती है, उसी समय एरिमाइट प्रवेश करता है और उसे देखता रहता है)

यूनिस — एण्टिओकस उन्हें पार कर गया, वह रास्ता बनाता गया ! वे उसकी तलवारके आगे कैसे तितर-बितर हो गये !

मेरा वीर !

रोडोगुन — यूनिस, यह आदमी कौन है ? यह मुझे भयानक लगता है।

एरिमाइट — बल्कि तू कौन है जिसने देशोंमें आग सुलगानेके लिये जन्म लिया है ? ठीक तरह देखा जाय तो क्या तेरा सौन्दर्य उन भयंकर आकारोंसे ज्यादा भयानक नहीं जो सिर्फ डराते भर हैं ?

यूनिस — राज्य जलते हों तो हर्ज ही क्या है अगर वे भव्यतासे जलें ?

एरिमाइट —— तुझ जैसे जीव यूँ सोचते हैं, एण्टिओककी राजकन्या ! क्या तूने जवान आंखोंके लिये अपने पिताको छोड़ दिया है ? हाय, तुझे पता नहीं कि वे तुझे कहां ले जायेंगी। वे तुझे दुखद चक्कर लगवाकर अभिशप्त द्वारपर पहुँचाएंगी।

यूनिस —— मैं सब द्वारोंके पार भी उनका अनुसरण करूंगी। मैं यूनानकी स्त्री हूँ जो न मौतसे डरती है न नरकसे।

(एण्टिओकस लौटता है)

एण्टिओकस —— हमारी तलवारोंने एक रास्ता काट लिया है। यह पुजारी कौन है ?

एरिमाइट —— जय हो ! मैं यह नहीं कह सकता कि "खुशी मनाओ" लेकिन उस एण्टिओकसका अभिवादन करता हूँ जो कभी राजा न बनेगा।

एण्टिओकस —— बोलो, कौन हो तुम जो ऐसे अशुभ शब्द कह कर मेरी नवजात विजय-को हतोत्साह करके मेरा रास्ता रोकते हो ? तुम्हें जो मालूम हो कह दो ! अपनी वाणीपर लगाम न लगाओ। मेरा मन सगुनोंसे कहीं अधिक सशक्त है।

एरिमाइट —— मैं वह नियत आवाज हूँ जो तुमसे यह कहने आयी है कि तुम राजा न बन पाओगे बल्कि अंतमें अपने भाग्यके आगे झुक जाओगे। जैसे वृक्ष गिरता है उसी भांति तुम अपनी महानता, प्रतिभा, गर्व और शक्तिके बावजूद गिरोगे। अब आगे कूच मत करो क्योंकि तुम्हारे रास्तेमें वैरी भाग्य खड़ा है।

एण्टिओकस —— अगर नियति मुझे झुकाना चाहती है तो पहले मुझे तोड़े। आगे बढ़ो।

एरिमाइट —— तब पथरक्षक तेरी प्रतिक्षा कर रहे हैं कि कहीं ऐसा न हो कि मानव महानतासे धरतीकी नियति पराजित हो जाय। अपने सर्वनाशकी ओर कूच करो।

एण्टिओकस —— अवश्य करूंगा। सीधा आगे बढूँगा, चाहे कैसा भी दुर्भाग्य क्यों न हो !

एरिमाइट —— अलविदा, पराक्रमी सीरियावासी, पथभ्रष्ट आत्मा; असमयमें जन्मी शक्ति ! हम फिर मिलेंगे जब मृत्यु तुम्हें एण्टिओकमें ले आयेगी।

(वह जाता है)

एण्टिओकस —— चलो कूच करो !

अंक ४

दृश्य १

एण्टिओकका महल, पहाड़ियोंके सामने

क्लियोपेट्राका कक्ष

क्लियोपेट्रा, जोयला

क्लियोपेट्रा — वह आज सवेरे नहीं आयेगा? मेरा सिर कैसा दर्द कर रहा है! जोयला, मेरी लड़की, अपनी कुशल उंगलियोंसे दर्दको शांत कर दे। ओह, वह देर लगा रहा है, कितनी देर! अभीतक क्लिओन उसे जकड़े हुए है, गुलाबी वेश्या जो अब उसपर हुकूमत करती है। अब तो वह रानी बन बैठी है और मेरे ही राजमहलमें मेरा अपमान करते हुए शासन करती है। हां, वह उसकी बाहुओंमें सुखी है। उसे मेरी परवाह ही क्यों हो? मैं तो बस मां ठहरी!

जोयला — दर्द जरा भी कम हुआ क्या?

क्लियोपेट्रा — उफ, गहरा होता जा रहा है, और गहरा। नित नयी रंगरेलियां, जब कि भ्रातृघातक युद्धकी खनखनाहट उसके महलके नजदीक आती जा रही है। जोयला, उत्सवकी रातको तूने उसे क्लिओनके साथ उपवनमें देखा था?

जोयला — देवि, मैंने आपको यही बताया था। अरसा हुआ डालफिनकी वाटिकाएं न इस तरह चमकीं थीं, न ऐसे संगीतसे सिहर उठी थीं।

क्लियोपेट्रा — वे साथ थे?

जोयला — ओह, सारे समय। ऐसे प्रेमी दिखायी नहीं देते।

क्लियोपेट्रा — (उसे अलग हटाते हुए) जा!

जोयला — देवि?

क्लियोपेट्रा — तेरा स्पर्श रोडोगुन जैसा नहीं है, उसकी मृदु वाणी खिजाती न थी, यूनिस (जोयला जाती है), क्रूर बेदर्द यूनिस, तू मुझे क्यों छोड़ गयी?

(खड़कीतक जाकर तेजीसे वापिस आती है)

ईश्वरके अन्तरिक मुझे डराते हैं। मैं इस भरे-पूरे महलमें कितनी अकेली हूं!

(टिमोक्लीस एक खत पढ़ता हुआ कमरेमें प्रवेश करता है)

टिमोक्लीस — वह युद्ध-देवकी तरह आगे बढ़ता जाता है। पहाड़, झरने और जलहीन रेगिस्तान हमारे दुश्मन और उसके दोस्त बन गये हैं। देवता भी उसके घोड़ोंकी टापके आगे रास्ता छोड़ देते हैं। लाखों कवचधारी भी उसे रोक नहीं पाते। लगता है कि अब तो हम एण्टिओकमें भी उसके बिगुल सुन सकते हैं। केवल निकानोर और पहाड़ियां मेरे मुकुटकी मुश्किलसे ही रक्षा करते हैं। मेरा भुरभुरा मुकुट!

क्लियोपेट्रा — एण्टिओकस आ रहा है!

टिमोक्लीस — मेसिडोनकी सेना कहीं विशाल एजीयन समुद्रपर अटकी हुई है। समुद्र और जमीन मेरे राजत्वका विरोध कर रहे हैं। तुम्हारे भाई कोई निश्चित समाचार नहीं भेजते।

क्लियोपेट्रा — आयेगा। क्या आर्मीयाके सहायक उसका रास्ता नहीं रोक सके? वे टिड्डियोंकी तरह आये थे।

टिमोक्लीस — मानों हवाके झोंकेने उन्हें बुहार दिया है। ओ मां, प्राणघातिनी मां, तुमने मुझे उस समय युद्धसे दूर क्यों रखा? मेरी उपस्थिति आदमियोंके हौंसले बढ़ाती और शायद इस निगलती हुई नियतिको रोका जा सकता। अगर मैं राजमुकुट और जीवन हार बैठूं तो यह केवल तुम्हारा दोष होगा।

क्लियोपेट्रा — मेरे बेटे!

टिमोक्लीस — देखा न, मां, मैंने तुम्हें रुला दिया। प्यारी मां, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ हालांकि रुलाता भी बहुत हूँ।

क्लियोपेट्रा — मैंने तुम्हें दोष नहीं दिया, मेरे प्यारे टिमोक्लीस, गलती मैंने की थी। मैदानमें जाओ, प्यारे बेटे, और अपने-आपको सीरियाके सामने रखो। टिमोक्लीस, मैं ठेस नहीं पहुँचाना चाहती, लेकिन इस समय, सिर्फ इस समय तुम्हारे पास एक अधिक योग्य व्यक्तिकी उपस्थिति सहायक न होगी? मेसिडोनका राजा, मेरा भाई, मेरी इच्छापर अपनी बेटी तुम्हें दे देगा, तुम चाहो तो तुम्हारी मिस्रकी सुन्दर चचेरी बहन बरनीस भी मिल सकती है। मेरे बेटे, सीरिया तुम्हारा सम्मान करेगा।

टिमोक्लीस — मैं तुम्हारा मतलब जानता हूँ। मां, तुम कितनी ईर्ष्यालु हो। तुम क्लिओनसे नफरत क्यों करती हो? मुझे उसके प्रेमसे जो दिलासा मिलता है उससे क्यों कुढ़ती हो? मैं सीरिया गंवा दूँगा, रोडोगुनको तो खो ही चुका। बस क्लिओन मुझसे लिपटी है। उसका हृदय तुम्हारे जैसा स्वार्थी और

ईर्ष्यालु नहीं है।

क्लियोपेट्रा — टिमोक्लीस !

टिमोक्लीस — (खिड़कीकी ओर जाते हुए) ओ रोडोगुन, उन आंखोंको कहां ले गयी जो मेरी ज्योत्स्नामयी आधी रात थीं। वह अद्‌भुत केशराशि कहां गयी, जिसमें रहकर मैं महसूस करता था कि मैं एक रहस्यमय मधुरिमाके बादलमें हूँ? कहीं सीरियाके तारोंभरे आकाशके नीचे तुम मेरे भाईके आलिंगनमें लेटी होगी। तेरा सुखी वासन्ती गौर मुख, उसके वक्षपर चुंबनकी प्रतीक्षामें मुस्कुराता होगा। ओ, नरक है, यह विचार ही नरक है! आधी रातको ऊष्माभरी क्लिओनके गुलाबी आलिंगनमें जागता हुआ मैं तेरे आलिंगनबद्ध होनेकी बात सोचता हूँ। तब मेरे रक्तमें भ्रातृहत्याका संत्रास छा जाता है। हे देवो! ऐसा होने न देना। मुझे पहले मर जाने दो, बनने दो उसे राजा, हे मां, हमें और न लड़ाओ। मुझे माफ करो और भूल जाओ।

क्लियोपेट्रा — तुम मुझे छोड़े जा रहे हो?

टिमोक्लीस — मेरा हृदय भरा हुआ है। मैं कुछ देर पिऊंगा और मधुर गीत सुनूँगा।

क्लियोपेट्रा — उस दीवानखानेमें और क्लिओनके साथ?

टिमोक्लीस — उससे नाराज मत हो, हां, क्लिओनके साथ।

(वह जाता है)

क्लियोपेट्रा — मैं अकेली हूँ, नितांत अकेली!.

दृश्य २

महलका बड़ा कमरा

फायलस और थीरास

थीरास — उसका सद्‌भाग्य टिका हुआ है।

फायलस — उसने महान् विजये पायी हैं और हर्षोन्मत्त यमराजकी तरह आर्मीनिया, सीरिया और यूनानवासियोंके मृत शरीरोंको बड़े-बड़े डगोंसे लांघता हुआ आगे बढ़ रहा है। किन्तु वह भी मर्त्य है इसलिये हर कदमपर उसका भी कुछ रक्त बहा है। अब उसकी शिराएं रक्तहीन हो गयी हैं। उसे नयी सेनाएं कहांसे मिलेंगी? उसकी छोटी सी सेना निकानोरकी बड़ी सेनाको हरा भी

दे, और एण्टिओकमें प्रवेश भी कर ले तो भी देखेगी कि मेसिडोनकी सेना वहां मौजूद है। वे तटपर उतर चुके हैं। वह हमारा है, थीरास, तूफानोंका यह महान् देवता जिन्हें धमकी दे रहा है उन्हींका बंदी है, जीतते-जीतते वह मृत्यु-का वरण कर रहा है।

(टिमोक्लीस क्लिओनके साथ प्रवेश करता है, पीछे-पीछे संगीतकार और नर्तकियां)

टिमोक्लीस — मदिरा और फूल ले आओ। वैठो, बैठ जाओ, नर्तकियोंको अन्दर बुलाओ। कोआके वस्त्रोंके आरपार झिलमिलाते हुए उनके भड़कीले अंग मेरी आंखोंपर हमला करें, वे कालको बांधते हुए मेरे हृदयको गतिके श्वेत भंवर-में कैद कर लें। बैठ जा, क्लिओन, यहां, मेरे वक्षपर, मेरे कंधेके सहारे आ! गुलाबकी पंखुड़ियोंसे और अस्त्रोंसे सज्जित, ओ गौर अंगोंके भार, तू चूमने और स्पर्श करनेके लिये ही बनी है क्लिओन! हां, सारी दुनिया फूल ही फूल बन जाय और हमारा मुकुट भी फूलोंका ही हो जिसमें गुलाबी कलियां हों जो हमारे आवेशपूर्ण हृदयों-सी लाल हों। ओ हौले-हौले बैठनेवाली, मर्मभेदी, डंकदार ततैया, मुझे सुखका डंक तबतक मारती जा जबतक कि मैं मर न जाऊं।

फायलस — मुझे यह आक्रोश पसन्द नहीं है। थीरास तुम जाओ।

(थीरास कमरेसे चला जाता है)

टिमोक्लीस — पिओ, भाई फायलस। तुम्हारे जाल अधिक चमक-दमकसे जग-मगाएं। हे नर आर्कने! ज्यादा शराब! मैं मदिरामें अपने हृदयको तिराऊंगा और फिर नग्न प्रेम देवके तर्पण- स्वरूप सारी शराब जमीनपर चढ़ा दूंगा। मैं अपने दिलको गुलाबोंमें छिपा दूँगा, अपने विचारको नरगिसोंसे ढक दूंगा। गाओ, कोई मेरे लिये गाओ! फूलोंके गीत गाओ। इस दुख-भरे जगतसे दूर मुझे केवल आनन्दके साथ गान सुनाओ।

ज्योति-पुत्र! तुम क्या लाओगे?
मृत मणि माणिक मक्ताओंसे मुझको मंडित कर पाओगे?
अच्छा हो मेरे समीप निज सांसोंमें ले सूर्य किरन।
ले आओ गमकी मेंहदी, फूले गुलाबकी गंध पवन॥
खुशियां मुझको पहनाओगे,
उल्लासों की भूषा दोगे
सुख की किंकिण दे जाओगे।

टिमोक्लीस — क्लिओन, और पास आ; एक चुंबनमें शहद घोल दे। और एक

गीत ! ऐ, काली कजरारी भौहोंवाली सीरियाई लड़की !

तुम गुलावी चमकसे मधु प्यार मेरा
इसलिये क्या बांध करके रोक लोगे,
प्यार मेरा रह तुम्हारे पास जाए ।।
शिशु सनातन यह
सुशीला, क्रूर मांका
भागता मुझसे, किसीको
प्यारसे भूषित बनाने ।
हाय ! छिछला प्यार दुःख डूबे, अभागा अंत पाए
प्यार तो बांटा न जाए, प्यार तो बांधा न जाए ।।

टिमोक्लीस — हटाओ, शराबकी प्यालियां, हटा दो ! उन गुलाबोंको नोंच डालो ! किसने मुझे इन बंधनोंमें जकड़ दिया ? चल हट वेश्या, ले जा यहांसे अपने गुलाबी चेहरेका सौन्दर्य ! तू तो रोडोगुन नहीं है ।

क्लिओन — कैसा कमीनापन है ?

टिमोक्लीस — जा यहांसे ! मुझे अकेला छोड़ दे ! मैं तेरे सोने और गुलाबोंसे थक गया हूँ ।

फायइस — जाओ, औरतो, इस कमरेसे चली जाओ । महाराज बीमार हैं । जा, लड़की, उसे मेरे हाथोंमें छोड़ दे ।

(सब जाती हैं । क्लिओन अनिच्छापूर्वक फायलसको टिमोक्लीसके साथ छोड़कर जाती है)

टिमोक्लीस — अब और न सहूँगा । मेरी प्रिया ला दो मुझे या फिर मर जाने दो मुझे ।

फायलस — कुछ ही रातोंमें तुम उसे अपनी बाहुओंमें भर सकोगे ।

टिमोक्लीस — चुप ! वह मैं न था । मैंने क्या कहा था ? यह तो शराब बोल रही थी । मेरी ओर ऐसी आंखोंसे न देखो ।

फायलस — शराब या उससे भी गहरी विद्रोही वृत्ति तुम्हारे रक्तमें खौल रही है । तुम रोडोगुनको जरूर गले लगाओगे ।

टिमोक्लीस — तुम्हारी वाणी, तुम्हारी दृष्टि मुझे भयभीत करती है । वह मेरे भाईकी पत्नी है, मेरे लिये पवित्र है ।

फायलस — उसकी पत्नी ? उनका गठबंधन किसने करवाया ? क्योंकि सीरियाके राजा तंबु और रेगिस्तानोंमें शादी नहीं रचाते, वह उसकी रखैल मात्र है ।

वांदी तो वह है ही और तुम्हारे भाईकी अंकशायिनी भी, शायद तुम्हारी भी हो सके। और वह उसकी आत्म-सहचरी पत्नी हो तो भी मृत्यु सब बंधनोंको तोड़ देती है।

टिमोक्लीस — मैं उसका खून न वहाऊंगा। चुप ! शैतान ! वह मेरे लिये पवित्र है।

फायलस — महाराज टिमोक्लीस, तुम्हें अपने हाथ रंगनेकी जरूरत नहीं। ऐण्टि-ओकस जीवित लोथड़ा हो या मुर्दा लाश, वह तुम्हारी है।

टिमोक्लीस — फिर भी मेरे भाईके बाहुओंमें लेटी है।

फायलस — तुम्हारी बहन होती तो भी क्या ? क्या तुम्हारे दिल और शरीरको संतुष्ट करनेमें यह बात बाधा दे सकती है ?

टमोक्लीस — ऐसी बात करते समय तुम कांपते नहीं ?

फायलस — महाराज, हम उन बचकाने विचारोंसे आगे निकल चुके हैं। हमें न देव डरा सकते हैं न भूत। तुम भूल जाते हो कि तुम कौन हो और दूसरोंकी रायके भूतसे कांप उठते हो या चौंक पड़नेका ढोंग रचते हो। जहां तुम पले और बढ़े हो वह मिस्रका राजवंश ऐसी बातोंकी परवाह नहीं करता। तुम्हारी मां ऐसे ही सगोत्र व्यभिचारसे जन्मी थी। अगर इस जीवनमें अपनी रोडो-गुनको गंवा दोगे, तो क्या और भी जीवन है जहां तुम रोडोगुनका सुख भोग सको ? तुम्हारे भाईने यह नहीं सोचा। उसे यहीं हथिया लिया।

टिमोक्लीस — मैं तुम्हारे बहकानेमें न आऊंगा।

फायलस — नहीं, अपने-आपके बहकानेमें आ जाओ, रोडोगुनके विचारसे ललचाओ। या फिर हम उसे अपनी वर्तमान खुशियोंमें रहने दें ? शायद इस समय वह एण्टिओकसके पास सोयी हुई है या मधुरतर जाग्रतावस्थामें एण्टिओकस उसे जकड़े हुए है।

टिमोक्लीस — (क्रोधावेशसे) घिनौने बदमाश, उसे मेरे हवाले कर, उसे मेरी बाहुओंमें ला दे। अच्छे तरीके बरत या बुरे, फौलाद बरत या जहर पर मुझे इन आंतरिक यातनाओंसे छुड़ा।

फायलस — आवेगके आघातोंसे बढ़कर और बातोंसे भी। अपनी नियतिको छोड़ दे मेरे भरोसे, मैं उसका संरक्षक हूँ।

(वह बाहर जाता है)

टिमोक्लीस — मैं डर रहा हूँ, डर रहा हूँ ! मैंने अपने अन्दर और बाहर नरकके न जाने कौनसे प्रकोपोंको जगा दिया है ? कर लेने दो उन्हें अपनी मरजी।

मुझे एक बार रोडोगुनको अपनी भुजाओंमें लेना ही होगा, फिर भले आकाश बिजलियां गिराता हुआ क्यों न टूट पड़े।

दृश्य ३

सीरियाके पहाड़ोंके सामने। एण्टिओकसका तम्बू

एण्टिओकस, थोआस, लिओस्थनीस, फिलोक्टीटस

फिलोक्टीटस — यह सीरियाके आवारा कुत्ते, फायलसका काम है। कौन सोच सकता था कि वह हमारे विरुद्ध यूनान और आधे एशियाको खड़ा कर देगा ?

एण्टिओकस — उसमें दिमाग है।

थोआस — हम महसूस करते हैं। यह हमारी आखिरी लड़ाई है और एक दुःसाहसी अवसर अब भी हमारी नियतिके आगे मुस्कुरा रहा है।

एण्टिओकस — अपनी सेनाको इधर-उधर बिखेरकर निकानोर हमें अवसर दे रहा है। वह अपनी दूर-दूरतक फैली शक्तियोंको इकट्ठा कर पाये उससे पहले अगर हम यह बीचका दर्रा ले लें तो एण्टिओक भी उसे साथ-ही-साथ आ जायगा। इसलिये मैं यही उत्तम मानता हूँ और सोचता हूँ कि देवता हमारे आगे यह निश्चयात्मक चुनाव रखकर अच्छा कर रहे हैं। संतुलित कलशोंमें अपना मत डाल-डालकर चीजको लंबा नहीं खींच रहे और न परिश्रम-साध्य नियतिको उकतानेवाली टालमटोलसे अटका रहे हैं,—बस केसरीकी एक छलांगमें विजय या फिर शानदार युद्धमें समाप्ति।

थोआस — हम इससे अच्छा और कुछ नहीं चाहते; युद्धका आनन्दप्रद तुमुलघोष कानोंमें गूँजता रहे हम तुम्हारे साथ ही जीतें या तुम्हारे ही पार्श्वमें मरें, तुम चाहे जिस लोकमें जाओ, तुम्हारे कदमोंपर चलते रहें।

फिलोक्टीटस — क्या हमारे अन्दर इतना बल नहीं है कि हम जोर लगाकर पीछे हट सके और अपने पूर्वजोंकी भांति एशियाके मैदानोंसे होते हुए सूसा या रेगिस्तान या समुद्र या मिस्रमें टोलेमीतक पहुँच जायें,—और वहांसे परदेशी सेनाओंके साथ वापिस आयें। अगर फायलस सुदूर रोमन सेनाएं ले आये तो भी क्या धरतीके अधिकारके लिये उससे लड़ नहीं सकते ?

एण्टिओकस — नहीं, फिलोक्टीटस। मैं अपने देशका मुकुट तलवारोंके बलपर ही

चाहता हूँ। मैं उसे न जीत पाया तो सीरियाके पहाड़ोंपर वीर गति तो कहीं नहीं गयी। लड़ाईकी तैयारी करो। हमारे शरीर पांसे हैं जिन्हें हम फिरसे देवोंके आगे फेंकते हैं।

दृश्य ४

दृश्य ३ का ही स्थान

एण्टिओकस, यूनिस, रोडोगुन

एण्टिओकस — मैं अपना हाथ एण्टिओकपर रखता हूँ। ओ प्रशंसनीय और शीघ्र-गामी थिरामिनीस, तुमने अच्छा काम किया है। यह युद्ध सिंह-युद्ध था।

यूनिस — मेरे योद्धा तुम खुद सिंह हो और उसीकी तरह अब सेल्यूकसके शहरपर टूट सकते हो। पहाड़ोमें और नक्षत्रोंमें जगमगाते आकाशके नीचे रहनेके बाद फिरसे एण्टिओकमें सोना कैसा नया-नया लगेगा !

रोडोगुन — मुझे नक्षत्रों और पहाड़ोंपर ज्यादा विश्वास है। वे मेरे लिये सदय थे। जब मैं आगे देखती हूँ और एण्टिओककी बात सोचती हूँ तो मेरा खून सर्द पड़ जाता है।

एण्टिओकस — रोडोगुन, ये सब मेघाच्छादित भूतकालकी छायाएं हैं जो फिरसे नहीं दुहरायी जायेंगी। यह वही एण्टिओक न होगा जिसे तू पहचानती थी, जो तेरा बन्दी-गृह था। अब तू अपने शत्रुओंके एण्टिओकमें नहीं वरन् एक नये शहरमें और स्वयं अपने राज्यमें प्रवेश करेगी।

रोडोगुन — क्या देवता इतने अच्छे हैं ?

एण्टिओकस — देवता शक्तिशाली हैं। इस्पातको पीटनेवाले शस्त्रकारोंकी तरह वे हमारी शक्तिकी परीक्षा लेना पसन्द करते हैं। इसीलिये कहा जाता है कि वे ईर्ष्यालु हैं। किन्तु ऐसा नहीं है। वे श्रेष्ठ और उग्र हैं इसलिये महान् व्यक्ति-योंसे महानताके लिये आग्रह करते हैं, स्वयँ संपूर्ण हैं इसलिये हमें संपूर्ण बनानेके लिये श्रम करते हैं और उन्हें जो भी त्रुटि दिखती है, उसपर प्रहार करते हैं। पहाड़ोंकी ओरसे बढ़ता हुआ यह शोर क्या है ? थोआस, तुम ? (थोआसका प्रवेश) तेरे माथेपर बल हैं, क्या यह थिरामिनीस है ? क्या हमारा भाग्य टूट-फूटकर लौटा है ?

थोआस — टूट कर गिर गया। हम लोग जो बचे रहे वे थिरामिनीसको वापिस लाये हैं जिसके शरीरपर बीस गौरवपूर्ण घाव पराजयपर मुस्कुरा रहे हैं।

एण्टिओकस — थिरामिनीस मुझसे भी आगे निकल गया! तुमने मुझे शिविरमें कैसे पड़ा रहने दिया! मैं समझता था कि हमारा रास्ता दुश्मनोंसे साफ है।

थोआस — देवोंके पास ऐसे उपाय थे जिनके बारेमें हम कुछ न जानते थे। दर्रोंके बीच शिखरोंपर मेसिडोनके भाले छिपे थे। वे समुद्रकी राह एण्टिओकसे आये हैं।

एण्टिओकस — मेसिडोनकी सेना! तब हमारा दिन समाप्त हो गया; हमें रातेके बारेमे सोचना चाहिये। थोआस, हम अपनी सीमातक आ पहुँचे।

थोआस — अगर हम उसे चुनें तभी न, क्योंकि और समाचार भी हैं।

एण्टिओकस — उनका स्वागत होगा।

थोआस — फ्राटेस, तुम्हारे प्रतापी ससुर अपने पीछे असंख्य खुरोंकी गड़गड़ाहट लिये आ रहे हैं; सीरियाके दुश्मन बनकर हमला करनेके लिये नहीं, बल्कि अपनी रोडोगुनके पतिकी सहायताके लिये। क्या हम इन सहायकोंकी ओर पलटें? मृत्यु हमेशा प्रतीक्षा कर सकती है।

एण्टिओकस — शायद। थोआस, मुझे थोड़ी देर अकेला रहने दो क्योंकि आज हमें अकेला बैठना चाहिये, मुझे और मेरी आत्माको; रोडोगुन, (थोआस जाता है) तू पार्थिया जायेगी, अपने देश जायेगी?

रोडोगुन — मेरा कोई देश नहीं, मेरा तो सिर्फ तू है। जहां तू होगा मैं वहीं रहूँगी; मैं बस इतना ही जानती हूँ और यही चाहती हूँ।

एण्टिओकस — यूनिस, तुम सकुशल एण्टिओक लौटना चाहती हो? मेरी मां तुमसे अच्छी तरह प्यार करती है।

यूनिस — मैं उसके और तुम्हारे पीछे चलती हूँ। यह कैसी बातें हैं? मैं नाराज हो जाऊंगी।

एण्टिओकस — यूनिस, मैं एक बार जो था उससे भिन्न हूँ क्या? मैं जब पहले-पहल मिस्रसे तुम्हारे जीवनमें आया था उसके बादसे मुझमें कुछ फर्क आया है क्या?

यूनिस — तुम मेरे देवता हो, मेरे वीर हो और हमेशा रहे हो।

एण्टिओकस — तुम्हारे और उसके लिये हूँ। मेरी रोडोगुन, अच्छी तरह सो ले क्योंकि तुझे और मुझे भाग्यपर भरोसा नहीं किन्तु एक दूसरेपर है। तेरे लिये और किस बातका महत्व हो सकता है?

रोडोगुन — और किसीका नहीं। (रोडोगुन और यूनिस शिविरके अन्दर जाती हैं)

एण्टिओकस — एक देवता ! हां, मेरे अन्दर देवताओं जैसी उत्तेजनाएं उठ रही हैं। क्या वे इस तुच्छ धरतीसे सीमित होंगी जिसे समुद्र बांध सकता है ? अगर रोम, यूनान, अफ्रीका, एशिया और भूमंडलके अभीतक अज्ञात देश मुझे अपने बगीचेके लिये दिये जाएं, सारा गौरव मेरा ही हो, सभी पुरुष मेरे मित्र बन जाएं और सब स्त्रियोंके हृदय मेरे हों तब भी क्या अन्य सीमाएं न होंगी, और प्रदेश न होंगे जो अपराजित बचे हों ? हे महिमावान् मेसिडोनवासी, तुझे भी अंतमें जीतनेके लिये अन्य जगत् ढूँढ़ने पड़े ? कुछ मिले भी ? सब कहने सुननेके बाद, यह धरती एक छोटी-सी पहाड़ी मात्र है और समुद्रतक नीला गड्ढा। आज रात मुझे सब कुछ विचित्र लग रहा है; मेरे युद्ध, मेरी महत्वाकांक्षा, मेरा भाग्य और जो मैं हूँ या जो हो सकता था वह सब मेरे इर्द-गिर्द धुँधले रूपमें घूम रहा है और कोहरेमें भटकते भव्य छाया रूपोंकी तरह मुझसे दूर होता जा रहा है। मैं कौन हूँ ? कहांसे आया ? कहां जा रहा हूँ या अब किसलिये ? किसने मुझे ये विराट् बुभुक्षाएं दीं जिसने सारी दुनियाको एक भोज मात्र बना दिया ? किसने मेरी सफलताके लिये ये संकरी, तुच्छ और अपर्याप्त सीमाएं बांधीं ? आह, मर ज़ाना, गुजर जाना, सिर्फ इतनी ही उपलब्धिके साथ कि "उसने महान् कार्योंके लिये प्रयास किये लेकिन कर पाया बस छोटे-छोटे कार्य।" अगर यही एक जीवन हमें असफल या सफल बननेके लिये दिया गया है तो वह बनाये रखने योग्य है।

हमारी धरतीपर पार्थियाका राजा चल रहा है। फ्राटके (घोड़ोंके) खुर फिरसे एक बार यूनानकी जमीनमें गड़ रहे हैं ! अहा, धूर्त पार्थिया-नरेश ! जबतक हम आपसी चोटोंसे दुर्बल नहीं हो गये तबतक वह मुस्कुराता और प्रतीक्षा करता रह और अब अपना कदम सीरियाकी ओर बढ़ा रहा है। तो क्या मैंने बस अपने देशकी दासता ही उपलब्ध की है — क्या मेरे लिये यही कहा जायगा ? यह बड़ी कटु है, दिलमें घाव करती है। आह, मेरी यह ख्याति ! "वह सीरियाका ध्वंसक था, उसने महान् सेल्यूकसके कार्यको समाप्त कर दिया।" मेरा जो होना होगा, होगा, किन्तु इस बातमें बलवान् देव कभी न जीत पायेंगे। मैं अपना शरीर और तलवार टिमोक्लीसको अर्पित कर दूंगा, पार्थिया-नरेशको खदेड़ दूंगा, सीरियाको मेसिडोनके इन खतरनाक मित्रोंसे, इस नयी मौतसे बचाऊंगा, और तब मरूंगा।

लेकिन मरूं क्यों ? क्या यह ज्यादा अच्छा न होगा कि उत्तराधिकारमें राज पानेकी जगह मैं बदलती दुनियामें अकेली तलवार लेकर पैठ जाऊं और

अपना ही एक साम्राज्य खड़ा कर लूँ ? क्या और प्रदेश नहीं हैं ? पूर्वमें बड़े मैदान नहीं हैं ? विराट् जलते अफ्रीकामें नीलके रहस्यमय सोतोंके उस पार भी साम्राज्य होंगे। या फिर असीम पश्चिमकी ओर समुद्री राहसे जहाज खेते चलें और नाना समुद्रोंको पार करते हुए तीन वर्षतक चलते चले जाएं तो शायद परीकथाके नहीं सचमुच पुराने एटलांटिकको पाया जा सके। हे नील भूमध्य सागर, तेरा संकरा सुन्दर, तट, भारत और पार्थिया बस यही दुनिया है ? धरतीके पास जो कुछ है मैं उससे बड़ी चीजोंका प्यासा हूँ। लेकिन मैंने जो स्वप्न देखे थे उनके लिये निकानोरपर गहरी नाभिवाले दर्रोंके बीच कूदना या मेसिडोनके भालोंपर गिरना गौरवपूर्ण होते हुए भी गौरवपूर्ण कायरता ही होगी, आत्म-हत्याके समान होगा। विपत्तिको स्वीकार करनेकी अपेक्षा उससे लड़नेमें ज्यादा वीरता नहीं है क्या ? हां, तब और बात होगी यदि सोच-विचार बेकार हो और केवल नियति ही हमारी चालक हो। ओ मेरी आत्मा ! उसे ढूंढ़ निकाल, इसमें कोई भूल न करना क्योंकि एण्टिओकस नामक मनुष्यका भविष्य, इस धरतीपर उसके शरीर या नामका जो भी भविष्य हो वह इसी घड़ीपर निर्भर है। जीयस ! मुझे दिखा दो मेरा भविष्य कहां है एण्टिओक-में या यूनानी भालोंपर ?

(उसके बोलते-बोलते ही एरिमाइट प्रवेश करता है)

एरिमाइट — हमेशा तेरे सामने।

एण्टिओकस — तुम कैसे और कहाँसे आये ? मैं तुम्हारी अमंगल दृष्टिको जानता हूँ।

एरिमाइट — कैसे या कहांसे यह न पूछो, किन्तु इतना जान लो कि अन्त नजदीक है, जिस अन्तकी मैंने तुम्हें आगाही दी थी।

एण्टिओकस — तो पराजय और मृत्यु शुरूसे ही मेरे हिस्से आयी थी ! तब फिर वे अतिविशाल भावनाएं और विचार जिन्हें लेकर मैं मांके गर्भमें आया था आये ही किसलिये थे यदि उनका अन्त एक दीन-हीन कब्रमें होना था ?

एरिमाइट — गौरवान्वित पराजयका निरस्कार न करो, उदात्त मृत्युकी अवज्ञा न करो। देवता उन्हें सख्तीसे स्वीकारते हैं।

एण्टिओकस — हां, स्वीकार तो करूंगा, पर दीनताके साथ नहीं।

एरिमाइट — तब जा टूट, अपनी ऊंचाईसे असंतुष्ट पहाड़ी, टूट जा। देवता इसकी परवाह नहीं करते कि तुम विरोध करते हो या झुक जाते हो; वे मर्त्योंको लेकर अपना काम बना लेते हैं। ओ शिकारकी खोजमें लगे, शक्तिशाली और भूखे

शेर, तू कालकी लौह शलाकाओंको लांघता हुआ जिस विराट् से आया था उसी-की ओर लौट जा ! तेरा दमन करनेवाले और तुझे सधानेवाले भी हैं। युद्धों-के देव ! निकानोरके बेटे ! वीरवर एण्टिओकस ! जाओ और ऐसे हो जाओ मानो तुम जन्मे ही न थे। एण्टिओकमें देवता तुम्हारी प्रतीक्षामें हैं।

(वह जाता है)

एण्टिओकस — मैं उनसे वहीं मिलूँगा। तोड़ दो मुझे। हे देवो, मैं देखता हूँ कि तुम मुझे तोड़ सकते हो। लेकिन तुम केवल शरीरको तोड़ोगे; इस आत्माको नहीं; क्योंकि मुझे लगता है कि उसके स्वामी दूसरे ही हैं। तो यह निश्चित है। कल एण्टिओकमें अस्त होगा।

दृश्य ५

स्थान पिछले दृश्यका

फिलोक्टीटस, थोआस, लेओस्थनीस, यूनिस

लेओस्थनीस — निश्चय ही, यह वह परिवर्तन है जो उन लोगोंमें आता है जिनके सिरपर मौत मंडरा रही हो।

फिलोक्टीटस — हाय दैया, वही है, यह वही है।

थोआस — राजकुमारी यूनिस, इस विषयमें क्या राय है तुम्हारी ?

यूनिस — थोआस, हमारे सोचनेसे क्या होता है ? हम अपने राजाके पीछे चलेंगे, हमारे रास्ते चुनना उनका काम है। वे मौतकी ओर लिये जाते हैं ? तो हम भी उनके साथ मर सकते हैं।

थोआस — बड़ी ऊंची बात कही।

फिलोक्टीटस — किन्तु बहुत औरताना।

(एण्टिओकस रोडोगुनके साथ प्रवेश करता है)

एण्टिओकस — एण्टिओककी ओर ! हमारी कूचके लिये सब तैयार हैं ?

फिलोक्टीटस — एण्टिओकस, मेरे महाराज, सोचता हूँ मित्रमें हम एक दूसरेसे प्यार करते थे।

एण्टिओकस — मेरे फिलोक्टीटस, क्या यहां कम करते हैं ?

फिलोक्टीटस — तो प्रिय मित्र, उस प्यारकी कसम, एण्टिओक मत जाओ। हम

पार्थिया-नरेशके अभियानकी प्रतीक्षा करें। एण्टिओकमें क्या मिलेगा ? एक क्रोधित मां ? एक ईर्ष्यालु भाई जिसके कानोंके पास बैठा एक सांघातिक धूर्त फुसफुसाता रहता है ? विद्वेषी सामन्त ? इनसे तुम क्या आशा कर सकते हो ? एण्टिओक मत जाओ। मैं मृत्युको मुस्कुराते, जानेके लिये इशारा करते देखता हूँ, लेकिन जाओ मत।

एण्टिओकस — प्रियतम मित्र फिलोक्टीटस, नियति मुझे बुला रही है और क्या मैं उससे दामन चुराऊंगा ? अपने नन्हें भाई टिमोक्लीसको जानता हूँ, उसका स्पर्श अभीसे अनुभव कर रहा हूँ, उसकी मुस्कान देखता हूँ। लेकिन वहां फायलस है ! क्या मैं इतना गिर जाऊं कि उससे डरने लगूँ ? माफ करो, मित्र; मैं एण्टिओक जाऊंगा।

फिलोक्टीटस — तो यही नियतिका आदेश था।

एण्टिओकस — लेकिन तुम लोग, मेरे मित्रो, जिनकी रक्षा करनेके लिये कोई प्रेम नहीं है बल्कि जिनके शायद बड़े-बड़े दुश्मन हैं, क्या जबतक मैं तुम्हारे लिये मिस्र या फ्राटेसके साथ शान्ति स्थापित नहीं कर लेता, तबतक तुम पीछे रहोगे ?

थोआस — जिन्होंने तुम्हारी विजयी तलवारका अनुसरण किया था उनमेंसे एक भी आदमी तुम्हें न छोड़ेगा। हम हमेशा तुम्हारे पीछे चलेंगे।

एण्टिओकस — तब नगाड़े बजाओ और कूच कर दो ! लेकिन पहले एक दूत आगे जाकर टिमोक्लीससे मिले, उससे कहे कि एण्टिओकस अपनी विजयी तलवार भाईके घुटनोंपर रखने और उसकी ओरसे पार्थियाके विरुद्ध लड़ने आ रहा है। चलो कूच करें।

(फिलोक्टीटसको छोड़कर सब जाते हैं)

फिलोक्टीटस — (उसके पीछे देखते हुए) हे सूर्य, तुम रातकी ओर दौड़े जा रहे हो, वह तुम्हें निगल जायेगी।

अंक ५

दृश्य १

एण्टिओकका महल, महलका एक कक्ष

फायलस अकेला

फायलस —— मेरे दिमागने इससे भी जटिल गुत्थियां सुलझायी हैं। इससे टिमोक्लीस-को अपनी रोडोगुन मिल जायगी; यह एक लाभ है। आज रातको या फिर कल वह उसके पलंगपर होगी चाहे उसके लिये मुझे रोडोगुनको उसके पतिके रक्तमेंसे घसीटकर लड़खड़ाते कदमोंसे ही वहांतक क्यों न पहुँचाना पड़े। क्योंकि एण्टिओकसको मरना ही पड़ेगा। किसीकी प्रजा बननेके लिये वह बहुत वड़ा है, और यह उसका आशय भी नहीं है। वह अपने अन्दर किसी रहस्य-मय उद्देश्यको छिपाये हुए है। देश-निकाला उसे और अधिक उपद्रव करनेकी आजादी देगा। मृत्यु ! लेकिन कैसे ? सीरियाकी प्रजा है, टिमोक्लीस है, जिसका हल्का, अस्थिर मन पीले पत्तेकी तरह कांपता है, वह इच्छा करता है, दृढ़ संकल्प करता है और त्याग देता है।

(टिमोक्लीस आता है)

टिमोक्लीस —— फायलस, महान् देव ही इस शुभ अवसरको लाये हैं। मेरे महान् उदात्त भाई, वीर एण्टिओकसका मेरे पास आंकर मेरे सामने घुटने टेकना ! अब लेशभर भी द्वेष नहीं ! यह मेरा वही भाई है जिससे मैं मित्रमें प्यार करता था।

फायलस —— ओ अनगढ़ आत्मा, क्या तू हमेशा हरएक गुजरती हुई परिस्थितिके सामने मिट्टीका लौंदा बनी रहेगी ?

टिमोक्लीस —— क्या तुम नहीं मानते कि बस मेरे मांगने भरकी देर है और वे रोडो-गुनको मेरे हाथोंमें दे देंगे ? वह उनकी पत्नी नहीं ! सूने रेगिस्तानमें सारे समय इकट्ठे रहते-रहते अति परिचयके कारण वे उससे थक चुके होंगे; क्योंकि वे कभी प्रेमी नहीं रहे। ओ फायलस, जब इतना कुछ हो चुका है तो क्या तुम यह कहते हो कि इतना और न हो सकेगा ? मुझे विश्वास है कि देवोंका यही

इरादा है।

फायलस — अच्छा, तो तुम समझते हो कि एण्टिओकस अपना ऊंचा सिर तुम्हारे पांवतले रखने आ रहा है? तुम यह मान सकते हो! सचमुच, अगर तुम ऐसा समझते हो तो ऐसी कोई चीज न बचेगी जिसे माना न जा सके। वह आत्मा जिसने जन्मसे ही विजयके सपने देखे हैं, वह आत्माभिमानी फुर्तीला महत्त्वाकांक्षी पुरुष जिसे विजय निराश करती है, जिसे महाद्वीप भी छोटे, संकरे लगते हैं उसके बारेमें तुम कहते हो कि वह समर्पण करेगा, और वह भी तुम्हें? उसे तुम अपना नौकर रखोगे?

टिमोक्लीस — तुम किस ओर इशारा करते हो? अपनी दाढ़ी मत सहलाओ! साफ-साफ कहो। जानते हो, कभी-कभी मैं तुमसे नफरत करता हूँ।

फायलस — मुझे परवाह नहीं, अगर तुम मेरी सुनो और मुझे दुश्मनोंसे अपनी रक्षा करने दो।

टिमोक्लीस — जानता हूँ कि तुम मुझसे प्यार करते हो, लेकिन तुम्हारे विचार और सबके लिये हानिकारक हैं और तुम्हारे तौर-तरीके उनसे भी बदतर। फिर भी बोलो, तुम किस बातसे डरते हो।

फायलस — मुझे कैसे मालूम? फिर भी यह सम्भव लगता है कि घमासान युद्धमें असफल होकर वह चुपचाप तुम्हारी हत्या करनेके लिये रेंगता हुआ आ रहा है। तुम इस बातपर मुस्कुराते हो? यह तो कूटनीतिका साधारण नियम है और इतिहास ऐसे उदाहरणोंसे भरा पड़ा है। तुम मत करो विश्वास; अपनी इच्छाओंपर ही भरोसा रखो, मानवजातिके इतिहासपर नहीं। सोते रहो, जबतक कि तलवार तुम्हारे अन्दर घुसकर तुम्हें न जगायें और तुम्हारा राजदण्ड तुम्हारे भाईके हाथमें न चला जाय।

टिमोक्लीस — (उदासीनतासे) मैं सुन रहा हूँ फायलस। बस, उस रोडोगुनको मेरे हवाले कर दे, उसने मेरा जो कुछ बिगाड़ा है सब माफ हो जायगा।

फायलस — वह रोडोगुनको तो अपने पास रखेगा ही, साथ ही उन सब दिलोंको भी ले लेगा जो तुमसे प्यार करते हैं।

टिमोक्लीस — (उदासीन रहते हुए) पहले मैं देखना चाहूँगा।

(क्लियोपेट्रा जल्दी-जल्दी आती है)

क्लियोपेट्रा — यह सच है, टिमोक्लीस? क्या यह सच है? एण्टिओकस, मेरा बेटा मेरे पास आ रहा है? आ रहा है मेरे पास!

टिमोक्लीस — अब भी तुम इससे उतना प्रेम करती हो!

क्लियोपेट्रा — वह मेरा बच्चा है, उसका चेहरा ठीक बाप जैसा है। और मुझे मीठी आवाज और मृदु स्पर्शवाली अपनी पार्थियाकी रोडोगुन भी मिलेगी और वह, मेरी लाड़ली, स्वच्छ आंखोंवाली आनन्ददायिनी यूनिस। अब मुझे अकेला न लगेगा। तुम मिस्रसे आये थे तबसे आजतक मैं इतनी सुखी कभी न हुई थी। किन्तु, हा दैव! उसके बाद क्या-क्या हुआ? क्या इस बार कोई कठोर नग्न विपदा इस आनन्दकी झलकका बदला लेनेके लिये गार्गन[1] का सिर लिये हमें पत्थर बनानेके लिये न उठ खड़ी होगी? देवो, तुम्हारे चाबुकोंसे मार खा-खाकर मैं इतनी डर गयी हूँ कि तुम्हारी मुस्कानपर विश्वास नहीं कर पाती।

(निकानोरका प्रवेश)

निकानोर — एण्टिओकस आ रहा है।

टिमोक्लीस — जय हो, विजयी सेनापति, सीरियाके बलशाली त्राता!

निकानोर — सीरियाका त्राता तुम्हारा भाई एण्टिओकस आ रहा है, जो तुम्हारे खतरनाक दुश्मनोंपर प्रहार करनेके लिये अपने-आपको एक तलवार बना रहा है।

फायलस — निकानोर, तुम पहले तो उसकी ऐसी प्रशंसा न करते थे।

निकानोर — क्योंकि तब मैं उनके आभिजात्यसे अपरिचित था, बस, उनकी ताकत ही देखी थी।

फायलस — फिर भी निकानोर, तुमने वचन दिया था कि अगर उसने एण्टिओकमें प्रवेश किया तो नग्नावस्थामें जंजीरोंसे जकड़ा हुआ गढ़े या तलवारके पास जानेके लिये आयेगा।

निकानोर — वह एक कैदी बनकर नहीं आ रहा, बल्कि राजोचित ढंगसे, और निजी हितोंके लिये अपने देशको पार्थियाका गुलाम बनानेके विचारसे घृणा करके आ रहा है।

टिमोक्लीस — मेरा प्यारा भाई जल्दी आ रहा है क्या?

निकानोर — वे इसी क्षण प्रवेश कर रहे हैं।

टिमोक्लीस — दरबार बुलाओ। सब लोगोंकी आंखें इस पुनर्मिलनको देखें। मैं एक क्षणमें रोडोगुनको देखूँगा।

(एक ओरसे केलिक्रेटस, मेलीटस, क्लिओन, दरबारी वर्ग; दूसरी ओरसे ऐण्टिओकस, यूनिस, रोडोगुन, थोआस, लेओस्थनीस, फिलोक्टीटस आते हैं)

[1] यूनानी कथाओंकी तीन बहिनें जिनकी दृष्टि पड़नेसे ही आदमी पथरा जाते थे।

टिमोक्लीस —— हे भाई, मेरी भुजाओंमें आ ! यह मजबूत गलबहियां लौटी हुई मैत्री-का निशान हों जो फिरसे निकानोरके बेटोंको आनन्दके लिये बांध रही हैं।

एण्टिओकस —— यह बात तुम्हारे योग्य ही है, मेरे भाई टिमोक्लीस। हमारी आत्मा-ओंसे सब बेकारके झगड़े निष्कासित हों। है सीरियन टिमोक्लीस, सीरियाके लिये तेरे राज्यके प्रति सेवानिष्ठ मेरी तलवार तेरी है, मैं तेरा हूँ और मेरे पास जो कुछ है और मैं जिस किसीसे प्रेम करता हूँ, सब तेरे हैं !

टिमोक्लीस —— सब कुछ ? भाई, आ फिरसे आलिंगन कर, एण्टिओकस।

एण्टिओकस —— एक बार सीरियाकी भूमि खतरोंसे साफ हो जाय, इन भयंकर आफतों-से बचा ली जाय, तो मैं तुम्हारी इजाजत लूँगा, भाई, और दूर देशोंकी यात्रा करूंगा। लेकिन तबतक नहीं जबतक हम तुम्हारे एण्टिओकके आनन्दको न देख लें जिसकी इतनी चर्चा सुनी थी। तब मैं और मेरी प्रिय पत्नी, पार्थिया-की राजकुमारी रोडोगुन विदा लेंगे। देखो भाई, सब चीजें कैसे एक उच्चतर इच्छाके अनुसार चलती हैं। तुम्हें सीरियाका राज्य मिला, और मुझे राज-कुमारी और अपनी आत्माका राज्य।

टिमोक्लीस —— (धीरे से) उसकी पत्नी !

मेलिटस —— महाराज विवर्ण हो रहे हैं और अपना निचला होंठ चबा रहे हैं।

एण्टिओकस —— मां, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ, इस बार मुझे उठा लो, अब मैं जिद्दी न बनूंगा।

क्लियोपेट्रा —— मेरे बच्चे ! मेरे नन्हें !

टिमोक्लीस —— (स्वगत) वह मुझे रोडोगुन न देगा ! और अब मेरी मांका दिल भी चुरा लेगा ! (प्रकट) कप्तानों ! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ; अब तुम मेरे सिपाही हो।

लेओस्थनीस —— महाराज, हम आपको धन्यवाद देते हैं। हम आपके भाईके सिपाही हैं इसलिये आपके हैं।

टिमोक्लीस —— हां फिलोक्टीटस, पुराने मिस्री मित्र, अभी मिस्र नहीं जा रहे ?

फिलोक्टीटस —— पता नहीं कहां जाऊंगा। मैं भूल गया हूँ कि वहांसे आया क्यों था। आशा करता हूँ कि तुम अपने भाईसे प्रेम रखोगे।

टिमोक्लीस —— उसे ! हां, हां, उससे प्रेम रखूँगा।

एण्टिओकस —— टिमोक्लीस, भाई, हम आज दूरसे आये हैं; हमारे लिये कमरे ठीक कर दोगे ?

टिमोक्लीस —— मैं ही तुम्हें लिये चलता हूँ, भाई।

(क्लिओन और फायलसके सिवा सब हालसे जाते हैं)

क्लिओन — क्या यह उनकी शान्ति है ? लेकिन उसे अपनी रोडोगुन मिल जायगी और मैं एक मामूली फूलकी तरह घूरेपर फेंक दी जाऊंगी।

फायलस — उंह !

क्लिओन — मेरे आंखें हैं, मैं देखती हूँ। मैं तब भी जानती थी कि एक बार तुम्हें आसन मिल जाये तो मेरी कोई कीमत न रहेगी। मैं इस तरह न फेंकी नहीं जाऊंगी ! सावधान, फायलस; क्योंकि एण्टिओकस जिन्दा है।

फायलस — तो फिर जबतक एण्टिओकस जिन्दा है रोडोगुनके साथ प्रेमियोंकी अदला-बदली कर ले।

क्लिओन — मैं वह भी कर सकती हूँ। उसका शरीर देवताओं जैसा सुन्दर है। मैं उसकी हत्या न होने दूंगी।

फायलस — अगर ब्याह करनेमें जल्दबाजी की तो शायद उसकी विधवा बनना पड़ेगा क्योंकि वह जल्दी ही शव बन जायगा।

(टिमोक्लीस लौटता है)

टिमोक्लीस — फायलस, तुमसे कुछ बात करनी है।

(क्लिओन दूर जाती है ताकि सुन न सके)

वे पार्थियाकी रोडोगुनको कहां ठहरायेंगे ?

फायलस — ठहरायेंगे ?

टिमोक्लीस — सोनेके लिये शठ ! उसका कमरा कहां है ?

फायलस — क्यों, राजकुमार एण्टिओकसके साथ एक पलंगपर।

टिमोक्लीस — ऐ कड़वे नमकहराम, तू भी यह कहनेकी हिम्मत करता है ? क्या तू भी मुझे मारनेके षड्यन्त्रमें शामिल है ? मैं इसे सह लूँगा ? अपने ही महल-में ! एक बिस्तरमें ! हे भगवान् ! मैं अभी जाऊंगा और उसके कलेजे-में छुरा भोंककर राजकुमारीको घसीटूँगा, घसीटता,......

क्लिओन — (उसकी ओर दौड़ती हुई) उसके होठोंपर झाग हैं !

फायलस — महाराज, अपने आवेशको रोकिये ! उनकी कायापलट हो गयी है। यह ईर्ष्या विचित्र पिशाचिनी है। मानो उससे कुछ बनेगा। उन्हें वह लड़की जल्दी ही मिल जायगी।

टिमोक्लीस — क्लिओन, तेरा उपकार मानता हूँ। मैं जब इस बारेमें सोचता हूँ तो मेरे अन्दरसे कोई चीज विद्रोह करके मेरा गला घोंटती है और मेरे वक्षसे प्राणको नोच डालती है। फायलस, तुम षड्यन्त्रकी बात करते थे न ? कहां

हैं वे ? देखूँ उन्हें ?

फायलस — कहना मुश्किल है। क्या वे सब उनके हृदयमें नहीं छुपे ?

टिमोक्लीस — तुम उन्हें खींचकर बाहर नहीं ला सकते ?

फायलस — आपके भाईको यातना दूं !

टिमोक्लीस — उसके सेनापतियोंको सताओ; उन्हें उसके लिये अपने प्रेमके बारे-में शोर मचाने दो। यूनिसको सताओ। चीखोंके बीच सचको प्रकट होने दो। यूनिसके शब्दोंको लहूकी बूँदोंके साथ गिनते रहो !

फायलस — तुम अपने-आपपर आघात करोगे। शान्त रहो। सताए ! किसलिये ? उसका कुछ फायदा नहीं।

टिमोक्लीस — मुझे प्रमाण मिलेंगे। क्या तू मेरी अवहेलना करेगा, विश्वासघाती, तू भी ? अभी इसी दम उसके मुकदमेकी व्यवस्था करो, उसके निष्कासनकी व्यवस्था करो।

फायलस — निष्कासन ! तब तुम तुरन्त अपने सर्वनाशके लिये तैयारी कर लो।

टिमोक्लीस — न्याय अवश्य होगा, न्याय, एण्टिओकस, निष्पक्षतासे तेरा न्याय होगा। मैं उसकी हत्या न करूंगा। और रोडोगुन एण्टिओकमें मेरे साथ रहेगी।

फायलस — सुनो ! रास्ता चलते लोग उसका नाम गा रहे हैं। वे उसे बचानेके लिये उठ खड़े होंगे और हमें हड़काये कुत्तोंकी तरह मार डालेंगे। उसकी मृत्यु-का आदेश दो। मेरी लाशके लिये एक भी आदमी न उठेगा। निष्कासन नहीं, मृत्यु ! वह टालेमी या महान् फ्राटके साथ वापस् आयेगा, तुम्हारा सीरिया तुमसे ले लेगा और रोडोगुनको भी।

टिमोक्लीस — मैं तुम्हें अपनी सत्ता देता हूँ। उसपर मुकदमा चलाओ और उसे दण्ड दो। लेकिन फांसी, फांसी होनी चाहिये। मैं हत्या न करने दूंगा। उसकी व्यवस्था करो।

(वह जाता है, पीछे-पीछे क्लिओन)

फायलस — इस सनकमें है तबतक झपटकर निपटा लेना चाहिये। लेकिन इसका मतलब होगा ऐसा साहस करना जिसके पूरे होनेपर सीरियामें मुझे इस भंगुर राजाके सिवा किसीका समर्थन न मिलेगा। कुछ परवाह नहीं। नियति मुझे सहायता देगी। वह मेरी चेरी बन गयी है। उसके साथ मैंने कौन-सी धृष्टता नहीं की, लेकिन उसने सब कुछ प्रेमासक्त होकर सह लिया है, हर ज्यादतीके बाद ज्यादा मेहरबान बनी है। मुझे देखती रहना, मेरी एकमात्र प्रेमिका !

फायलसका वार आकस्मिक और तेज होगा।

दृश्य २

एण्टिओकसका कक्ष

क्लियोपेट्रा, एण्टिओकस, यूनिस, रोडोगुन

क्लियोपेट्रा — यूनिस, क्रूर, हृदयहीन, प्यारी यूनिस, तू मुझे कैसे छोड़ सकी ?

यूनिस — क्षमा करो, प्रिय देवी !

एण्टिओकस — भूल मेरी थी, मां।

क्लियोपेट्रा — मेरे बेटे, यदि उस समय तूने इस तरह 'मां' कहा होता, तो यह सब कभी न होता।

एण्टिओकस — मैं तुम्हारे प्रति कठोर रहा; और मेरी मां, तुम मेरे साथ, अपने बेटेके साथ कठोर थीं। हम दोनोंने भूल की और हो सकता है कि देवता अब भी हमें अपने अपराधोंके लिये सजा दें।

क्लियोपेट्रा — हाय, ऐसा मत कहो, मेरे बच्चे। हमें सुखी होना चाहिये। मुझे जरा-सा सुख मिलेगा।

रोडोगुन — ओ, प्रिय एण्टिओकस, उन्हें चुंबनोंसे उत्तर दो।

क्लियोपेट्रा — तुम भी मेरी वकालत करती हो, प्यारी पार्थियावासिनी ?

यूनिस — भाई एण्टिओकस।

एण्टिओकस — मेरा हृदय सुधर गया है और मैं प्रेम करता हूँ, मां। लेकिन इस समय भी भूठ न बोलूँगा और यह न कह सकूँगा कि तुम्हें उस बच्चेकी तरह प्रेम करता हूँ जिसने बचपनसे ही तुम्हारा आलिंगन पाया हो। फिर भी, मां, मुझे कुछ समय दो, और अगर देवोंने भी समय दिया तो कौन जाने ? शायद हम सुखी हो सकें।

(फिलोक्टीटस आता है)

फिलोक्टीटस — क्षमा करना, देवि, किन्तु मेरी आत्मा भयंकर चिन्ताओंसे व्याकुल हैं। अपने बेटे एण्टिओकसके साथ बैठकर आप अच्छा नहीं कर रहीं। टिमोक-लीस यह सुनता है तो उसमें ईर्ष्या और क्रोध भड़क उठते हैं।

क्लियोपेट्रा — यह सम्भव है ?

फिलोक्टीटस — उससे डरिये ! विश्वास कीजिये !

क्लियोपेट्रा — (कांपते हुए) मैं देवोंको एक अवसर नहीं देना चाहती क्या मैं यूनिस और तुम्हारी पत्नीको अपने साथ कुछ आश्वासन पानेके लिये ले जा सकती हूँ ?

एण्टिओकस — यूनिस, उनके साथ जाओ। मुझे एक घंटेके लिये छोड़ दो, मेरी रोडोगुन। (एण्टिओकसके सिवा सब जाते हैं) कब, देवता कब प्रहार करेंगे ? मैं चारों ओर सर्वनाशके पदचाप अनुभव कर रहा हूँ। मृत्यु, अपने फाटक खोल दे; मैं तेरे प्रहारके नीचे अधिक न रुका रहूँगा।

(फायलस सैनिकोंके साथ प्रवेश करता है)

फायलस — पकड़ो ! यही है राजकुमार एण्टिओकस।

एण्टिओकस — इतनी जल्दी ! मैंने अपनी प्रियासे विदातक नहीं ली। खैर, सीरियावासी, सिर्फ परवाना ही लाये हो या मृत्यु-दंड गिरफ्तारीके साथ-साथ कदम मिला रहा है ?

फायलस — षड्यन्त्रकारी, तुम्हारे षड्यन्त्रका पता लग गया।

एण्टिओकस — षड्यन्त्र ! गर्वीले चालाक मूर्ख, मैं तुम्हें उत्तर न दूंगा। तुच्छ बहानोंका महत्व ही क्या है ? संतरियो, मुझे ले चलो।

(वह संतरियोके साथ जाता है)

फायलस — क्या तुम्हें पतनके समय भी राजा ही बने रहना चाहिये ?

दृश्य ३

एण्टिओकका राजमहल

यूनिस, रोडोगुन

रोडोगुन — क्या वे मुझे उनके पास जाने और उनसे मिलने भी न देंगे ?

यूनिस — हम उनतक अपनी राह बना लेंगे और उनके लिये मिस्रतकका रास्ता बनायेंगे, मिस्रका।

रोडोगुन — अब एक ही सुख बच गया है, उनके साथ रहें फिर चाहे हम जियें या मरें।

यूनिस — तुम बहुत ज्यादा नम्र हो। क्लिओन यहां हमारी मदद कर रही है, उसकी

विचित्र दयाका मूल चाहे कुछ भी हो। फायलस, जब हम वापस लौटेंगे तो देखेंगे कि मनुष्यका बुद्धिकौशल तुम्हारे लिये उपयुक्त यातनाएं खोज सकेगा या नहीं।

रोडोगुन — तुम जलती आंखें लिये इधर-उधर क्यों घूमती फिर रही हो? शान्त होकर बैठो और मेरे हाथमें अपना हाथ रख दो।

यूनिस — मेरी पार्थियाकी मधुरिमा! हाय, देव बड़े निर्दय हैं जो तेरे जैसे हृदयको यंत्रणा देते हैं।

रोडोगुन — मेरी मां कहां है?

यूनिस — अपने कक्षमें सूखी आंखें लिये, चुपचाप लेटी भाग्यपर ऐसे आंखें गड़ाये हुए है कि मेरी तो देखनेकी हिम्मत नहीं होती। बस, कलतक। कल तड़के ही हम उसे बाहर निकलवा लेंगे। क्लिओन पहरेदारोंको घूस दे रही है; थोआसके पास घोड़े और विस्तृत पार्श्ववाली नौका मिस्रके लिये तैयार है, मिस्रके लिये।

रोडोगुन — हां, चलो हम सीरिया और क्रूर एण्टिओकको छोड़ चलें।

यूनिस — कुछ समयके लिये। मैं अपने राजाको आज रात ही निकलवा लेती किन्तु सवेरेतक दुष्ट थीरास पहरेपर है। दीवारें कितनी देरतक इतने महान् कैदीको अपने घेरेमें बांध सकेंगी? मुकदमा! फायलस, जब वह मिस्रसे सशस्त्र लौटे तब उसपर मुकदमा चला लेना। हमें सवेरेतक प्रतीक्षा करनी होगी।

रोडोगुन — तो मैं कल सवेरे उन्हें फिरसे देख सकूँगी।

दृश्य ४

महलका तहखाना

एण्टिओकस अकेला

एण्टिओकस — धरती हमें अपनी मृण्मय सीमाओंसे बंधा जीवन देती है, मृत्यु क्या है? उससे भी अधिक विस्तृत जीवन! शायद वह अंधकार है! उसके पीछे प्रकाश जरूर होगा।

(उसके बोलते-बोलते फायलसका प्रवेश)

कौन है?

फायलस — फायलस, और तुम्हारा विजेता।

एण्टिओकस — तब तो किसी विचित्र युद्धका विजेता !

फायलस — मैं तुम्हारे अन्तसे पहले तुम्हारा भूत गौरव देखने आया हूँ, क्योंकि मानवीय मूल्योंसे तुम महान् थे। तुम्हारे जीनेके लिये एक घंटा बाकी है।

एण्टिओकस — कम हो तो और अच्छा !

फायलस — एक घंटा ! क्या विचित्र है। सुन्दर सुदृढ़ एण्टिओकस एक छोटेसे घंटेमें एक जरासे झटकेसे लाशमात्र रह जायगा जिसपर मक्खियां भिनाएंगी।

एण्टिओकस — क्या तुम यह मानते हो, फायलस ?

फायलस — मैं यह जानता हूँ, और चूँकि तुम महान् थे इसलिये तुम्हें परास्त करनेवालेके रूपमें अपनी महानताका अनुभव करता हूँ। मैं तुम्हारे सामर्थ्यकी जांच करना चाहता हूँ और तुम इस समय जिन विचारोंसे भरे हो उन्हें जानना चाहता हूँ क्योंकि किसी दिन यह क्षण मेरे लिये भी आयेगा। हम जो कुछ हैं, जो कुछ करते हैं और हमपर जो गुजरती है ! खैर, जाने दो। क्या तुम अपनी पत्नीको चूमनेकी इच्छा नहीं करते ? वह तो आ जायगी भले उसे तुम्हारे भाईका बिस्तर छोड़कर आना पड़े।

एण्टिओकस — अपनेको महान् समझनेवाले फायलस, कैसा तुच्छ झूठ ?

फायलस — तब तुम्हें नहीं मालूम कि तुम रोडोगुनके कारण मर रहे हो, ताकि तुम्हारे भाईके भूखे हाथ रोडोगुनके उस प्यारे गरम शरीरका आलिंगन कर कर सके जिसे तुम चूमते न अघाते थे ?

एण्टिओकस — तो तुमने यह जाल रचा है ? वाह, तुम भी एक विरल चीज हो यूनानी सीरियन !

फायलस — मेरी मिट्टीने मुझे जैसा बनाया है वैसा ही हूँ। क्या तुम्हें यह जानकर कष्ट नहीं होता कि जब तुम यहां मर रहे हो, तुम्हारी राजोचित लाशके ठंडे होनेसे पहले उधर वे दोनों जोरोंसे काममें लग गये हैं।

एण्टिओकस — तुम भी क्या अन्धे उल्लू हो जो सूर्यको देखकर सोचते हो कि यह अन्धेरा है। भाग जाओ ! मैं तुमसे बाज आया। आखिर तुम एकदम छिछले हो, क्या बाहर सवेरा हो रहा है ?

फायलस — सवेरा। एक ऐसे व्यक्तिके लिये जो फिर कभी न सो पायेगा तुम बहुत जल्दी जाग गये हो।

एण्टिओकस — हां, मैंने नींदसे नाता तोड़ लिया है; अब अमर जागरणकी बेला है।

फायलस — ओ, मूर्खोंका वह स्वप्न ! मैंने जितने लोग देखे हैं उन सबसे तुम न्यारे

हो और मेरी दृष्टिमें एक प्रतापी मूढ़ हो। फिर भी मैं पराजयमें तुम्हें विचलित न कर सका। तब क्या मेरी सीमाएं हैं ?

एण्टिओकस — हां, क्या तुमने अपने-आपको बदीका देवता और मनुष्योंकी आत्मा-ओंको अपना गुलाम मान लिया था ? मुझे अकेला छोड़ दो और अपने जल्लादको भेजो। उससे कहो जल्दी करे। मैं प्रतीक्षामें हूँ !

(फायलस जाता है)

मुझे लगता है वह अब भी मटरगश्ती करेगा। इन्तजार करना मुझे हमेशा अखरा है: सो लूँ।

(लेट जाता है, कुछ देरमें)

क्या यही वह दूसरा प्रदेश है ? थेरामिनीस अपने बीस घावोंके साथ मेरे सामने खड़ा मुस्कुरा रहा है और मेन्थो वह वक्ष लिये खड़ी है जिससे उसने मुझे दूध पिलाया था ! ये मेरे पीछे-पीछे कौन बढ़ते आ रहे हैं ? मेरी मां मेरे पीछे आ रही हैं और बहन यूनिस भी उनके चरणचिह्नोंपर चली आ रही है। टिमोक्लीस, तू भी ? थोआस, लेओस्थनीस और फिलोक्टीटस, प्यारे मित्रो, क्या तुम देर-तक रुके रहोगे ? दुनिया खाली होती जा रही है। अरे, सीरियामें जो कुछ महान् था सब लड़खड़ाता हुआ मेरे पीछे-पीछे नरकमें आ रहा है। राजाओं-की भान्ति मेरी परिचर्या हो रही है।

(थीरास प्रवेश करता है)

थीरास — फायलसकी इच्छासे बाधित हूँ वरना जो कर रहा हूँ वह मुझे पसन्द नहीं है।

एण्टिओकस — कौन है ? तुम निमित्त मात्र हो। वार करो। इन्तजार मत कर-वाओ। मैंने हमेशा शानदार तेजी और सम्यक् भावोंको पसन्द किया है।

थीरास — मुझे एकदम वार करना चाहिये या फिर कभी नहीं।

(वार करता है)

एण्टिओकस — मैं परिधि पार कर रहा हूँ।

थीरास — क्या रक्त बहना नहीं थमेगा ?

एण्टिओकस — रक्त ? देवोंके लिये है। यह उनका अर्घ्य है।

थीरास — एक रक्त तर्पण। हे राज आहुति ! मैंने दुष्ट कर्म किया है। धूर्त फायलस मेरी मदद करेगा क्या ? वह हमेशा मक्कार ही रहा है। मैंने कुकर्म किया है।

एण्टिओकस — पार्थियाकी रोडोगुनसे कहना कि मैं मृत्युके नाकेके उस पार उसकी प्रतीक्षामें हूँ।

थीरास — संसार अति निस्तब्ध हो गया। क्या वह शून्यके उस ओर फिरसे न बोलेगा? आह, आवाजें, शोर, शोर! शायद पहरेदार बदल रहे हैं। हे शक्तिशाली सोनेवाले, तेरे परदे खींच दूँ।

(परदे खींचता है, दीप बुझाता है और बाहर चला जाता है। कुछ देर सब निश्चल है, फिर दरवाजा खुलता है और यूनिस और रोड़ोगुनका प्रवेश)

यूनिस — धीमे कदम, वह सो रहा है। परदा गिरा हुआ है।

रोडोगुन — ओ मेरे एण्टिओकस — तुम गँवारु तम्बुओंमें चारों ओर हिनहिनाते घोड़ोंके बीच कड़े बिस्तरपर भले सो लो और उपार्जित निद्राके मदमें तुम्हारे युद्धके लिये अभ्यस्त कान पास ही बजनेवाले नरसिंघोंकी आवाजसे भले न चौंके लेकिन इस जेलके भयंकर मौनमें तुम कैसे सो सकते हो? यह नीरवता मेरे कानोंमें दहशतसे भरी आवाजोंसे भी ज्यादा कोलाहल मचा रही है।

यूनिस — उन्हें जगाती हूँ।

रोडोगुन — जगाओ मत। वे थके हुए हैं और उनके आराममें खलल पड़ेगा।

यूनिस — वह मुर्देकी तरह बिना हिले डुले पड़ा है।

रोडोगुन — यूनिस, मौतका नाम मत लो। हम उसके बहुत नजदीक हैं। उसका नाम न लेना अच्छा है।

यूनिस — उसे जगाना ही पड़ेगा। भाई एण्टिओकस, कैदीके लिये तुम बहुत गहरी नींद सोते हो। उठो।

रोडोगुन — इस कमरेमें कोई भीषण सत्ता है।

यूनिस — मुझे भी कुछ कुछ ऐसा ही लग रहा है। जागो, जागो, एण्टिओकस।

(वह परदा हटाती है और अपना हाथ सहसा खींच लेती है)

हे भगवान्, मेरे हाथमें यह गीला गीला सा क्या लग गया? यह तो खून सा लगता है? (परदेको फाड़ती हुई) एण्टिओकस!

(वह आधी बेहोशीमें दीवारसे टकराती है। निस्तब्धता छाती है, और गलियारोंसे शोर आने लगता है और दरवाजेपर निकानोरकी आवाज सुनायी देती है)

निकानोर — दरवाजोंपर सख्त निगरानी रखो; किसीके छलसे धोखेमें न आना।

रोडोगुन — एण्टिओकस! एण्टिओकस! एण्टिओकस!

यूनिस — उसे मत पुकारो; वह जाग उठेगा और दैव नाराज हो जायगा। हे मेरी रोडोगुन, चल हम भी सो जायं।

रोडोगुन — एण्टिओकस! एण्टिओकस!

(निकानोरका सैनिकों और रोशनीके साथ सशस्त्र प्रवेश)

निकानोर — मैं समयपर आया न? तुम, तुम? तुम यहां कैसे आयीं? यह भयंकर चेहरेवाली स्त्री कौन है? क्या यह रोडोगुन हो सकती है? यूनिस, बोल। तेरे हाथों और कपड़ोंपर यह कैसा खून है? तू बोलती हीं नहीं! अरे, बोल न!

यूनिस — मैं जा रही हूँ। अपने क़मरेमें सोने जा रही हूँ।

निकानोर — संतरियों, उसे गिरफ्तार कर लो।

(वह बिस्तरतक जाकर पीछे हटता है)

घरभरको जगा दो। खतरेका घंटा बजाओ। हाय, निकानोरके महल, तू अब भी अपने पत्थरकी नींवपर अविकल खड़ा रह सकता है! वीर योद्धा कुमार एण्टिओकसका विश्वासघातके साथ इस बिस्तरपर खून कर दिया गया है।

(बाहर चीख पुकार और खलबली)

बोल, कमबख्त लड़की। इस पवित्र राज-मंदिरको किस दुष्टके छिपे हाथोंने मृत्युसे दूषित किया है? तू यहां कैसे आयी और तेरे ऊपर यह रक्त कैसा है?

(केलिक्रेटीस, मेलिटस, क्लिओन उतावलीसे आते हैं, बादमें फायलस और दूसरे लोग)

क्लिओन — (निकानोरसे) मेरी चेतावनीके बावजूद तुम उसे न बचा पाये? तुमने मुझपर व्यर्थ ही अविश्वास किया!

फायलस — (प्रवेश करते हुए) तो हो गया। फिर भी थीरास नहीं आया! क्या मैं असफल हूँ! हे मेरी दयालु भाग्य विधात्री, आनेवाले तूफानका सामना करनेमें मेरी मदद कर।

निकानोर — तू आ गया! यह तेरा काम है, मनहूस सलाहकार कहींका!

फायलस — ऐसा हो भी, तो भी सारे देशमें किसकी हिम्मत है कि मुझे दोषी ठहराय।

निकानोर — तू बदमाश है। तुझे इसके लिये मरना पड़ेगा।

फायलस — एक दिन तो मरूंगा ही, इस कारणसे या किसी और कारणसे। लो महाराज आ गये।

निकानोर — न मेरे लिये महाराज हैं और न सीरियाके लिये।

(टिमोक्लीसका प्रवेश, पीछे क्लियोपेट्रा)

मेलिटस — महारानी एकदम हिमशीत हैं, रंग उड़ गया है और कांपती आ रही हैं।

क्लियोपेट्रा — (अस्वाभाविक शान्तिसे बोलती है) ये भयानक चीखें महलमें खून

और एण्टिओकस दोहराती हुई क्यों गूँज रही हैं ? निकानोर, मेरा बेटा जीवित है ?

निकानोर —— ओ स्त्री, देख ले उस शरीरको जिसे तूने एण्टिओकसके लिये बनाया था। पहले वह तेरे प्रेमसे निर्वासित था, अब जीवनसे भी निर्वासित हो गया। यह किनकी अस्वाभाविक कूटनीतिसे हुआ है यह वही बताएं जिन्होंने यह किया है।

क्लियोपेट्रा —— यह सच नहीं है ! यह सच नहीं है ! ऐसी भीषण चीज नहीं हो सकती। हाय, इसी लिये, इसीके लिये तुमने मेरे बेटेको मुझे लौटाया था !

टिमोक्लीस —— हाय देवो ! फायलस, मैंने न सोचा था कि वह ऐसा लगेगा।

मेलिटस —— इस शवको ढक दो। इससे हमारे अच्छे महाराजको तकलीफ होती है।

टिमोक्लीस —— (अपने आपको सम्भालते हुए) प्यारी मां, यह बड़ा करुणाजनक दृश्य है। काश, वह जीवित रहता और निर्विवाद रूपसे सीरियाका राज-मुकुट पहनता।

क्लियोपेट्रा —— टिमोक्लीस ? मेरे रक्तमें विभीषिका जिस चीजको मानती है मैं उसपर विश्वास न करूंगी। इस कृत्यके लिये सब लोगोंकी आंखें तुम्हें दोषी ठहराती हैं। इससे इनकार करो।

टिमोक्लीस —— मां !

क्लियोपेट्रा —— इनकार कर न !

टिमोक्लीस —— हाय मां !

क्लियोपेट्रा —— कर इनकार !

टिमोक्लीस —— हे मां, किस चीजसे इनकार करूं ? यह होना ही था। घोर देवोंको और वज्र कठोर आवश्यकताको दोष दो।

क्लियोपेट्रा —— मुझे मां न कहो, मेरे कोई बच्चे नहीं। हा देव, अपने महान् दुखी पतिके बाद भी जीनेकी हिम्मत करनेके लिये मुझे अच्छी सजा मिल रही है !

(वह बाहर दौड़ जाती है)

निकानोर —— हे महान् सेल्यूकस, क्या यही तुम्हारा अन्त है ? तुम्हारे परिवारपर कौनसी प्रचंड देवीका कोप बरसता है ? महारानी घोर निराशा भरी आंखें लिये चली गयीं। अब किसकी बारी है ?

(उतावलीसे फिलोक्टीटस, थोआस, लेओस्थनीस और एण्टिओकसके दल-के अन्य लोगोंका प्रवेश)

फिलोक्टीटस —— तो यह सच है, एकदम सच ! ओ महामहिम एण्टिओकस तुम्हारी

असीम राजकीय कल्पनाएं एक छोटीसी रक्त धारा बनकर वह गयीं ! और फिर भी लगता है कि तुम्हारी आंखें राजोचित दर्पसे मृत्युके विराट् प्रदेशोंको ताक रही हैं मानों उन्हें वहां अधिक विजय और अधिक शक्तिशाली राज्य दिखते हों। जब हम लड़के थे और दोपहर अपने साथ नींदको लेकर आती थी तब कई बार तुम इसी तरह अपना सिर मेरी गोदमें रखते थे। ओ मेरे नन्हें मित्र एण्टिओकस, हम फिरसे सौ दरवाजोंवाली नगरी थीबिसमें हैं और सारा जीवन हमारे सामने पडा है।

थोआस — हाय असह्य है ! टिमोक्लीस तुम, जिसे मनुष्योंने राजाका पद दिया है, तुम मेरे राजा नहीं हो, इस सगोत्र हत्याकी सफाई दो। महान् सेल्यूकसके सिंहासनपर कोई हत्यारा उतनी ही देर बैठ सकता है जितनी देर मुझे म्यान-से तलवार निकालनेमें लगे। मैं यह प्रश्न पूछनेके लिये ही जीवित हूं।

लेओस्थनीस — अरे मुकुटधारी भ्रातृहन्ता ! न तो राजाका पद और न तेरे अंग-रक्षक ही तेरे जीवनकी रक्षा करेंगे। तेरे कवचधारियोंकी पंक्तियां भी तुझे द्रुतगामी प्रतिशोधसे न बचा सकेंगी।

फिलोक्टीटस — उसकी आंखें ऊपर उठी हैं और लगता है मेरी ओर मुस्कुरा रही हैं।

निकानोर — थोआस, तुम्हारा क्रोध सीमासे बाहर जा रहा है। लेओस्थनीस, राजा-ओंके रक्तका मान रखो।

थोआस — देख लो इस पलंगपर बहे राजाओंके रक्तका सगोंने कैसा सम्मान किया है।

टिमोक्लीस — राजाओंके हृदय उनके अपने नहीं होते, न उनके कार्य ही। यह मृत्यु-दण्ड था, हत्या नहीं। उचित समय और स्थानपर तुम्हें प्रमाण मिल जायेंगे, फायलसको सब मालूम है। संतुष्ट रहो। राजकीय शवको उठाओ। अब सारे द्वेष भूलकर मैं उसके किरीट, कवच और तलवारकी रक्षा करते हुए उसकी भस्मको राजोचित ढंगसे गाड़ूंगा। जिन-जिन चीजोंसे वह अत्यधिक प्रेम रखता था वे सब उसके साथ-साथ नीरव लोकमें जाएंगी।

रोडोगुन — मैं आ रही हूं।

टिमोक्लीस — रोडोगुनकी आवाज ! दुखकातर परछाई-सा वस्त्र उस स्त्रीके रूप-को छिपाए था ! वह यहां, मेरे भाईके पास !

निकानोर — हम भूल गये थे कि यह दृश्य कितना करुण था। हे लोगो, जो मृत राजा-से प्रेम करते थे, कुछ देर और धीरज धरो। सबका कड़ा न्याय होगा।

टिमोक्लीस — ओ रोडोगुन, मृतक तुमसे शोक चाहता होगा क्योंकि वह भी तुमसे

प्रेम करता था, लेकिन इस रक्त रंजित कमरेमें अपना ऋण मत चुकाओ, इस भयंकर कोठरीमें नहीं। अपने शान्त कक्षमें उसकी स्मृतिको आंसुओंसे आर्द्र करती रहना और मैं भी अपने आंसुओंसे तुम्हारी मदद करूंगा। कभी मुझसे भी वह प्रेम करता था।

लेओस्थनीस — क्या हमारी तलवारें अब भी सोती रहेंगी ? जिस भाईकी उसने हत्या की है उस भाईकी पत्नीसे वह उसके शवके सामने ही प्रणय-याचना कर रहा है।

थोआस — फिर भी रुको, लेओस्थनीस। दैवने उससे काफी सहा है। आखिर देवता अपने गुप्त वज्रोंको हमारे ऊपर तौल रहे हैं।

निकानोर — वह लड़खड़ा रही है और चल नहीं पा रही। उसकी मदद करो वरना गिर पड़ेगी।

फिलोक्टीटस — (सिर उठाते हुए) हे रोडोगुन, मेरे मृतकसे क्या करोगी ?

फायलस — क्या यह होने दिया जायगा ?

टिमोक्लीस — रोडोगुनसे दुखद विदा पानेके लिये मैं इस शवसे ईर्ष्या नहीं करता। हे रोडोगुन, प्रतिक्रियाहीन जड़ मृतकसे आलिंगन कर ले: लेकिन याद रख धरतीपर जीवन और प्रेम अब भी बाकी है।

थोआस — टिमोक्लीस, बादमें, मृत्युको एक क्षण दे दो।

(कुछ देर नीरवता रहती है, झूलती हुई रोडोगुन मृत एण्टिओकसपर झुक जाती है)

टिमोक्लीस — ओ मेरी रोडोगुन, अब मृत पुरुषको छोड़ दे, उसका ऋण चुक गया, जीवन और प्रेमकी ओर लौट आ।

रोडोगुन — (हाथ फैलाते हुए) मेरे राजा ! मेरे महाराज ! मुझे न छोड़ो, मत छोड़ो मुझे ! मैं तुम्हारे पीछे ही हूँ।

(एण्टिओकसके चरणोंमें गिरकर मर जाती है)

यूनिस — हाय मुझे भी ले चल !

(वह रोडोगुनकी ओर दौड़ती है और मृत शरीरोंपर गिर पड़ती है)

निकानोर — राजकुमारीको उठाओ, बेहोश हो गयी है।

थोआस — उसका हृदय रुक गया: वह मर चुकी।

टिमोक्लीस — उठ जा, मेरी रोडोगुन।

थोआस — वह मर चुकी है टिमोक्लीस, अब तुमसे सुरक्षित है। तुम (एण्टिओकसकी ओर देखकर) अंधेरेमें अकेले नहीं गये, मेरे महाराज।

क्लिओन — राजाको देखो !

टिमोक्लीस — (कष्टसे बोलता है) वह जिन्दा है ?

मेलिटस — नहीं, वह मर गयी, महाराज टिमोक्लीस।

क्लिओन — भाई, राजा !

(टिमोक्लीस गलेसे कपड़े फाड़ता है। वह गिरने लगता है, फायलस, मेलिटस और दूसरे उसे घेरके सहारा देते हैं)

निकानोर — यह ज्यादा-से-ज्यादा एक दौरा है जो क्रोध और निराशाके कारण आ गया है।

फायलस — क्या मृत्यु नहीं हुई ? तब तो मैं जिन्दा रहूँगा।

निकानोर — मौत, षड्यन्त्रकारी ! क्या तू स्वयं मौत नहीं है जिसने अपनी दुष्ट प्रेरणाओं और जहरीली फुसफुसाहटसे टिमोक्लीसके सौम्य मनचले भावोंको ऐसी भयानक स्थितितक भड़काया ? पकड़ो इसे, यही इस खूनकी कीमत चुकायेगा।

फायलस — तुम बड़ी उतावलीसे यहां पड़े शरीरोंपर अपना सिंहासन जमा रहे हो। निकानोर, तुम्हारा राजा अभी जिन्दा है।

निकानोर — तुम्हें या किसी हत्यारेको मृत्युसे बचानेके लिये नहीं। घसीट ले जाओ उसे यहांसे।

क्लिओन — महाराज होशमें आ रहे हैं। भइया, अपने-आपको बचाओ।

लेओस्थनीस — दस महाराजा भी उसे बचा न पायेंगे।

निकानोर — इस धूर्त शैतानको घसीट ले जाओ।

टिमोक्लीस — मैं जीवित हूँ, मुझे याद है !

क्लिओन — सो रहे हो क्या, फायलस ?

फायलस — मेरे महाराज, ये लोग मेरी हत्या करनेके लिये मुझे यहांसे घसीटे लिये जा रहे हैं।

टिमोक्लीस — (पहले कुछ अनिश्चित भावसे) कौन है तू ? अरे तू, घृणित कुटिल पिशाच, तेरे ही कारण रोडोगुन मेरे हाथसे निकल गयी। उसे काट डालो ! और उस मिठबोली धूर्त, गुलाबी रंगसे रंगी वेश्याको, पुरुषोंकी दृष्टिसे दूर कहीं देश-निकाला दे दो जहां उसे भुलाया जा सके। हाय भाई, भाई, मैंने तुम्हें अन्धेरे सायोंमें भेज दिया, और अब, खुद मेरा रास्ता बन्द है।

फायलस — मैंने जो कुछ किया इस बेचारे राजाके लिये, इस कृतघ्न मनुष्यके लिये किया। लेकिन कहने-सुननेका कोई फायदा नहीं। मैं तैयार हूँ।

टिमोक्लीस — (आधा उठता हुआ, अति कोपसे) उसे यातनाएं दे देकर मार डालो ! उसे अपनी मौत वैसी ही लगे जैसी उसने मेरी जिन्दगी कर दी है।

निकानोर — उसे ले जाओ और इस पाप-पंजरको बड़ी निर्ममतासे सजा दो। भगवान् करे देवता अपने न्याय-संगत कोपमें इस सजासे संतुष्ट हो जायें।

फायलस — फिर भी टिमोक्लीस, मैं तुमसे प्रेम करता था।

(पहरेदारोंसे घिरा बाहर ले जाया जाता है)

निकानोर — बेटी, यूनिस, उठ।

यूनिस — मैं अभीतक न जानती थी कि प्राण त्यागना इतना कठिन है। उसका जाना कितना सरल था !

निकानोर — आह लड़की, इस करुणान्तक नाटकमें तेरा भी कुछ हाथ था ! आगे समझदार और नम्र रहना। इसे इसके कक्षमें ले जाओ।

यूनिस — मेरे साथ जो मरजी कीजिये। मेरा हृदय अपने मृतकोंके साथ यात्रापर चला गया है। ओ, पिताजी, कुछ दिन और मेरे साथ निभा लीजिये। इस घटनाके बाद मैं शायद आपको बहुत दिनतक नाराज न करती रहूँ।

(वह जाती है, पीछे पीछे मेलिटस)

निकानोर — केलिक्रेटिस, उसके पीछे जाओ और देखो कि इस निराश अवस्थामें कोई हथियार या प्राणघातक पेय उसके पास न आने पाये।

(केलिक्रेटिस उनके पीछे जाता है)

थोआस — यह घटना हमें उनसे दूर नहीं रख सकती जिनसे हमें प्रेम था।

निकानोर — सीरियावासियो, इस झंझापीड़ित और वज्रपातसे छिन्न-भिन्न राजवंशका जो बचा खुचा अंश है उसे हम फिरसे गढ़ लें। हम अपनी सारी शक्ति संकटमें पड़े राज्यको बचानेमें लगा दें क्योंकि जब इस कुकर्मका बात फैल जायगी तो पार्थियाका सिंह खूनके लिये पागल होकर कूद पड़ेगा। टालेमीका उस लड़केके लिये भयंकर शोक जिसे वह अपनी आंखकी पुतली समझता था, मिस्रसे अन्धकार बनकर हमारी ओर बढ़ेगा। सीरिया चारों ओरसे घिरा हुआ और हम टूटे हुए !

टिमोक्लीस — मेरे अन्दर कुछ टूट गया है जिसे चिकित्सक नहीं जोड़ सकते। राजकुमार निकानोर, आप सीरियाके राजवंशसे उत्पन्न हैं और आपके परिवारमें सेल्यूकस बेदाग अपने मूलसे उतर सकते हैं।

भाई, भइया, जब हम सवेरे-शाम आरामसे घूमते-घामते मिस्रके बगीचोंमें खेलते थे या महान् टालेमीका फल-वाटिकामें एक-दूसरेके गलेमें हाथ डाले

एक हृदय होकर चला करते थे तब हमने स्वप्नमें भी न सोचा था कि इस सबका अन्त ऐसा होगा। लेकिन अब हम अनन्त कालके लिये अलग हो गये हैं। मुझे हमेशा मित्रहीन रहना होगा और अन्धेरेमें अकेला भटकना होगा लेकिन तुम और वह आरामसे शान्त सुखी पारिजातके गहरे कुंजमें गाढ़ आलिंगनमें लेटे रहोगे और स्वर्गकी हवाओंकी फुसफुसाहट सुनते रहोगे जब कि मैं एकाकी घूमता फिरूंगा।

फिलोक्टीटस —– एण्टिओकस, हम भी तुम्हारे बिना श्वासके भूतसे पीड़ित लाशें हैं। तुम शान्त वातावरणमें संगीके साथ विचर रहे हो। हम कुछ समय जीनेके लिये अभिशप्त होकर यहीं बचे हैं और देवोंने हमारे भाग्यमें जो लिखा है उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।



एरिक

14/19



नाटक के पात्र

(नाटक के रूपक कथा)

एरिक —— नार्वेका विजेता।

स्वेन —— नार्वेका राजकुमार।

हार्डिकनुट —— स्वेनका अनुयायी सैनिक।

रेग्नार —— एक सामन्त।

गुन्तेर —— एक सामन्त, एरिकका दूत।

हाराल्ड —— एक कप्तान।

आसलोग —— नार्वेकी राजकुमारी।

एर्ता —— स्वेनकी पत्नी, आसलोगकी भाभी।

स्थान : अपने ही शहर यारामें एरिकका महल, पहाड़ी प्रदेश, स्वेनका किला।

एरिकमें आये हुए नामोंका परिचय

थोर — युद्ध और झंझावातका देव। बड़े डील डौलवाला, परन्तु थोड़ा असभ्य, जंगली और क्रूर। हथियार — अचूक हथौड़ा।

ओडिन — वीरता, विजय, ज्ञान और कविताका देव, और साथ ही साथ मनुष्यके भावीका निर्माता।

फ्रेया — प्रेम और दाम्पत्य जीवनकी देवी, ओडिंनकी पत्नी।

नेमेसिस — अविकल्प नियति जिसे देवीका रूप दिया गया है।

ओलाफ — स्वेनके पिता, नार्वेका राजा।

यारिस्लाफ — एरिकके पिता ⎤ ओलाफके दुश्मन।
हाकुन — एरिकके मामा ⎦

वाइकिंग — नार्वेके नाविक, जो युद्धमें बड़े कुशल थे।

त्रोण्डियेम — नार्वेका एक स्थान।

गौल — फ्रांसका पुराना नाम।

सीथिया — एक प्रदेश।

वोल्गा — रूसकी एक नदी।

गोटबोर्ग — स्केण्डिनेवियामें एक स्थान।

एरिन — आयरलैण्डका पुराना नाम।

सिगार्ड — एक सामन्त।

अंक १

दृश्य १

एरिकका राजमहल

एरिक, आसलोग, एर्ता, हाराल्ड और गुंतेर

एरिक — हजारों वाइकिंगोंका स्वामी, नार्वेका एरिक, वह प्रथम राजा जिसकी आज्ञापालनके लिये ये शीत समुद्री धाराएं, ये फूटकी गहरी खाइयां, यह कटा-फटा और नोकीली दरारोंवाला तट नत-मस्तक है। हां, यह राज्य तलवारकी स्फूर्तिपर ही टिका है। मेरा यह फौलादी शिकारी कुत्ता जीभ निकाले, बेतहाशा हांपते-कांपते शिकारके पीछे पड़ा है।

लेकिन अगर तलवार टूट जाय? यदि मृत्यु इससे भी तेज निकले? इतनी मेहनतसे खड़ा किया गया यह राज्य उड़ते बादलोंकी तरह हवा होते हुए फिरसे पहलेकी तरह फूटसे कट-छंटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। मैंने जोड़नेका उपाय ढूँढ़ निकाला है — योद्धाकी तलवार, ऐक्य-निर्मायक; पर जोड़नेका रास्ता कौनसा है? कहां है?

ओ थोर और ओडिन! उत्तरीय प्रदेशोंके स्वामी, मेरे पास ज्ञान और बल तो हैं पर इसके पीछेकी एक शक्ति मेरे पास नहीं है। मैं उसे ढूँढ़ निकालूँगा। संसारको चलानेवाली, एरिकके लिये अव्यक्त शक्ति, तुम चाहे जो हो, मेरी सहायता करो। मैं कोई चिह्न मांगता हूँ।

आसलोग — (बाहर गाती हुई)

प्यार देवताओंका बंधन
दिलको दिलसे जोड़े हैं।

लौह शृंखलाएं भी टूट टूट जाती हैं।
मालिकके ही संग दफन होती तलवारें॥
प्यार दिव्य पर प्यार अमर है॥

प्यार देवताओंका बन्धन
दिलको दिलसे जोड़े हैं।

एरिक — (आसनसे उठते हुए) क्या यह तुम्हारा उत्तर है? फ्रेया, स्वर्गकी जननी, हमने तुझे भुला दिया था। लो, हृदयासन उपस्थित है। क्योंकि एकता हृदयका तत्त्व है, एक जंजीरका नहीं जो बांधती है, लोहा या सोना भी नहीं और न ही कोई असहाय विचार जिसे बुद्धि जानती हो। मैं उसे कैसे पकड़ूँगा? कहां है वह? मुझे एक जाल दे दो जिससे मैं इस भागते हुए प्रेमको पकड़ सकूँ। मेरे लौह-मानसके लिये यह अति अवास्तविक है।

आसलोग — (बाहर गाती हुई)

प्यार पुकारे प्यार,
तभी है प्यार जनमता।

करें नहीं लाचार इसे उपहार स्वर्णके,
मोह रूपका भी है इसके अवहेलनासे,
ना बच सकता।।

प्यार पुकारे प्यार,
तभी है प्यार जनमता।।

एरिक — (पुकारता हुआ) बाहर कौन गा रहा है? (प्रवेश करते हुए हाराल्डसे) हाराल्ड, बाहर कौन गाता है?

हाराल्ड — गोटबोर्गसे आयी हुई दो नर्तकियां। क्या वे अन्दर आ सकती हैं?

एरिक — उन्हें ले आओ। (हाराल्ड जाता है) देवता चंचल ओठों और आकस्मिक विचारोंके द्वारा सर्वोत्तम ढंगसे बोल जाते हैं और बोलनेवाला यह भी नहीं जान पाता कि वह उनका यन्त्र है, वह यही सोचता है कि उसका अपना मन शब्दों को प्रेरणा दे रहा है।

(हाराल्ड आसलोग और एर्ताके साथ लौटता है)

हाराल्ड — महाराज एरिक, यही हैं वे जिन्होंने गाया था।

एरिक — देवियो! तुम कौन हो? किस देवने तुम्हें इधर भेजा है?

आसलोग — उसी देवने जो सब मनुष्योंपर शासन करता है — आवश्यकताका

देव।

एरिक — तुम्हींने गाया था क्या?

आसलोग — कम-से-कम मेरे होठोंका उपयोग तो हुआ ही था।

एरिक — तुम ऐसा कहती हो। क्या तुम जानती हो किसने उपयोग किया था?

आसलोग — नियतिने। क्योंकि हमारे रंगमंचपर वही प्रेरक है। दृष्ट और पूर्वादृष्ट, सभी चीजें भाग्यके चलाये चलती हैं, स्वतन्त्रतासे नहीं। एरिककी तलवार और आसलोगका गीत, संगीत और गर्जन, एक भव्य वीणाकी छोटी तंत्रियां हैं। नियति अपने सामंजस्यकी, आवश्यकताके अनुसार बनाती है, तोड़ती है, सिंहासनपर बिठाती है या मार गिराती है।

एरिक — मेरा ख्याल है कि आत्मा ही इन सबका स्वामी है। (एर्ताकी ओर मुड़कर) और तुम कौन हो?

एर्ता — क्रुद्ध स्वीडन-वासियोंके भयानक कोपका शिकार होकर नार्वेवाले, गोटबोर्गसे निष्कासित किये गये। अब हम नार्वे लौट रहे हैं।

एरिक — तुम लोग वहां गये ही क्यों थे?

एर्ता — सौम्य जातियोंको लूटकर ही समृद्ध बननेवाले वीरान देशसे, जो बहुत अधिक उजड्ड है, जो इतना नीरस है कि गीतकी माधुरी या नृत्यकी लयसे प्रेम नहीं कर सकता, ऐसे देशसे हम जरूरतके मारे एक संपूर्ण और सुसंस्कृत प्रजाके पास जा पहुँचे जिनके उदार और कुशल हृदय देवोंकी देन है। वे लोहेके साथ लोहा हैं किन्तु फूलके साथ फूल।

एरिक — तो अब वे स्त्रियोंके साथ युद्ध क्यों ठान रहे हैं?

आसलोग — आपके आक्रमणोंसे कुपित होकर।

एरिक — मैं उन्हें उससे अधिक उदात्त प्रकारका बदला लेनेका अवसर दूंगा, लेकिन होगा अधिक कठिन। (प्रवेश करते हुए गुन्तेरसे) गुन्तेर, तुम युद्धक्षेत्रसे आ रहे हो? क्या समाचार है?

गुन्तेर — त्रोंडियेमका सामन्त स्वेन, अपना निष्कासित सिर फिरसे उठा रहा है। निराशासे पागल देहातियों और बिगड़े अमीरोंका साथ लेकर वह स्वेनकी ओर बढ़ रहा है।

एरिक — स्वीडनसे और अपनी मांदोंसे आकर सिगार्डकी सेना उस उजड्ड विद्रोही सामन्तको काट डाले। वैमनस्यका नेता, निष्ठुर, दारुण और भयंकर यह भूतकालका अन्धभक्त और उसकी प्रतिमूर्ति! अब बस यही सामना कर रहा है। ऐसे लोग रहकर धरतीको कष्ट दें इससे अच्छा है कि वे भगवान्‌के

पास जाय। वह पकड़ा जाय तो उसे जीने न देना।

आसलोग — जीने न देना ?

एर्ता — तू चुप रह।

आसलोग — मेरे हृदयका दोष है जो उसे असमयमें याद हो आयी कि एक बार ओलाफ तोरलाड़कसन नार्वेपर राज्य करता था, और स्वेन उसीका उत्तराधिकारी है।

एरिक — तुम अपने सुनहरे लाभ और गोटबोर्गको भूलकर मेरे साथ रहोगी ? मैं तुम्हारी आपत्तिका कारण था, अब मुझे ही अपनी समृद्धिका स्रोत भी बना लो।

एर्ता — राजोचित उदारता बहुत-सी चीजोंकी क्षतिपूर्ति कर देगी।

आसलोग — (धीमी आवाजमें स्वगत) अधिक उदात्त प्रायश्चित और क्षतिपूर्तिकी आवश्यकता है।

एरिक — वह तुम्हारा है। हाराल्ड, मेरे महलमें इनके लिये स्थान बना दो। जाओ, गुन्तेर, हम जल्दी ही बातचीत करेंगे। अभी आराम करो। (एरिकके सिवा सब जाते हैं) प्रेम! मृगनयनी, हंस जैसी श्वेत ग्रीवापर गौरवसहित सिर ऊंचा किये हुए अगर यही वह लड़की हुई तो। किन्तु मनुष्योंके हृदयोंको कैसे डुलाया जाय जो नार्वेकी पाहड़ियों-से ऊबड़-खाबड़ और कठोर हैं, जो स्वार्थ, शक्ति और अभिमानको छोड़कर हर चीजके लिये उसके हिमखण्डकी तरह सर्द हैं ? शायद यह हिरणकी आंखोंवाली स्त्री इसीलिये, मुझे यही (प्रेम) सिखानेके लिये आयी है।

दृश्य २

एर्ता, आसलोग

आसलोग — एर्ता, चलो, हम उस आदमीके सामने आज रात ही नाचें, आज ही रातको क्यों नहीं ?

एर्ता — क्योंकि मैं नहीं चाहती कि मैं सिर्फ घायल कर पाऊं और मुझे रोक दिया जाय।

आसलोग — पास जाना और चोट करना। भावी संतति तुम्हारी प्रशंसा करेगी क्योंकि नार्वेके कवि कालके अन्ततक आसलोगके नृत्य और आसलोगकी कटार जैसे उदात्त विषयोंकी प्रशंसामें गीत गाया करेंगे।

एर्ता — हां, अगर हम सफल हों तो। किन्तु विफल हत्यारोंकी प्रशंसामें कौन गीत

गायेगा ? क्या पराजयका जोखिम उठाना ठीक होगा ? क्या नार्वेका स्वेन हमेशाके लिये निराशापूर्ण वर्फोंमें और मौन जंगलोंमें मारा-मारा फिरता रहेगा, निष्कासित और अस्वीकृत होकर खदेड़ा जायगा ?

आसलोग — पराजय ! कदापि नहीं।

एर्ता — हम जिसे मारने आये....

आसलोग — वह एक महान् व्यक्ति है। उसका चेहरा और उसकी आकृति देवों जैसी है — तेजस्वी आखोंवाला संगमरमरका सम्राट-सदृश शरीर। एक अपहरण करनेवालेको ऐसा मुख कैसे मिल गया ?

एर्ता — उसके पिता सामन्त और ओडिनके वंशज थे।

आसलोग — यह तो ऊपर उठनेके बादकी कहानी है। सचमुच तो उसकी जड़ें एक दरिद्र घरानेमें थीं जिसके पास एक छोटी-सी नौका, समुद्रकी जरा-सी धार और कुछ देवदारू ही थे।

एर्ता — लेकिन वहांसे तीन छोटी ग्रीष्म ऋतुओंमें शिखरपर जा पहुँचा और इसके पहले कि काल उसकी ठोड़ीपर अपनी प्रगतिके चिह्न दिखाये वह नार्वेका-निर्विवाद स्वामी बन बैठा। अगर वह ओडिनका वंशज नहीं है तो कम-से-कम ओडिन उसके पक्षमें तो है ही। ओडिनको उसके पक्षमें देखकर तुझे डर नहीं लगता, तू जो चिड़ियाकी उड़ानमें भी भाग्य देखा करती है ?

आसलोग — आसलोग उसके विरुद्ध है। उसमें शक्ति है, लौह शक्ति और थोर उसकी उठी हुई तलवारके द्वारा हथोड़ेकी तरह चोट करता है। उसकी आवाज-में विजय-गीत-सा है। लेकिन इन सब बातोंके बावजूद, अन्तिम निर्णय तो भाग्यका ही होता है, न थोरका और न ओडिनका। मैं अपना भाग्य आज-माऊंगी।

एर्ता — वह तो केवल एक अपहरण करनेवाला है। है न ? किन्तु लोग कहते हैं नार्वेके चुनावने ही उसे राजा बनाया है।

आसलोग — क्या ओलाफ तोरलाइकसन कोई उत्तराधिकारी न छोड़ गया था ? क्या सिंहासन खाली पड़ा था ?

एर्ता — त्रोंडियम, यही तो उनका नारा है। देशके मध्य और उत्तरी भाग चुननेके लिये आजाद थे

आसलोग — जैसे गद्दार आजाद होते हैं।

एर्ता — इस मामलेमें मतभेद था। दक्षिण सुनहरे लाभ पाकर आनन्दोल्लासमें चिल्ला रहा था। "मैं ही नार्वे हूँ" लेकिन उत्तरके सामन्तोंने अनुमति देने या

सहायक भेजनेसे इन्कार कर दिया। सिर्फ युद्धका नेतृत्व ही स्वीकार किया। हमने केवल तलवारकी मध्यस्थता स्वीकार की जो अन्तिम उपाय है। लेकिन तलवारने हमारे दावेके विरुद्ध फैसला कर दिया।

आसलोग — लेकिन कटार इस फैसलेको रद्द कर देगी।

एर्ता — तू फिर उसी बातपर वापस आ गयी। फिर एक बार सोच ले। क्या अपने खूनसे उसके खूनकी कीमत चुकानेकी जगह एक सौम्यतापूर्ण शान्ति सम्भव नहीं है? स्वेनको त्रोंडियेम मिल जाय और एरिक पूरे उत्तरीय प्रदेशको ले ले। अधिराजत्व? वह उसका है। हम उसके लिये लड़े और उसे खो बैठे। प्रहार करनेसे पहले इन सब बातोंपर विचार कर ले।

आसलोग — हमारे वीरान हिमखण्डोंको साम्राज्य भला है जहां जीवन-यापनके लिये पहाड़ी मृगोंके साथ रहना पड़े। या फिर साथ रहकर मुक्त और दयनीय मौत।

एर्ता — उससे भी अच्छा है सोच-विचारकर किया गया निश्चय, इसीलिये मैं तुम्हारे मनके आगे शंकाएं बिखेरती हूँ। निश्शंक होकर प्रहार करो। आसलोग, तुमने एरिककी आंखोंको अपनी ओर घूरते हुए देखा था?

आसलोग — (लापरवाहीसे) मैं सुन्दर हूँ। पुरुष मेरी ओर देखा ही करते हैं।

एर्ता — इससे हमें बड़ा अच्छा मौका मिलता है। वह हमारे साथ आरामसे अकेला और तल्लीन बैठा होगा, तू वार करेगी और मैं कूदकर सहायता करूंगी। तब क्या वह बच सकेगा? स्वेनको अपना सिंहासन मिल जायगा।

आसलोग — तुम जैसी व्यवस्था चाहो करो। तुम्हारा दिमाग बहुत तेज-तर्रार, सूझ-बूझवाला और चौकस है। मैं उसकी बराबरी नहीं कर सकती। साहस करना, काम कर दिखाना आसलोगका काम रहा है।

एर्ता — तू झिझककर पीछे तो न हटेगी न?

आसलोग — मैं इस धरतीकी नहीं हूँ कि मेरे कार्य सामान्य नियमसे बंधे हों। मैं उनसे नाता रखती हूँ जिनको स्वर्गकी दृष्टिने चरम रूपमें ढाला है — स्वेनकी बहन, ओलाफकी सन्तान, नार्वेकी आसलोग।

एर्ता — तब ऐसा ही होना चाहिये।

आसलोग — मैं तुम्हारे जालके ताने-बानेको नहीं जानना चाहती, पर जब तुम इशारा करोगी मैं वार कर दूंगी।

(वह जाती है)

एर्ता — (अकेली) कैसा उग्र दर्प! कैसी असहनीय उदात्तता! साम्राज्य तोड़ने-

वाला प्रतापी प्रहार तो उसके हिस्सेमें, तथा नीचता और धोखेबाजी मेरे पल्ले ! इसी घमण्डने, इसी ओजस्विताने स्वेनको उसका खिलौना बना दिया है जब कि मेरे लिये, उसकी प्रेयसी, सलाहकार, पत्नी और पुजारिनके लिये उसके कान ठंडे रूपसे बहरे थे। किन्तु, नार्वेकी सिंहनी, आखिर तेरी जोरकी दहाड़ें और राक्षसी छलांगें मेरे सम्मोहक जालोंमें फंस गयीं। उसे फंसाना ही होगा। वही मेरे पतिकी आत्माको एक विनाशकी चितापर जलानेवाला ईंधन है। उस आगको हटा दिया जाय तो ज्वाला अपने-आप शान्त हो जायगी। हम लोग एरिकके मरनेतक थ्रोंडियम में शान्तिसे रहेंगे। युद्धमें या किसी बागी तलवारसे एक-न-एक दिन तो वह मरेगा ही, और इस विशाल संसारको खाली छोड़ जायगा। तब औरोंको सूर्यका स्पर्श मिल सकेगा। वह हमेशा भाग्यकी बात करती है। क्या उसे यह नहीं दीखता कि यह पुरुष विजयी नक्षत्रोंमें जन्मा था और उसके पालनेको देवोंने झुलांया था ? उसे अपना शुभ मुहूर्त, अपना बलवान् अबाध्य काल मिलना ही चाहिये और तब आती है — अति महान् चीजोंका अन्त हमेशा जल्दी आता है — मृत्यु और समाप्ति और फिर शिशिर-के बाद ग्रीष्म।

दृश्य ३

एरिक, आसलोग

एरिक — इधर आओ।

आसलोग — आपने मुझे बुला भेजा था ?

एरिक — यहां आओ। कौन हो तुम ?

आसलोग — वही जो आप जानते हैं।

एरिक — क्या मैं जानता हूँ ?

आसलोग — (स्वगत) उसे शंका हो रही है क्या ? (जोरसे) मैं एक नर्तकी हूँ, मेरा नाम आसलोग है। यह तो आप जानते ही हैं।

एरिक — क्या ओडिनने तेरी इन मधुर अभिमानी आंखों, उदात्त कद और भव्य रूपरंगको रचा था ? तू नृत्य करती है — हां; तेरे पास वह कला है, और गीत, तेरी आत्माकी स्वाभविक अभिव्यक्ति जो तेरे होठोंसे निकलकर हवामें बहती, मंडराती है, फिर एक जंगली पक्षीकी तरह अपने नीड़में वापस आ जाती

है। यह कला स्वीडनकी राजकन्याएं सीखती हैं और नार्वेकी वे लड़कियां भी जो स्वीडनकी नकल करती थीं।

आसलोग — हो सकता है कि मेरा जन्म और भूतकाल मेरे वर्तमान भाग्यसे ज्यादा अभिजात रहा हो।

एरिक — तुम मेरे पास क्यों आयी ?

आसलोग — (स्वगत) क्या मौत उसे खतरेकी चेतावनी दे रही है ? क्या वह आसन्न प्रहारको अनुभव कर रहा है ? एर्ता इस प्रश्नको उलटा देती।

एरिक — तुमने नार्वेके एरिकको क्यों ढूँढ़ निकाला ? तुम अपने सौन्दर्यको यहां क्यों लायीं जो तुम्हारे गीतोंकी तरह विवश कर देता है, जिसे देखकर कोई भी पुरुष अपनी आत्माका स्वामी नहीं रह सकता ?

आसलोग — मैं एक नर्तकी हूँ। मेरा गीत और मेरा चेहरा ही मेरा सब कुछ है। मैं लाभके लिये उन्हें सबसे समृद्ध बाजारमें ले आयी हूँ।

एरिक — यह बात है ? तब तो मैं तुमसे इन्हें खरीद लेता हूँ। तुम्हारा शरीर भी, आसलोग।

आसलोग — मुझे छोड़ दो ! क्या मौतके मुँहमें हाथ डालोगे ? सारे नार्वेने अपने-आपको तुम्हारा गुलाम बननेके लिये बेच नहीं दिया है ?

एरिक — ये नर्तकीकी-सी बातें नहीं हैं।

आसलोग — (अपने आप) यह कैसा घेरा है ? मेरे पास कटार तो है ही नहीं। क्या वह मुझे पकड़ लेगा ? मुझे बाधित करेगा ?

एरिक — अगर नार्वेने खुदको मेरे गुलामके रूपमें नहीं बेचा है तो तुमने तो बेच ही दिया है। याद रख तू कौन है — या क्या होनेका दावा करती है।

आसलोग — (स्वगत) यह सूक्ष्मबुद्धि है, भयंकर है। मैं देख सकती हूँ कि वह बात-को किस ओर लिये जा रहा है और अनिच्छापूर्वक इस महान् अत्याचारकी प्रशंसा करती हूँ।

एरिक — ज्यादा अच्छा हो कि तुम अपनी भूमिकाका अभिनय करती रहो। लेकिन अगर तुम अपने-आपको जैसा दिखाती हो उससे अधिक अभिजात हो तो रहस्य खोल दो। अगर तुम नर्तकी हो तो मैंने तुम्हें भाड़ेपर रख लिया है, तेरे गीत, तेरे नृत्य, तेरा शरीर। जैसे समुद्र जिसका आलिंगन करता है उसे निगलते नहीं सकुचाता वैसे मैं भी तुझे पानेमें किसी तरह न हिचकिचाऊंगा।

आसलोग — महाराज, आप ऐसे शब्द बोलते हैं जिनका जवाब देनेसे मैं घृणा करती

हूँ।

एरिक — या समझनेसे भी ? क्या तू कोई शत्रु है जो छद्मवेशमें मेरे दरबारमें घुसकर मेरी योजनाको जानकर, उसे तोड़ने आयी है ?

आसलोग — और अगर हूँ तो ?

एरिक — तब तो तूने बड़े हल्के-फुल्के दिलसे अपनी जंजीरोंकी और लम्बी कैदकी योजना गढ़ ली। बिना सोचे-समझे एक दिव्य और वैभवशाली दांवपर अपने-आपको चढ़ा दिया।

आसलोग — तुम मेरा क्या बिगाड़ लोगे ? मुझे नहीं लगता कि मैं मौतसे डरती हूँ।

एरिक — मौत तुझसे दूर ही रहे, अगर विधाता न्यायप्रिय होता तो तुम अमर बन-कर चलतीं। तुम्हें उससे बड़ा कोई खतरा नहीं दीखता क्या ?

आसलोग — मौतसे भी बड़ा ? ऐसा तो कोई नहीं जिसके आगे कांप जाऊं या जिससे कतराती फिरूं।

एरिक — क्या तुम्हें दीखता नहीं कि तुम अपनी इच्छासे सिंहके मनकी भयानक तरंगों-के साथ पिंजड़ेमें बन्द हो ? क्या तू उसकी आंखोंमें भूख नहीं देखती ? उसकी कामनाके श्वासोच्छ्वासको अपने चेहरेपर अनुभव नहीं करती ?

आसलोग — (डरकर) मैं यहां जासूसी करने नहीं आयी।

एरिक — तब तू क्यों आयी थी ?

आसलोग — गाने, नाचने और कमाने।

एरिक — तब डटकर कमा ले। आसलोग, तब भी जानती है कि मैंने तेरे ऊपर क्यों नजर डाली थी, तुझे क्यों अपने महलमें रखा था। तूने, तूने ही मेरी इच्छा-पूर्तिका साधन दिया था। फिर भी यदि तेरा शरीर और तेरी वाणी तेरे पेशे-से बढ़कर तेरा सत्य घोषित करते हैं तो उसे स्वीकार कर ले और मुझसे क्षमा माँग ले।

आसलोग — (उग्रतासे) तुझसे क्षमा ! (अपने-आपको सम्भालते हुए) मैं नर्तकी हूँ। कमाने आयी हूँ।

एरिक — अब भी सोच ले।

आसलोग — (रुककर) सोचनेके लिये कुछ है ही नहीं।

एरिक — क्योंकि तेरे अन्दर शेरनीका मनोभाव है इसलिये तूने एरिकके साथ खिल-वाड़ करना चाहा, किन्तु मैं तेरे साथ खिलवाड़ करूंगा। तू मेरी मुट्ठीमें है। अब तू मेरी आवेगपूर्ण इच्छासे कैसे निकल भागेगी ? मैं तेरे सुनहले बाल, तेरे हिम-श्वेत शरीर और तेरी हिरन-सी आंखोंसे और तेरी इस ग्रीवासे — जो

शायद जानती है कि वह स्वर्णको आसानीसे उठाये हुए है — प्रेम-विभोर हो गया हूँ। तेरे गीत, तेरी वाणी, चलते या नाचते हुए तेरे मनोहर अंगोंकी ताल-मय गति, तेरा लापरवाह गर्व जो तेरी हर चेष्टा और स्वरमें लहराता है, इस सबने मुझपर मुस्कराता मधुर अधिकार जमा लिया है। मैंने किसी भी शक्तिके आगे झुकना नहीं सीखा है; मैं चौंका देना, जवरदस्ती करना और हुकुम देना ही जानता हूँ, इसी तरह तुझे भी ग्रहण करूंगा। चुनाव कर ले, कैदी और शत्रु वनना है या नर्तकी और खरीदी हुई सम्पत्ति। तू चकरा गयी? तुझे कोई उत्तर नहीं सूझता?

आसलोग — तुम्हारे उग्र शव्दोंने मुझे असमंजसमें डाल दिया है इसलिये मैं उत्तर नहीं दे पाती या अभी नहीं दूंगी। (दूसरी ओर मुड़ते हुए) यह मौत वह कैसे देख सका? क्या वह कोई देव है और मनुष्योंके हृदयोंको जानता है। यह तो भयानक और निर्दय दवाव है।

एरिक — तेरी योजना क्या थी? जासूसी करनेकी या हत्याकी? क्योंकि तू ऐसा साहस भी कर सकती है।

आसलोग — (स्वगत) जल्दी, जल्दी की जाय तो अब भी हो सकता है। उसे एक घंटेके लिये भुलावेमें डालकर, कुछ क्षणोंके लिये और फिर प्रहार!

एरिक — तो फिर क्या चुना तूने?

आसलोग — (उसकी ओर मुड़कर) मैं अभीतक हंसती रही। विना सोचे-विचारे मैं यहां आयी और तुम्हारे विचारोंसे मनवहलाव करती रही, कुछ अचंभेके साथ किन्तु किसी उद्देश्यसे अछूती। तुम अपनी उग्र शंकाशीलताके द्वारा मेरे ऊपर जो छल-कपट, विचार और रक्तरंजित योजनाएं लाद रहे हो, मैं उनसे विलकुल मुक्त हूँ। ऐसी गति उन पुरुषोंकी होती है जो धोखेवाजी और मार-काटके द्वारा अचानक ऊपर उठते हैं। वे सब हृदयोंपर, हां, एक-एक शब्दपर अपनी-सी हिंसा या सूक्ष्मतर चालाकीको आश्रय देनेकी शंका करते हैं। और उन्हें अपने उदयकी भान्ति ही एक आकस्मिक और क्रूरतापूर्ण पतनका भय लगा रहता है। मैं बस एक नर्तकी हूँ और कुछ नहीं।

एरिक — तू मेरी नर्तकी है और कुछ भी नहीं। तब यह हार पहन ले और अपने-आपको समर्पित कर दे — यह न समझना कि तेरी यही कीमत है।

(आसलोग हारको जमीनपर पटकती है)

एरिक — तू कुशाग्र-वुद्धि नहीं है।

आसलोग — स्त्रियोंके हृदय इस तरह नहीं जीते जाते।

एरिक — अगर मैं इस तरह प्रणय याचना करता हूँ तो सभी पुरुष, तू जो होनेका दावा करती है, उसे, इसी तरह रिझाते हैं। तो क्या दावा गलत था? क्या अब भी उससे इन्कार करके तू बस एक मुस्कानद्वारा क्षमा अर्जित करनेकी आशा रखती है? क्या तू अब भी नार्वेकी नर्तकी है या कोई छद्मवेशी, अभिजात, उदात्त आत्मा?

आसलोग — (हठात्) महाराज एरिक, मैं तुम्हारी नर्तकी हूँ। देखिये, मैं आपका हार स्वीकार करती हूँ।

एरिक — ले लो। फिर भी अपनी मरजीके अनुसार, उसे अपनी कीमत या मेरा उपहार समझकर लेनेके लिये तुम स्वतन्त्र हो। मैं नहीं चाहता कि तू लापरवाहीसे निश्चय करे बल्कि निश्चय ऐसा हो कि जो हम दोनोंको बांध सके। मैं तुझे समय देता हूँ। सोच समझ ले और अपने स्वस्थ मनको ऊपर आने दे, तीव्र किन्तु दुराग्रही साहसको नहीं। आसलोग, अपने देशद्रोहको स्वीकार कर ले और अपने राजापर विश्वास रख।

(वह बाहर जाता है। कुछ क्षण चुपचाप रहकर आसलोग अपने गलेसे हार उतारती है, उसे सराहती है और फिर कुरसीपर फेंक देती है)

आसलोग — तुम राजकीय रक्तकी बूँदोंसे बहुत ही मिलते-जुलते हो। (कुछ देर उसे उठा लेती है) हार? नहीं, जंजीर! या फिर तू एक देवताकी मौतका परवाना बनेगी? (फिरसे हार पहन लेती है) एर्ता, एर्ता, इधर आ। (एर्तासे जो प्रवेश करती है) ओ सलासकार, आ गयी तू?

एर्ता — मैंने तुझे पुकारते सुना था।

एर्ता — मैंने तुझे पुकारा था? क्यों पुकारा मैंने? देख, एर्ता, देख नार्वेका एरिक कितना अधिक मूल्य देकर अपना विनाश खरीद रहा है!

एर्ता — उसने दिया है यह तुझे? इसकी कीमत तो एक राज्यके बराबर होगी।

आसलोग — एक राज्यकी कीमत! मारे हुएके राज्यकी! राष्ट्रोंको एक देवतासे मुक्त करनेकी कीमत! ओ एर्ता, धरतीको देवोंसे क्या लेना-देना? वह तो सिर्फ मानव-भार सहती है। अगर एरिक उसपर देरतक चलता रहा तो क्या वह शीघ्र ही अपनी नींवसे नीचे खिसक न जायगी?

एर्ता — स्वेनकी बहन, तेरे चेहरेपर और नेत्रोंमें नयी चमक है। उसने तुझसे क्या कहा?

आसलोग — एरिकने क्या कहा? आसलोगसे, महाराज स्वेनकी बहनसे एरिकने क्या कहा!

एक राज्यकी कीमत! स्वेनके राज्यकी कीमत! और उसके लिये, मेरे संगमरमरके सम्राट, मेरे देव जो मुझे प्यार करते हैं......यह मर्त्य ओडिन? उसके लिये क्या? क्या वह जबरदस्ती अपने उज्जवल सिंहासनपर बैठेगा।

एर्ता — तुझे तो विभक्त मनकी आदत नहीं थी।

आसलोग — अब भी मैं कुछ बदली नहीं हूँ। मेरा हृदय असमंजसमें नहीं है। किन्तु ऐसे विचार तो स्वाभविक ढंगसे आया ही करते हैं।

एर्ता — तो वह तुमसे प्रेम करता है?

आसलोग — प्रेम भी है और शंका भी।

एर्ता — कैसी, आसलोग?

आसलोग — हम कौन हैं और किस इरादेसे आये हैं।

एर्ता — अगर वह शंका करता है!

आसलोग — अगर हम तेजी करें, तो इससे कोई हर्ज न होगा।

एर्ता — अगर हम सब विगाड़ बैठे तो! मैं व्यर्थमें मरकर स्वेनको निरर्थक आंसुओंसे तड़पाना नहीं चाहती। मैं हत्या करूंगी और मरूंगी। वह भी याद रखेगा कि उसका सिंहासन हमारे महान् बलिदानके कारण मिला है और यह सोचकर अपने दु:खको हल्का करेगा कि यह बलिदान जरूरी था या उसे उदात्त भावसे मरे हुओंके प्रति उदात्त कर्तव्य समझकर सह लेगा। (एक क्षण सोचकर) नन्हीं, तुझे उसका मन रखना होगा। उसे अनुमति देनी होगी।

आसलोग — किस बातके लिये?

एर्ता — हर बातके लिये।

आसलोग — तू जो कलंकका टीका लगवानेकी सलाह दे रही है उसके बारेमें ध्यान देकर सोचा भी है?

एर्ता — हां। मैं तुझे आत्म-समर्पण करनेके लिये नहीं कहती, सिर्फ आत्म-समर्पणका दिखावा कर जैसा कि मैं स्वेनकी पत्नी होते हुए भी करती। तू बोलती तो बहुत है किन्तु उनसे सचमुच इतना प्रेम नहीं करती वरना अपने भाईकी की जिन्दगीके आगे, अपने भाईके मुकुटके आगे अपनी बाहरी पवित्रताको इतना महत्व न देती।

आसलोग — अपनी इच्छाके मुताबिक मुझे मोड़ना तुम्हें अच्छी तरह आता है।

एर्ता — उसके प्रेमको आजादी दे, किन्तु उच्छृंखलताका परवाना नहीं। क्योंकि जब वह आलिंगनकी सोचेगा हम वार कर चुके होंगे।

आसलोग — और एर्ता, अगर एक त्वरित और हिंसात्मक हृदय मेरी इच्छाके विरुद्ध

विश्वासघात करे और तुम्हारी योजनाओंको उलट दे तो? क्या ऐसा कोई खतरा नहीं है एर्ता?

एर्ता —— अभीतक मुझे स्वेनकी बहन, आसलोगसे ऐसी कोई आशंका न थी। किन्तु तुझे खुद ही उसका डर है तो फिर!

आसलोग —— नहीं, क्योंकि मैं स्वीकार करती हूँ। तुम फिरसे मेरी स्वार्थपरता या मेरे प्रेमकी त्रुटिको दोष न दे सकोगी। (वह बाहर जाती है)

एर्ता —— (अकेली) तो स्वेन अब भी राज्य कर सकेगा! (अट्टहास करके) अजेय देवोंके और हमारे बीच मुस्काते, जागृत भाग्यको मैं प्रायः भूल-सी गयी थी।

दृश्य ४

एरिक, आसलोग

एरिक —— लोग कहते हैं कि प्रेमकी अराजकता देवोंको भी व्याकुल कर देती है, संगमरमर-से स्वभाव भी हिल जाते हैं, अमर लौह-हृदय भी पिघल कर टीस और आनन्द प्राप्त करते हैं। हे ओडिन, फिर भी, मैं अपने अन्दर एक शान्त राजसत्ता बनना चाहता हूँ। मेरा रक्त मेरे अनुशासनमें रहे। लेकिन मैं उसकी पदचाप सुन रहा हूँ।

(आसलोगसे जो प्रवेश करती है) तूने निश्चय कर लिया? अपना चुनाव कर लिया?

आसलोग —— अगर कुछ चुनना है तो मैं सत्यको चुनती हूँ।

एरिक —— तू है कौन?

आसलोग —— आसलोग, जो अब एक नर्तकी है।

एरिक – और बादमें? क्या तू कुछ भी नहीं समझी?

आसलोग —— मुझे क्या समझना चाहिये?

एरिक —— मैं तेरे साथ क्या करूंगा? यह पार्थिव स्वर्ग जिसमें तू निवास करती है तेरा बिलकुल न होगा। वह तेरे आनन्दके लिये नहीं, मेरे आनन्द और मेरी विराट् इच्छाके लिये बना है। क्या तू यह बात समझती है?

आसलोग —— (पीली पड़ती हुई, घबराई-सी) अभीतक मेरी परीक्षा ले रहे हो?

एरिक —— मैंने तुझे कांपते देखा था।

आसलोग — स्त्रीका हृदय इतनी आसानीसे पूर्ण-समर्पणमें प्रणिपात नहीं करता।

एरिक — तेरा हृदय ? क्या तेरा हृदय झुक रहा है ? (उसके हाथ अपने हाथोंमें लेकर) एक सशक्त अमर अतिथिको आश्रय देनेवाले, ओ अनुपम मुग्धकर मानव शरीर ! काश, मानव हृदयको भी वैसे ही ठोस रूपमें पकड़ पाता जैसे आत्माको इन आकारों, अवयवों और तत्त्वोंको !

हम उसीकी मांग करते हैं। अन्य सब कुछ पकड़में तो आ सकता है, पर है निःसार ! हमारे और अन्य हृदयोंके बीच दीवार खड़ी ही रहती है। (बोलते-बोलते उसकी आंखों और शरीरको छूता है) क्योंकि अगर हमारी आत्माओं-के बीच बाधाएं तोड़ दी जाएं तो मनुष्य स्वतन्त्र हो जायगा और हमारी धरती स्वर्ग बन जायगी और तब देवता उपेक्षित होकर रहेंगे।

आसलोग — (उतावलीसे) मेरा यह हृदय ? उसे बहुत-कुछ देकर खरीद लो क्योंकि वह बिकाऊ है।

एरिक — हां, बोल !

आसलोग — प्रेमसे । मेरा और कुछ मतलब न था।

एरिक — प्रेमसे ? तू एक जबरदस्त शब्दको बड़े हल्के मनसे बोल रही है। तू अगर धरतीकी इस सबसे अधिक शक्तिशाली चीजको जानती और फिर उसका उच्चारण करती तो क्या तेरे होठोंपर उसका इतना आवेग न होता कि पुरुष उसे फिरसे एक बार सुननेके लिये समस्त संसारको न्यौच्छावर कर देता। शब्द यदि हृदयकी बात न बोलें तो सिर्फ प्रेत होते हैं।

आसलोग — मैं झुक गयी हूँ।

एरिक — तब आज रातको। अरे ! तू कांप रही है ?

आसलोग — मेरे खूनमें कुछ गड़बड़ है। मैं कांपती नहीं हूँ।

एरिक — तूने मेरी बात सुनी ?

आसलोग — आज रातको नहीं। तुम बहुत तेज और जल्दबाज हो।

एरिक — तुझे अपनेसे छोटी, सूक्ष्म बुद्धिवाली साथिनसे परामर्श करनेका अवकाश मिल चुका है ? बेहतर होता यदि तूने स्पष्टवादिता चुनी होती और अपने निश्छल आत्मासे परामर्श किया होता, कानमें फूँके हुए दूसरोंके छल-कपटसे काम न लेती।

आसलोग — कपट कहां है, जब समान मूल्य लेकर सब कुछ दिया जा रहा है ? तुमने अपने लाल मानिकका रक्त दिया और मैं अपना जीवन देती हूँ।

एरिक — तब तू समझना नहीं चाहती। आसलोग, तेरी आत्मा तेरे शब्दोंसे ज्यादा

सच कहती है। तेरे होंठ स्वीकार करते हैं लेकिन तेरी आंखें अब भी मेरा विरोध कर रही हैं।

आसलोग —— क्योंकि मैं अपने-आपको बेचकर भी अपना अभिमान रखे हुए हूँ।

एरिक —— मैं जिसे लेना चाहूँ, ऐसी किसी भी चीजको —— तू न रखेगी। मैं एक ऐसा अत्याचार देख रहा हूँ जिसमें मैं मजा ले सकूँगा और जबरदस्ती एकता आरोपित कर दूंगा। मैं तुझे, जो एक देवी है जबरदस्ती बाधित करूंगा। किन्तु मुझे मालूम है तेरे अन्दर कैसी आत्मा निवास करती है हालांकि तू अभीतक मेरी आत्माकी उपेक्षा कर रही है।

मैं अब भी अपनी शक्तिको रोके हुए हूँ हालांकि वह शेरकी तरह कूदनेको मचल रही है। मैं तुझे और एक अवसर देता हूँ। उसका दुरुपयोग न करना। सावधान, उग्र देवको बहुत ज्यादा उत्तेजित न कर। अपने चारों ओर फैली उसकी लपटोंसे डर।

(वह जाता है)

आसलोग —— (अट्टहास करती है) ओडिन और फ्रेया, तुम्हारे पास फंदे हैं। लेकिन, देख लो, कटार अपने वक्षसे निकालकर फेंकी नहीं है, अभीतक उसे पकड़े हुए हूँ। कितनी विचित्र बात है कि दृष्टि और स्वर —— शारीरिक शक्तिके प्रतीक —— न सिर्फ नाड़ियोंमें रम जाते हैं बल्कि अन्दर बैठी आत्मातकको छू लेते हैं! वह एक क्षणिक लहर थी, अब जा चुकी है और मेरी आत्माके अन्दर उच्च उद्देश्य अब भी अपराजित रूपसे सफल होनेके लिये जीवन्त हैं।

अंक २

दृश्य १

एरिकके महलका कमरा

एर्ता, आसलोग

एर्ता — देख, आसलोग, उसकी चमक कितनी तीव्र और घातक है।

आसलोग — हे एर्ता, क्या कोई दृष्टि कभी भूत बनकर तेरे पीछे पड़ी है? या किसी स्पर्शने तुम्हारी स्मृतिको बाधित करते हुए तुम्हें व्याकुल किया है?

एर्ता — तब देवता भी काम कर रहे हैं।

आसलोग — तेजस्वी परिकल्पनासे बनी संगमरमरकी भव्य मूर्तिको — जिसमें सांसकी कमी होती है, क्योंकि सांस तो हमारा कुशल सर्जक ही दे सकता है — तोड़ते हुए दर्द होता है। और यह मूर्ति तो श्वास लेती है! उन आंखोंमेंसे एक बुद्धि देखती है जो हम सबपर अधिकार जमा लेती है; इस संगमरमरके अन्दर एक हृदय है और उस हृदयमें प्रेम है। इन सबको तोड़ना, भगवान्‌के इस ओजस्वी सर्जनको तोड़-फोड़कर धूलमें मिला देना! ऐसे विचार मुझे क्यों घेरते हैं? तब क्या मैंने......ना, कुछ भी तो नहीं है। यह दयाका काम है। शारीरिक आकर्षण मात्र है। और वह कटारकी धारके लिये अति महान्, अतिशय सुन्दर है। कटार लौट पड़ेगी, नोंक घूम जायगी, ऐसी हत्या-के लिये वह अपना उपयोग न होने देगी।

एर्ता — आसलोग, यह प्रेम है।

आसलोग — (गुस्सेसे) क्या कहा तूने?

एर्ता — आसलोग, जब वह तेरे बालोंको मृदुतासे सहलायगा — क्योंकि उसे तुझसे प्रेम है — तब क्या तू वार कर सकेगी?

आसलोग — (स्वगत) मुझे कौन-सी चीज कंपा रही है? क्या मैंने दया करना और कांपना सीख लिया है? ओलाफकी औलादके लिये यह सचमुच नयी बात है। देवगण, मुझे आत्म-ज्ञान दीजिये। कैसे अपरिचित भाव हैं ये जिन्हें आप मेरे हृदयमें भेज रहे हैं? वे यहां अपरिचित परदेशी हैं।

(एरिक प्रवेश करता है और उन्हें देखता है। उसे देखकर एर्ता जानेके लिये खड़ी हो जाती है।)

एरिक — तुम ही स्वीडनसे राजा एरिकके पास आयी हुई दूसरी नर्तकी हो ?

एर्ता — (स्वगत) उसकी आंखें ऐसी हैं जो सीधी आत्माको भेद डालती है। उसके शब्दोंका अर्थ क्या है ? शब्द तो सामान्यसे ही हैं (प्रकट) आसलोग, मुझे जाने दे।

(वह बाहर जाती है)

आसलोग — मैं इस स्थानपर तुम्हारी खोजसे मुक्त रहना चाहती हूँ।

एरिक — तू मुझसे किसी भी स्थानपर आजाद क्यों रहे ? मैं तेरे और अपने ऊपर क्रोधसे भरा हूँ। मेरे पास आ।

आसलोग — (स्वगत) विचित्र बात है......मैं डर रही हूँ! किस चीजसे ? किस बातसे ? क्या मैं अब भी आसलोग नहीं हूँ ?

एरिक — तू जादूगरनी है या षड्यन्त्रकारिणी ? लेकिन तू दोनों ही है, मेरे सिंहासन और मेरे हृदय दोनोंको हथियानेवाली। ओ भयंकर जादू-टोने, मैं तेरे साथ शत्रुकी तरह ही पेश आऊंगा।

आसलोग — (स्वगत) वह कभी मुझे न छुए।

एरिक — अब मैं ज्यादा मुहलत न दूंगा। सह अपनी नियति और अपने दुर्भाग्यको।

आसलोग — मेरा दुर्भाग्य मेरे अपने हाथोंमें है, तुम्हारे हाथोंमें नहीं।

एरिक — (हठात् उग्रतासे) तू गलतीपर है और तूने हमेशा गलती की है। मैंने तीन वर्षके अन्दर झंझा-तूफानोंसे भी बढ़कर बेलगाम नार्वेको घेर लिया है। क्या तू समझती है कि ऐसे व्यक्तिका सामना एक स्त्रीकी शक्ति कर सकेगी, वह चाहे कितनी ही तीव्र और साहसिक क्यों न हो ?

आसलोग — मैंने तुम्हारी शक्तिको देखा है। मैं अपनी अनदेखी शक्तिको संभाले हुए हूँ।

एरिक — और मैंने तुम्हारी कमजोरीको देखा है। तू किसी चीजसे डरती जरूर है।

आसलोग — किसी चीजसे नहीं।

एरिक — नहीं, जरूर डरती है। तेरी आंखें मेरा सामना करती हैं परन्तु तेरे चेहरेका रंग बदलता रहता है, तेरे अंग तुझे धोखा दे जाते हैं। तेरे अन्दर सब कुछ शेरसा और मर्दाना नहीं प्रतीत होता। (उसकी ओर बढ़ता है)

आसलोग — मुझे मत छूना।

एरिक — क्या इसीका डर है ? तो तू इससे डरती क्यों है ? क्या अपने हृदयके

डरसे कांपती है ? आसलोग, क्या अपने हृदयके डरसे ?

(उसे अचानक आंलिगनमें जकड़ लेता है और चूमता है। आसलोग चकित-सी और स्तब्ध रहती है)

एरिक — अपनी पलकें उठा, मैं तेरी शक्ति तो देखूं !

आसलोग — हाय देव ! मैं प्रेम करती हूँ ! ओह, छोड़ दो मुझे !

एरिक — तेरा जो कुछ भी उद्देश्य रहा हो, मैंने तुझे पा लिया। हे मधुर, विद्रोही आत्मा, आश्चर्य-चकित आसलोग, जब तारोंका निर्माण हुआ था तबसे तू मेरे लिये ही निर्धारित थी। आसलोग, अपनी नियतिको मधुरतापूर्वक स्वीकार कर, द्वेषकी मृत्यु और प्रेम करनेकी नियतिको स्वीकार कर। हम लोगोंकी आकाक्षा-ओंके बीच लजाते हुए इन्कारका व्यर्थका परदा न डाल। द्वेषकी गहरी खाई-को प्रेमकी भाव-भीनी छलांगसे पार कर। अपनी आत्माको कोप करनेके लिये बाधित न कर। ये परदे और हिचकिचाहट क्षुद्र हृदयोंके लिये छोड़ दे। हम दोनोंके बीच दिनका उज्जवल प्रकाश हो।

आसलोग — मुझे थोड़ी देर सोचने दो। तुम्हारी भुजाएं, तुम्हारे होंठ मुझे रोकते हैं।

एरिक — सोचो, मत ! सिर्फ अनुभव करो। केवल प्रेम करो।

आसलोग — हे एरिक, महाराज, लुटेरे, विजेता ! हे राज्यों और मानव-हृदयोंके डाकू ! हे एकमात्र सम्राट !

एरिक — विचारमग्न तारोंको भी आवेगसे क्षुब्ध करनेवाली ओ स्त्री, क्या आखिर मेरी जीत हो गयी ? आसलोगकी आत्मा, क्या तू मेरी है ?

आसलोग — (आसनपर गिरती है) मैं सोच नहीं सकती। मैं अपने-आपको खो बैठी हूँ। मेरा हृदय एक आलिंगनमें अनन्तता चाहता है।

एरिक — हे आसलोग, अबसे मैं जो कुछ मांगूँ उसके लिये क्या मना करेगी ? तू सचमुच मेरी है न ?

आसलोग — यह क्या किया मैंने ? मैं क्या बोल गयी ? मैं प्रेम करती हूँ !

(कुछ देर शान्तिके बाद, वक्षमें टटोलते हुए) किन्तु मेरे वक्षमें क्या छिपा था ?

एरिक — (उसकी क्रिया देखता हुआ) मैं विभक्त राज्य नहीं स्वीकारता। साझे-दारीका मुकुट नहीं लेता। तेरे दिलमें कोई उद्देश्य था जो मुझे नहीं मालूम, किन्तु वह था दिव्य। आखिर तू प्रेममें है; किन्तु मुझे मानव-हृदयका ज्ञान है; वहां कैसे-कैसे विरोधी आवेग, भयानक झंझाओं और विश्वासघाती आश्चर्यों-से मल्ल-युद्ध करते हैं। इसलिये इस आकस्मिक परिवर्तनपर विश्वास नहीं करता, लेकिन अगर तू शान्तचित हो सके और आवेगपूर्ण समर्पण कर सके तो

मैं तुझे हमेशाके लिये अपने आलिंगनमें भर लूँगा। सोचकर बोल। क्या तू संपूर्ण रूपसे मेरी है ?

आसलोग — मुझे यह भी नहीं मालूम कि मैं खुद अपनी भी हूँ या नहीं। मेरे चारों ओर दुनिया घूम रही है और स्वर्गकी दिशाएं बदल गयी हैं।
एक उद्देश्य, मेरा एक उद्देश्य था जरूर !
इसके अलावा मेरे एक भाई था ! था ! अब मेरे पास क्या है ?
हे देवों, तुम लोगोंने मेरे ऊपर कैसा हमला किया है ?
महाराज, मुझे अकेला छोड़ दो।
हठात् बदले हुए हृदयका विश्वास करना अच्छा नहीं होता।
जब रक्त शान्त हो लेगा तब हम फिरसे स्वर्गमें मिलती आत्माओंकी भांति बिना छल-छद्मके बात करेंगे।

एरिक — मैं तुझे अकेला नहीं छोड़ूँगा क्योंकि तुझमें एक 'लांघे न गए गर्त' का-सा अशुभ लक्षण दिखायी देता है !

आसलोग — छोड़ना ही उत्तम होगा क्योंकि अभी-अभी हमारे बीच बहुत बड़ी खाई थी और अब बहुत छोटी हो चुकी है। महाराज, थोड़ी देरके लिये मुझे अकेला छोड़ दीजिये ताकि मैं खुदसे लड़ सकूँ और शान्तिसे देखूँ कि देवोंने मेरे सामने जिस विचित्र संघर्षको रखा है उसमें मेरे अन्दर कौन-सी चीज जियेगी और कौन-सी हमेशाके लिये गूँगी बन जायगी।

एरिक — अब भी कोई चीज प्रतिरोध कर रही है। जबतक मुझे उसका पता न लग जाय और मैं उसे वशमें न कर लूँ तबतक तुझे अकेला न छोड़ूँगा ! क्योंकि आसलोग, मैंने तुझे जीता था।

आसलोग — महाराज, आप युद्ध और सभा-समितियोंकी बातोंमें बहुत चतुर हैं, किन्तु नारी-हृदयकी बातोंमें नहीं। आपने एक ऐसे रहस्यको चौंका दिया है जिसे मेरी कांपती आत्मा अभीतक मुझसे भी छिपाये हुए थी। लेकिन अगर आप सचमुच समझदार हैं तो उस भयंकर देवको — जिसने मेरे दिलको अपनी कमजोरी स्वीकार करनेसे डराया था — सहसा कठोरतासे हाथ न लगायेंगे।

एरिक — तू खुद समझदार है क्या ? मैं तुझे परामर्शदाता नहीं मानता।

आसलोग — फिर भी सावधान ! मेरे संकल्प और हृदयके बीच एक खाई थी जो अभीतक पटी नहीं है।

एरिक — अपने संकल्पको तोड़ दे, हां, तू मुझसे तुड़वाना चाहती हो तो और बात है। पुरानी आसलोग नयीके विरुद्ध उठ रही है।

आसलोग — हां, उठ रही है, उठ रही है। उठने दो उसे। मेरी आजादी मेरे हाथों-में रहने दो।

एरिक — नहीं, आसलोग, क्योंकि तू आजाद होकर अपने आवेगोंके साथ शेरनी-की तरह घूमती है।

आसलोग — (इंगितके साथ) तो महाराज, भाग्यका जो आदेश हो उसे पूरा कर डालो।

एरिक — मैं स्वयं अपने भाग्यका स्वामी हूँ।

आसलोग — हम लोग जो स्वयं अपने ही स्वामी नहीं है, भाग्यके तो बहुत ही कम हैं!

एरिक — आसलोग, क्या तू अभीतक वही नर्तकी ही है?

आसलोग — एरिक, मैं अभी भी वही नर्तकी हूँ जो तुम्हें ढूँढ़ती हुई आयी थी।

एरिक — फिर भी शायद वही सबसे तेज उपाय है। तो आज रातको मेरी नर्तकी मेरे कक्षमें मेरे लिये नाचे। मैं उसके नाचका अर्थ देखूँगा और उसके रहस्यका परदा फाड़ लूँगा।

आसलोग — अगर तुम उसकी मांग करते हो तो भाग्य ही यह मांग कर रहा है।

एरिक — तेरा देव धूमिल और मलिन होता जा रहा है, मुझे लगता है कि वह भय-प्रद भी हो रहा है! किन्तु बादमें, स्त्री-पुरुषके बीच आत्मा और शरीरकी जो भी इच्छा हो सकती है वह मैं मांग सकता हूँ न?

आसलोग — हां, अगर तुम्हारा भाग्य अनुमति दे। ऐसा लगता है कि तुम्हारा प्रेम आदर-सम्मानके साथ मेल नहीं खाता।

एरिक — तेरे और मेरे बीच इस शब्दका अस्तित्व ही नहीं है। एक धधकती हुई ज्वालामें वह भस्म हो चुका है। क्या तू अब भी जिद करती है? मेरे वक्षपर लोट चुकनेपर भी तू मुझसे आदर-सम्मानकी मांग करती है? और फिर भी तू कहती है कि तू एक नर्तकी है। आसलोग, अन्धकारमय देवोंको न जीतने दे। अपने अहंकारको छोड़ सत्य और प्रेमको अपना।

आसलोग — (खिन्न) मैं एक नर्तकी हूँ, और कुछ नहीं।

एरिक — प्रेमने जिस द्वेषको मार गिराया था वह तेरे दिलमें फिरसे उठ रहा है। किन्तु मैं निर्दय होकर उसे जबरदस्ती निकाल फेंकूँगा। (वह उसकी ओर लम्बे डग भरता है। वह कुछ तो डरसे दुबकती है, और कुछ सामना करती है।)

एरिक — (जबरदस्ती बाहोंमें भरकर) इस तरह मेरे अन्दर समाई हुई तू कालके अन्ततक बनी रहेगी। आज रातको।

(वह जाता है)

आसलोग —— यह सब कैसे हुआ ? वह क्या था जो मेरे ऊपर टूट पड़ा और जिसने मुझे पराजित कर दिया ? ओ मग्न और उद्विग्न हृदय, क्या तू एक क्षणके लिये रुककर देवोपम मस्तिष्कको अपना कार्य न करने देगा ? क्या एक क्षणमें दुनिया बदल सकती है ? क्या द्वेष अकस्मात् प्रेम बन सकता है ? यहां प्रेम नहीं है। मेरे वक्षमें अभीतक कटार छिपी है। ओह, वह कितना भयंकर मनोहर और फुरतीला है ?

वह मर्त्य मानव नहीं है।
दिल, अब भी चुप हो जा,
अब भी दिमागको अपना काम करने दे।
हे संगमरमर-से दमकते मुखड़े !
ओह, तुम ही ओडिन हो, तुम ही धरतीपर आये हुए थोर हो !
होठोंके स्पर्शसे, एक चुंबनमें ऐसा क्या है कि जो सृष्टिको बदल सकता है ?
एक मदिरा है जो लोगोंको पागल बना देती है; क्या मैंने भी वही नहीं पी है ?
हां, उसकी बांदी बनना, उसकी इच्छाओंके सिवा और कुछ भी न जानना !
आसलोग और एरिक !

आसलोग, उस स्वेनकी बहन, जो निष्ठुर हिम-शिखरोंपर अपना बिस्तर बिछाता है और मृगोंके साथ घूमता-फिरता है लेकिन जो किसी समय राजा था। और उसका स्थान कौन लेता है ? एरिक और आसलोगका राज है। एरिक, जिसने उसके पकड़े जानेपर उसे मौतके घाट उतारनेका हुकुम दे रखा था, और आसलोग, उस अत्याचारी, अपहर्त्ताकी पत्नी जो अपने भाईकी हत्याके कारण अपने अधिकारपर सुरक्षित है। पत्नी एरिककी बांदी, उसकी रखैल —— उसका अहंकार यही तो करना चाहता है।

हे दिव्य शक्तियो, मेरे सिरपर यह क्या सवार हो गया था ?

मैंने आत्म-समर्पण कर दिया, अपने भाईका राज्य और जीवन, अपना दर्प, महत्त्वाकांक्षा, आशा, बोध, सब कुछ भुला दिया था, सिर्फ शर्मिन्दगी ही बचा रखी थी।

आज रात ! आज रात क्या होगा ?

मैं उसके सामने नाचूंगी —— महाराज ओलाफकी सन्तान इस कलके नवाब, इस उद्धत एरिककी नर्तकी बन रही है ! इस रात और क्या होगा ? कोई नार्वेकी आसलोगका शिकार करेगा !

हा दैव, मेरा मानसिक संतुलन लौटा देनेके लिये तुझे धन्यवाद देती हूँ। उसका

मक्कारी भरा और जबरदस्त फुसलाना ही इसका कारण था, मेरे अन्दर भी कुछ चीज विश्वासघाती निकली।
मक्कारी ? ओह, देवोपम, चमकती आंखोंका सौन्दर्य !
ओ स्वर्गकी श्रेष्ठताको व्यक्त करनेवाले मुख !
नहीं, मैं उसे दबा दूंगी, दबाये देती हूँ।
हे देवो, मेरी मदद करो, मेरे हृदयके विरुद्ध मेरी मदद करो।
मैं अचानक प्रहार करूंगी, मैं प्रतीक्षा न करूंगी।
उसका गौरव, और सामर्थ्य, उसका भीषण सौन्दर्य उसका अति सम्मोहक मस्तिष्क — सब धोखा है ! प्रहार करना बहुत कठिन होगा ! किन्तु मैं करूंगी। स्वेन प्रहार करेगा, और नार्वे प्रहार करेगा, मेरा सतीत्व वार करेगा। देव और उसकी जिन्दगी हर क्षण अपमान करते हैं। (प्रवेश कर रही एर्तासे) एर्ता, मैं आज रातको प्रहार करूंगी।

एर्ता — क्यों, क्या हुआ ?

आसलोग — यह तुम्हें नहीं बताया जायगा। बस, मैं आज रातको वार करूंगी। (वह बाहर जाती है)

एर्ता — उसे कौनसी चीज इस तरह बहका रही है यह जानना मुश्किल नहीं है। मुझे फुरतीसे काम करना चाहिये वरना इसका आकस्मिक और करुण अन्त हो जायगा। रक्तपात नहीं, बल्कि शान्ति; मौत नहीं, हे देव-गण, बल्कि जिन्दगी और शान्त मधुरिमा !

दृश्य २

एरिक, एर्ता

एरिक — मैंने तुझे तेरा नाम और कुल जाननेके लिये बुलवाया है।

एर्ता — मेरा नाम एर्ता है और मेरा कुल इतना तुच्छ है कि नार्वेके स्वामीके सामने उल्लेख नहीं किया जा सकता।

एरिक — फिर भी बोल, देखूँ।

एर्ता — त्रोण्डियमका एक किसान और एक नौकरानी मेरे मां-बाप थे।

एरिक — और ऐसे कुलसे तेरे जैसे सौन्दर्य, बुद्धि और लावण्यने जन्म लिया ?

एर्ता — कभी-कभी देवता अलौकिक ढंगसे प्रकृतिके सामान्य नियमको उलट देते

हैं और पार्थिव तत्त्वको आत्माके साथ जुड़नेके लिये बाधित करते हैं। वरना देवोंके अस्तित्वका पता ही कैसे लगे ?

एरिक — तुझे किसने पाला-पोसा था ?

एर्ता — गोटवोर्गमें नार्वेके जमींदारकी एक नर्तकी थी। मैं उसके हाथोंमें नन्हीं बालिकाके रूपमें सौंप दी गयी थी। गाना और नाचना उसका काम था। मैंने भी उन्हें अपना लिया।

एरिक — उनके नाम क्या थे ? दासी और स्वामीके ?

एर्ता — नार्वेका ओलाफ, तवके त्रोण्डियमका सामन्त, और थिओरडिस जिससे वे प्रेम करते थे।

एरिक — तुम स्वेनको, राजद्रोहीको जानती हो ?

एर्ता — हां, जानती हूँ।

एरिक — और शायद उससे प्रेम भी करती हो ?

एर्ता — अपने-आपसे और भी ज्यादा।

एरिक — अच्छा ? वह धोखेबाज और असभ्य और कठोर है, है न ?

एर्ता — (एक चेष्टा करती हुई) मैं महाराजाओं और सामन्तोंके विषयमें बोलना नहीं चाहती। ये बातें मेरी हैसियतसे बाहरकी हैं।

एरिक — आहा, तुम प्रेम करती हो और दोष नहीं देना चाहती।

एर्ता — महाराज, आप गलतीपर हैं। वे जीत नहीं सकते और झुकेंगे भी नहीं, सिर्फ नार्वेको कमजोर बना रहे हैं। मैं उनकी इस बातको दोष देती हूँ।

एरिक — तुमने इतना देख लिया ? तुम्हारे किसान बापने अद्भुत राजनीतिज्ञ बालिका पायी थी। क्या मैंने तुम्हें घबरा दिया या लज्जित कर दिया है ?

एर्ता — मैं वही हूँ जो देवोंने मुझे बनाया है। किन्तु आखिरकार मैं समझ रही हूँ, मैं जो दीखती हूँ आप मुझे उससे भिन्न ही समझते हैं।

एरिक — मेरा ख्याल कुछ-कुछ ऐसा ही था।

एर्ता — महाराज एरिक, आप सुनेंगे ?

एरिक — मेरी बहुत इच्छा है लेकिन अगर सच सुननेको मिले।

एर्ता — तो आसलोगके आगे मुझे धोखा न देना।

एरिक — बात वाजिब है। उसे पता न लगेगा।

एर्ता — और महाराज, अगर मैं गाने-नाचनेवाली न होकर, किसी और ही कामसे यहां आयी हूँ तो ? और फिर भी आपकी दोस्त, आपका भला चाहनेवाली या कम-से-कम नार्वेकी भलाई और उसकी शान्ति चाहनेवाली होऊं तो ?

एरिक — अब साफ-साफ बोल दो।

एर्ता — अगर मैं आपको लड़ाईमें एक भी बार किये बिना स्वेनको जीतनेका तरीका बता दूं तो आप मेरी कड़वी मांग पूरी कर देंगे ?

एरिक — मैं बहुत कुछ दूंगा।

एर्ता — देंगे न आप ?

एरिक — अगर उसे इस तरह जीत सकूँ और तुम्हारी इच्छाकी पूर्तिमें नार्वेको या खुद मुझे कोई नुकसान न हो।

एर्ता — ऐसा ही है।

एरिक — तो बोलो और मांग लो।

एर्ता — मेरी बात अभी खतम नहीं हुई। इसी बीच अगर मैं तुम्हारे सिरपर मंडराते खतरेको हटा दूं तो क्या मैं ज्यादा बड़े इनामोंकी अधिकारी नहीं हो सकती ?

एरिक — ज्यादा ? लेकिन उन्हीं शर्त्तोंपर।

एर्ता — अगर मैं तुम्हारे हाथोंमें बड़े-बड़े दुश्मन सौंप दूँ जिन्हें तुम जानते भी नहीं तो कहीं एक ही हिसाबमें अलग-अलग ऋणोंको उलझाकर मेरे सौदेको रद्द तो न कर दोगे ?

एरिक — क्या अभी कुछ और भी मांगना बाकी है ? तुम खूब मोल-तोल करना जानती हो।

एर्ता — नार्वेकी आवश्यक शान्ति, तुम्हें मित्र, सुरक्षा और साम्राज्य देनेके बदलेमें क्या मेरी मांगें अत्यधिक हैं ?

एरिक — मैं तुम्हारी तीन मांगोंको पूरा करूंगा।

एर्ता — इतना काफी है। जिसके पास पर्याप्त हो वह ज्यादाकी मांग नहीं करता मैं तीन बार मांगूँगी और एरिक तीन बार देगा। फिर नार्वेमें उसका कभी कोई दुश्मन नहीं होगा।

एरिक — बोल।

एर्ता — तेरे दुश्मन यहीं हैं। ये नर्तकियां नहीं हैं, किन्तु एर्ता स्वेनकी पत्नी है और आसलोग तोरलाइकसनके ओलाफकी बेटी और स्वेनकी बहन है।

एरिक — अच्छी बात है।

एर्ता — खतरा आसलोगके हाथसे है और वह अपने साथ कटार लिये घूमती है जिसे वह तुम्हारी छातीमें घोंपना चाहती है। आज रातको वह वार करेगी।

एरिक — और स्वेन ?

एर्ता — मुझे उनके पास यह भयंकर समाचार लेकर भेजो कि आसलोग तुम्हारे

हाथोंमें पड़ गयी है; इस तरह आसलोगकी जानके बदलेमें उनका समर्पण खरीद लो। और फिर राजकीय उदारता और विश्वाससे उनका प्रेम जीत लेना।

एरिक — त्रोण्डियमकी भूतपूर्व रानी, तुमने दिल खोलकर स्पष्ट बातें की हैं। अब उसी तरह दिल खोलकर मांगो।

एर्ता — स्वेनका जीवन और उनकी आजादी भी, यदि वे समर्पण कर दें।

एरिक — वे तेरे हैं।

एर्ता — और आसलोगकी जिन्दगी और उसे क्षमा, किन्तु आजादी नहीं।

एरिक — वे भी दिये।

एर्ता — अन्तमें हे महाराज, मेरे लिये क्षमा। मेरे देशद्रोह और षड्यन्त्रोंके लिये क्षमा।

एरिक — यह भी देता हूँ।

एर्ता — अब मांगनेके लिये कुछ भी नहीं बचा।

एरिक — तेरी बात पूरी हो गयी? तो अब तुझे तेरी जेलमें भेज दूँ?

एर्ता — मेरी जेल! मुझे स्वेनके पास न भेजोगे?

एरिक — नहीं भेजूँगा। अरे सूक्ष्मबुद्धि, खतरनाक मस्तिष्क, एक बार आजाद होनेके बाद न मालूम तेरे विचारोंमें कैसे-कैसे भयानक षड्यन्त्र उछलने लगें। क्या मैं स्वेन जैसे उग्र और अद्भुत योद्धाको उसकी तलवारको संपूर्ण बनाने और उसका मार्ग दर्शन करनेके लिये ऐसा चालाक दिमाग दूंगा? अगर वह न झुका या उसने शान्तिका सन्देश न माना तो? तुम उसे यह न बता दोगी कि आसलोगकी जिन्दगी सही सलामत है? चलो कारागाहकी राह लो।

एर्ता — महाराज! आपने वचन दिया था।

एरिक — एर्ता, स्वेनकी पत्नी, मैं तुझे दिये गये वचन निभाता हूँ। स्वेनके लिये तुमने जान और आजादी, आसलोगके लिये जीवन और क्षमा और अपने लिये सिर्फ क्षमा मांगी थी। मैं भी चालाक हो सकता हूँ। एर्ता, तुम मेरी कैदी और दासी होगी।

एर्ता — (जरा रुककर, सस्मित) अच्छा। मैं सन्तुष्ट हूँ। आपने नार्वेकी विजयी तलवार होनेके साथ-साथ अपने-आपको उसके मुख्य दिमागके रूपमें भी दिखा दिया। मैं मुक्त होऊं या बन्दी, मुझे अपने और स्वेनके महाराज एरिकका अभिवादन कर लेने दो।

एरिक — तुम सन्तुष्ट हो न?

एर्ता — यह चेहरा और उदात्त व्यवहार असत्य नहीं हो सकते। मैं सन्तुष्ट हूँ और आपके पास अपने-आपको उतना ही सुरक्षित अनुभव करती हूँ जितना अपने

पतिके साथ।

एरिक — (सस्मित) हां, यह तो है ही, ओ सूक्ष्म, विचक्षण वाणी, गुप्त और साहसी मस्तिष्क, काश, मैं भी तेरे पास अपने-आपको इतना ही सुरक्षित अनुभव कर पाता।

एर्ता — महाराज एरिक, मुझे अपना दुश्मन मत समझिये। आप जो चाहते हैं मैं उसे और भी ज्यादा चाहती हूँ।

एरिक — उसको मनमें रखो। आसलोगको शंका न होने पाये। मैं उसके, तुम्हारे और स्वेनके साथ अपने ढंगसे काम करूंगा। किसी तरहका भय न करो एर्ता, जाओ।

(एर्ता बाहर जाती है)

हे महारानी फ्रेया, थोर और ओडिनकी तरह आप भी मेरी मदद करती है। मैं अपने नार्वेको एक करके रहूँगा।

अंक ३

दृश्य १

एरिकका कमरा

एरिक और हाराल्ड

एरिक — पौ फटनेसे पहले मेरी कूचके लिये सब तैयार रहे। मैं स्वेनका सिर या उसका जीवित शरीर लिये विना न लौटूंगा। मेरे पास नर्तकी आसलोगको भेज दो।

(हाराल्ड बाहर जाता है)

मैंने साम्राज्यको आत्मज्ञानके साथ पुनः ग्रहण किया है। यह सशक्त देव-दूत प्रेम, यह उपद्रवी और तेजस्वी अतिथि निर्द्वन्द्व होकर मेरे हृदयको वशमें कर ले किन्तु मेरे मस्तिष्कपर हमला न बोले और निरंकुश वेसुरपनसे मेरी आत्माकी विभिन्न सुरसंगतियोंको खड़खड़ाते हुए चीर न डाले। और न मानवताके वैविध्यपूर्ण संगीतको एक ही और पागल बनानेवाली ध्वनिमें परिवर्तित करे। स्वभावमें शक्ति, मनमें ज्ञान और हृदयमें प्रेम भव्य पौरुषकी त्रिमूर्तिको पूर्ण बनाते हैं। मुझमें एक बहुत बड़ी त्रुटि थी। मैं कान्तिका उदासीन हिम-शैत्य ठहरा। यही एक खाली दरार थी जिसे मैं भर न पाया। उसने मेरी आत्माको देवका धड़ मात्र दिया, एक महान्, अपूर्ण रूप-रेखा भर। और मेरे कार्य मजबूत और अमार्जित उन चीजों जैसे थे जिनकी प्रशंसा तो होती है किन्तु जो चली जाती हैं — उस अमरतासे विहीन जो युगोंको चिरजीवी बनाती हैं।
ओ उनके शब्द सच्चे थे!

प्रेम, प्रेम ही कालकी खाईको भरता है। प्रेमद्वारा हम सितारोंसे नाता जोड़ते हैं और आकाशके विस्तृत उपयोग जान पाते हैं। भगवान्‌की प्रतिमा भव्य रीतिसे अपनी बनायी आत्मामें पूर्ण रूपसे प्रतिष्ठित है और मनुष्यके स्व-भावमें प्रतिबिम्बित होती है।

(आसलोगका प्रवेश)

तू मेरे पास आ गयी? अब और कृपा न दिखाऊंगा। तेरे वक्षमें क्या है?

आसलोग — बस एक हृदय।

एरिक — एक उदात्त हृदय, पर स्वेच्छाचारी। आसलोग, वह मुझे दे दे ताकि वह उषाओंका रहस्य बन सके। आसलोगके वक्षमें निवास करनेवाला माधुर्यसे भरा हृदय जो विद्रोहसे मुक्त और प्रेमसे शासित होगा।

आसलोग — तुमने मुझे क्यों बुलाया और आनेके लिये क्यों बाधित किया? क्या तुम अब भी मुझपर और खुद अपनेपर दया करोगे?

एरिक — मैं योद्धा हूँ, ऐसा जिसने दया कभी जानी ही नहीं। क्या तू मुझे यह सिखायेगी? आसलोग, मैंने अपनी आत्मा और जीवनसे देवोंकी महान् विज्ञ, निर्दय शान्ति सीखी है। देव अपनी गतिके मार्गमें आनेवाली हर बाधापर गर्वीले, क्षिप्र प्रहार करते हैं, अनगढ़ धरतीपर थौरकी हथौड़ी चोटें करती है —मैंने अपनी शक्ति वहींसे पायी है। उसकी इच्छा-शक्तिको एक भयानक भट्टीमें झोंककर आकार दिया गया है, उसके रास्ते दिव्य बलप्रयोगके द्वारा काटकर तैयार किये गये हैं। क्या उससे बड़ा और अधिक मधुर कोई उपाय है? क्या तू उसे जानती है? मुझे उस राहपर ले चलेगी? तू अपने फुर-तीले और उल्लासभरे पगोंसे उसके फूलोंपर चल सकेगी?

आसलोग — मैं नहीं जानती तुम्हारी वाणीको कौन प्रेरणा देता है; वह गहराइयों-तक चुभती चली जाती है।

एरिक — आज रात मेरा मन नार्वेकी आवश्यकताओंसे भरा है। आसलोग, वह तेरी मूर्ति धारण कर रहा है।

आसलोग — मेरी! काश आज रात मैं नार्वे न होती!

एरिक — तू स्वेनको जानती है?

आसलोग — जानती थी और याद भी है।

एरिक — हां, स्वेन,—वह आदमी नहीं, ओजस्वी और प्रचण्ड, उग्र और महान् आत्मा है, तूफान है, पवनसे आलोड़ित समुद्र है। वह नार्वेपर कब्जा करेगा? वह उसे एक करेगा? किन्तु ओडिनने यह काम मुझे सौंपा है। मैं इस मर्त्य शरीरमें ओडिनका काम करने आया हूँ।

आसलोग — इसी तरह महत्त्वाकांक्षा और इच्छाको दिव्य रूप दे लो!

एरिक — अगर इस मर्त्य शरीरको तोड़ा जा सके तो शायद स्वेन राज्य कर पाये — जो स्वयं अपने ऊपर शासन नहीं कर पाता वह सारे नार्वेपर राज्य करेगा? आस-लोग, क्या तू अपने ऊपर शासन कर सकती है? महान् और भावभरे हृदयों-के लिये यह बड़ा कठिन काम है।

आसलोग —— (स्वगत) तो क्या स्वेनको मरना होगा ताकि एरिक राज्य कर सके ! क्या देव कोई और रास्ता न निकाल सके ?

एरिक —— राजाओंके वैर घातक होते हैं।

आसलोग —— ऐसा ही है। (अपनी कटार टटोलती है)

एरिक —— आसलोग अपना हृदय टटोल रही है ? वह अशासित है और अपने उद्दण्ड आवेगोंके अनुसार इधर-उधर भटकता है और मुसीबतें ढाता रहता है। और ऊपरसे स्वप्न लेता है कि वह दुनियाकी मदद कर रहा है। आसलोग, मैं ऐसे बेलगाम पर उदात्त हृदयके साथ क्या करूं ? हम उसे प्रेमकी जंजीरोंसे न जकड़ दें, उसके संचित दुःख और कोपको लूटकर उसे उसीकी परम इच्छाके साथ न वांध दें ? वह एक निरंकुश शासनके नीचे, एक मधुर बन्धनद्वारा अपने-आपसे मुक्त होकर धड़केगा।

आसलोग —— और उसमें भरे अन्य आवेगोंका क्या होगा ? क्या वे कभी बगावत न करेंगे ?

एरिक —— वे चुप रहेंगे। वे न चिल्लायेंगे न प्रश्न ही करेंगे; वे विश्वास करेंगे।

आसलोग —— (स्वगत) कहीं ऐसा तो नहीं कि वह मेरा पूरा हृदय पढ़ रहा हो ! इसकी वाणीद्वारा देवता मेरे साथ खेल कर रहे हों !

एरिक —— क्या तुझे मालूम है कि तू यहां क्यों बुलायी गयी है ?

आसलोग —— मुझे मालूम है कि मैं यहां क्यों हूँ।

एरिक —— आसलोग, कम लोग यह जानते हैं कि वे क्यों आये हैं क्योंकि यह तो दैवका रहस्य है। मेरे पास बैठ, मेरे हृदयके और पास आ। हिचकिचा मत। आ, मैं तेरे हाथ नहीं पकड़ रहा।

आसलोग —— वे अभीतक आजाद हैं। (स्वगत) क्या देवता जल्दी प्रहार करनेका आदेश दे रहे हैं ? मेरा हृदय चकरा कर एक आग उगलती खाईमें गिर रहा है। (प्रकट) अगर तुम प्रेमसे शासन करना चाहते हो तो क्या तुम्हें अपने दुश्मनों-पर दया न दिखानी चाहिये ?

एरिक —— जब वे समर्पण कर दें। तूने चुनाव कर लिया ? तेरे अन्दर मेरे विरुद्ध जो भी प्रतिवाद या मोरचाबन्दी है इसका जल्दी उपयोग कर ले इससे पहले कि मैं तेरे चंचल हाथोंको और उनसे भी चंचल हृदयको पकड़ पाऊं जो स्वर्ग-सुखसे दूर भागा जा रहा है।

(आसलोग कांपती हुई उठती है)

आसलोग —— राजन्, तुमने चाहा था न कि मैं आज रात तुम्हारे सामने नाचूं ?

एरिक —— मेरी इच्छा थी। क्या अब तेरी भी यही इच्छा है ? नाच ले, जबतक ये अंग तेरे अपने हैं।

आसलोग —— मैं कटारके साथ थिओरडिसका वह नांच करूंगी जो त्रोण्डियममें एर्ता-को सिखाया गया था और उसने मुझे सिखाया था।

एरिक —— (मुस्कराते हुए) आसलोग, मेरी नर्तकी, तेरे नाचमें और तुझमें साहस तो है लेकिन सूक्ष्म बुद्धि बहुत कम है।

आसलोग —— (कुछ दूर जाते हुए) (स्वगत) जालमें अधिक हाथ मारनेसे क्या लाभ ? व्यर्थकी यन्त्रणा! वह जानता है और चौकन्ना है! मैं उसपर अचानक प्रहार करूंगी। मेरे कार्यके अनुरूप लड़की अपने दोनों ओर खाई देखकर भी जरा न सकुचायेगी, किन्तु प्रहार करते हुए अपने रक्तके स्पर्श-दोषको भी धो डालेगी। जो अपने हृदयकी दुर्वलताकी शिकार नहीं है वह इसी तरह काम करेगी।

एरिक —— उस खतरनाक खिलौनेसे बस यूँ ही खेलती रहेगी ? चल, नाच कर।

आसलोग —— मेरे अंग इन्कार करते है।

एरिक —— उन्हें कोई अधिकार नहीं।

आसलोग —— (स्वगत) ओ देवो, इस भट्टीमें डाले जानेसे पहलेतक मैं अपने-आपको न पहचानती थी। ओडिनके व्यंग्यने ही मुझे ओलाफके बीजमेंसे आकार दिया था। मैं जंजीरोंसे और गुलामीसे प्रेम करती हूँ, और अपने पिंजड़ेमें पंख फड़-फड़ाते जंगली पंखीकी तरह मेरा हृदय एक अत्याचारीकी कठोरता चाहता है।

एरिक —— नाचेगी ? या जबतक तेरे अंगोंकी अनुरक्त गति मेरे स्पर्शके आनन्दको याद करे तबतक प्रतीक्षा करेगी ? मैं चाहूँगा कि तेरी श्रेष्ठ गति प्रेमका स्वप्न बन जाय। किन्तु वह तब होगा जब नार्वे सिर्फ मेरा होगा और स्वेन पकड़ा जायगा। कल पौ फटते ही मैं घोर युद्धके लिये कूच करूंगा और स्वेनकी तलवार-को तेरा खिलौना बनानेके लिये ले आऊंगा। वह तेरे नाचके अभिनयमें एक अच्छा सहारा होगी। आसलोग वह तेरी कटारकी जगह ले लेगी।

आसलोग —— (स्वगत) भाग्य अब भी उसकी वाणीके द्वारा मुझे बढ़ावा देता है और एरिक ही मेरी दुर्वलताको एरिककी हत्या करनेके लिये पुकारता है। हां, लेकिन उसे सन्देह है, वह जानता है। फिर भी मैं प्रहार करूंगी, अपने विद्रोही हृदयको पैरो तले रौंदूंगी और जब यह हो चुकेगा तो अपने-आपपर प्रहार करूंगी और साथ ही दुःख, शर्म और प्रेमको भी खतम कर दूंगी।

एरिक —— मैने तुझे जो हार दिया था वह कहां है आसलोग ? हिम-श्वेत वक्षपर

अनुरागके मानिकको तेरे नृत्यके साथ, समुद्रकी तालमें तेरे वक्षपर उठते-गिरते देखना चाहता हूँ। मेरे जीवनके तालका सर्जन करते हुए नाच, और मैं तेरे नृत्यसे उस प्रहारका सर्जन करूंगा जो स्वेनको जीत लेगा।

आसलोग —— हार ? मैं लाती हूँ ?। (स्वगत) अनुरागके मानिक ! फिर भी मौत-के रक्त-विन्दु !

(बाहर जाती है)

एरिक —— आघात करनेकी शक्ति उसके हाथोंसे जा चुकी है, सिर्फ उसके जिद्दी विचारों-में वाकी है। उसका ख्याल है कि वह प्रहार कर सकेगी। कोशिश कर देखे।

(वह लेट जाता है और सोनेका वहाना करता है। आसलोग वापस आती है)

आसलोग —— (स्वगत) अब मैं उसे मार सकती हूँ। किन्तु वह आंखें खोलेगा और अपनी दृष्टिके सौंदर्यसे डरायेगा और विस्मित करेगा। उसे खतरेका पता न था ! उसने जो कहा वह सिर्फ भटकते विचार निकल रहे थे या —— भाग्य ही वोला था ? वह आखिरी नींद सो रहा है क्या ? मैं उसे एक बार, बस एक एक वार प्रेमसे छू न देखूँ —— और मेरे और मौतके सिवा किसीको पता भी न लगे। मुझे उसकी ऐसे हत्या करनी होगी जैसे कोई घृणासे हत्या करता है —— लेकिन एरिक, घृणा नहीं, देवोंकी भेजी हुई जीवनकी कठोर आवश्यकताके कारण,——दो ज्वालाएं जो एक-दूसरेको बुझानेके लिये ही मिलती हैं। एरिक, वस एक वार, फिर क्रूरता भरा आराम ! मैंने उसे छुआ क्यों ? मैं कमजोर हो गयी ! मेरी शक्ति मुझसे हटती जा रही है। हे ओजस्वी देव, तुम क्यों स्वेन और आसलोगके दुश्मन वने ? हम कितनी आसानीसे प्रेम कर सकते थे। किन्तु अब मौत हमारे वीच आ खड़ी हुई है और तुम्हें मेरे ही हाथों मांग रही है —— और वह मेरे लिये बस यही उपाय छोड़ती है कि मैं तेरी हत्या करूं और तेरे साथ-ही-साथ स्वयं भी मर जाऊं, यही हमारा एकमात्र गठबन्धन होगा। मौत ! किसकी मौत ! एरिककी या स्वेनकी ? मुझे एकको मारना होगा। चुनावकी कैसी विकराल आवश्यकता !

उसकी सांस बड़ी शांतिसे, सुखद तालमें चल रही है। उसकी बन्द आंखें स्वर्गमें सोते हुए ओडिन-की-सी हैं। अगर आघात करना है तो इसी क्षण करना चाहिये क्योंकि समय सुरंग बनानेवालोंके जैसा है जो मेरे बचे-खुचे निश्चयको भी खोदे डालता है। स्वेनकी मौत या जिन्दगी इतने छोटे-से क्षणपर निर्भर है। उधर स्वेनकी मौत या जिन्दगी और इधर इतना आसान-सा वार ! फिर

भी हाथ उठाना कितना असंभव है ! प्रतीक्षा करूं ? कुछ क्षण और उन बन्द पलकों और शान्त मुखड़ेको देखती रहूँ और स्वप्न लेती रहूँ कि यह सब कुछ और ही है ! किन्तु क्षण नियतिके विचार हैं जो हमें सतर्कतासे देख रहे हैं। मैं इधर रुकती हूँ तो उधर मेरे भाईकी हत्या होती है, मैं स्वयं एक रखैल और गुलाम होनेका दुर्भाग्य पाती हूँ।

मुझे उसके बारेमें सोचना न चाहिये ! हे मन, बन्द हो जा, ओ मेरे नयन, बन्द हो जाओ ! विचारहीन हाथको अपना कठोर काम करनेके लिये आजाद छोड़ दो। (वह दो बार कटारको ऊपर उठाती है और नीचे करती है फिर उसे जमीनपर फेंककर एरिकके चरणोंमें घुटने टेक देती है) (प्रकट) नार्वेके एरिक, जिन्दा रहो और आसलोग, स्वेनकी वहन और ओलाफकी बेटी, त्रोण्डियमकी आसलोगके साथ जो चाहो करो। क्योंकि उसके विचार वेश्या-के बन चुके हैं, उसका हृदय रखैल और उसके हाथ अपने भाईके हत्यारे हैं।

एरिक — आखिर तू सध गयी !

आसलोग — आह, मैं अपने दुर्वल और दुष्ट स्वभावसे हारी हूँ। राजन्, अत्याचारके लिये जितने भी परिचित अपमान हैं, जितनी भी नीचता हो सकती है, उनमेंसे एकसे भी मुझे बचाये न रखना ! अन्यायभरे ढंगसे दया न दिखाना ! मैं उस सबके लायक हूँ और सभीके लिये तैयार हूँ।

एरिक — आसलोग !

आसलोग — नहीं, मैंने अपने नाम और मां-बापके नामसे हाथ धोये। मैं वह नहीं हूँ जो त्रोण्डियममें रहती थी। वह असफल न होती, उसने प्रेम भी किया होता तो भी हत्या कर बैठती। अबसे कोई आवाज मुझे आसलोग कहकर न पुकारे।

एरिक — स्वेनकी बहन, तू जानती है कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। ओलाफकी बेटी, क्या तुझे मेरे साथ नार्वेके सिंहासनपर बैठनेकी आकांक्षा न करनी चाहिये ?

आसलोग — बाज आओ ! जिस आसनपर ओलाफ बैठते थे उसे तुम एकदम कलंकित न करो। अगर मैंने प्रहार कर दिया होता, हत्या कर डाली होती, तो मैं राज-सिंहासनसे भी अधिकके योग्य होती किन्तु मुझ जैसोंपर नार्वेका मुकुट न रखा जाना चाहिये। मुझ जैसे कमजोर प्राणीपर, जिसकी भुजाएं उसके हृदय जैसी निर्वीर्य हैं, जो वासनाओंकी दास है, जिसका व्यसन-प्रिय शरीर उसके उच्च आदर्शको नीचा दिखाता है — उसके साथ अपनी निरंकुश इच्छा-के अनुसार व्यवहार करो। राजन्, मुझे छोड़ दिया तो मैं अब भी तुम्हारी हत्या कर डालूँगी।

एरिक –– अपने हृदयसे पीछे मत हट, बल्कि सशक्त दृष्टिसे देख और उसकी पसन्दको अपनी आत्मापर निर्बाध रूपसे लागू होने दे। एक बार उसके मार्गको अपना लिया जाय तो तू देखेगी कि हृदय शीघ्रगामी होता है। तुझे हर बातमें ––जैसे समर्पणमें वैसे ही हत्यामें –– अबाध और उग्र होना चाहिये। हे मधुर उग्र प्राण, जिसे तेरे देव आश्चर्यचकित करते हैं, किसी लज्जाभरे प्रतिबन्ध और संकोचके विना अपने-आपको समर्पित कर दे।

आसलोग –– मैं जो दे चुकी उससे अधिक क्या मांग सकते हो ? मैं तुम्हारे सामने नतमस्तक हूँ, साष्टांग समर्पित हूँ।

एरिक –– अपने मनमेंसे अपने लिये हीनताका भाव निकाल फेंक। यह अनुभव कर कि मेरी होनेमें तुझे आनन्द ही आनन्द है। अरे तू कांप रही है ?

आसलोग –– हां, शर्म, दुःख और प्रेमसे। तुम ही मेरी नियति हो और मैं तुम्हारी मुट्ठीमें हूँ।

एरिक –– इससे बच जाओगी क्या तुम ?

आसलोग –– स्वेनको बचा दो, मैं तो तुम्हारे हाथोंमें हूँ।

एरिक –– क्या यह शर्त्त है ? मैं तेरा स्वामी हूँ और स्वेनका भी स्वामी हूँ –– चाहे मारूं चाहे जीवित रखूँ।

आसलोग –– नहीं, एक विनती मात्र। मैं यहां पड़ी हूँ, मेरा सिर तुम्हारे चरणोंमें है, मेरी जिन्दगी तुम्हारे हाथोंमें। और प्रणिपातका सुख मेरे हृदयमें है।

एरिक –– तो उठ, आसलोग, अपने स्वामीकी आज्ञाका पालन कर।

आसलोग –– आप मेरे साथ क्या करना चाहते हैं ?

एरिक –– पहले यह, आसलोग, अपनी कटार उठा, और थिओरडिसका कटारका नृत्य कर। मेरे आसपास देख ले; मैं बैठा रहूँगा और अगर तूने आघात किया भी तो अपनी रक्षा न करूंगा। जिस वस्तुको तेरे आवेगने चुना है, उसीको तेरा स्थिर-धीर हृदय भी अनुमति दे। मेरी जिन्दगी और मेरा राज्य दोनों तेरे हाथोंमें हैं और मैं उन्हें तेरे उपहारस्वरूप ही रखूँगा।

आसलोग –– वे उसी रूपमें तुम्हारे हैं फिर भी मैं आज्ञा मानूँगी। एरिक, मेरे राजा, और नार्वेके महाराज, मेरी जिन्दगी अब मेरी न होकर तुम्हारी है, चाहे रखो चाहे तोड़ दो।

एरिक –– स्वेनकी जिन्दगी मेरे हाथोंमें है। कटारके साथ-साथ तू मुझे वह भी दे चुकी है।

आसलोग –– वह बचानेके लिये तुम्हारी है।

एरिक — तू ओलाफके कुलसे नार्वेको हमेशाके लिये दूर फेंककर मुझे दे रही है।

आसलोग — तुमने जो ले लिया है वही देती हूँ।

एरिक — अन्तमें मेरे आवेगमय सशक्त सर्व-भक्षी प्रेमके विरुद्ध एक भी आश्रयके बिना अपग-आपको दे दे। तू देखती है कि मैं तेरे ऊपर जरा भी दया नहीं दिखाता।

आसलोग — (मन्द स्वरमें) मैं तेरी हूँ। मेरे साथ जो मरजी कर।

एरिक — क्योंकि तेरे लिये और कोई चारा नहीं है।

आसलोग — मेरे लिये कहीं कोई सहायक नहीं है। मेरे देवता मुझे यहां लाकर तुम्हारे भयंकर हाथोंमें सौंप गये हैं।

एरिक — आखिर तू सन्तुष्ट है न कि उन्होंने तेरे मनमें यह षड्यन्त्र तेरी आत्माको उसकी उग्रताद्वारा फंसानेके लिये फूँका था ताकि मेरे पास एक बांदी, ओजस्वी अंगोंवाली बन्दिनी आ जाय और तू अपने स्वामीके पास पहुँच जाय। तेरी कटार मेरे हृदयको, चाहे वह अरक्षित होता, बस उसी भांति छू पाती जैसे हवा सूर्यको। नियति और तेरा प्रेम तेरे हृदयमें मेरे मित्र थे। तेरे लिये यह ओडिन-की निशानी है, उसे देख।

आसलोग — अब मैं उसे जान गयी हूँ। मैं नतहृदय हो अपने भाग्यको पहचानती हूँ और शान्तिसे अपनी जंजीरें पहन लूँगी, फिर कभी उन्हें तोड़नेकी कोशिश या इच्छा भी न करूंगी।

एरिक — अपने भाग्यका भार और अपने अंगोंकी निधि और अपना अमूल्य जीवन मुझे सौंप दे। मैं इस सुवर्ण धरोहरको सावधानीसे रखूँगा। तेरे पास वह सुरक्षित न थी। और आखिर अब आनन्दसे समर्पण कर दे। हे आसलोग, शरीर और आत्मासे अपने प्रेमी और प्रभुके आगे समर्पण कर दे।

आसलोग — मुझे बाधित कर, वे तेरी इच्छाका विरोध नहीं कर सकेंगे।

एरिक — किन्तु मैं तेरे हृदयका समर्पण लूँगा सिर्फ शरीरका नहीं। अपना हृदय मुझे दे दे। उसके बन्द कमरे खोल दे और उनकी चावियां मुझे सौंप दे।

आसलोग — हे एरिक, क्या मेरा हृदय तेरा नहीं हो चुका? क्या मेरा शरीर और मेरी आत्मा तेरे कब्जेमें नहीं दिये जा चुके? मैं प्रसन्न हूँ कि भगवान्ने मेरे करुणांत नाटकके साथ महान् विदूषकका अभिनय किया है और मुझे तेरे आनन्द-के जालमें फंसा दिया है।

एरिक — आसलोग, धरतीकी एकमात्र स्त्री! तू हमारे लिये पुरानी उलझनों-के कारण छिपी हुई आनन्दकी आशाओंको बचानेके लिये ही यहां आयी है।

किसी दिन यह दुनिया भी प्रेमद्वारा मौतसे अवश्य बचायी जायकी। तूने स्वेन-को वचाया, नार्वेकी मदद की। देख आसलोग, अपनी वेदीसे फ्रेया इस कमरे-पर शासन कर रही है। और उसीके आगे धूप-दीप जल रहा है। तेरे लिये थोर नहीं फ्रेया ही रहे।

आसलोग — मेरे लिये तो वस तुम ही! और कोई देव नहीं!

एरिक — आसलोग, तेरी ऊंगलीमें एक अंगूठी है। फ्रेयाके सामने वह मुझे दे दे और उसकी जगह यह पुरानी नार्वेके धार्मिक अनुष्ठानवाली मुद्रा पहन ले। प्रिये, इस चीजका जो भाव है वह — जवतक यह सृष्टि खड़ी है — तुझे हमारे सुखसे बांधे रहेगा। तब अगर तेरी आत्मा अपने घरसे भटक भी जाय तो फ्रेया अपनी दासीको ढूंढ़ निकालेंगी और उसे करोड़ों वर्षों बाद भी वापस ले आयेंगी।

आसलोग — करोड़ो जिन्दगियां!

दृश्य २

आसलोग — मेरे लिये एक ही रातमें दुनिया वदल गयी! और जरूर, जरूर सब कुछ ठीक तरह चलेगा क्योंकि प्रेमका अभिषेक हो गया है।

एरिक — (प्रवेश करते हुए) आसलोग, समय आ गया है जब तुझे छोड़कर जाना होगा। धीरे-धीरे हमारे कमरेमें धुँधली-सी उपा दिखायी देने लगी है। और ये पहली विरल ध्वनियां उगते सूर्यकी, दिनके प्रकाशमें चमकती दुनियाकी प्रतीक्षा कर रही हैं।

आसलोग — एरिक, यहांसे तुम स्वेनसे, मेरे भाईसे युद्ध करने जा रहे हो न?

एरिक — तेरा दिल क्या कहता है?

आसलोग — कि स्वेन जिन्दा रहेगा।

एरिक — तू जानती है कि सावधान तलवारोंसे वह सुरक्षित है। जिस सिरसे आस-लोग प्रेम करती है उसे कोई छूनेकी हिम्मत नहीं करेगा। फिर भी ओडिन और मेरी इच्छाके वावजूद अगर कोई अशुभ अवसर विनाश लिये आ जाय या वह लड़ाईमें अपने प्रतापी दु:साहसके कारण मारा जाय तो तू मुझे उसकी मौत-का दोषी तो न ठहरायेगी आसलोग?

आसलोग — भाग्य ही सब आदेश देता है और अब मैंने पहचान लिया है कि भाग्य ही सारे संसारकी वह रहस्यमय इच्छा है जो प्रेम करती है और श्रम करती है।

एरिक —— चूँकि वह परिश्रम करती और हमारे हृदयोंसे प्रेम रखती है इसीलिये हमारी इच्छाओंकी भी गिनती होती है, उनका भी मन रखा जाता है। आसलोग, इन थोड़े दिनोंके लिये अपने मनको आशा और विश्वासके लंगरसे बांधे रख। मैं तेरे आनन्दको वापस ले आऊंगा, क्योंकि मैं हृदयोंमें अनुकम्पा लिये हुए, प्रेमकी ओरसे जा रहा हूँ।

(आलिंगन करके चला जाता है)

आसलोग —— स्वेन जिन्दा रहेगा। एक हृदय शासन करता है, इस्पातके देवता नहीं।

अंक ४

दृश्य १

पहाड़ोंमें स्वेनका दुर्ग

सैनिकोंके साथ स्वेन, हार्डिकनुट, रेग्नार

स्वेन — लड़ते जाओ, हमेशा लड़ते चले जाओ। जबतक देवता भी थक न जायं तबतक लड़ते जाओ। भूतकालकी इस घटती हुई टुकड़ीमें है कोई मनुष्य ऐसा जो सन्मार्गसे सुस्ताना चाहता हो, दुःसाहसपूर्ण स्वतन्त्रता-संग्रामसे हट जाना चाहता हो ?

हार्डिकनुट — यहां कोई भी आगा-पीछा नहीं करता।

स्वेन — जिसकी ऐसी इच्छा हो वह यहांसे सही सलामत निकल जाय।

हार्डिकनुट — कोई जाय ही क्यों और जाय भी किधर ? एरिककी तलवारके पास, जो कभी माफ नहीं करती ? अगर हमारे हृदय दुष्ट या चरित्रहीन होते, अयोग्य रूपमें पराजयसे व्यग्र होते, किसी उत्पीड़ित सत्यकी नहीं, अवसरवादिता और लाभकी सेवा करते तो स्वयं एरिक उन्हें सच्चा और वफादार बनाये रखता।

स्वेन — तेरी बात नहीं है, मेरी दूसरी आत्मा। फिर मैं पीछा करनेवालेको माफ कर देता। क्योंकि प्रहार कमालका है और अगर महाराज एरिक यारामें न होते, जहां वे रहते हैं, तो मैं इस पराजयमें उन्हींका हाथ समझता, उन्हींका प्रहार विद्युत जैसा सीधा और नीरव होता हैं, जिससे बचना असम्भव है।

हार्डिकनुट — शायद आक्रमण तो सिगार्डने किया, किन्तु एरिकका मस्तिष्क ही उस प्रहारका स्वामी था।

स्वेन — विश्वासघाती सिगार्ड ! युवा एरिकने ओलाफकी मौतमें जो भाग लिया वह एक वीर योद्धाका काम था। उसने यारिस्लाफ और हाकुनकी हत्याका बदला ले लिया। और हत्या भाग्यने की थी एरिकने नहीं। जब विद्रोही सामन्त आनन्द-मग्न होकर उस राजसी सिरको कुचल रहे थे, जिसकी वे आज्ञा मानते थे, उस समय जो व्यक्ति विश्वस्त होते हुए भी अपने राजाको मौतके मुँहमें ले गया, उसे मैं किसी दिन अपनी तलवारकी धारसे समझ लूंगा। (प्रवेश

करते हुए रेग्नारसे) रेग्नार, क्या आखिरी हमला आ रहा है, मौतके नगाड़े बज रहे हैं?

रेग्नार — बल्कि, शान्ति। स्वेन, अगर तुम पसन्द करो तो। एरिककी सेनासे एक दूत आया है।

स्वेन — रेग्नार, उसे अन्दर लिवा लाओ। (रेग्नार बाहर जाता है) वह विजयी-की भान्ति व्यवहार करता है? जब उसका राज्य डगमगा रहा था, उसका दल लड़खड़ा रहा था तब तो उसने ऐसा व्यवहार न किया था। और न उसने तलवार छोड़कर कोई और दूत ही भेजा। (रेग्नारके साथ आते गुन्तेरसे) सामन्त गुन्तेर, स्वागत है — तुम वफादार होते तो और भी अधिक स्वागत होता।

गुन्तेर — रेग्नार, स्वेन और हार्डिकनुट, विद्रोही सामन्तगण, मैं नार्वेके महाराजकी ओरसे शान्ति लिये आया हूँ, धमकी नहीं।

स्वेन — वह उत्तरवासी इतने दिनोंतक तुम्हारे पीछे कहां छिपा रहा?

गुन्तेर — तुम उनकी भंयानक छायामें हो और तुम्हारी इस पहाड़ी मांदमें एरिकने तुम्हें चारों ओरसे घेर लिया है।

स्वेन — (उपेक्षापूर्ण) मैं उसके शब्द सुनूँगा।

गुन्तेर — यारिस्लाफके पुत्र महाराज एरिककी ओरसे त्रोण्डियमके सामन्त स्वेनको: "जो कारण और संताप तुम्हें अभीतक मेरे राजपदके विरुद्ध खड़ा किये हुए हैं उन्हें मैं जान गया हूँ। तुम्हें भी वे कारण मालूम हैं जिन्होंने मुझे तुम्हारे पिताके विरुद्ध खड़ा किया था,—हाकुनकी मौत, मेरी मांके भाईका शर्मनाक ढंगसे मारा जाना और यारिस्लाफको गुप्त दंड देकर मौतके घाट उतारा जाना। देशके सामन्तोंद्वारा निर्वाचित होकर मैंने उसका सिंहासन ले लिया। किन्तु तुमने अपने देशके पुराने कानूनोंके विरुद्ध विद्रोह करते हुए तलवारको ही निर्णयक-के रूपमें अधिक पसन्द किया। तो अब अपनी पसन्दके न्यायालय और उसके निर्णयका मान करो।

तुम शीत निरानन्द पहाड़ियोंपर सुनासन किलेमें क्यों मरना चाहते हो? अपने उदार देवोंके उपहारको स्वीकारोगे तो त्रोण्डियमकी जागीर, मान, सम्पत्ति और पद सब कुछ मिलेगा। हे स्वेन, अपने देशके घावोंपर विचार करो, अन्तमें अपनी और हमारी भलाई देखो, अपने पिताके कुलको आगे बढ़ने दो" मैं तुम्हारे उत्तरकी प्रतीक्षा करता हूँ।

स्वेन — मैं उसकी दी हुई दया उसीको वापस करता हूँ। उसे सही सलामत रखे

रहे, पीछे उसीके काम आयेगी।

गुन्तेर — तुम बढ़-बढ़कर बोलते हो। तुम्हारे पास कोई चारा भी है? क्या आशा है? कौनसे प्रच्छन्न देव हैं?

स्वेन — वर्फ मेरी मित्र है और अगर वह चूक जाय तो मौतकी भुजाएं स्वेनके लिये काफी विस्तृत हैं, किन्तु गुलामी कभी नहीं।

गुन्तेर — तुम्हें जिनसे प्रेम है उनके लिये झुक जाओ, अपनी पत्नीके लिये, अपनी बहिनके लिये झुक जाओ।

रेग्नार — तुम समझदार नहीं हो। यह वात अनकही ही भली रहती।

स्वेन — मुझे आश्चर्य क्यों होता है अगर विजयी कीचड़ यह सोचे कि पवित्र आकाश उसीके तत्त्व और स्वभावका है?......अव भी ऐसे लोग हैं जो आशा करते हैं कि स्वेनकी राजभक्ति खरीदी जा सकती है, उसे मौतसे डराया जा सकता है और ओलाफके पुत्रको सुरक्षाकी घूँस दी जा सकती है। ऐसा लगता है कि राज-बीजोंका अपमान करना ही तुम्हारा मनबहलाव है। तुम्हारा ख्याल है कि मैं उस कलके नवाव, भाग्यके धनी, जीवनके सट्टेवाज, व्यंगप्रिय देवोंके कृपापात्र, उस लड़केके सामने झुक जाऊंगा? जब सिगार्डके विश्वाघात और एरिकके भाग्यसे संकरे सागरोंपर घमासान युद्धमें ओलाफ गिरे तब भी उनके वच्चोंने दुनियाको अपने महान् उत्सका प्रमाण दे दिया था। लोगोंने कहा है, "उनकी स्त्रियोंतककी आत्माएं देवोंतकके आगे दया याचना करनेके लिये अति महान् हैं।" उसका भाग्य अवश्य बहुत शक्तिशाली है, जो वह हमारी प्रजाको ऐसी शर्तें सुननेके लिये बाधित करता है! जाओ, अपने महाराजसे कह दो कि पुराने कुलका स्वेन तुम्हारे वरदानको अस्वीकार करता है। हमारे वीच कोप और रक्त छोड़कर और कोई समझौता नहीं हो सकता। मेरा पल्ला भारी होता तो मैं उसे सुनहरी सूलीपर चढ़ाकर उसका चमड़ा उतरवा लेता और उसकी औरतोंको घरकी बांदियां बनाता। क्या वह भी यह नहीं कर सकता कि नार्वेके मुकुटके लिये मोलतोल और सौदा कर ले? ये राजाओं-की रीति है, बलवान्, भयंकर और गर्वीले राजाओंकी, अपनी प्रभुता और अधि-कारसे मत्त राजाओंकी। राजाकी शक्ति मानो देवोंका आज्ञापत्र है। शक्ति-से न कि घूसखोरी या समझौतेकी व्यवस्थासे साम्राज्योंकी स्थापना होती है। किन्तु तुम्हारा नेता धनलोलुप सामन्तोंके घर जन्मा था जो दुनियादारीके लाभ-पर जीते थे। वह भला राजाओंकी उड़ानकी क्या नकल करेगा, या राजाओं-की तरह शिकारपर झपटना कैसे सीख सकेगा?

गुन्तेर — ओलाफ-सन स्वेन, तुम सांघातिक शब्द बोल रहे हो। तुम्हारी पत्नी और बहन कहां रहती हैं ? तुम्हें मालूम भी है ?

हार्डिकनुट — एरिककी पहुँचसे बहुत दूर।

गुन्तेर — तुम्हें पक्का पता है ?

स्वेन — इस प्रश्नका अर्थ क्या है ?

गुन्तेर — जिन देवोंसे तुम व्यर्थमें घृणा करते हो वे बलवान् हैं, उन्होंने एर्ता और आस-लोगको स्वीडनसे खींचकर एरिकके खतरनाक हाथोंमें सौंप दिया है, तुम जो अशुभ शब्द बोले वे सांघातिक रूपसे विरोधी शक्तियोंद्वारा प्रेरित थे।

स्वेन — तुम झूठ बोलते हो — वे सही सलामत हैं और स्वेन लोगोंके साथ हैं।

गुन्तेर — डरके मारे बोले गये तुम्हारे कठोर शब्दोंको मैं माफ करता हूँ। सामन्त स्वेन,क्या तुम देख नहीं पाते कि भयानक देवोंने अपनी इच्छापूर्तिके लिये धरती-के सबसे अधिक पराक्रमी पुरुषको चुना है ? वह इच्छा नार्वेकी एकता और नार्वेकी महानता छोड़कर और क्या है ? क्या तुम यह काम कर सकते ? एक लड़केसे अभिभूत नार्वेको देखो। जिस घोड़ेको ओलाफतक न सधा सके वह इन कच्चे हाथोंमें आज्ञाकारी बन गया। उसे एक छोटेसे कदममें ही सारे स्वीडन-पर अधिकार जमाते देखो। एक बार स्वीडन परास्त हो जाय तो क्या तुम समझते हो कि उत्तरीय सागरोंपर जमघट करनेवाले जहाज वहीं बने रहेंगे ? क्या ब्रिटेन न थर्रायेगा? एरिक क्या ऊंची आवाजमें यह प्रार्थना न करेगा कि तूफान उसकी जगह गोल[1] के खेतोंको चुने। सीथिया हमारे जुएको अपनायेगा, वोल्गाकी जमी हुई लहरें हमारे कूच करते हुए कदमोंको सहेंगी, अगर युवक देवकी कल्पना गुलाबसे सम्मोहित होकर इटलीके आनन्दभरे प्रफुल्लित सूर्य-स्नात क्षेत्रोंकी ओर प्रेममुग्ध होकर न मुड़ पड़े या उनका उच्च उल्लसित मन पूर्वीय रोममें राज करनेके लिये न चल पड़े। तुम उनके अभियानमें एक कंकड़-के सिवा क्या हो ? अब सोच-समझ लो और अपनी प्रचण्ड प्रतिक्रियाको बदल दो।

हार्डिकनुट — स्वेन, ये लोग जो झूठ बोलते हैं वह तुम्हारी बुद्धिको छल सकता है ? सामन्त गुन्तेर भले विश्वास कर लें, ज़ो यहांतक मानते हैं कि यारिस्लाफने एक देवको जन्म दिया था !

स्वेन — गुन्तेर, मेरे पास अपना भाग्य है और तुम्हारे पास मेरा उत्तर। जाओ।

1 फ्रांसका पुराना नाम।

गुन्तेर — स्वेन, मुझे तुम्हारी उतावली और जिद्दी आत्मापर दया आती है।
(वह बाहर जाता है)

स्वेन — आत्मसमर्पण करनेपर आसलोग मुझसे घृणा करेंगी, इस स्थितिमें और उसीकी खातिर झुकनेपर भी घृणा करेगी। कुशाग्र बुद्धि अत्याचारीने मेरी इच्छाशक्तिको डिगा दिया! हाय, अगर यह सच है तो मेरा भाग्य एरिकके दलमें भटक गया है, मेरी आत्मा उसकी कैदी बन गयी है। दोस्तो, सामना करनेके लिये तैयार हो जाओ; वह ऐसा वज्र है जो पहले प्रहार करता है और बादमें धमकाता है। यह हमारी अन्तिम लड़ाई होगी।

हार्डिकनुट — दुर्गम पहाड़ोंपर हम महाराज एरिक और उनके देवोंका सामना करेंगे।

दृश्य २

स्वेन सामन्तों और अनुचरों सहित भाग रहा है।

स्वेन — जल्दी करो, तेजी करो ऊपर बर्फकी ओर। सृष्टिकी चीजोंमेंसे केवल शाश्वत शीत ही एरिकके दुश्मनोंकी रक्षा करनेके लिये उसका सामना करनेकी हिम्मत कर सकती है। हे अनेक वीरोंके अवशिष्ट दल! नियतिके लिये अपने-आपको बचाये रखो। उसे अब भी तुम्हारी जरूरत पड़ सकती है जब वह देखेगी कि जिस आदमीको उसने हमेशा ऊंचा उठाया वह उसके लिये भी बहुत बड़ा हो गया है।

हार्डिकनुट — रेग्नार, उसके साथ जाओ, तबतक मैं पीछा करनेवालोंको रोके रखनेके लिये या समय रहते चेतावनी देनेके लिये खड़ा रहूँगा। मेरे लिये म डरो...... छोड़ो, रेग्नार, मुझे छोड़ दो: आखिर मैं थक गया हूँ। (हार्डिकनुटके सिवा सब ऊपर चले जाते हैं) तो यहां, इन बरफोंतक आ पहुँचे। काश, मेरी मृत्यु अब भी क्रुद्ध देवको बदलनेके लिये राजी कर पाती!

अंक ५

दृश्य १

एरिक, स्वेन, आसलोग और एर्ता

एरिक — सिर्फ प्रेमसे नहीं वल्कि बल और प्रेमसे। इस आदमीको उग्रके आगे अपनी उग्रताको नीचा करना होगा। उसके पास जो एकमात्र चीज बची है, उसका गर्व, उसे भी छीनकर उसे एकदम भिखारी बनना होगा जिससे वह अपने-आपको मिट्टीका लोंदा समझे। वह मेरी आत्माकी अपरिचित क्रियाका सन्मान न कर सका बल्कि उसकी अवज्ञा की और मेरे स्थिर सामर्थ्यको उसने थरथराना समझा। हाराल्ड, दरबार भरनेका घंटा बजा। मेरे ग्रहोंका स्वामी वह है जिसका कोई स्वामी नहीं। ओडिन, तुम अपनी दुनियाके साथ यह कैसी लीला कर रहे हो, पतन और उत्थानकी, मृत्यु और जन्मकी, महानता और सर्वनाश-की? ऐसा समय आ सकता है जब एरिकको याद न किया जायगा! हां, किन्तु एक ऐसी लिपि है, ऐसे अभिलेख हैं जो अमर रहते हैं। किसी उच्चतर जगत्में सिंहासनके आगे, अमर होठोंसे और युगोंके बीतनेपर भी तरुण आंखों-वाले चारण, समस्त अतीतके गीत गाते हैं और अमृतके पुत्र उन्हें सुनते हैं। इस विराट् जगत्में जिसमें हमारा सारा कार्यक्षेत्र एक रजकणके समान है — किसी जगह एक सनातन-स्मृति हमारी महान् और क्षुद्र चीजोंको समान रूपसे संजोये रखती है। उसकी दृष्टिमें एक किसानका रोना-धोना और किसीका पतन समान रूपसे करुण हैं। लोग कहते हैं कि आणविक संयोगने एरिकको यहां रखा है, स्वेनको वहां और आसलोगको दोनोंके बीचमें। किन्तु हे रहस्योद्घाटन करनेवाले देवो, मैंने अपने-आप उस अमरताको देखा है और उसे जानता हूं जो मेरे अन्दर, भले ही परदेके पीछे क्यों न हो, विचार करती है, योजना बनाती है और ऊहापोह करती है।

नार्वेके स्वामी, जय हो! क्योंकि यहां सब ही स्वामी हैं, मैं अकेला नहीं, मैं तो देवकी एकताका मस्तिष्क हूं, आप सबकी एकता हूं।

आखिर हमारे भाग्योंको डगमगानेवाला स्वेन नार्वेके हाथोंमें है। और अब नार्वे स्वेनके साथ, अपने बड़े-से-बड़े वीरोंमें से एकके साथ क्या करेगा?

गुन्तेर — एरिक, अगर उसका पराक्रम झुक जाय, उसका बल अधीनता स्वीकार कर ले तो उसे जीने दो हम सदा ही इन उपद्रवोंको नहीं सहते रह सकेंगे।

एरिक — नार्वे नहीं सहेगा इसलिये उसे समर्पण करना होगा। उसे अन्दर ले आओ। देखें यह लोहा मुड़ सकता है या नहीं, यह कच्चा लोहा आग सह पायेगा कि नहीं। ओलाफ-सन स्वेन, क्या तुम अब परिस्थितिपर विचार कर चुके हो? तुम अपने देवोंके आगे समर्पण करते हो या फिर स्वेन, हमें तुम्हारे लिये सजा सोचनी पड़ेगी?

स्वेन — मैंने अपने भीषण दुर्भाग्यको देखा है, मैंने अपने-आपको भी देखा है और जानता हूँ कि मैं उससे अधिक महान् हूँ। अपनी मनमानी कर लो, यारिस्लाफ-सुत जो आज्ञा देगा ओलाफका बेटा उसे सह लेगा।

एरिक — तुम समर्पण न करोगे?

स्वेन — मेरे पिताने वह शब्द नहीं सिखाया।

एरिक — मैं सिखाऊं? स्वेन, तुम अपने निराशाभरे शब्दोंको भूल गये हो या फिर वे सिर्फ आजाद बर्फीले पहाड़ोंके लिये ही बोले गये थे और अब उन्हें वापस ले लिया गया है?

स्वेन — यारिस्लाफके पुत्र, मैं अब भी अपने वचनपर दृढ़ हूँ। मैं उसी सलीबकी मांग करता हूँ जिसपर मैं तुझे कीलोंसे जड़वा देता, मैं चमड़ी उधेड़नेवाले चाकूकी मांग करता हूँ।

एरिक — यह सब तो अपने लिये, अपनी पत्नी और बहनके लिये स्वेन?

स्वेन — हाय!

एरिक — मेरा ख्याल है कि तुम्हारे पिताने तो यह शब्द नहीं सिखाया, किन्तु मैंने तुम्हें सिखा दिया है। तुम अभीतक प्रेम करते हो,—स्वेन, जो कोई यह कहे कि वह एकदम अकेला है, प्रेम करनेका साहस नहीं कर सकता — अतः तुम अनिवार्य रूपसे मेरे हो। तुम अपने रक्त, सामर्थ्यपर दर्प करते हो। तुम कहते हो कि तुम अपने दुर्भाग्यसे कहीं अधिक शक्तिशाली हो। स्वेन, क्या उन सबके दुर्भाग्योंसे भी अधिक शक्तिशाली हो? क्या तुम्हारा दम्भपूर्ण जातीय घमण्ड या तुम्हारे हृदयका सामर्थ्य मेरी उस इच्छाको रद्द कर सकता है जिसके हाथों तुम पड़े हुए हो? ओलाफ-सन स्वेन, देवता तुम्हारी जाति या तुम्हारे वंशसे ज्यादा शक्तिशाली हैं, देवता तुम्हारे अभिमानी हृदयसे अधिक बलवान् हैं। वे एक देशके भाग्यके विरुद्ध एक उग्र बलिके अहंकार, उसके अभिमान और उसकी इच्छाको न चलने देंगे। तुम्हारे पास कोई शक्ति नहीं

बची क्योंकि तुम और ये जो एरिकके मार्गमें अटल विघ्न थे, बाधा थे अब उसके गुलाम भर रह गये हैं। इसीलिये भाग्यने, उस नार्वेने, जिसका मैं कृपापात्र और भाई बन गया हूँ, क्रुद्ध होकर तुम सबको मेरी पकड़में सौंप दिया है। मैं चाहता हूँ कि तुम जियो और झुक जाओ। ये लोग तो झुकते हैं किन्तु तुम समझदारीका विरोध करते हो। भाग्य और प्रेम तेरे विरुद्ध अभिसंधि किये हैं। स्वेन, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि मेरे आगे झुक जाओ, मेरे साथ खड़े हो और अपने पिताके सिंहासनमें हिस्सा बंटाओ।

स्वेन — (मौनके बाद) हां, तुम उग्र और दुर्बोध हो! उन्हें मेरे हृदयके नहीं तो मेरे कर्तव्योंकी — अपने प्रति या सत्यके प्रति — वरीयताकी घोषणा करने दो।

एरिक — ओ संकुचित जिद्दी हृदय! अपने देश या लोगोंके पूजित आदर्शके लिये यह अवश्य एक उदात्त अन्धापन होता, किन्तु तुम तो केवल अपने गर्वको पोसते हो। स्वेन, क्या तुम उनके निर्णयके अनुसार चलोगे? आसलोग और एर्ता, अपने भाई और स्वामीको देखो। इस महान् बन्दीको देखो, जो एक समय राजा था, पर अब पराजित और मेरे हाथोंमें असहाय है। मैं उसकी महत्ताको, उसकी प्रजाको, उसके राजसी हृदयको बचाना चाहता हूँ किन्तु वह इसकी जगह सूली पसन्द करता है, तुम्हारी शर्म और तुम्हारा कलंक पसन्द करता है — आसलोग, तेरा भाई — एर्ता, तुम्हारा पति तुम दोनोंके अत्यधिक कलंकित होनेकी अनुमति देता है। अगर सदियोंतक वह इस वाक्यको खरीद सके कि "स्वेन फिर भी अड़ा रहा" तो वही उसके लिये सब कुछ है।

वह, जो नार्वेकी इच्छाकी कद्र करना भूल गया, अब तुम्हारे गर्व और प्रेमका मूल्य आंकना भी भूल रहा है। यह न राजोचित था न ओलाफके पुत्रके योग्य। आओ, तुम उससे बातचीत करोगी? उसे समझाओगी? उसे लेकर अकेले-में उस तरफ चली जाओ और उसके हृदयको लक्ष्य बनाओ। मेरी प्रजा एर्ता, मेरी दासी आसलोग, वह मान जाय तो इस जिन्दगीको बचाओ। स्वेन, याद रखो, अगर ओलाफ-सनके बच्चे शर्मके मुकुटसे मंडित गुलाम बनें तो उन्हें गुलाम बनानेवाले तुम होगे।

स्वेन — ओलाफकी बेटी, हम इस तरह मिल रहे हैं, — क्या नार्वेके बर्फीले पहाड़ बेहतर न थे?

आसलोग — वे ऊंचे थे, किन्तु ठंडे।

एर्ता — स्वेन, मेरे स्वामी, एर्तासे न बोलेंगे।

स्वेन —— एर्ता, हाय, तेरा कुटिल षड्यन्त्रकारी दिमाग हमें यहांतक ले आया।

एर्ता – देव यन्त्रोंका उपयोग करते हैं, उनकी अनुमति नहीं लेते। हे स्वेन, देवोंको और उनके निर्णयको स्वीकार करो।

आसलोग —— क्या हमें हमेशा सर्द हृदयसे ही रहना होगा ? हे भाई, अपने हृदयसे वर्फको निकाल फेंको। ग्रीष्मको आने दो।

एर्ता —— पति, सूर्यके आगे झुक जाओ। देवताओंके आगे झुकनेमें कोई शर्मकी बात नहीं है।

आसलोग —— और न ही एक देवके सामने झुकनेमें, चाहे उसका आवास धरतीपर हो और शरीर मर्त्य।

स्वेन —— एक बार एक आसलोग थी जिसकी वाणीमें कुछ और ही भव्यता थी। क्या वह अब कोई ऐसा तर्क नहीं खोज सकती जो तेरे इस पतनको क्षम्य बना सके ? न, नहीं, मेरे आगे नहीं, मेरी बहन, उस पूजनीय आत्माके आगे जो तू थी।

आसलोग —— कौन-सा तर्क ? मैं अपने हृदयको छोड़कर और कोई तर्क नहीं खोजती और न मुझे, जिस बातमें मैं गौरव अनुभव करती हूँ उसके लिये बहानेबाजी-की जरूरत है। भइया, हम दोनों हमेशा एक नहीं थे क्या ? विचित्र बात है कि मुझे तुम्हें समझाना पड़ रहा है।

स्वेन —— ओ, तू जानती थी। मैं इसी कारण गिरा, इसी कारण मेरी शक्ति चली गयी और जहां पहले एक दैवी प्रताप और वैभवका निवास था, वहां आज रिक्तता है। ओ, अस्थिर हृदय, तू ही मेरा भाग्य थी, मेरा साहस थी और अन्तमें तू ही दुश्मनकी ओर चली गयी और अपने साथ मेरा भाग्य और मेरे साहसको भी लेती गयी। ऐसीके मुखसे मैं एक शब्द भी न सुनूँगा। जो कुछ बचा-खुचा है तू उसे भी दे देगी, यहां तक कि स्वयं स्वेन भी स्वेनका न रहेगा, रह जायगी एक कायरकी छाया मात्र।

एर्ता —— स्वेन, मेरी बात सुनो।

स्वेन —— आह, एर्ता, मुझसे क्या कहना है तुम्हें ?

एर्ता —— मेरे स्वामी, यह भूल जाओ कि मैं दण्डकी पात्र हूँ, मुझे उससे बचाओ।

स्वेन —— हाय ! प्रिये, मेरे लिये तेरा प्रेम महान् था, पर महान् होते हुए भी कभी विवेकपूर्ण न था। किन्तु क्या उससे इतना बड़ा प्रतिदान मांगना चाहिये ? मैं खुद ही तेरा था।

आसलोग —— तुम मेरी मान मर्यादा मांगते हो। क्या इससे मान जाओगे ? मेरे पास और कुछ भी नहीं रहा।

स्वेन — हां, आखिर तुमने मेरी शक्तिको जीत ही लिया। केवल तू ही और इसी तरहसे मुझे पराजित कर सकती थी। महाराज, आप जीत गये। मैं आपके सामने झुकता नहीं किन्तु जिन्हें मैं प्यार करता हूँ वे आपके साथी बन चुके हैं। इनसे अपने कोपको वापस ले लो। उनकी जगह मुझे जो दण्डाज्ञा चाहें दे दें। हालांकि झुकना ही अपने-आपमें नार्वेके स्वेनके लिये सर्वनाश है।

एरिक — विद्रोह त्याग दो। मेरी दया स्वीकार करो।

स्वेन — हा, दैव! वह प्रकट होकर ही रहेगा, ओलाफका ओज मेरे अन्दर चुपचाप बैठा रहेगा। तुम चाहे उन्हें यंत्रणाएं दे-देकर मार भी डालो तो भी मैं न झुकूँगा। ले लो, अपनी दया वापस ले लो।

एरिक — मैं वापस लेता हूँ। उसके बदले क्या चाहते हो?

स्वेन — इनके साथ और मेरे साथ जो चाहो करो। मैं कह चुका।

एरिक — निर्बल और उग्र पुरुष! तुम अपना पांसा फेंकते हो, और मैं अपना पांसा फेंकूँगा और जीतूँगा।

स्वेन — मैंने बुरे-से-बुरेको भी सहा है।

एरिक — ऐसे नहीं। तुम्हारा ख्याल है कि मैं तुम्हें यूँ ही मर जानेमें सहायता दूँगा और तुम्हारे लोगोंका मैं जो हाल करूंगा उस ओरसे अंधी कब्रको तुम्हारी आंखें मूँदने दूँगा। स्वेन, समझ लो मैं ज्यादा क्रूर हूँ! तुम जीओगे और मैं उनसे जो बदला लूँगा उसे देखोगे। आसलोग, जा और उस रात तू जैसे सजी हुई थी उसी तरह, अपनी कटार लिये और अंगूठी पहने वापस आ।

स्वेन — तुम उसके साथ क्या करोगे? हे भगवान्! क्या करोगे तुम उसके साथ? ओ, क्यों मैंने देखा और जो हृदय बन्द था उसमें प्रेमको वापस लिया......[1] किन्तु मौत और महानता?

एरिक — मैं उनपर ऐसे जुल्म करूंगा कि तुम उसे देख भी न सकोगे और अगर देख सके तो उसी कठोरताको लिये जीना पड़ेगा। क्योंकि मरना तुम्हारे लिये सम्भव न होगा। मेरे पास उसके लिये तरीके हैं। तुमने सोचा था कि कब्रमें जाकर शरण लोगे और ये तुम्हारी जगह सजा सहती रहेंगी, तुम्हारा हृदय बच जायगा। यह कोई साहसिक विचार न था, स्वेनके योग्य पलायन न था। आसलोग और एर्ता, मेरी दासियो, अपने ऊपरी वस्त्र निकाल दो।

स्वेन — क्या देखना होगा मुझे?

[1] मूल प्रतिमें कुछ शब्द नहीं है।

एरिक — वे मेरे पास नर्तकियां बनकर आयी थीं और मैं उन्हें नर्तकीके रूपमें ही रखूँगा। तुम नार्वेकी आसलोगको अपना व्यवसाय करते देखोगे — उसे मेरे और मेरे दरबारियोंके सामने नाचते देखोगे। यह तो प्रारम्भ है, बादमें और भी बहुत कुछ होगा, जबतक तुम अपनी सनक न छोड़ो।

स्वेन — तुम्हें यातना देना आता है।

एरिक — और अभिभूत करना भी। (आसलोग फिरसे प्रवेश करती है) देखते हो स्वेन, क्या नाचनेका हुकुम दूं? ओलाफके घरानेका क्या यही परिणाम होगा?

स्वेन — ओलाफकी बेटी, तो क्या तू आज्ञा मानेगी?

आसलोग — हां, स्वेन, मेरे भाई, जब तू मुझसे प्रेम नहीं करता तो फिर मैं जिससे प्रेम करती हूं उसे छोड़कर किसकी आज्ञा मानूँ? किन्तु यदि तुम अब भी प्रेम करते तो इसकी जरूरत ही न होती।

एरिक — नाच।

स्वेन — ठहर आसलोग। जब तू मुझे मेरे प्रतापसे नहीं, अपने साथ प्रेम करनेका आदेश देती है तो मुझे ओलाफके परिवारको शर्मसे बचानेके लिये यह अवश्य करना पड़ेगा,—जिसकी विश्वासघातक निर्बलता एरिकके और तेरे लिये काम कर रही है।

एरिक — रुको मत, क्योंकि अब रुकना खतरनाक होगा।

स्वेन — महाराज, मैंने समर्पण कर दिया, तुम्हारे वरदान स्वीकार हैं। भूखों मरते सामन्तके उत्तराधिकारी, तेरी दयाके आगे भी सिर झुकाता हूँ। मैं ओलाफका बेटा हूँ, स्वयं अपने अपमानके प्रति भी वफादार रहूँगा।

एरिक — राजन्, डरो मत। मैं फिरसे महान् हो सकता हूँ। तुमने बिना शर्त्तोंके समर्पण किया है न?

स्वेन — नहीं, इनको सब तरहकी शर्मसे बचा लो — इसीलिये मैं झुक रहा हूँ। मेरी प्रतिष्ठाका कुछ मूल्य है और वह अल्प ही है।

एरिक — वह बिना शर्त्तोंके दिया जा चुका।

स्वेन — एक प्रार्थना है: महाराज, मुझे एक गहरा तहखाना दीजिये जहां मैं इन सबकी आंखोंसे अपना मुँह छिपाकर रह सकूँ।

एरिक — कसम खाओ कि मैं जैसा भी कारागार दूँ, विशाल हो या संकुचित, तुम उसकी स्थिति और सीमाओंका मान रखोगे और वहां भी मेरी इच्छाके अनुसार चलोगे।

स्वेन —– (एक चेष्टा सहित) उसकी भी कसम खा ली। थोर और ओडिन मेरी प्रतिज्ञाके साक्षी हों।

एरिक —– ओलाफके पुत्रको मैं चार कारागारोंके हवाले करता हूँ। तुम्हारा त्रोण्डियमका महल, ओलाफकी छत, यारामें तुम्हारा वना मकान, एरिकका दरवार,—तुम्हारा देश नार्वे, जिसके आगे तुम झुक रहे हो,—और अन्तमें जब मैं दुनियापर आक्रमण करूं तो मेरी सेनाका नेतृत्व।

स्वेन —– (भौंचक्कासा और सन्देहके साथ) एरिक, तुमने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया और शपथके द्वारा मात कर दिया।

एरिक —– एर्ता, अपने स्वामीके पास बिना किसी परेशानीके वापस जा,—तुमने देखा न कि तुम सुरक्षित थीं। त्रोण्डियम और ओलाफके खजाने अपने साथ लेती जाओ। हमारे सिंहासनके वाद दूसरा स्थान तुम्हारा होगा।

स्वेन —– बस एरिक! क्या मैंने समर्पण नहीं किया? अब अपने वरदानोंको यहीं रुकने दो।

एरिक —– सच है। क्योंकि मेरा दूसरा वरदान स्वयं अपने लिये है। हालांकि जिस हाथको मैं पकड़े हुए हूँ वह सबसे सुन्दर हाथ है, फिर भी उसे मत देखो। बल्कि इस अंगूठीको देखो और पहचानो।

स्वेन —– आसलोगकी उंगलीपर फ्रेयाकी अंगूठी है। और जो स्त्री उसे एक वार पहनती है वह नार्वेके सिंहासनपर बैठती है।

एरिक —– अपने पिताके आसनपर अधिकार करो जो शुरूसे तुम्हारे लिये ही था। और इस बातपर आश्चर्य न करो कि मैं उसे नर्तकीके वेषमें ही बिठा रहा हूँ क्योंकि वे सिंहासनके सौन्दर्यको शाही बनातकी अपेक्षा अधिक बढ़ाते हैं। स्वेन, अपनी बहनको बेशर्म या धोखेबाज न समझना क्योंकि वे मेरे पास आयी थीं....[1] अपना और मेरा रक्त बहानेका उग्र और महान् उद्देश्य लेकर,—ऐसा उद्देश्य जो सिर्फ उदात्त हृदय ही सोच सकते हैं; और अन्तमें उस उदात्त हृदयके सामने वह इसलिये झुकी कि ओडिनकी ऐसी ही इच्छा थी।

स्वेन —– वे इसलिये आयी थीं! आसलोग, तूने अपना सिंहासन ढूंढ़ लिया, किन्तु... मैं तुझसे ईर्ष्या नहीं करता —– क्योंकि तेरा महान् हृदय उसके योग्य था। एरिक, आखिर तुमने नार्वेको जीत लिया।

एरिक —– स्वेन, मैं अपनी स्त्रीको अपमानित किये बगैर तुम्हारी बहनको शर्मिन्दा

[1] मूलमें कुछ शब्द जो पढ़े नहीं जा सके।

नहीं कर सकता। और यह तो तुम्हारे हृदयकी परीक्षा लेनेके लिये प्रपञ्च मात्र था। तुम देखते हो कि ओलाफके बीजके विरुद्ध विद्रोह किये बिना जिसे फिरसे नार्वेपर राज्य करना है तुम बगावत नहीं कर सकते।

स्वेन —— एरिक, अपने वरदानोंके वदले जो चाहो ले लो क्योंकि अब वे कष्ट नहीं देते। मैं तुम्हारा हूँ, तुमने अपने भविष्यको मुझसे बचानेका उपाय ढूँढ़ लिया है। वह....[1] मेरे हृदयकी तंत्रियोंके साथ।

एरिक —— स्वेन, अपने साथी हार्डिकनुटको माफ करो और प्रेमसे अपनाओ। उसका विश्वासघात प्रेमभरा था।

स्वेन —— महाराज, वह तो कुछ भी नहीं है। मेरा दिल उसके कामको समझ गया था फिर भी उसे माफ कर दिया।

एरिक —— स्वेन, अपने शत्रु सिगार्डको ऐसे माफ कर दो जैसे मैंने पहले अपने पिताके हत्यारेको माफ कर दिया था। यह तुम्हारी.....[2]

स्वेन —— मैं उसे छोड़ देता हूँ क्षमा नहीं करता। वह मेरी आंखोंके आगे ज्यादा न आया करे।

एरिक —— स्वेन, मुझे भी तुमसे वरदान मांगने हैं।

स्वेन —— अगर तुम मेरी स्वीकृति चाहते हो तो कठिन वर मांगो।

एरिक —— देवता जीत गये हैं। आसलोगके भाई, यह हमारे समाप्त संघर्षको अपनेमें डुबा ले।

स्वेन —— मेरी वहनके स्वामी, तुमने हमारे खूनको अपना लिया है और वह महान् विजयोंमें तुम्हें अधिक उदात्त और महान् बनाता है —— तुम्हारी यह अन्तिम विजय तो सबसे महान् है। तुमने मेरे साथ एक राजाकी भान्ति व्यवहार किया और बादमें एक भाईकी तरह। तुम अपने सिंहासनकी शोभा हो।

एरिक —— भाई, जब तक मुझे अपने शत्रुओंपर प्रहार करनेके लिये, अपनी तलवारके सदृश तुम्हारी तलवारकी जरूरत न पड़े तबतक अपनी विपत्तियोंसे विश्राम लो। क्यों आसलोग? क्या विचार है? अगर तू संतुष्ट है, तो सब कुछ ठीक है, सब उदात्ततासे किया गया है।

आसलोग —— तुम्हारे स्वभावमें अब भी अत्याचारी बैठा है और इसी रूपमें तुम मुझे बहुत प्यारे लगते हो। तुम अच्छा छोड़कर और कर ही क्या सकते हो? क्योंकि तुम्हारे प्रत्येक कार्य और शब्दमें मैं यही देखती हूँ कि देवता तुम्हें बाधित कर

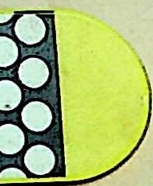
1 2 मूलमें कुछ शब्द जो पढ़े नहीं जा सके।

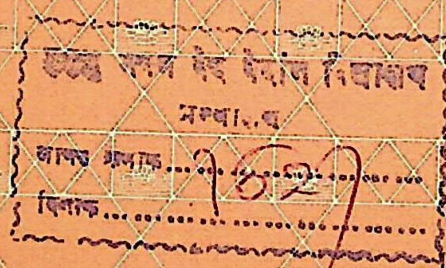
रहे हैं।

एरिक — या फिर अपने दीप्त नेत्रोंसे तूने मुझे बदल दिया है, ओलाफकी बेटी, और...[1] एक बार जहां मात्र ऊंचाई और लौह कठोरता थी, वहां एक आदमी है। हे सौम्य उदात्त अद्भुत ! हे चारुता, अब मेरे कार्य, दया, महानता, और साहस-की जड़ें तेरे वक्षमें रोपित हैं। मेरी शक्ति तेरे हृदयसे मेरी ओर बहती है। आसलोग, एक बार तूने योद्धाकी तलवारसे भी ज्यादा मजबूत और तेज सुवर्ण चक्रका गीत गाया था। तुझे याद है आसलोग, तू गोटवोर्गसे क्या करनेके लिये आयी थी ? उसके बाद देवता बोले हैं और उन्होंने अपना हाथ दिखाया है। वे हमारी आंखें मूँदकर हमें आगे बढ़ाते हैं किन्तु अन्तमें काम पूरा हो जानेपर हमारी आत्मा याद करती है......

आसलोग — कि यह अदृष्टमें लिखा था। हे प्रियतम, अब हमारे लिये दुनिया फिर-से शुरू होती है। जबसे तारे बने थे तभीसे हम ओडिनकी इच्छासे खेलोंका खेल खेलते हुए कभी हम मिले, और कभी अलग हुए, अलग हुए और फिरसे हमेशाके लिये मिल गये हैं।

[1] मूलमें कुछ शब्द जो पढ़े नहीं जा सके।




आगत क्रमांक 1627
दिनांक